
काला साया
मर्डर मिस्ट्री
अजिंक्य शर्मा


काला साया
मर्डर मिस्ट्री
अजिंक्य शर्मा

काला साया

मर्डर मिस्ट्री

-अजिंक्य शर्मा

एडवोकेट गिरिराज वर्मा समाज में बेहद प्रतिष्ठित, सम्मानित व्यक्ति के रूप में जाना जाता था। लोग उसके आदर्श चरित्र की मिसालें देते नहीं थकते थे।

लेकिन जब एक रात उसी के घर में, बेहद रहस्यमयी ढंग से उसकी हत्या हो गई तो ऐसे-ऐसे चौंकाने वाले राज सामने आए कि लोग हैरान रह गए।

कौन थी सनाया गौतम, गिरिराज वर्मा ने मरने से पहले-या यूं कहें कि मारे जाने से पहले-अपनी पूरी जायदाद जिसके नाम कर दी थी।

क्या अधेड़ावस्था में एकाकी जीवन बिता रहे गिरिराज वर्मा को अपने जीवन में 'चीनी कम' लगने लगी थी, जिसके चलते उसने अपने सिद्धांतों से समझौता कर लिया था?

या वो ऐसी जहरीली नागिन के जाल में फंस गया था, जिसके जहर का कोई तोड़ नहीं था।

या फिर गिरिराज वर्मा पर सचमुच किसी चुड़ैल का *काला साया* था?

जानने के लिए पढ़ें एक तेजरफ्तार मर्डर मिस्ट्री

काला साया

-अजिंक्य शर्मा

लॉकडाउन तक...

आप सभी से अनुरोध है-

घर पर रहें, सुरक्षित रहें।

डिस्क्लेमर

इस उपन्यास में वर्णित सभी पात्र, घटनाएं आदि काल्पनिक हैं। किसी भी वास्तविक घटना से समानता संयोग मात्र है। उपन्यास का उद्देश्य केवल मनोरंजन है।

नमस्कार दोस्तों,

अपने तीसरे उपन्यास के साथ आपके बीच उपस्थित हूं। लिखते हुए बेहद खुशी हो रही है कि इसके पूर्व के मेरे दोनों उपन्यास 'मौत अब दूर नहीं' और 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' भरपूर पसंद किए गए और कुछेक खामियों के बावजूद पाठकों ने उपन्यासों की सराहना की। पिछले उपन्यास 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' में मैंने कुछ अलग तरह की कहानी पाठकों के बीच प्रस्तुत करने की कोशिश की थी, जिसे पाठकों ने पसंद भी किया और प्रयोगात्मक लिखने के लिए भी सराहना करते हुए आपके लेखक का उत्साहवर्धन भी किया।

लेखन के क्षेत्र में आरम्भ से ही आपके लेखक का हौसला बढ़ाते रहे श्री हीरा वर्मा ने 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' की तारीफ कुछ इन शब्दों में की-''एक ही बैठक में पढ़ लिया। सभी पात्र पसंद आये। बेहतरीन एक बार फिर। 'ब्रिंग हिम इन' का इंतजार।''

श्री अतुल पति त्रिपाठी भी 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' की सराहना करने के साथ ही मेरे विशेष अनुरोध पर उपन्यास के शीर्षक पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि शीर्षक कथानक के साथ पूरा न्याय करता है।

दरअसल, 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' का शीर्षक इंग्लिश में रखने को लेकर मैं काफी उलझन में था क्योंकि हिन्दी उपन्यास का शीर्षक इंग्लिश में रखना थोड़ा अजीब लगता है लेकिन वो शीर्षक मुझे बेहद पसंद आ गया था और कहानी पर काफी सूट भी कर रहा था, जिसके चलते शीर्षक के संबंध में मैंने अतुल जी से विशेष रूप से दरख्वास्त की थी, जो उन्होंने पूरी भी की।

भिण्ड, मध्यप्रदेश के श्री गौतम वर्मा ने तो 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' की तुलना हॉलीवुड फिल्मों से ही कर डाली। वे लिखते हैं-' 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' पढ़ा। हॉलीवुड फिल्मों की तरह तेजरफ्तार व जीवंत कहानी लगी। उपन्यास पढ़ते हुए ऐसा लग रहा था, जैसे सब कुछ आंखों के सामने चल रहा हो। 'प्रोफेसर किलर' का किरदार बेहद पसंद आया। अगले भाग का इंतजार है।'

मध्यप्रदेश के ही रतलाम से श्री मुकेश साहू ने लिखा है-'आपका पिछला उपन्यास 'मौत अब दूर नहीं' भी पसंद आया था और 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' भी। हालांकि दोनों ही एकदम अलग तरह के लगे। 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' आपके पिछले उपन्यास से तो क्या मेरे अब तक के पढ़े सभी उपन्यासों से एकदम हटकर लगा। और पसंद भी आया। उम्मीद है आप आगे भी ऐसे बेहतरीन उपन्यास लिखते रहेंगे।'

कानपुर, उत्तर प्रदेश से श्री रणदीप यादव 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' से पूरी तरह संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने उपन्यास को औसत बताते हुए लिखा है-'मौत अब दूर नहीं' से आप जिस स्टैण्डर्ड तक पहुंचे थे, इस नॉवल में उससे थोड़ा पीछे रह गए। उपन्यास लेखन में इस तरह के प्रयोग से बचें।'

पाठकों ने 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' के अगले भाग, जो कि 'पार्टी सीरिज' का अगला उपन्यास होगा, को भी जल्दी पढने की इच्छा जताई है। इसके लिए मैं पाठकों को आश्वस्त करना चाहूंगा कि 'मौत अब दूर नहीं' और 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' के किरदारों से आपकी मुलाकात जल्द ही आने वाले उपन्यासों में होगी। विशेष रूप से 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' का अगला पार्ट जल्द ही लाने की कोशिश करूंगा क्योंकि 'मौत अब दूर नहीं' में मुख्य कहानी जहां पूरी थी, वहीं 'पार्टी स्टार्टेड नाओ!' के बारे में अधिकांश पाठकों की यही राय है कि कहानी का एक बड़ा हिस्सा अनकहा रह गया। डैथफेस का क्या हुआ? उन रहस्यमयी जंगलों में और कौन-कौन से राज छिपे थे? उस ट्रॉमेटिक एक्सपीरियेंस के बाद अविका और उसके दोस्तों पर क्या गुजरी? क्या वो अपनी सामान्य जिंदगी में वापस लौट सके? इन सवालों के जवाब आपको 'पार्टी सीरिज' के अगले उपन्यास में मिलेंगें।

-

लॉकडाउन!

सम्भवत: पहली बार देश की जनता इस तरह के हालात की साक्षी बनी है, जब लॉकडाउन के कारण सब कुछ थम सा गया है। सडक़ों पर सन्नाटा, गलियां वीरान। लोग केवल जरूरत के सामान लेने या किसी तरह की इमरजेंसी होने पर ही घर से बाहर निकल रहे हैं। किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि कभी इस तरह के हालात से भी गुजरना होगा। लॉकडाउन से सबसे ज्यादा परेशानी गरीब वर्ग को ही हो रही है लेकिन अच्छी बात ये है कि लोग मदद करने भी आगे आ रहे हैं, स्वस्फूर्त आगे आ रहे हैं। ईश्वर से बस यही प्रार्थना है कि ये सब ठीक-ठाक निबट जाए, कोरोना का खतरा खत्म हो और जिन्दगी वापस पटरी पर लौट सके।

लेकिन लॉकडाउन में हमने ये भी देखा कि दुनिया से कट कर रहने का फायदा हमें भी मिला और दुनिया को भी।

हमें जहां अपने परिवार के साथ ज्यादा वक्त बिताने का मौका मिला, काम की भागदौड़, तनावपूर्ण जीवन से राहत मिली, वहीं दुनिया को भी इंसानों द्वारा लगातार दिए जा रहे दखल से राहत मिली। कई जगह प्रदूषण में कमी आने संबंधी जानकारी मिल रहीं हैं, जो कि सही भी है। जब बेतादाद में चलने वाले वाहन अचानक रोक दिए जाएंगें, तो उनसे होने वाले प्रदूषण पर तो रोक लगेगी ही। इसी तरह अन्य प्रदूषण कारकों में भी कमी आई है।

जरा सोचिए, लॉकडाउन के इन 21 दिनों में कितने पेड़ कटने से बच गए होंगें, जो लोगों द्वारा काट दिए जाने थे? लाखों, करोड़ों, या उससे भी अधिक?

क्या ये प्रकृति का संरक्षण नहीं है?

मेरे विचार से स्थिति सामान्य होने के बाद भी हमें हर हफ्ते, या हफ्ते में नहीं तो हर महीने में एक बार इस तरह का लॉकडाउन रखना चाहिए। अपने लिए नहीं तो प्रकृति के लिए। पहले से पता होने पर लोग इसकी तैयारी भी करके रख सकेंगें और आपात स्थिति जैसी नौबत भी नहीं आएगी। अब तक हम अपने लिए प्रत्येक रविवार, त्यौहारों पर हॉलीडेज तो मनाते ही आ रहे थे, अब एक दिन प्रकृति को समर्पित करते हुए लॉकडाउन रखा जाए, तो शायद ये बेहद उपयोगी साबित हो सकता है। इस पर मैं पाठकों के विचार अवश्य जानना चाहूँगा। आप मुझे मेल कर सकते हैं।

-

मैं सर्वश्री हीरा वर्मा, सतेन्द्र सिंह, हरीश श्रीवास्तव, आशीष दुबे, मंजीत सिंह चहल, किरन चौधरी, मुकेश देवरानी, संतोष सक्सेना, राजेश पाराशर, इंदरमन देशलहरे, अजमेर से मुस्कान दीदी, श्याम कृष्ण मित्तल, नवनीश भट्टी, गुरूप्रीत सिंह (जी.पी. सर), गुरूप्रीत सिंह (लेक्चरर), दीपक झा, इरफान सैय्यद, विकास जैन, विजय अग्रवाल, रणधीर केशव, धर्मेन्द्र त्यागी, राशिद भाई, चन्दन छवीन्द्र, दीपक मौर्य, विजय प्रताप सिंह, दिग्विजय सिंह, संदीप जुयाल, खुमेश शर्मा, मयंक शर्मा, संदीप सायल, मनीष भाई, घनश्याम जोगरिया जी सहित सोशल मीडिया के अपने सभी दोस्तों का आभार व्यक्त करता हूं, जिनकी प्रेरणा से, उपन्यासों के प्रति जिनके प्रेम को देखकर मैं उपन्यास लिखने के लिए प्रेरित हुआ। सभी दोस्तों के नाम यहां लिखना सम्भव नहीं है क्योंकि दस पेज भी कम पड़ जाएंगें। वैसे भी-जैसा कि मैं पहले भी कहा चुका हूं-दोस्तों की जगह दिल में होती है, जुबां पर नाम हो या न हो।

विशेष रूप से सर्वश्री हीरा वर्मा, राजीव रंजन सिन्हा, डॉ. अतुल पति त्रिपाठी, गजानन रैना, राजू जाचक जी का आभार व्यक्त करता हूं, जिनके प्रोत्साहन व मार्गदर्शन से मैं ये उपन्यास लिख पाया।

और मेरे प्रेरणास्त्रोत सभी वरिष्ठ लेखकों एवं लेखक भाईयों का भी आभार व्यक्त करना चाहूंगा, जो मेरे प्रेरणास्त्रोत बने।

उपन्यास के प्रति अपनी बहुमूल्य राय से अवगत अवश्य कराएं।

मेरा ई मेल आईडी

ajinkyasharma181@yahoo.com

आपका अपना-

अजिंक्य शर्मा

मोहित इंटरनेशनल फ्लाइट से दिल्ली एयरपोर्ट पर उतरा।

न्यूयॉर्क से दिल्ली के लम्बे सफर में ज्यादातर समय उसने सोते हुए ही बिताया था। काम की भागदौड़ के कारण पिछली कई रातों से वो पूरी नींद नहीं ले पा रहा था। वो न्यूयॉर्क में काम करता था लेकिन उसका काम ऐसा था कि उसे एक देश से दूसरे देश जाना पड़ता था। यहां भारत में तो उसका घर ही था लेकिन लम्बे अरसे से वो घर नहीं गया था। मोहित करीब तीन साल बाद भारत वापस आ रहा था। दो साल उसने अमेरिका में पढ़ाई की थी और पढ़ाई पूरी करने के बाद वहीं उसकी जॉब लग गई थी। मोहित का प्लान अपना लक्ष्य पूरा करके ही स्वदेश लौटने का था लेकिन हालात कुछ ऐसे बन गए थे कि उसे समय से पहले वापस लौटना पड़ रहा था।

एयरपोर्ट पर सिक्योरिटी चैकिंग के दौरान ही एक कस्टम ऑफिसर उसे बुलाकर बाकी यात्रियों से अलग ले गया। उसे एक बड़े रूम में ले जाकर बैठाया गया, जहां कुछ और पैसेंजर्स भी बैठे थे।

फिर बाद में उसे पता चला कि वहां कोरोना वायरस के सिलसिले में कुछ यात्रियों की अलग से जांच की जा रही थी।

उनमें से वो भी शामिल था।

शिट्।

आते ही आते दिमाग खराब।

इन लोगों को लग रहा है कि मैं वहां अमेरिका से इनके लिए कोरोना वायरस गिफ्ट में लेकर आ रहा हूं।

लेकिन जल्द ही मोहित को पता चल गया कि वो कोई बड़ी जांच नहीं हो रही थी। केवल उन पैसेंजर्स को अलग करके उनकी जांच की जा रही थी, जिनका पिछले कुछ महीनों में चीन आना-जाना हुआ था।

इत्तेफाक से मोहित भी उनमें शामिल था।

अभी तीन महीने पहले ही वो अपनी कंपनी के ही काम के सिलसिले में बीजिंग गया था और वहां उसे करीब 20 दिन रूकना भी पड़ा था।

उस बड़े रूम में मोहित को मिलाकर आठ-दस यात्री ही थे। उनके अलावा दो कस्टम ऑफिसर थे।

उन लोगों को बारी-बारी से एक रूम में भेजा जा रहा था।

उनका सामान भी डबल चैकिंग के लिए ले जाया गया था।

मोहित को इसकी उम्मीद नहीं थी। वो चीन से नहीं आया था। वो अमेरिका से आया था। चीन वो तीन महीने पहले गया था। उसने अच्छी तरह सुन रखा था कि एयरपोर्ट पर होने वाली इस तरह की जांचों में संदिग्ध पाए जाने पर मरीज को क्वारंटाइन में रख दिया जाता है।

इतने सालों बाद अपने देश वापस लौटने पर वो इस तरह का स्वागत नहीं चाहता था।

उसने कस्टम ऑफिसर से ही पूछा।

''डोंट वरी, सर।''-ऑफिसर ने उसे तसल्ली दी-''ये बस फॉर्मल जांच है। कोई मेडिकल जांच नहीं है। समझ लीजिए, एक तरह का सर्वे है। आप तो जानते ही हैं, कोरोना वायरस कितना खतरनाक साबित हो रहा है। ऐसे में हर लेवल पर सावधानी बरतनी पड़ रही है।''

मोहित ने सहमति में सिर हिला दिया। मेडिकल जांच नहीं होने की बात से उसे राहत मिली। अगर मेडिकल जांच होती तो मामला लम्बा खिंच सकता था।

कई यात्रियों के बाद उसका नम्बर भी आया। अंदर रूम में दो मेडिकल ऑफिसर टाइप लगने वाले लोग और एक कस्टम ऑफिसर मौजूद था। उन्होंने मोहित से उसकी पिछली चीन यात्रा के सम्बंध में ही सवाल किए। जैसे कि-वो किस काम के सिलसिले में चीन गया था? वहां कितने दिन रूका? कहां-कहां गया? और सबसे ज्यादा उनका जोर इसी बात पर रहा था कि वहां से लौटने के बाद उसे किसी तरह की स्वास्थ्य संबंधी परेशानी तो नहीं हुई थी। अपने चीन प्रवास के दौरान या वहां से वापसी के बाद जुकाम वगैरह जैसे कोई सिम्पटम्स तो नहीं हुए थे।

मोहित ने धैर्यपूर्वक उनके सभी सवालों के जवाब दिए, जिनसे वो संतुष्ट भी नजर आए। सबसे ज्यादा संतुष्ट वो लोग इसी बात से हुए कि अपने चीन प्रवास के दौरान मोहित मुख्यत: बीजिंग में ही रूका था। उसे किसी काम के सिलसिले में वुहान तो क्या किसी और शहर नहीं जाना पड़ा था। उसका कंपनी का काम सिर्फ और सिर्फ बीजिंग तक ही सीमित था और काम की व्यस्तता के कारण घूमने-फिरने में भी उसकी ज्यादा दिलचस्पी नहीं रही थी।

मोहित को वो सब कुछ सचमुच एक फॉर्मेलिटी जैसा ही लगा। वैसे भी कोरोना वायरस के कारण जो हालात पैदा हो रहे थे, उन्हें देखते हुए तो अगर वो लोग उसे क्वारंटाइन भी कर देते तो भी शायद कोई बड़ी बात नहीं होती।

इंस्पेक्शन से फुर्सत मिलने के बाद वो वापस बाहर वाले कमरे में पहुंचा, जहां अब एक ही कस्टम ऑफिसर मौजूद था। उसके अलावा एक बेहद खूबसूरत युवती थी, जो अपना डबल चैकिंग होकर आया हुआ सामान कलेक्ट कर रही थी। युवती का चेहरा गुस्से से तमतमाया हुआ लग रहा था। शायद वो भी बाकी यात्रियों की तरह ही उस जांच में एक्स्ट्रा टाइम लगने से नाराज थी। उसके बगल में ही एक हाथ से धकेली जाने वाली ट्रॉली में मोहित का सामान भी पड़ा था।

मोहित उनके पास पहुंचा।

''एनीवे''-वो युवती कस्टम ऑफिसर से बोली-''यू फॉरगॉट वन प्लेस टू चैक(तुम एक जगह चैक करना भूल गए)।''

''व्हाट?''-कस्टम ऑफिसर आश्चर्य से युवती से बोला।

''माई ऐस।''-युवती ने अपने दाहिने हाथ के बीच की उंगली खड़ी करके कस्टम ऑफिसर के चेहरे के सामने की, जैसे हवा में खंजर भोंक रही हो-''कोरोना वायरस इज स्टक इन इट (मेरी...। कोरोना वायरस उसमें घुसा हुआ है।)''

कस्टम ऑफिसर हक्का-बक्का सा उसे देखता रह गया। गुस्से से लाल चेहरा लिए युवती घूमी और बिना मोहित की ओर नजर डाले अपने सामान वाली ट्राली लेकर रूम से बाहर निकल गई।

मोहित का मन जोर से ठहाका लगा कर हंसने का कर रहा था लेकिन कुछ पिछले दिनों की टेंशन और कुछ कस्टम ऑफिसर का लिहाज करके वो हंसा नहीं। उसने एक खेदपूर्ण मुस्कान के साथ कस्टम ऑफिसर की ओर देखा, जो अपने आपको संयत करने की कोशिश कर रहा था।

फिर मोहित भी अपना लगेज लेकर वहां से बाहर निकल गया।

मोहित वेटिंग लाउंज में पहुंचा।

वहां उसकी बड़ी बहन मानसी उसका इंतजार कर रही थी। मोहित को आते देख कर वो सीट पर से उठकर खड़ी हो गई। मोहित उसके पास पहुंचा तो उसने आगे बढक़र मोहित को गले से लगा लिया।

''ठीक हो न, भाई।''-वो उसकी पीठ थपथपाते हुए बोली।

''हां''-मोहित बोला-''ठीक ही तो हूं। मुझे क्या होना है भला?''

''खाक ठीक हो?''-वो उससे अलग होते हुए थोड़े नाराजगी भरे स्वर में बोली-''दाढ़ी बढ़ा रखी है। चेहरा भी उड़ा-उड़ा लग रहा है। अमेरिका में खाना-पानी नहीं मिलता क्या?''

''ये''-मोहित ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा-''ये तो कुछ नहीं है। आजकल तो दाढ़ी रखने का फैशन चल निकला है न।''

''हां। और जैसे मुझे पता नहीं कि मेरा भाई कितना फैशन पसंद है। तुम्हें तो अगर कोई दाढ़ी रखने के लिए एक लाख रूपए दे तो भी तुम दाढ़ी न रखो।''

मोहित मुस्कुराया। असल बात यही थी कि तीन महीने पहले हुई घटना के बाद से उसकी दिनचर्या काफी गड़बड़ाई हुई थी।

मोहित ने कुछ देर इंतजार किया। लेकिन मानसी को वहां से चलने का उपक्रम नहीं करते देख कर उसे हैरानी हुई।

''अब क्या हुआ?''-उसने पूछा।

''वैशाली का इंतजार कर रही हूं।''-मानसी बोली।

''वैशाली?''

''मेरी ननद। तुम्हारे जीजा की बहन।''

मोहित ने वैशाली का नाम सुना था। लेकिन उसे कभी देखा नहीं था। उसे बस इतना पता था कि वो अमेरिका में स्टडी कर रही थी।

''लो आ गई वो''-अचानक मानसी प्रफुल्लित स्वर मे बोली-''वैशाली।''-फिर उसने ध्यानाकर्षित करने के लिए हाथ हिलाते हुए आवाज लगाई।

मोहित ने उसके हाथ हिलाने की दिशा में देखा। उधर से वही युवती ट्रॉली पर अपना सामान लिए उनकी ओर आ रही थी, जिसे मोहित ने अभी कुछ ही देर पहले चैकिंग रूम में देखा था। जो कस्टम ऑफिसर को बता रही थी कि कोरोना वायरस कहां था।

‘‘ओ माई गॉड।’’-मोहित के मुंह से निकल गया।

‘‘क्या हुआ?’’-मानसी चौंकी।

‘‘कुछ नहीं।’’-मोहित हड़बड़ा गया-"यही है वैशाली?"

"हां। सचमुच अजीब बात है न? तुम दोनों इतने सालों बाद वापस आ रहे हो, एक ही फ्लाइट से आए हो लेकिन एक-दूसरे को नहीं जानते।"

तब तक वैशाली भी वहां आकर खड़ी हो गई। उसने एक बार घूरकर मोहित की ओर देखा, फिर मानसी की ओर देखकर बोली-‘‘हाय, भाभी।’’

‘‘हाय।’’-कहकर मानसी उससे गले मिली। फिर उससे बोली-‘‘वैशाली। इससे मिलो। ये है, मोहित, मेरा छोटा भाई। मोहित, ये है वैशाली।’’

‘‘हाय।’’-उसने एक उड़ती-सी नजर मोहित पर डाली और फिर अपना मोबाइल निकालकर उसमें कुछ चैक करने का दिखावा करने लगी।

मोहित ने उसके अभिवादन का प्रत्युत्तर दिया लेकिन उसके दिमाग में यही चल रहा था कि ये कितना अजीब संयोग था कि अभी-अभी कस्टम ऑफिसर पर टिप्पणी करने वाली वो लडक़ी उसकी रिश्तेदार निकल आई थी।

वो भी ऐसी रिश्तेदार, जिसे उसने कभी जिंदगी में नहीं देखा था।

जीजा की बहन।

मोहित को इस बात की भी हैरानी थी कि वो दोनों एक ही फ्लाइट से एक साथ आ रहे थे, मानसी उन दोनों का इंतजार कर रही थी लेकिन उसने उसे इस बारे में कुछ नहीं बताया था।

फिर वे तीनों एयरपोर्ट से बाहर निकले। कार पार्किंग में मानसी की कार खड़ी थी। मोहित ने अपना सामान कार की डिक्की में रखा, जिसके बाद तीनों कार में सवार हुए और कुछ ही देर में उनकी कार एयरपोर्ट से निकल सडक़ पर दौड़ रही थी।

मोहित कार की खिडक़ी से बाहर झांक कर दिल्ली की सडक़ों का नजारा देख रहा था। इतने सालों बाद लौटने पर थोड़ा-बहुत बदलाव तो महसूस हो रहा था लेकिन विशेष कुछ नहीं बदला था।

वही ट्रैफिक की भीड़-भाड़, वही रास्ते और वही सब कुछ!

मोहित पिछली सीट पर बैठा था। कार मानसी चला रही थी और वैशाली उसके बगल में ही बैठी थी। मानसी वैशाली से उसकी पढ़ाई और अमेरिका के बारे में पूछ रही थी।

''इतने लम्बे सफर के कारण पहले ही दिमाग खराब था-मानसी से बातें करती हुई वैशाली बोली-''ऊपर से एयरपोर्ट पर कोरोना की जांच के नाम पर अलग से रोक लिया। वहां एक घंटा और लगाया। मेरा इतना दिमाग खराब हो गया था कि मैं वहां मौजूद उस बेचारे कस्टम ऑफिसर को ही उल्टा-सीधा बोल गई। बेचारा अच्छा आदमी था। पलटकर एक शब्द भी नहीं बोला मेरे से।''

एक शब्द बोलने लायक मोहलत ही कहां दी थी तुमने उसे-मोहित ने मन ही मन सोचा। वैसे भी मोहित को लगा कि वैशाली वो बात मानसी को नहीं बता रही थी बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से मोहित को ही सफाई दे रही थी।

मोहित ने उनकी बातचीत के बीच दखल नहीं दिया। बीच-बीच में मानसी उससे कुछ कहती भी तो वो संक्षिप्त बातचीत ही कर रहा था। वो उस समय बातचीत करने जैसा महसूस नहीं कर रहा था।

उसने फिर आंखें मूंद कर अपने शरीर ढीला छोड़ दिया।

तभी वैशाली की आवाज उसके कानों में पड़ी और उसने अपनी आंखें खोल दीं।

''सनाया गौतम को पुलिस ने पकड़ लिया?''

''नहीं''-एक क्षण की खामोशी के बाद मानसी बोली, उसका स्वर गम्भीर था-''अभी उसका कोई पता नहीं चल पाया है।''

''बचकर कहां जाएगी''-वैशाली बोली-''एक न एक दिन तो पुलिस उसे पकड़ ही लेगी।''

सनाया गौतम।

वो नाम हथौड़े की तरह मोहित के दिमाग से टकराया।

वे लोग नैनीताल स्थित मानसी और अरविंद के घर पहुंचे, जहां जीजा अरविंद सक्सेना ने गले लगा कर मोहित का स्वागत किया। मानसी का पति अरविंद सक्सेना क्रिमिनल लॉयर था और काफी खुशमिजाज इंसान था। अरविंद और मानसी की करीब डेढ़ साल पहले ही शादी हुई थी। दोनों इतने खुशमिजाज और उत्साही किस्म के जीव थे कि शादी को साल भर बीतने के बाद भी अब भी न्यूलीवेड्स कपल की तरह ही मस्ती करते थे। लेकिन करीब तीन माह पूर्व मानसी के पिता की हत्या की घटना ने उन्हें झकझोर कर रख दिया था।

मानसी और अरविंद का नैनीताल के अलावा दिल्ली में भी एक मकान था। शादी से पहले तक वे नैनीताल में ही रहते थे। लेकिन शादी के बाद वे दिल्ली में रहने चले गए थे, जहां उन्होंने वो मकान लिया था। करीब साल भर तक उनके परिवार को किसी तरह की दिक्कत पेश नहीं आई लेकिन करीब तीन महीने पहले हुई घटना ने उनके परिवार की खुशियों को ग्रहण लगा दिया था।

घर ज्यादा बड़ा नहीं था लेकिन काफी खुला-खुला सा था। खिड़कियां काफी बड़ी थीं। ऊपर से नैनीताल जैसा पर्यटन स्थल! खिड़कियों से बाहर का नजारा मन मोह लेता था। बाहर से आती ठण्डी हवा दिलोदिमाग को ताजा कर देती थी।

अरविंद मोहित को एक कमरे में ले गया।

‘‘ये कमरा सैट किया है तुम्हारे लिए मानसी ने।’’-अरविंद प्रफुल्लित स्वर में बोला-‘‘पसंद आया?’’

मोहित ने कमरे में चारों तरफ नजर मारते हुए स्वीकृति में सिर हिलाया।

‘‘वैसे मैं ज्यादा दिनों तक यहां नहीं रहूंगा।’’-फिर वो अरविंद से बोला।

‘‘अरे, भाई, तुम्हारा घर है। ज्यादा-कम दिनों की बात मत करो। ये बताओ, वैशाली तुम्हें कहां मिली?’’

‘‘एयरपोर्ट पर।’’

‘‘जबकि तुम दोनों एक ही प्लेन से आए थे। ये वैशाली भी पूरी पागल है। एकदम से बिना बताए इस तरह आ गई। अगर मुझे बता देती कि वो उसी फ्लाइट से आ रही है, जिससे तुम आ रहे हो, तो मैं पहले ही तुम्हें बता देता। और उसे भी। तुम दोनों की रास्ते में ही मुलाकात हो जाती।’’

‘‘इंस्पैक्टर साहब से बात हुई?’’-यकायक मोहित बोला।

‘‘इंस्पैक्टर? ओह हां। उनसे बात हो गई है। वो आज शाम को ही आ रहे हैं। हो सकता है रात हो जाए।’’

‘‘ठीक है। थैंक्स जीजा जी।’’

‘‘इसमें थैंक्स की क्या बात है।’’-अरविंद ने मोहित का कंधा थपथपाया-‘‘ये थैंक्स, सॉरी बोलना बंद करो। सारी खुदाई एक तरफ, जोरू का भाई एक तरफ।’’

‘‘ठीक है। ठीक है।‘‘-मोहित ने मुंह बनाया।

अरविंद मुस्कराते हुए कमरे से बाहर निकल गया।

शाम को डोरबेल की आवाज सुनकर मोहित घर के बाहर वाले कमरे में, जो कि एक छोटे हॉल जैसा था, पहुंचा तो उसने पाया कि अरविंद पहले ही वहां पहुंच चुका था और दरवाजा खोलने भी लगा था। मोहित अपनी जगह पर ही रूक गया। दरवाजा खुलते ही पुलिस की यूनीफॉर्म पहने एक शख्स ने हॉल में प्रवेश किया, जो कि 40 के पेटे में पहुंचा हुआ लग रहा था। सूरत से वो काफी गम्भीर लगने वाला शख्स था हालांकि गोरी रंगत और चेहरे पर किसी तरह का दाग-निशान न होने से उसे खूबसूरत-या इंग्लिश में मर्दों के लिए खूबसूरत लगने के सिलसिले में जो शब्द प्रयोग किया जाता है-हैण्डसम भी कहा जा सकता था। उसकी चेहरे पर मूंछें उसकी पर्सनालिटी में चार चांद लगा रहीं थीं। करीब 6 फीट लम्बे कद के मालिक उस शख्स का शरीर भी पहलवानों जैसा था।

उसकी वर्दी में कंधे पर लगे तीन सितारों से पता चल रहा था कि वो पुलिस इंस्पेक्टर था।

''आइये इंस्पैक्टर साहब।''-अरविंद बोला-''आज कुछ ठण्ड ज्यादा ही है।''

उसने 'हम्म' के उच्चारण के साथ ही सिर को हल्के से जुम्बिश दी। कमरे में घूमती उसकी निगाह मोहित पर आकर जम गई।

अरविंद ने उसकी नजरों का अनुसरण किया, फिर मोहित पर नजर पड़ते ही बोला-''अरे, मोहित। तुम भी यहीं हों। चलो, अच्छा है। इनसे मिलो। ये हैं इंस्पेक्टर वैभव। वैभव शुक्ला। बड़े कडक़ इंस्पेक्टर हैं। अपराधी इनके नाम से थर-थर कांपते हैं। अंकल के केस की इन्वेस्टिगेशन यही कर रहे थे...।''

''कर रहा था नहीं कर रहा हूं। केस अभी भी क्लोज नहीं हुआ है।''-इंस्पेक्टर गम्भीर स्वर में बोला।

''हां...हां...वही। कर रहे हैं।''-अरविंद ने संशोधन किया-''ये तुम्हें केस के बारे में पूरी जानकारी देंगें। जो भी तुम जानना चाहो। इंस्पेक्टर साहब मेरे दोस्त हैं इसलिए मेरे विशेष अनुरोध पर इन्होंने खास तौर पर इसी काम के लिए हमारा मेहमान बनना कुबूल किया है। और इंस्पेक्टर साहब। ये मेरे ब्रदर इन लॉ-मोहित वर्मा हैं, जिनके बारे में मैंने आपको बताया था।''

''गिरिराज वर्मा के बेटे।''-इंस्पेक्टर ने कहा। उसकी आवाज भी भारी और रौबदार थी।

मोहित ने आगे बढक़र इंस्पेक्टर की ओर हाथ बढ़ा दिया। इंस्पेक्टर ने मोहित को गहरी निगाहों से देखते हुए उससे हाथ मिलाया। मोहित ने महसूस किया कि इंस्पेक्टर के हाथ की पकड़ लोहे के शिकंजे की तरह मजबूत थी।

अरविंद ने उन्हें सोफे पर बैठने का इशारा किया और कुछ चाय-नाश्ते की व्यवस्था करने की बात कह कर वहां से चला गया।

मोहित और इंस्पेक्टर आमने-सामने सोफे पर बैठ गए।

''आपको यूएसए से वापस आने की फुर्सत मिल गई?''-इंस्पेक्टर वैभव ने गम्भीर स्वर में कहा।

मोहित चौंका। वो प्रत्यक्षत: एक व्यंग ही लग रहा था लेकिन इंस्पेक्टर की आवाज सामान्य थी। एक अनजान शख्स से इस तरह का ताना फौरन मूड खराब करने के लिए काफी था लेकिन एक तो वो पुलिस वाला था, दूसरे वो वो पुलिस वाला था, जो मोहित के पिता के मर्डर केस की इन्वेस्टिगेशन कर रहा था और तीसरे वो वहां आया ही मोहित की मदद करने के लिए था।

मोहित को उसके पिता के मर्डर केस के बारे में डिटेल से बताने के लिए।

''जी हां।''-मोहित अपने स्वर को सामान्य बनाए रखने की कोशिश करते हुए बोला-''विदेश में काम करने का यही झंझट होता है। एकदम से आना सम्भव नहीं हो पाता।''-फिर वो थोड़ा ठहरकर बोला-''चाहे बाप का अंतिम संस्कार ही क्यों न करना हो।''

इंस्पेक्टर ने चौंककर मोहित की ओर देखा। फिर मोहित के चेहरे पर छाई गम्भीरता देख कर उसके चेहरे की गम्भीरता में थोड़ी कमी आई।

कुछ क्षण दोनों के बीच मौन छाया रहा, फिर इंस्पेक्टर ने ही कहा-''वकील साहब की खास रिक्वेस्ट है कि मैं इस मर्डर केस की पूरी डिटेल्स आपको बताऊं। आपके सारे सवालों के जवाब दूं, उन सवालों के, जिनके जवाब मेरे पास हैं। जिनमें जाहिर है ये सवाल शामिल नहीं है कि मुजरिम इस वक्त कहां है। लेकिन उससे पहले मैं ये जानना चाहता हूं कि आप ये सब क्यों जानना चाहते हैं?''

''आप मुझसे पूछ रहे हैं कि मैं इस केस के बारे में क्यों जानना चाहता हूं?''-मोहित के स्वर में हैरानी थी

''मेरे कहने का मतलब है कि इस जानकारी से आपको क्या हासिल होगा? मोटी-मोटी जो जानकारी है, वो तो आपको पता ही होगी। अखबारों वगैरह में भी छपा था और आप भले ही यहां नहीं आ पाए लेकिन आपकी बहन के माध्यम से वो सारी जानकारी तो आपको मिल ही गई होगी। तो मेरा सवाल ये है कि इस सबका रिपीट टेलीकास्ट मुझसे क्यों सुनना चाहते हैं? और क्या आपका इरादा इस जानकारी का कोई विशेष उपयोग करने का है?''

‘‘इंस्पेक्टर साहब।’’-मोहित बोला-‘‘मुझे पता है कि आप बेहद व्यस्त आदमी हैं, आपको और भी बहुत से काम रहते हैं। और जीजा जी के कहने पर आप ये जो जानकारी मुझे देने वाले हैं, ऐसा करके आप उन्हीं के साथ नहीं बल्कि मेरे साथ भी फेवर कर रहे हैं, जिसके लिए मैं आपका शुक्रगुजार हूं। अब आपके सवालों का जवाब-आपने सही कहा कि मुझे अपनी बहन, अखबार वगैरह के माध्यम से मोटी-मोटी जानकारी मिल चुकी है लेकिन उस वक्त मैं अपने होश में नहीं था। उस खबर को सुनने के बाद ये समझ लीजिए कि मुझे अपना दिमाग ठिकाने पर लाने में ही तीन महीने लग गए हैं’’-मोहित इंस्पेक्टर से ये बात कह तो रहा था लेकिन उसे विश्वास था कि उसका दिमाग अभी भी ठिकाने पर नहीं था-‘‘और अब मैं उस घटना के बारे में डिटेल्ड जानकारी चाहता हूं। वो भी किसी विश्वसनीय सूत्र से। मैं इसके लिए पुलिस स्टेशन की दौड़ लगाने वाला था लेकिन जीजा जी ने बताया कि आप उनके गहरे दोस्त हैं और आप सीधे ये जानकारी मुझे दे सकते हैं। वैसे भी एक इन्वेस्टिगेशन ऑफिसर के रूप में आपने इस मामले की पूरी पड़ताल की है। तो आपके माध्यम से मुझे जो भी जानकारी मिलेगी, वो पुख्ता ही होगी। हो सकता है मुझे उस घटना और उसकी इन्वेस्टिगेशन के बारे में बताते समय केस से जुड़ी कुछ बारीक चीजों पर आपका खुद ही ध्यान चला जाए। और इसलिए अगर मैं गलत नहीं हूं तो आपके लिए भी ये कसरत पूरी तरह टाइम वेस्टिंग साबित नहीं होगी। आप जानना चाहते हैं कि इस जानकारी का क्या उपयोग मेरे जेहन में है? तो इसका जवाब ये है कि’’-फिर मोहित थोड़ा ठहरकर बोला-‘‘आपको क्या लगता है?’’

इंस्पेक्टर होंठ भींचे मोहित के चेहरे को देखता रहा।

मोहित के चेहरे पर गम्भीरता के साथ ही एक किस्म के जुनून की झलक भी दिख रही थी। उसका चेहरा शांत था लेकिन वो शांति किसी तूफान के आगमन से पहले की शांति की तरह ही थी।

‘‘रिवेंज।’’-फिर इंस्पेक्टर बोला।

मोहित ने कुछ नहीं कहा।

‘‘तो आप बदला लेना चाहते हैं?’’

‘‘मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा।’’-मोहित शांत स्वर में बोला।

‘‘खैर।’’-इंस्पेक्टर वैभव ने गहरी सांस लेकर कहा-‘‘वो कोई नाशुक्रा ही होगा, जो अपने पिता के कत्ल का बदला न लेना चाहता हो। लेकिन फिर भी कानून व्यवस्था भी एक चीज होती है। मेरी आपसे यही सलाह है कि जोश में आकर ऐसा कोई कदम न उठाएं, जिससे आपका नाम अपराधियों की लिस्ट में आ जाए।’’

‘‘समझ लीजिए, मैं उसे गिरफ्तार कराकर ही अपना बदला लूंगा।’’-मोहित संयमित स्वर में बोला।

‘‘आप दिलचस्प आदमी हैं, मिस्टर मोहित। आप बोलते तो कुछ और हैं लेकिन सुनाई कुछ और देता है। बहरहाल, मैं यहां वकील साहब की रिक्वेस्ट पूरी करने आया हूं। बाकी बातें तो होती ही रहेंगीं। बताइए, क्या जानना चाहते हैं आप?’’

‘‘सब कुछ।’’

‘‘सब कुछ?’’

‘‘वो भी शुरू से।’’

‘‘तो फिर सुनिए...।’’

गिरिराज वर्मा शहर के नामी वकील थे। वकील होने के साथ ही वे बेहद संपन्न भी थे क्योंकि उनके पास पुरखों की छोड़ी गई अच्छी-खासी जायदाद भी थी और कुछ कम्पनियों के शेयर भी थे, जिनसे वे खूब मुनाफा कूटते थे। यानि पैसों की उनके पास कोई कमी नहीं थी। हिल रोड पर उनका एक घर था, जो ज्यादा भव्य तो नहीं था लेकिन बड़ा जरूर था। वो घर उन्होंने करीब साल भर पहले ही खरीदा था। घर में कई कमरे थे, जिसमें अच्छा-खासा बड़ा संयुक्त परिवार भी सुविधापूर्वक रह सकता था लेकिन अधिकांश लोगों को यही लगता था कि उस घर में गिरिराज वर्मा अकेले ही रहते थे। घर में दो सर्वेंट क्वार्टर भी थे लेकिन गिरिराज वर्मा के यहां कोई घरेलू नौकर नहीं था।

परिवार के नाम पर उनकी दो संतानें थीं, एक बेटी मानसी और बेटा मोहित। मानसी की करीब डेढ़ साल पहले शादी हो गई थी। मोहित भी अमेरिका में जॉब लगने के बाद पिछले तीन सालों से बाहर ही रह रहा था।

कुल मिलाकर गिरिराज वर्मा का जीवन काफी एकाकी हो चला था।

लेकिन ये उनके लिए दुख का कारण नहीं था।

वो असल में ऐसे शख्स थे, जो एकाकीपन में खुश रहते थे। शायद इसी कारण उन्होंने अपनी पत्नी के देहांत के बाद दूसरी शादी करने में भी कोई रूचि नहीं दिखाई। पत्नी के देहांत के समय वे 40 के आसपास थे और बच्चे भी कोई ज्यादा बड़े नहीं थे। लेकिन पत्नी के जाने के बाद गिरिराज वर्मा ने जीवन के एकाकीपन को साथी बना लिया और दूसरे जीवनसाथी के बारे में सोचना भी गवारा नहीं किया। उनके आदर्श चरित्र की लोग मिसालें देते थे। यहां तक कि उनके कभी किसी के साथ अफेयर जैसी बात भी सामने नहीं आई। वे काफी मिलनसार व्यक्ति भी थे, जिसके चलते उनके मित्रों, शुभचिंतकों की कोई कमी नहीं थी। नैनीताल में उनका अच्छा-खासा रूतबा था। बड़े-बड़े नेताओं, अधिकारियों के साथ उठना-बैठना भी रहता था। लगातार तीन साल बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रह चुके होने के बाद वर्तमान में संरक्षक की भूमिका निभा रहे थे। समाजसेवी कार्यों में सबसे आगे रहते थे। दान-धर्म, पुण्य, समाजसेवा के कार्यों में लोगों को सबसे पहले उनकी याद आती थी।

लेकिन फिर अचानक सब कुछ बदलने लगा।

करीब साल भर पहले गिरिराज ने लोगों से दूरी बनाना शुरू कर दिया।

वो अब पहले की तरह कार्यक्रमों में नहीं जाते थे। उन्होंने कोर्ट भी जाना कम कर दिया। वो जैसे अपने-आप में सिमटते जा रहे थे। और उन्होंने ये इतनी खामोशी के साथ, इस ढंग से किया कि लोग इस चीज को नोटिस भी नहीं कर पाए। जिन्होंने नोटिस किया और इसकी वजह जाननी चाही, उन्हें गिरिराज ने यही सफाई दी कि अब दुनिया की भागदौड़ में उनका मन नहीं लगता। अब वे अपना समय घर पर ही किताबें पढ़ते हुए या टीवी देखते हुए बिताते हैं।

उनका इतना अपना तो कोई वहां था ही नहीं, जो उनके इस तरह समाज से अलग-थलग होने का कारण जानने या उन्हें वापस समाज से जोडऩे की कोशिश करने उन पर दबाव डाल पाता। मोहित अमेरिका में था और मानसी भी अपने पति अरविंद के साथ उस समय दिल्ली में रह रही थी। कुल मिलाकर गिरिराज के और उन्हीं के द्वारा चुने गए उनके एकाकीपन के जीवन के बीच में कोई बाधा नहीं थी।

और इसी बीच गिरिराज वर्मा के हिल रोड स्थित घर में उनका कत्ल हो गया।

गिरिराज वर्मा की लाश उनके घर के स्टडी रूम में उस रिवॉल्विंग चेयर पर पाई गई, जिस पर वो बैठा करते थे। रिवॉल्वर की गोली ने उनकी कनपटी में सुराख कर दिया था और रिवॉल्वर लाश के पास ही फर्श पर पड़ी मिली थी, जैसे हाथ से फिसल कर गिर पड़ी हो।

पहली नजर में ये पूरी तरह सुसाइड केस था।

पुलिस को कोई संदेह-शुबहा नहीं था।

अकेलेपन से उदास अवसादग्रस्त एक अधेड़ व्यक्ति ने आत्महत्या कर ली थी तो उसमें क्या हैरानी की बात हो सकती थी?

लेकिन मृतक के जानने वाले इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं थे।

उनके मुताबिक गिरिराज वर्मा काफी सुलझे हुए इंसान थे। वो आत्महत्या करना तो दूर, आत्महत्या करने की सोच भी नहीं सकते थे।

फिर जो हुआ, वो कैसे हुआ?

पुलिस के लिए ये एक ऐसी मिस्ट्री थी, जिसे सुलझाना बेहद मुश्किल दिखाई दे रहा था।

और वो मुश्किल तब और भी बढ़ गई, जब मृतक की वसीयत पढ़ी गई।

अपनी वसीयत में उसने अपनी सारी जायदाद अपने बेटे मोहित वर्मा के नाम नहीं की थी।

अपनी बेटी मानसी सक्सेना के नाम नहीं की थी।

अपने दामाद अरविंद सक्सेना के नाम नहीं की थी।

मशहूर क्रिमिनल लॉयर गिरिराज वर्मा ने अपनी मृत्यु के बाद अपनी पूरी जायदाद-सारी चल-अचल सम्पत्ति, जिसकी वैल्यू करोड़ों रूपयों में थी-सनाया गौतम के नाम की थी।

अब ये सनाया गौतम कौन थी?

इसका पता पुलिस आज तक नहीं लगा पाई थी।

पुलिस ने मृतक के परिजनों से लेकर उसके परिचितों से, सभी से पूछताछ की लेकिन कोई भी सनाया गौतम के बारे में कुछ भी नहीं बता पा रहा था। पुलिस के लिए ये एक बड़ी पहेली थी। आखिर एकदम से जमीन फाड़ कर ये सनाया गौतम कहां से निकल आई, जिसके नाम मृतक ने अपनी पूरी प्रॉपर्टी कर दी थी?

सनाया गौतम का नाम सामने आने के बाद पूरा केस ही दक्षिण दिशा में घूम गया था। मृतक के परिजनों ने भी हत्या की आशंका व्यक्त करते हुए केस की नए सिरे से जांच की मांग की। वे पहले से ही मानने के लिए तैयार नहीं थे कि गिरिराज वर्मा आत्महत्या कर सकते थे। अब सनाया गौतम के रूप में ये नया पेंच आने के बाद उनका संदेह यकीन में बदल गया था।

पुलिस ने भी मृतक के परिजनों की मांग को स्वीकार करते हुए 'आत्महत्या के अलावा कुछ और भी' होने की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए जब नए सिरे से मामले की जांच शुरू की तो एक के बाद एक चौंका देने वाले खुलासे होने लगे।

घर के एक कमरे में-जिसमें एक मजबूत सेफ रखी रहती थी-लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज की जांच करने पर उसमें एक युवती सेफ खोल कर उसमें से नकद रकम व गहने निकाल कर एक बैग में भरती हुई साफ दिखाई दी।

मृतक की बेटी मानसी ने पुलिस को बताया कि उस तिजोरी में किसी इमरजेंसी के लिए उसके पिता ने 20 लाख रूपए की रकम रख छोड़ी थी और इसके अलावा उसकी स्वर्गीय मां के सोने-चांदी के गहने भी थे, जिनकी कीमत करीब 25 लाख रूपए थी।

यानी वो एक सीधा-सादा आत्महत्या का मामला नहीं था।

वो तो एक हत्या और 45 लाख की लूट का हाईप्रोफाइल केस था।

इसके बाद पुलिस को किसी और उत्प्रेरक की जरूरत नहीं थी। पुलिस जी-जान से केस की जांच में जुट गई। जब तक पुलिस इसे सुसाइड समझ रही थी, तब तक इन्वेस्टिगेशन भी ढीली थी लेकिन हत्या और चोरी का खुलासा होने के बाद पुलिस ने उसी स्तर की जांच भी आरम्भ कर दी। कई संदिग्धों को हिरासत में लिया गया, पूछताछ की गई। अब तक तो गिरिराज वर्मा के परिजनों, परिचितों से ही पूछताछ की जा रही थी लेकिन अब पुलिस ने उस पूरे इलाके के लोगों से पूछताछ आरम्भ कर दी।

क्या किसी ने गिरिराज वर्मा को किसी युवती के साथ घूमते देखा था?

क्या उनके घर किसी युवती का आना-जाना था?

जवाब था-हां।

वहां आसपास रहने वाले लोगों के माध्यम से पुलिस को पता चला कि करीब साल भर से एक नौजवान युवती गिरिराज वर्मा के घर में रह रही थी। वो एक बेहद पॉश इलाका था, जिसमें कई घर नए बने थे। अपने पड़ोसियों के साथ गिरिराज वर्मा का कोई विशेष उठना-बैठना नहीं था, जिसके चलते उस इलाके में उनका घर होते हुए भी घर के अंदर क्या हो रहा है, इसकी जानकारी किसी को नहीं थी। वैसे भी परिवार के नाम पर भी उनके यहां कोई नहीं था और करीब साल भर से गिरिराज वर्मा ने लोगों के यहां आना-जाना भी बेहद कम कर दिया था, जो किसी तरह के फैमिली गेट-टुगेदर में ही लोगों के बीच उठना-बैठना होता, जान-पहचान बनती। यहां तक कि किसी घर में होने वाले फंक्शन आदि के लिए भी उनको बुलावा आता था तो वे तबीयत खराब होने या कोई अन्य जरूरी काम होने का बहाना बना कर टाल जाते थे। ऐसे पॉश इलाकों में वैसे भी आस-पड़ोस में जान-पहचान न होना एक सामान्य-सी बात ही समझी जाती है। लोग सोशल मीडिया पर हजारों किलोमीटर दूर बैठे लोगों को दोस्त बना लेते हैं लेकिन उन्हें ये पता नहीं होता कि उनके पड़ोस में कौन रह रहा होता है? गिरिराज वर्मा के 'आस-पड़ोस' के मामले में भी कुछ ऐसा ही था।

लेकिन ये नियम घर में काम करने वालों, दूध वाले, अखबार वालों आदि पर लागू नहीं होता है। अमीर लोग जहां अपनी दौलत से संतुष्ट होकर अपने-आप में सीमित होने की कोशिश करते हैं, नई जान-पहचान बनाने में सावधानी बरतते हैं और अपनी रिश्तेदारी और जितनी जान-पहचान होती है, उसी में संतुष्ट रहते हैं, वहीं गरीब लोगों के लिए ये जान-पहचान ही उनकी दौलत होती है। घरेलू नौकर, माली, हॉकर आदि श्रमजीवी कम आय वर्ग के लोग एक-दूसरे से पहचान बना कर रखते हैं, जिससे वक्त-जरूरत पर एक-दूसरे के काम आ सकें।

गिरिराज वर्मा के घर के आसपास स्थित घरों में निवासरत लोगों से पूछताछ करने में पुलिस को काफी परेशानी हुई क्योंकि वे सभी काफी ऊंची पहुंच वाले, प्रभावशाली किस्म के लोग थे। यहां तक कि दो घर दूर पर तो एक विधायक का भी बंगला था। ऊपर से इन बड़े लोगों से पूछताछ में पुलिस को कोई महत्त्वपूर्ण जानकारी भी नहीं मिल सकी क्योंकि उनमें से कई तो जानते ही नहीं थे कि उस घर में गिरिराज वर्मा नाम का कोई शख्स रहता भी था। जो जानते थे, वो भी इससे ज्यादा कुछ नहीं जानते थे कि उस घर में गिरिराज वर्मा रहते थे।

लेकिन उन घरों के नौकरों, माली, दूध वालों, अखबार बांटने आने वालों हॉकरों से जब पुलिस ने पूछताछ की तो कुछ अहम जानकारी पुलिस के हाथ लगी।

उन्हीं लोगों ने पुलिस को बताया कि काफी समय से गिरिराज वर्मा के घर में एक युवती रह रही थी।

लेकिन यहां मामला और भी उलझ गया।

इलाके के ज्यादातर लोगों ने तो किसी सनाया गौतम-या गिरिराज वर्मा के घर में वो जो भी लडक़ी रह रही थी-उसे देखा तक नहीं था।

और जिन्होंने देखा था, उन्हें उसके लडक़ी होने पर ही विश्वास नहीं था।

लडक़ी क्या इंसान होने पर ही भरोसा नहीं था।

उन लोगों को मानना था कि गिरिराज वर्मा के घर पर किसी चुड़ैल का काला साया था।

सनाया गौतम के नाम से गिरिराज वर्मा के घर जो लडक़ी रह रही थी, वो कोई जीवित इंसान नहीं बल्कि एक चुड़ैल थी। उसी के असर के कारण गिरिराज वर्मा ने घर से बाहर आना-जाना तक छोड़ दिया था, दोस्तों से मिलना-जुलना तक बंद कर दिया था। जिन लोगों ने उस लडक़ी को एकाध बार देखा था, जो पुलिस को गवाही दे सकते थे, वो सनाया गौतम का नाम सुनकर ही कांप जाते थे और ईश्वर का नाम जपने लगते थे।

पुलिस के लिए ये काफी परेशानी वाली बात थी। पुलिस को बार-बार उन गवाहों को समझाना पड़ता था कि भूत-प्रेत कुछ नहीं होता। उन्होंने अगर किसी लडक़ी को देखा था तो वो लडक़ी ही थी, कोई भूत या चुड़ैल नहीं।

लेकिन लोग पुलिस की बात मानने के लिए तैयार ही नहीं होते थे।

उनके पास अपनी दलीलें थीं।

जैसे वो लडक़ी छिपकर क्यों रहती थी?

वो दिन के समय घर से बाहर क्यों नहीं निकलती थी?

वो इतने कम लोगों को ही क्यों दिखाई देती थी?

पहले तो गिरिराज वर्मा के घर में और कोई था ही नहीं।फिर वो लड़की अचानक कहां से आ गई? और आई तो इतने गुपचुप तरीके से कैसे कि किसी को भनक तक नहीं लगी?

जैसे-जैसे पुलिस आगे जांच करती रही, वैसे-वैसे पुलिस के सामने ये बात साफ होती गई कि सनाया गौतम के चुड़ैल होने की वो अफवाह कोई एकदम से नहीं उड़ी थी। वो घर काफी समय से वीरान पड़ा था और ऐसे घरों को लोग आम तौर पर भूत-बंगले का तमगा दे दिया करते हैं। कई सालों से खाली पड़े उस घर को करीब साल भर पहले ही गिरिराज वर्मा

ने खरीदा था लेकिन जिस प्रकार वे रहस्यमयी ढंग से उस घर में रहते रहे, उससे उस घर से जुड़ी भूत-प्रेत, चुड़ैल सम्बंधी अफवाहें लोगों को और भी ज्यादा विश्वसनीय लगने लगीं। खास तौर पर उस लडक़ी को लोग काफी रहस्यमयी मानते थे, जो कि उस घर में गिरिराज वर्मा के साथ रहती तो थी लेकिन बहुत कम ही दिखाई देती थी। न घर से बाहर निकलती थी, न कहीं आती-जाती थी। कभी-कभार ही दिखने वाली उस लडक़ी को लेकर लोगों ने तरह-तरह की कहानियां बनानीं भी शुरू कर दी थीं लेकिन वो कहानियां अंधविश्वास पर ही आधारित थीं। गिरिराज वर्मा के कत्ल से भी काफी पहले से कॉलोनी में उस तरह की चर्चाएं होने लगीं थीं। रात के समय लोग उस घर की ओर जाना भी पसंद नहीं करते थे। हालांकि सभी लोगों के साथ ऐसा नहीं था। कई लोग तो इस तरह की अफवाह से बिल्कुल ही अनजान थे। बिल्कुल उसी तरह, जिस तरह वे इस बात से अनजान थे कि गिरिराज वर्मा के घर में उनके साथ कोई लडक़ी भी रहती थी। लेकिन उन बंगलों में काम करने वाले लोगों में से बहुत से लोग उस चुड़ैल वाली बात पर यकीन करते थे।

लेकिन पुलिस को गिरिराज वर्मा के कातिल को गिरफ्तार करना था। किसी चुड़ैल को बोतल में बंद नहीं करवाना था।

उस अंधविश्वास, अफवाहों के बीच पुलिस ने अपनी जांच जारी रखी। जांच में पता चला कि कुछेक ने गिरिराज वर्मा को कभी-कभार उस युवती को ‘सनाया’ नाम से पुकारते भी सुना था। गिरिराज वर्मा का अपना कोई निजी नौकर तो नहीं था लेकिन आसपास के अन्य लोगों से पुलिस को इस सिलसिले में जो भी जानकारी मिली, वो पुलिस के लिए काफी महत्त्वपूर्ण थी। सनाया नाम की वो युवती करीब साल भर से वकील साहब यानि गिरिराज वर्मा के साथ में उन्हीं के घर में रह रही थी। लोगों ने यदा-कदा ही उन्हें घर से बाहर निकलते देखा था। और जब निकलते भी थे तो भी दोनों को कभी एक साथ निकलते शायद ही किसी ने देखा हो। लोगों के बयान के अनुसार कभी-कभी तो हफ्ते-दो हफ्ते उस घर से कोई आते-जाते नहीं दिखता था तो वे समझने लगते थे कि घरवाले-यानी वकील साहब और वो युवती-घूमने के लिए कहीं बाहर गए हुए थे। वो लडक़ी वकील साहब की कौन थी, ये भी लोगों के लिए आश्चर्य का विषय था क्योंकि वे लोग जानते थे कि वकील साहब के परिवार में केवल एक बेटा और बेटी ही हैं, जिनमें बेटा विदेश में काम करता है और बेटी विवाहित है। अपने पति के साथ रहती है।

फिर वो युवती कौन थी?

कौन थी सनाया गौतम?

युवती के सरनेम की पुष्टि पुलिस आसपास के लोगों से पूछताछ में नहीं कर सकी लेकिन गिरिराज वर्मा द्वारा एक-दो बार उसे सनाया के नाम से बुलाए जाने का पता चलने पर

पुलिस इस निष्कर्ष पर पहुंची कि वो सनाया ही सनाया गौतम थी, जिसका जिक्र गिरिराज वर्मा की वसीयत में अपने वारिस के रूप में किया गया था।

नामी वकील गिरिराज वर्मा पिछले एक साल से सामाजिक जीवन से कट कर इस तरह अकेले घर में एक युवती के साथ रह रहा था, इतने रहस्यमयी ढंग से मारा गया, मरने से पहले उसने अपनी जायदाद भी अपने बेटे-बेटी या दामाद के नाम पर करने के स्थान पर उस रहस्यमयी युवती के नाम पर कर दी-जो कि इस केस में पुलिस को ही नहीं बल्कि उसके परिजनों को भी आसमान से टपकी हुई लग रही थी-पूरी की पूरी जायदाद उसके नाम पर कर दी, एक सिक्का-कौड़ी तक अपने परिवार के किसी और सदस्य के नाम पर करने की जहमत मकतूल ने नहीं उठाई और वकील गिरिराज वर्मा की उस बेहद रहस्यमयी मृत्यु के बाद उसकी करोड़ों रूपए की प्रॉपर्टी की वारिस सनाया गौतम भी इस तरह गायब हो गई, जैसे कभी वहां थी ही नहीं।

पुलिस के लिए ये केस किसी पिछले तीन महीने से बड़ा सिरदर्द साबित हो रहा था।

पहले केस में पुलिस के पास कोई सुराग नहीं थे। क्योंकि पुलिस ने सुराग ढूंढने की उतनी जरूरत ही नहीं समझी थी। क्योंकि तब वो पुलिस को आत्महत्या का केस लग रहा था।

फिर सनाया गौतम का नाम सामने आने के बाद हत्या का मामला लगने पर नए सिरे से जांच करने पर पुलिस को कई सबूत मिले, उस सनाया गौतम के बारे में पता चला, जिसका पहले कोई अस्तित्त्व ही नहीं लग रहा था, जो मकतूल की करोड़ों की प्रॉपर्टी की वारिस बन बैठी थी।

लेकिन सनाया गौतम के मामले में पुलिस एक बार फिर 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस' वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए सबूतों के अभाव वाली जगह पर आ गई थी।

अब पुलिस को ये तो पता था कि कोई सनाया गौतम थी, जो गिरिराज वर्मा के साथ रहती थी लेकिन पुलिस को ये नहीं पता था कि वो कौन थी, कहां से आई थी और कहां चली गई थी?

उसके इस तरह से रहस्यमयी ढंग से गायब हो जाने का एक ही मतलब समझ में आता था।

लम्बी-जांच पड़ताल के पश्चात पुलिस इस निष्कर्ष पर पहुंची कि घर में सेफ से हुई लूट की घटना के सीसीटीवी फुटेज में दिख रही युवती सनाया गौतम ही थी।

और गिरिराज वर्मा ने भी आत्महत्या नहीं की थी।

उनकी हत्या की गई थी।

गिरिराज वर्मा की हत्या के बाद सेफ से लाखों रूपए लूट कर भाग निकलने वाली वो लडक़ी-सनाया गौतम-ही उनकी कातिल हो सकती थी।

इसके पीछे पुलिस की थ्योरी ये थी कि गिरिराज वर्मा समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे और वैसे ही लोगों के बीच उनका उठना बैठना था। गिरिराज वर्मा के खुद के जवान बेटा-बेटी थे। ऐसे में उम्र की इस ढलान पर वे किसी नौजवान युवती के साथ रास रचाते अच्छे नहीं लगते। वो चीज समाज में उनकी पूरी प्रतिष्ठा धूमिल होने का कारण बन सकती थी। लेकिन उस युवती-उस सनाया गौतम ने-उन पर कुछ ऐसा जादू चलाया कि वो सब कुछ दांव पर लगाने के लिए तैयार हो गए। अपनी मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा, सब कुछ।

लेकिन वर्षों की मेहनत और तपस्या से कमाया मान-सम्मान गंवाना आदमी के लिए इतना आसान नहीं होता।

इसीलिए गिरिराज वर्मा खुल्लमखुल्ला उस लडक़ी के साथ रास रचाते नजर नहीं आए। उन्होंने बड़ी होशियारी से, योजनाबद्ध ढंग से समाज से दूरी बनानी शुरू की। पहले सामाजिक कार्यक्रमों में जाना कम किया, यार-दोस्तों, परिचितों के बीच उठना-बैठना कम किया और धीरे-धीरे उस मुकाम पर पहुंच गए, जहां वो जाना चाहते थे।

एकांतवास में।

जो कि वास्तव में एकांतवास था भी नहीं।

उन्होंने तो उस घर को अपना ‘लव नैस्ट’ बना लिया था, जहां वे दुनिया की नजरों से दूर, बेफिकर होकर मनमाने ढंग से जिंदगी जी सकें और किसी बदनामी की भी चिंता न हो।

करीब साल भर तक उस घर में गिरिराज वर्मा के साथ रही उस लडक़ी-उस सनाया गौतम ने-गिरिराज वर्मा पर अपना रंग इतना पक्का कर लिया कि उन्होंने अपनी पूरी जायदाद ही उसके नाम कर दी। गिरिराज वर्मा की नई वसीयत कुछ ही दिन पुरानी थी, जिससे साफ जाहिर था कि प्रॉपर्टी अपने नाम कराने के बाद गिरिराज वर्मा सनाया गौतम के किसी काम के नहीं थे।

तो उसने भी उन्हें अपने रास्ते से हटाने में ज्यादा देर नहीं लगाई।

ये था नैनीताल का इस साल का बहुचर्चित हत्याकाण्ड।

बाहर बारिश तेज हो गई थी।

इंस्पेक्टर वैभव केस के बारे में इतनी जानकारी देने के बाद खामोश हो गया था। अरविंद भी कमरे में आ गया था और उन्हीं के साथ सोफे पर बैठकर पूरी बात सुन रहा था।

''मर्डर के बारे में कैसे पता चला?''-मोहित ने मौन तोड़ा।

''क्या?''-इंस्पेक्टर वैभव ने कहा।

''पापा सुसाइड तो नहीं कर सकते थे। लेकिन आपने बताया नहीं कि पुलिस को कैसे पता चला कि ये सुसाइड नहीं मर्डर था?''

''तो बता देता हूं।''-वैभव धैर्यपूर्वक बोला-''पहली बात तो ये है कि घटना के शुरू में ही हमें सुसाइड वाली बात पर शक था हालांकि पहली नजर में मामला आत्महत्या का ही लगता था। शक इसलिए था क्योंकि जिस रिवॉल्वर का प्रयोग किया गया था, उस पर साइलेंसर लगा था। आत्महत्या करने का इरादा करने वाले शख्स को दुनिया की परवाह नहीं होती। उसके लिए तो एक पल में दुनिया ही खत्म हो जानी होती है। फिर वो इस बात की परवाह नहीं करता कि वो खुद को शूट कर रहा है तो उससे आवाज होगी या नहीं। गोली की आवाज दबाने की मंशा एक कातिल की हो सकती है, आत्महत्या करने वाले की नहीं। इसके अलावा सुसाइड की जैसी स्टेज सैट की गई थी, उसके अनुसार वकील साहब का खुद गोली चलाना भी जरूरी था।''

''तो?''

''लेकिन उन्होंने गोली नहीं चलाई थी।''

''क्या मतलब?''

''रिवॉल्वर बॉडी के पास ही पड़ी मिली थी। उस पर वकील साहब की उंगलियों के निशान भी थे लेकिन''-इंस्पेक्टर लेकिन शब्द पर जोर देकर एक क्षण के लिए रूका-''उनके हाथों के पैराफीन टेस्ट में पता चला कि उन्होंने फायर नहीं किया था।''

''पैराफीन टेस्ट?''

''इस टेस्ट में''-अरविंद बीच में बोला-''हाथों पर मोम का इस्तेमाल कर पता लगाया जाता है कि आदमी ने गोली चलाई है या नहीं। यदि गोली चलाई होती है तो फायर करने पर बंदूक से उछले बारूद के कण हाथ पर लग जाते हैं, जो पैराफीन टेस्ट में सामने आ जाते हैं।''

‘‘आपके पिता के हाथों से ऐसे कोई बारूण के कण नहीं मिले।’’-इंस्पेक्टर ने कहा-‘‘क्योंकि उन्होंने गोली चलाई ही नहीं थी। ये साबित करने के लिए काफी है कि गोली किसी और ने चलाई थी और हत्या को आत्महत्या का रूप देने के लिए रिवॉल्वर उनके हाथ में थमा कर उस पर उनके फिंगरप्रिंट्स लिए, फिर रिवॉल्वर को वहीं गिर जाने दिया, जैसे खुद को शूट करने के बाद उन्हीं के हाथ से छूट कर गिरी हो।’’

कुछ क्षण कमरे में सन्नाटा छाया रहा, फिर मोहित ने पूछा-‘‘और सनाया गौतम का क्या हुआ?’’

‘‘नैनीताल की 50 हजार पब्लिक आज यही जानना चाहती है’’-वैभव ने गहरी सांस लेकर कहा-‘‘कि सनाया गौतम का क्या हुआ? उस रहस्यमयी लडक़ी का क्या हुआ, जिसने एक अच्छे-भले आदमी की जिंदगी तबाह करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पहले उसे समाज से दूर कर दिया, उसकी सोशल लाइफ खत्म कर दी, उसके बेटे-बेटी से उसकी प्रॉपर्टी तक छीन ली और इसके बाद भी जब उसका मन नहीं भरा तो उसकी जान भी ले ली। और इतना सब कुछ करने के बाद ऐसे गायब हो गई, जैसे कभी वहां थी ही नहीं। तीन महीनों से’’-इंस्पेक्टर ने अपने हाथ को आगे करके तीन उंगलियां हवा में लहराईं-‘‘तीन महीनों से पुलिस नैनीताल ही नहीं बल्कि पूरे उत्तराखण्ड में उस लडक़ी की तलाश कर रही है। लेकिन उसका मिलना तो दूर की बात उसका कोई सुराग तक नहीं मिल पाया है।’’

‘‘लेकिन वो मिल जाएगी।’’-अरविंद जल्दी से बोला, जैसे मोहित को सांत्वना दे रहा हो-‘‘वो हमेशा छिपकर थोड़े ही रह सकती है। एक न एक दिन तो पकड़ी ही जाएगी।’’

‘‘उसे ढूंढने के लिए पुलिस क्या कर रही है?’’-मोहित ने सवाल किया।

‘‘सब कुछ। जो किया जा सकता है। जिला स्तर से ऊपर उठकर अब पूरे प्रदेश में उसकी तलाश की जा रही है। सारे पुलिस थानों-चौकियों में उसके बारे में...।’’

‘‘मेरा मतलब है कि’’-मोहित बोला-‘‘क्या उसकी कोई तस्वीर है? उसके बारे में कोई और जानकारी, उसके बैकग्राउण्ड से संबंधित कुछ जानकारी पुलिस को मिली है या नहीं? आखिर उसे ढूंढने के लिए किस चीज का इस्तेमाल किया जा रहा है?’’

इंस्पेक्टर एक क्षण खामोश रहा, फिर बोला-‘‘उसके न मिलने की ये भी एक बड़ी वजह है। हमारे पास उसकी कोई तस्वीर नहीं है।’’

‘‘आपने बताया एक वीडियो में वो घर की सेफ से चोरी करते हुए दिखाई दी।’’

‘‘जिस वीडियो में’’-वैभव ने बोलना जारी रखा-‘‘वो आपके पिता के घर में सेफ में चोरी करती हुई दिख रही है, उसमें भी उसका चेहरा कैप्चर नहीं हुआ है। कमरे में आने से लेकर

सेफ खोलकर उसमें से गहने और रूपये निकालने के पूरे समय में उसने अपना चेहरा दूसरी ओर घुमा रखा था। इतना ही नहीं, उसने चेहरे पर दुपट्टा भी बांध रखा था। ऐसा भी हो सकता है-बल्कि इसी बात की सम्भावना अधिक है-कि उसे उस सीसीटीवी कैमरे का पता हो और वो जानबूझकर चेहरा छिपा रही हो। घर के आसपास रहने वाले जिन गिने-चुने लोगों ने उसे देखा, उनकी सहायता से हमने एक ड्राइंग जरूर बनवाई है लेकिन वो ड्राइंग कितनी सही है, ये कहना मुश्किल है। जिनसे हुलिया पूछ-पूछकर वो ड्राइंग बनवाई गई है, वो लोग खुद भी उक्त ड्राइंग को लेकर आश्वस्त नहीं लग रहे थे क्योंकि उन्होंने एक-दो बार ही सनाया गौतम की झलक ही देखी थी। जिसके आधार पर वो हमें उसका कोई पक्का हुलिया नहीं बता सकते। हां, इतना तो सबका कहना है कि वो बला की खूबसूरत थी।

‘‘बला की खूबसूरत क्या थी’’-अरविंद ने कहा-‘‘बला ही थी।’’

‘‘फिलहाल सनाया गौतम की जो पूरे प्रदेश में तलाश की जा रही है, उसमें इसी ड्राइंग का उपयोग किया जा रहा है। लेकिन अब तक हमें जिस तरह उसका कोई पता नहीं चल पाया है, उससे तो यही लगता है कि वो ड्राइंग यूजलैस है। किसी काम की नहीं है।’’

‘‘क्या आप मुझे वो ड्राइंग दिखा सकते हैं?’’

वैभव ने अपनी जेब से मोबाइल निकाला, फिर उसकी गैलरी में जाकर तस्वीर ढूंढी, जो कि उस ड्राइंग की स्कैन की हुई जेपीजी इमेज थी, फिर मोहित से बोला-"आपका नम्बर?"

मोहित ने वैभव को अपना नम्बर बताते हुए तस्वीर सेंड करने को कहा। वैभव ने उसे तस्वीर के साथ ही एक वीडियो भी सेंड किया।

मोहित के मोबाइल पर दो फाइलें रिसीव हुईं।

‘‘फोटो के साथ’’-वैभव बोला-‘‘उस सीसीटीवी कैमरे की फुटेज का वीडियो भी है, जिसमें वो लडक़ी आपके घर की सेफ खोलकर उसमें से गहने और रूपये चोरी करती दिख रही है।’’

‘‘घर में सीसीटीवी कैमरे लगे थे’’-मोहित बोला-‘‘तो उसमें पुलिस को किसी और फुटेज में सनाया गौतम क्यों नहीं दिखाई दी? मतलब ऐसा कहा जा रहा है न कि वो साल भर से पापा के साथ उस घर में रह रही थी। तो उसके घर में घूमते हुए या कोई और फुटेज जिसमें वो थी पुलिस को क्यों नहीं मिला?’’

‘‘क्योंकि पूरे घर में एक ही सीसीटीवी कैमरा लगा था और वो भी बस उस सेफ वाले कमरे में। और उस कैमरे की पूरी रिकॉर्डिंग हमने खंगाल डाली है, उसमें कभी आपके पापा के अलावा कोई और उस कमरे में आता नहीं दिखा। शायद वे उस कमरे को भी लॉक रखते

थे। हालांकि पुलिस जब पहुंची थी तो सेफ वाले कमरे का दरवाजा खुला था। वैसे भी वो कमरा घर में थोड़ा अलग-थलग बना हुआ है। उसमें जाए बिना भी घर के बाकी हिस्से में घूमा जा सकता है।''

''फिर भी वो लडक़ी उस घर में रहती रही और उस कमरे में नहीं गई, वीडियो रिकॉर्डिंग में नहीं आई, ये अजीब नहीं है?''

''अजीब तो है। लेकिन अगर कमरे पर लॉक रहता हो तो वो उस में जा भी तो नहीं सकती थी। और वैसे भी जिस कमरे में सेफ में इतना कीमती सामान, लाखों रूपये रखें हों, उसे अगर वकील साहब लॉक करके रखते थे, तो उसमें भला हैरानी की क्या बात है? वो भी तब, जब उनके साथ घर में एक ऐसी रहस्यमयी लडक़ी रहती थी।''

''रहस्यमयी?''

''तो और क्या? साल भर तक इतने चोरी-छिपे उस घर में रहती रही, ऐसे दबे पांव आपके पिता के जीवन में आई कि आप लोगों को भी भनक तक नहीं लग सकी, फिर उससे भी ज्यादा रहस्यमयी ढंग से गायब हो गई। रहस्यमयी नहीं तो और क्या कहूं? मुझे तो वहां उल्टे पैरों के निशान भी मिल जाते तो भी कोई हैरानी नहीं होती। और आपने अभी-अभी जो सीसीटीवी कैमरे में उसकी कोई अन्य फुटेज नहीं आने की बात की है न, उसके लेकर भी उस कॉलोनी में यही चर्चा होती है कि वो सनाया गौतम चुड़ैल थी, कोई आत्मा थी, इसलिए साल भर तक उस घर में रहती रही लेकिन सीसीटीवी में उसका कोई और फोटो नहीं आया। वहां के आसपास के तो बहुत से लोग वैसे भी उस सनाया गौतम को हन्ड्रेड परसेंट चुड़ैल मानते हैं। ''

''आपकी बात से तो लग रहा है कि आप भी मानते हैं।''

''मैं नहीं मानता। लेकिन मामला ही कुछ ऐसा है कि कई बार ऐसी चीजों के बारे में भी सोचना पड़ता है, जिन पर न हम विश्वास करते हैं और न जिनके बारे में सोचना चाहते हैं।''

मोहित ने मोबाइल में वैभव द्वारा भेजे गये फोटो पर नजर डाली। वो हाथ से बनाई एक बेहद खूबसूरत लडक़ी की पेंटिंग थी हालांकि उस लडक़ी को मोहित ने अपनी जिंदगी में कभी नहीं देखा था।

फिर मोहित ने वीडियो भी प्ले करके देखा। वीडियो ज्यादा बड़ा नहीं था। मुश्किल से पांच मिनट का वीडियो था, जिसमें एक कमरे का दृश्य था। एक युवती उस कमरे में प्रवेश करती है, सेफ के सामने बैठकर उसमें पासवर्ड डालती है-जिसे देख कर मोहित को आश्चर्य का झटका लगा क्योंकि उसकी जानकारी में उस सेफ का पासवर्ड तीन ही लोग जानते थे, एक खुद उसके पिता गिरिराज वर्मा, दूसरा मोहित और तीसरी मानसी। यानि वो पासवर्ड उनके

परिवार तक ही सीमित था-पासवर्ड डालने के बाद वो युवती सेफ खोलकर उसमें से गहने और नोटों की गड्डियां निकालकर तेजी के साथ अपने साथ लाए एक बैग में भरती है और फिर सेफ को बंद करके कमरे से बाहर निकल जाती है।

इस पूरी गतिविधि के दौरान युवती ने अपना चेहरा झुकाया हुआ था। इतना ही नहीं उसने चेहरे पर दुपट्टा भी बांधा हुआ था, जिससे अगर उसका चेहरा कैमरे की ओर होता भी तो भी उसे पहचान पाना मुश्किल होता।

कौन थी वो लडक़ी? जिसके पास उनके घर की सेफ का पासवर्ड तक था।

अपने उस सवाल के जवाब में मोहित के जेहन में एक ही नाम उभर कर सामने आया।

सनाया गौतम!

‘‘तो’’-तभी इंस्पेक्टर की आवाज ने मोहित को उसके ख्यालों की दुनिया से बाहर ला दिया-‘‘क्या कहते हैं आप?’’

‘‘मैं?’’-मोहित बोला।

‘‘जी हां। आप।’’

‘‘मुझे क्या कहना है। आपका धन्यवाद आपने मुझे ये सब जानकारी दी...।’’

‘‘सिर्फ धन्यवाद से काम नहीं चलेगा, मिस्टर मोहित।’’

मोहित ने अरविंद की ओर देखा, फिर प्रश्नसूचक नजरों से इंस्पेक्टर की ओर देख कर पूछा-‘‘बताइए, क्या सेवा कर सकता हूं मैं आपकी?’’

‘‘आपको इस पूरे केस की जानकारी चाहिए थी, जो मैंने दे दी। कुछ मुझसे रह गया हो, मुझे बाद में याद आया तो मैं वो आपको बाद में बता दूंगा। कुछ आपको पूछना हो तो आप पूछ लीजिए। लेकिन यहां मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि आप वो शख्स हैं, जो इस केस की जांच में अहम कड़ी साबित हो सकते हैं। आपसे पूछताछ करने के लिए हमें बहुत लम्बा इंतजार करना पड़ा है, जो कि आमतौर पर ऐसे केसेज में नहीं होता है। आप विदेश में थे, बिजी थे, वो सब मान लीजिए एक बार को कि मैं समझ गया। लेकिन अब तो आप यहां आ गए हैं। मेरे सामने मौजूद हैं। तो अपने पिता से सम्बंधित सवालों का जवाब देने में आपको कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए।’’

‘‘ओह। मुझे क्या दिक्कत हो सकती है? मैं तो आप लोगों का-पुलिस का-शुक्रगुजार हूं कि आप लोग उस सनाया गौतम को ढूंढ हे हैं। पूछिए। क्या पूछना चाहते हैं?’’

‘‘आपके पिता का चरित्र कैसा था?’’

‘‘जी?’’

‘‘मेरा मतलब आपके हिसाब से। वैसे तो आपकी बहन, जीजा जी सहित कई लोगों से मैं इस बारे में पूछताछ कर चुका हूं लेकिन केस की इन्वेस्टिगेशन ऐसे ही होती है। बार-बार वही प्रश्न दोहराने पड़ते हैं। ये जानते हुए भी कि जवाब क्या होगा, सवाल पूछने पड़ते हैं। तो आपके पिता जी के चरित्र के बारे में अच्छे से जानते हुए भी मैं आपसे ये सवाल पूछ रहा हूं।’’

मोहित एक क्षण चुप रहा, फिर बोला-‘‘पापा एक बेहद आदर्शवादी, सिद्धांतवादी शख्स...थे’’-‘थे’ कहते हुए मोहित को अपने गले में कुछ अटकता-सा महसूस हुआ-‘‘वो अपने उसूलों से समझौता नहीं करते थे। अपने निर्णयों पर अडिग रहते थे। उन्हें उनके सिद्धांतों से कोई नहीं डिगा सकता था।’’

‘‘लेकिन जीवन के अंतिम दौर में तो वो डिग गए।’’

‘‘क्या मतलब?’’

‘‘एक अजनबी हसीना के बहकावे में आ गए। जिसने नागिन बनकर आपके परिवार की खुशियों को डंस लिया।’’

‘‘आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?’’-मोहित बोला-‘‘कि वो उस अजनबी हसीना के बहकावे में आ गए थे?’’

वैभव के होंठों पर मुस्कान आ गई।

‘‘क्या हुआ?’’-मोहित ने स्वर को सामान्य रखने की कोशिश करते हुए पूछा। वो इंस्पेक्टर को नाराज नहीं करना चाहता था। उसने मोहित को उसके पिता के केस के बारे में बहुत सारी जानकारी दी थी।

‘‘आपने अभी-अभी अपने पिता के बारे में बहुत बड़ी-बड़ी बातें कहीं।’’-वैभव ने भी शांत स्वर में कहा-‘‘माता-पिता औलाद की निगाहों में हमेशा ऊंचे ही होते हैं। देवता ही होते हैं। खासतौर पर तब जब बच्चों ने माता-पिता का अच्छा वाला रूप ही देखा हो। ऐसे में अगर उन्हें अपने माता-पिता के किसी गलत कृत्य का पता चले तो उनके लिए विश्वास करना मुश्किल होता है कि वो ऐसा कर सकते हैं। वैसे भी गिरिराज वर्मा तो सचमुच बहुत अच्छे इंसान थे। आप तो उनके बेटे हैं, उनके जानने वाले और भी बहुत से लोग उनके चरित्र की कसमें खाते हैं लेकिन वक्त बदलते देर नहीं लगती। देयर इज फर्स्ट टाइम फॉर एवरीथिंग। आपके विदेश चले जाने और आपकी बहन की शादी हो जाने के बाद एक लम्बा अरसा उन्होंने अकेले रहते हुए बिताया। ऐसे में कोई जवान खूबसूरत लडक़ी उनकी जिंदगी में

आई तो उनका उसकी ओर आकर्षित हो जाना क्या बड़ी बात थी? वो भी तब, जब वो लडक़ी खुद उन्हें अपने जाल में फंसाना चाहती हो, एक मिशन की तरह ऐसा करने के लिए काम कर रही हो। कौन जाने, उन्हें सिड्यूस करने के लिए उसने क्या नहीं किया होगा...।''

''आप जो कह रहे हैं''-मोहित ने वैभव की बात बीच में ही काट दी-''ये सब थ्योरी ही हो तो है। इसका कोई सबूत तो नहीं है कि उस लडक़ी ने पापा को अपने...अपने जाल में फंसाया था।''

''आपके लिए ये मानना मुश्किल हो सकता है क्योंकि वो आपके पिता थे। लेकिन एक इन्वेस्टिगेटर के पॉइंट ऑफ व्यू से देखेंगें तो बात आपकी समझ में आ जाएगी। आपको लगता है कि इस बात का कोई सबूत नहीं है कि उस लडक़ी ने आपके पापा को अपने जाल में फंसाया था? करोड़ों की जायदाद तो उस लडक़ी ने आपके पापा से अपने नाम करवा ही ली थी, आपके या किसी के भी नाम एक कानी कौड़ी तक नहीं छोड़ी, इससे बढक़र आपको और क्या सबूत चाहिए? यही सबूत ये साबित करने के लिए काफी है कि उस लडक़ी के जादू में आपके पिता इतने बेबस हो गए थे कि उनमें अपना, अपने परिवार का अच्छा-बुरा समझने तक का होश नहीं रह गया था। वरना वो किसी हालत में ऐसा कदम नहीं उठाते।''

मोहित चुप रहा। इंस्पेक्टर गलत नहीं कह रहा था।

''और इतने पर भी आपको संतोष नहीं हो तो''-वैभव गहरी सांस लेकर बोला-''तो फिर मुझे मजबूरन आपको पूरा खाका खींचकर समझाना पड़ेगा।''

''मतलब?''

''आपके पिता के घर की तलाशी में पुलिस को ऐसी बहुत सी आपत्तिजनक चीजें मिलीं थीं, जिनके वहां मिलने की-ऐसे संभ्रांत, समाज में प्रतिष्ठित इंसान के घर पर मिलने की-उम्मीद हमें नहीं थीं।''

''आपत्तिजनक चीजें? कैसी आपत्तिजनक चीजें?''

''अश्लील किताबें। भारी मात्रा में पोर्न। गंदी तस्वीरों के पूरे-पूरे एलबम। महंगी एग्जॉटिक लॉँजियरी का पूरा का पूरा कलेक्शन। और भी बहुत कुछ।''

मोहित अवाक रह गया।

''ऐसा नहीं हो सकता।''-फिर वो बोला।

''ऐसा ही हुआ था।''-वैभव शांत स्वर में बोला-''यहां तक कि हम पर-पुलिस पर-वकील साहब की प्रतिष्ठा धूमिल होने से बचाने के लिए इस बात को छिपाने के लिए ऊपर से इतना

दबाव डाला गया कि हमें मजबूरन इन चीजों की बरामदगी सिर्फ 'कुछ आपत्तिजनक चीजों' के रूप में दर्शा कर छिपानी पड़ी। मीडिया को उसकी डिटेल तक नहीं दी गई कि वो आपत्तिजनक सामग्री आखिर थी क्या? इसीलिए अखबारों में उस बरामदगी के बारे में ज्यादा कुछ नहीं छपा। जो कि आपके परिवार की प्रतिष्ठा के हित में ठीक ही हुआ। क्योंकि अगर छप जाता तो...।''-वैभव ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।

मोहित स्तब्ध सा अपनी जगह पर बैठा रहा।

''वो कुछ आपत्तिजनक चीजें-जिनके नाम मैंने अभी-अभी आपको गिनाए हैं-इतनी ज्यादा थीं कि-मुझे बेहद अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है-आज तक हमने किसी रण्डीखाने से भी बरामद नहीं कीं...।''

''इंस्पेक्टर...।''

''मुझे नाराजगी दिखाने की जरूरत नहीं है, मिस्टर मोहित।''-वैभव सख्त स्वर में बोला-''मैं यहां आपकी दिलजमई करने के लिए नहीं आया हूं। वकील साहब मेरे दोस्त हैं इसलिए इनकी रिक्वेस्ट पर ये सब आपको बता रहा हूं। जो कुछ हुआ, जो चीजें बरामद हुईं, मैं उन्हीं के बारे में आपको बता रहा हूं। आप पर कोई व्यक्तिगत आक्षेप या टीका-टिप्पणी नहीं कर रहा हूं। आपको तो मैं जानता भी नहीं। हां, आपके पिता जी को जरूर जानता था इसलिए मुझे खुद भी हैरानी है कि जो कुछ हुआ वो आखिर कैसे हुआ?''

''मोहित।''-अरविंद ने कहा-''इंस्पेक्टर साहब सही कह रहे हैं। वो सब...सचमुच अंकल के घर से बरामद हुआ था।''

मोहित का दिमाग सांय-सांय कर उठा।

''उस सामान की बरामदगी से''-वैभव ने बोलना जारी रखा-''ऐसा लगता था, जैसे उस जगह को अय्याशी का अड्डा बना रखा गया हो। और वो लडक़ी-वो सनाया गौतम-जिसे आपके पिता सारी दुनिया से छिपाकर अपने साथ उस घर में रखे हुए थे, उसके साथ एकांतवास में रह रहे थे। अब भी आपको और सबूत चाहिए कि उस सनाया गौतम ने आपके पिता को अपने जाल में नहीं फंसा रखा था? अगर वैसा नहीं था मिस्टर मोहित तो फिर उसका उलट था। फिर आपके पिता ने उस लडक़ी को अपने जाल में फंसा रखा था। लेकिन उनके पुराने रिकॉर्ड को देखते हुए ये बात गले से नीचे नहीं उतरती, जिसके चलते फिलहाल पुलिस का मानना यही है कि उस लडक़ी ने ही आपके पिता को फंसाया था। अगर आप दूसरी बात को मानना चाहते हैं तो ये आप की इच्छा है। हमें उससे क्या दिक्कत हो सकती है?''

मोहित कुछ नहीं बोला।

‘‘अच्छा।’’-वैभव उठते हुए बोला-‘‘तो अब मैं चलता हूं। बहुत वक्त हो गया है। बारिश भी थम गई है। अभी निकल जाऊंगा तो बारिश के कारण दिक्कत नहीं होगी...।’’

‘‘अरे नहीं।’’-अरविंद ने प्रतिरोध जताया-‘‘आपको डिनर करके जाना होगा।’’

‘‘नहीं, भाई।’’-वैभव ने अरविंद का कंधा थपथपाया-‘‘डिनर फिर कभी सही। अभी के लिए विदा दीजिए।’’

अरविंद इंस्पैक्टर को छोडऩे बाहर तक गया।

बाहर सचमुच बारिश बंद हो गई थी। हल्की-हल्की बूंदे ही पड़ रहीं थीं, जिसमें पांच-दस मिनट भी खड़े रहे तो भी भीगने जैसी हालत तो नहीं होती। आसपास कहीं गढ्ढों में भरे पानी में गिरती बारिश की बंूदों की आवाज मधुर संगीत की तरह लग रहीं थीं।

‘‘लेकिन सचमुच’’-अरविंद वैभव के साथ उसकी मोटरसायकल की ओर बढ़ते हुए बोला, जो घर के आंगन में ही खड़ी थी-‘‘ये बात बहुत हैरान करने वाली है कि कुछ लोगों को ये भूत-प्रेत का काम भी लगता है।’’

‘‘भूत-प्रेत?’’-वैभव ने मोटरसायकल पर बैठते हुए प्रश्रसूचक निगाहों से अरविंद की ओर देखा।

‘‘सनाया गौतम। कुछ लोग अंकल के मर्डर को चुड़ैल की करतूत भी मानते हैं। ऐसा मानते हैं कि उनके साथ वो जो लडक़ी रह रही थी, जिसे हम लोग सनाया गौतम समझते हैं-वो लडक़ी थी ही नहीं। आत्मा थी। उस घर पर चुड़ैल का काला साया था।’’

‘‘मैं आपको बता नहीं सकता, अरविंद जी’’-इंस्पेक्टर बोला-‘‘कि इस केस की जांच में मेरा कितना दिमाग खराब हुआ है। सनाया गौतम के चुड़ैल होने को लेकर वहां के लोग ऐसी-ऐसी दलीलें देते हैं कि सुनकर किसी का भी दिमाग घूम जाए। ऐसे ही एक कुत्ते की पूंछ जैसे गवाह से मेरा पाला पड़ गया था, जो उनके घर के पास ही एक दूसरे बंगले में गार्ड का काम करता है। उसका कहना है कि पहले उसकी नाइट ड्यूटी होती थी लेकिन चुड़ैल के डर से ही उसने अपनी नाइट शिफ्ट बदलकर दिन की करवा ली। दिन में भी वो तरह-तरह के गण्डे-ताबीज वगैरह लेकर ही ड्यूटी पर आता है। दिखने में पढ़ा-लिखा, समझदार लगता है। लेकिन इस दुनिया में शायद ही कोई ऐसा शख्स हो, जो उसे विश्वास दिला सके कि उस घर पर चुड़ैल का साया नहीं था। सनाया गौतम चुड़ैल नहीं थी।’’

‘‘ऐसा क्यों?’’

‘‘अपने निजी एक्सपीरियंस से बता रहा हूं। मैंने उससे घंटों पूछताछ की। उसके दिमाग में ठूंस-ठूंस कर भरने की कोशिश की कि चुड़ैल-वुड़ैल कुछ नहीं होता। वो सनाया गौतम

बाकी लोगों की तरह एक इंसान ही थी। इंसान ही कत्ल करते हैं। भूत-प्रेत, असबाब किसी का कत्ल नहीं करते। लेकिन वो मानने को तैयार हो तब न। थक-हारकर मैंने उससे कहा-इतना तो मानते हो न कि भूत-प्रेत शीशे में नहीं दिखाई देते? कैमरे से फोटो खींचने पर तस्वीर में नहीं दिखते?''

''फिर?''

''उसने कहा-हां। फिर मैंने उसे वो वीडियो क्लिप दिखाई, जिसमें वो लडक़ी वकील साहब के घर से सेफ से गहने और नकद रकम चोरी करके ले जा रही थी। वीडियो दिखाने के बाद मैंने उससे कहा कि अब हुआ विश्वास? कि वो लडक़ी भूत नहीं थी? ये उसी रात का उसी घर का सीसीटीवी कैमरे का फुटेज है, जब वकील साहब का खून हुआ था। कत्ल करने के बाद उस सनाया गौतम ने घर की सेफ से रूपये और गहने भी चोरी कर लिए थे। लेकिन पट्ठा तब भी राजी न हुआ। वीडियो देखने के बाद पता है उसने क्या कहा?''

''क्या कहा?''

''उस कम्बख्त ने कहा कि ये तो भूत-प्रेतों की मर्जी पर है। अगर वो दिखना चाहें तो वीडियो में भी दिख सकते हैं। फोटो में भी दिख सकते हैं। ऐसे ही तो असल में भी न दिखना चाहें तो इंसानों को भी नहीं दिखते और दिखना चाहते हैं तो दिख जाते हैं।''

अरविंद की हंसी छूट गई।

''इतना ही नहीं, वो कम्बख्त उल्टे मुझसे ही कहने लगा कि अब आपको हुआ भूत-प्रेतों पर विश्वास? मैंने कहा-कैसे? तो वो ससुरा कहना लगा कि अभी तो आप मुझसे कह रहे थे कि भूत-प्रेत शीशे में नहीं दिखते। फोटो, वीडियो में नहीं दिखते। यानी आप भी मानते हैं कि भूत-प्रेतों का अस्तित्त्व होता है।''

अरविंद हंसा, फिर बोला-''वैसे आप डिनर के लिए रूकते तो मुझे बहुत खुशी होती।''

''खुशी तो मुझे भी होती''-वैभव ने किक मारकर मोटरसायकल स्टार्ट की-''लेकिन फिर कभी सही। विदेश से आपके साले साहब आए हैं। आज उनकी खातिरदारी पर ध्यान दीजिए।''

''साले साहब ही नहीं, बहन भी आई है।''

''अच्छा। बधाई हो। आपने मिलवाया नहीं।''

''वैशाली थोड़ा अंतर्मुखी स्वभाव की है। अपने कमरे में ही घुसी रहती है। वैसे भी मोहित और आपके बीच जो बातचीत हो रही थी, उसकी धुन में मुझे उसे आपसे मिलाने की याद ही नहीं आई। या रूकिये, मैं अभी उसे बुला देता हूं।''

‘‘अगली बार आऊंगा, तब मिलवा दीजियेगा। रात बहुत हो गई है। बातों-बातों में टाइम कैसे निकल गया, पता ही नहीं चला।’’

फिर वैभव ने अरविंद से विदा ली।

वैभव के जाने के बाद मोहित अकेला बैठा काफी देर तक सोचता रहा।

''हे!''-तभी मानसी भी उसके पास आकर बैठ गई। सोफे पर दूसरी ओर अरविंद भी आकर बैठ गया। उसने मोहित के कंधे पर हाथ रखकर थपथपाया।

''तुम चिंता मत करो।''-थोड़ी देर की खामोशी के बाद अरविंद बोला-''हम लोग कोई न कोई कानूनी रास्ता निकाल लेंगें वसीयत ठीक करवाने का। तुम्हारी प्रॉपर्टी सनाया गौतम को इतनी आसानी से नहीं हड़पने देंगें।''

मोहित ने अपने जीजा की ओर देखा।

''मुझे प्रॉपर्टी की परवाह नहीं है।''-मोहित शांत स्वर में बोला।

अरविंद ने हैरानी से उसे देखा।

''मोहित।''-मानसी बोली-''मुझे पता है जो कुछ हुआ, वो बहुत भयानक था। लेकिन उसे हम बदल नहीं सकते। मैं चाहती हूं कि तुम अपने आपको संभालो।''

मोहित ने कुछ नहीं कहा।

''पुलिस देर-सवेर उस सनाया गौतम को पकड़ ही लेगी। उसके बाद सब ठीक हो जाएगा।''

''पुलिस को पकडऩा होता''-मोहित बोला-''तो अब तक पकड़ चुकी होती।''

''तुम कहना क्या चाहते हो?''

''तुम्हारी पापा से आखिरी बार मुलाकात कब हुई थी?''

मानसी को झटका सा लगा। उसकी आंखें नम हो गईं।

''करीब 6 महीने पहले।''-वो धीमे स्वर में बोली।

''यानि उस वारदात से तीन महीने पहले?''

''हां। उससे करीब तीन महीने पहले ही।''

''तब तुमने कुछ नोटिस नहीं किया? या उस लडक़ी को देखा? या पापा ने उसके बारे में कुछ बताया?''

''नहीं। मैं घर नहीं गई थी। पापा हम लोगों से मिलने दिल्ली आए थे।''

''पापा दिल्ली आए थे?''

‘‘हां। उस समय तो मैंने ऐसा कुछ खास नोट नहीं किया था। लेकिन अब याद आ रहा है कि उससे पहले करीब साल भर से जब भी मैं घर आने की बात कहती थी तो पापा टालने की कोशिश करते थे।’’

‘‘टालने की कोशिश करते थे?’’

‘‘हां। वो कहते थे यहां तो मैं अकेला रह रहा हूं। सिर्फ काम करने वाले लोग हैं। मैं ही तुम लोगों से मिलने आ जाता हूं। फिर हर बार ऐसा ही होता था। वो खुद ही आ जाते थे। मैं करीब साल भर से घर नहीं गई।’’

मोहित सोच में पड़ गया।

‘‘तुम ये सब मत सोचो।’’-मानसी ने मोहित के कंधे पर हाथ रखा-‘‘जो हुआ, बहुत गलत हुआ। बहुत बुरा हुआ। लेकिन हम लोग कर ही क्या सकते हैं। उस लडक़ी...उस सनाया गौतम को कानून सजा देगा।’’

कुछ देर वहां खामोशी रही।

‘‘चलो।’’-फिर मानसी बोली-‘‘मैं डिनर लगा देती हंू।’’

मानसी के कमरे से जाने के बाद अरविंद और मोहित वहां अकेले रह गए।

अरविंद ने मोहित के घुटने पर हाथ रखा।

‘‘डोंट यू वरी अबाउट इट।’’-अरविंद ने उसका घुटना थपथपाते हुए कहा-‘‘ये समय भी गुजर जाएगा।’’

मोहित ने सिर हिलाया।

थोड़ी ही देर में मानसी ने वहां आकर डिनर सर्व हो जाने की घोषणा की।

उस घर में आने के बाद मोहित को डिनर टेबल पर पहली बार वैशाली के दर्शन हुए। मोहित को ये बात काफी अजीब लगी कि वैशाली ने डिनर टेबल पर भी उन लोगों से ज्यादा बात

नहीं की। कोई सवाल पूछे जाने पर वो कम से कम बोलने की ही कोशिश कर रही थी। डिनर के बाद वो पहले की तरह सीधे अपने कमरे में जाकर बंद हो गई।

मानसी किचन में बर्तन साफ कर रही थी, जब मोहित उसके पास पहुंचा।

''पापा ने नया मकान क्यों खरीदा था?''-मोहित ने गम्भीर स्वर में पूछा।

''मुझे क्या पता?''-मानसी का स्वर उदास हो गया।

''उन्होंने आपको कुछ नहीं बताया?''

''मुझे उन्होंने कुछ नहीं बताया।''-मानसी ने मोहित की ओर देखा, उसकी आंखों में नमी थी-''उन्होंने मुझसे सब कुछ छिपाया। सब कुछ।''-कहते-कहते अचानक मानसी रोने लगी और बर्तन धोना छोडक़र धीरे-धीरे घिसटती सी नीचे जमीन पर ही बैठ गई।

''दीदी।''-मोहित ने उसे समझाने की कोशिश की-''संभालो अपने आपको...।''

''ये क्या हो गया, मोहित।''-वो रोते हुए ही बोली-''ये क्या हो गया...।''

''दीदी।''-मोहित बोला-''हिम्मत रखो...।''

''पापा ने हमसे ये सब छिपाया। एक-एक बात। कि वो उस घर में किसी लडक़ी के साथ रहते थे।''

मोहित से कुछ कहते नहीं बना।

''उन्होंने हमसे एक-एक बात छिपाई। उन्होंने हमें कभी हवा तक नहीं लगने दी कि वो किसी सनाया गौतम को जानते भी थे। और हम यहां बेवकूफ बने समझते रहे कि हम एक परिवार हैं। एक-दूसरे से कुछ नहीं छिपाते।''

''अब इस बारे में बात करने का कोई फायदा नहीं...।''

''तुम ऐसा सिर्फ इसलिए कह रहे हो क्योंकि तुम पापा से बहुत प्यार करते हो। मैं भी करती हूं। लेकिन इससे गलत सही नहीं हो जाता। पापा करीब साल भर से उस लडक़ी के साथ...उस...उस चुड़ैल के साथ उस घर में अकेले रह रहे थे। लेकिन उन्होंने कभी हमसे इसका जिक्र तक नहीं किया। हो सकता है वो उसे और भी पहले से जानते हों। उनका बहुत समय से अफेयर चल रहा हो। उन्होंने बस हम लोगों ये सब छिपाया।''

''होश में आओ, दीदी।''

''तुमसे तो उन्हें पहले ही छुटकारा मिल गया था, जब तुम अमेरिका चले गए थे। फिर मेरी शादी के बाद उन्हें मुझसे भी छुटकारा मिल गया। अब मुझे याद आ रहा है कि मेरी शादी

कराने की भी उन्हें काफी जल्दी थी। शायद...शायद वो हम दोनों से पीछा छुड़ाने चाहते थे। उन्हें हम दोनों बोझ की तरह लगने लगे थे। वो चाहते थे कि हमारा उनसे पीछा छूटे और वो उस...उस लडक़ी के साथ यहां ऐश कर सकें।''

''ऐसा बिल्कुल नहीं है।''-मोहित सख्त स्वर में बोला-''पापा और उस लडक़ी के बारे में मैं नहीं जानता। लेकिन हम दोनों को उन्होंने कभी बोझ नहीं समझा। ये तुम अच्छी तरह जानती हो। खुद सोचकर बताओ, तुम्हें कभी-एक बार भी-ऐसा लगा हो कि पापा हमें अपने से दूर भेजना चाहते हों? उन्होंने ऐसा कुछ कहा हो? ऐसा कोई इशारा किया हो?''

''लेकिन वो हमारे जाने पर उतने दुखी भी नहीं हुए थे, जितना उन्हें होना चाहिए था। मुझे ये बात उसी समय खटक रही थी, जब मेरी शादी हुई थी। उसके बाद जब तुम अमेरिका गए थे, तब भी पापा की आंखों में आंसू की एक झलक भी नहीं थी।''

''क्योंकि वो मजबूत थे। उन्हें हमारे लिए मजबूत बन कर दिखाना था। वो अपनी कमजोरी दिखाना पसंद नहीं करते थे। क्योंकि वो अपने बच्चों को-हमें-भी उतना ही मजबूत बनाना चाहते थे। बल्कि अपने से भी ज्यादा मजबूत बनाना चाहते थे। क्या तुम भूल गईं कि मां के जाने के समय वो हमारे सामने अपने आंसू रोकने की कितनी कोशिश करते थे। बाद में भी कमरे का दरवाजा बंद करके अंदर अकेले रोते थे लेकिन हमारे सामने आंसू बहाने से बचते थे।''

वो रोती जा रही थी।

इस बार मोहित ने उसे चुप कराने की कोशिश नहीं की। वो अपनी जगह स्थिर बैठा रहा। मां के निधन के समय के दिन याद करके उसकी खुद की आंखों में नमी आ गई थी।

मानसी को संयत होने में कुछ देर लगे।

''तुम्हें लगता है कि''-फिर वो अपने आंसू पोंछते हुए बोली-''कि पापा गलत नहीं थे? उनका...उनका उस लडक़ी...उस...उस सनाया गौतम के साथ कोई संबंध नहीं था? पुलिस जो कुछ कह रही है, वो गलत है?''

''मैं इस सब के बारे में नहीं जानता। हो सकता है सब सच हो। हो सकता है सब झूठ हो। लेकिन मैं इतना जानता हूं कि पापा ऐसे नहीं थे। तुम भी जानती हो। हमें ये भूलना नहीं चाहिए।''

''शायद तुम ठीक कह रहे हो।''-उसका स्वर शांत लेकिन खाली-खाली सा था-''वैसे भी वो तो इस दुनिया से चले ही गए हैं। उन्हें अब इस चीज से क्या फर्क पड़ता है कि हम उनके

बारे में क्या सोचते हैं? कोई उनके बारे में क्या सोचता है? वो सनाया गौतम पकड़ी जाती है या नहीं?’’

मोहित ने कुछ नहीं कहा। वो अब इस बातचीत को और लम्बा नहीं खींचना चाहता था।

‘‘और प्रॉपर्टी’’-मानसी जैसे शून्य में ताक रही थी-‘‘पुलिस को प्रॉपर्टी बहुत बड़ा मुद्दा लगता है। लेकिन हमारे लिए नहीं है। मुझे प्रॉपर्टी का कोई लालच नहीं है। और मैं जानती हूं कि तुम्हें भी नहीं है। पापा अगर उसे दान भी कर देते, तो भी हमें कोई आपत्ति नहीं होनी थी। हमारे लिए तो ये एक तरह से ऐसा ही हुआ। लेकिन...’’-मानसी का चेहरा रोने के कारण फिर बनने-बिगडऩे लगा, वो मोहित के कंधे पर सिर टिकाकर रोने लगी-‘‘उस चुड़ैल ने पापा को मारा क्यों? उसे प्रॉपर्टी चाहिए थी तो वो ले लेती। सब कुछ ले लेती लेकिन उसने पापा का खून क्यों किया मोहित...क्यों किया?’’

मोहित उसे सांत्वना देने की कोशिश करता रहा।

‘‘क्या हो रहा है भाई?’’-उसी समय अरविंद किचन में आया, फिर किचन का दृश्य देखकर उसका चेहरा तत्काल संजीदा हो गया।

उन्होंने और मोहित ने मानसी को सहारा देकर उठाया।

"अब रोने से क्या होगा?"-अरविंद धीमे स्वर में बोला-"जो हो गया, वो हो गया। अपने आपको संभालो, मानसी।"

मानसी ने आंसू पोंछ लिए लेकिन उसका चेहरा अब भी गमगीन था।

मानसी और अरविंद अपने कमरे में चले गए।

मोहित भी अपने कमरे की ओर बढ़ गया। उसके दिलोदिमाग में भूचाल-सा आया हुआ था।

और दिमाग में एक ही नाम रह-रह कर दस्तक दे रहा था-

सनाया गौतम!

अगले दिन सुबह मोहित ब्रेकफास्ट के बाद घर से जाने की तैयारी कर रहा था, जब मानसी उसके कमरे में पहुंची।

‘‘कहां जाने की तैयारी हो रही है?’’-मानसी ने पूछा।

‘‘घर।’’-मोहित ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

‘‘कौन-से वाले घर?’’

‘‘दोनों। वो भी जहां हम लोग रहते थे और वो भी जो पापा ने बाद में खरीदा था। अच्छा हुआ आप आ गईं। मैं आपसे चाभियां मांगने आना ही वाला था।’’

‘‘तुम दोनों घर जाओगे?’’-मानसी हैरानी से बोली।-‘‘लेकिन क्यों?’’

‘‘बस ऐसे ही।’’-मोहित का स्वर गम्भीर था।

मानसी कुछ देर तक चुप रही, फिर बोली-‘‘क्या इरादा है?’’

‘‘किस बारे में?’’-मोहित ने मानसी की ओर देखा।

‘‘पापा के केस के बारे में।’’

एक बार तो मोहित का मन किया कि मानसी को बता दे कि वो उस खूनी को, उस सनाया गौतम को मारकर बदला लेना चाहता है, लेकिन उसने बड़ी मुश्किल से खुद को जब्त किया।

‘‘मेरा क्या इरादा होगा?’’-वो बोला-‘‘इस मामले में जो करना है, पुलिस को ही करना है।’’

मानसी सशंकित भाव से उसकी ओर देखती रही।

‘‘क्या हुआ?’’

‘‘ऐसा लगता तो नहीं।’’-वो बोली।

‘‘क्या मतलब?’’

‘‘तुमने इंस्पेक्टर से पूरे मामले की रिपोर्ट सुनी, अरविंद ने भी तुम्हारे कहने पर इंस्पेक्टर को तुम्हें वो सब बताने के लिए राजी कर लिया। आखिर तुम्हारे दिमाग में क्या खिचड़ी पक रही है?’’

‘‘कोई खिचड़ी नहीं पक रही है। मैं बस...जानना चाहता था कि क्या हुआ था?’’

कुछ क्षण उनके बीच खामोशी छाई रही।

‘‘अब तुम्हारे मन में क्या है’’-फिर मानसी बोली- तुम मुझे नहीं बताना चाह रहे तो कोई बात नहीं, तुम्हारी मर्जी। लेकिन मैं जरूर तुमसे कुछ शेयर करना चाहती हूं।’’

‘‘क्या?’’

‘‘मैंने एक प्राइवेट डिटेक्टिव हायर किया है।’’

‘‘प्राइवेट डिटेक्टिव?’’

‘‘अविनाश भारद्वाज नाम है। दिल्ली का जाना माना प्राइवेट डिटेक्टिव है। 'क्राइम इन्वेस्टिगेशंस' नाम से डिटेक्टिव एजेंसी है दिल्ली में ही। कई लोगों के रिकमेंड करने के बाद उसे हायर किया।’’

‘‘लेकिन किसलिए?’’

‘‘और किसलिए? उस...उस सनाया गौतम का पता लगाने के लिए।’’

वो नई बात थी। मानसी ने अब तक उसे इस बारे में कुछ नहीं बताया था। मोहित की उत्सुकता जाग चुकी थी।

‘‘असल में’’-मानसी बोली-‘‘प्राइवेट डिटेक्टिव हायर करने का ख्याल मुझे तुम्हारी कॉल से ही आया।’’

‘‘मेरी कॉल से?’’

‘‘हां। जब 10 दिन पहले तुमने अमेरिका से फोन पर बात की थी।’’

‘‘लेकिन मैंने तो प्राइवेट डिटेक्टिव हायर करने जैसी कोई बात नहीं कही थी।’’-मोहित बोला।

‘‘लेकिन तुम केस के बारे में इतनी ज्यादा पूछताछ कर रहे थे, कह रहे थे कि पुलिस सनाया गौतम का पता नहीं लगा पा रही है, अब हमें ही कुछ करना होगा तो मुझे भी तुम्हारी बात सही लगी। फिर मैंने काफी सोच-विचार किया, कुछ दोस्तों से राय ली और प्राइवेट डिटेक्टिव हायर करने का इरादा बनाया।’’

‘‘उस प्राइवेट डिटेक्टिव ने कुछ पता लगाया।’’

‘‘अभी तक तो नहीं।’’-मानसी ने गहरी सांस लेकर कहा-‘‘और पता लगाया भी हो तो कम से कम मुझे तो उसने कुछ नहीं बताया है। अभी तक तो वो मुझे धैर्य रखने की बात ही कहता आ रहा है। उसका कहना है कि ऐसे मामलों में देर लगती ही है। खासतौर पर ऐसे शख्स का पता लगाना, जिसका पता पुलिस भी नहीं लगा पा रही है। 10 दिन बीतने के बाद भी अब तक उसकी ओर से कोई अहम जानकारी, कोई रिपोर्ट वगैरह नहीं दी गई है, जिससे मुझे उसकी काबिलियत पर ही संदेह होने लगा है।’’

‘‘मुझे उस प्राइवेट डिटेक्टिव से मिलना है।’’

‘‘किसलिए?’’

‘‘क्या किसलिए? उसीलिए जिसके लिए तुमने उसे हायर किया है।’’

‘‘ओह।’’

‘‘तुम उसे कॉल करके बता देना कि मैं उसे मिलने आ रहा हूं। मैं उससे मिल कर पता करूंगा कि उसकी जांच कहां तक पहुंची।’’

‘‘ठीक है।’’

कुछ ही देर में मानसी ने उसे दोनों घरों की-उनके पुराने वाले और हिल रोड वाले उस दूसरे घर की भी, जिसे गिरिराज वर्मा ने मोहित के अमेरिका जाने के बाद खरीदा था-चाभियां लाकर दे दीं।

मोहित जिस वक्त घर से बाहर निकल रहा था, उसी समय अरविंद भी कोर्ट जाने की तैयारी में था। वो अपनी कार में बैठकर कार स्टार्ट कर चुका था।उनके पास दो कारें थीं। एक अरविन्द की और एक मानसी की।

''मोहित!''-तभी पीछे से मानसी ने आवाज दी।

''क्या?''-मोहित ने घूमकर मानसी की ओर देखा। मानसी ने उसकी ओर कार की चाभी फेंकी, जिसे मोहित ने हवा में ही कैच कर लिया, फिर घूमकर अपनी कार की ओर बढ़ गया, जो मानसी चलाया करती थी।

''तुमने अपनी कार मोहित को दे दी!'-अरविंद ने मानसी से कहा-''गुड। कहीं आने-जाने में परेशानी नहीं होगी।''

''एक्चुअली''-मानसी बोली-''ये मोहित की कार है। अमेरिका जाने से पहले इसे यही चलाता था। पापा ने बर्थडे पर प्रेजेंट की थी मोहित को। इसे इस कार से बहुत प्यार है।''

''वो तो दिख रहा है।''-अरविंद बोला। मोहित कार में बैठने से पहले कार की छत पर ऐसे हाथ फैर रहा था, जैसे किसी बच्चे को दुलार रहा हो।

हिल रोड जाने वाले घर से पहले मोहित श्यामनगर स्थित अपने पुराने घर पहुंचा।

वो घर, जहां वो पला-बढ़ा था। जहां उसके परिवार ने खुशहाली का ऐसा समय देखा था कि आज भी वो यादें उसके सामने एक सुखद सपने की तरह घूम जाती थीं।

आखिर उसके पिता ने वो घर छोड़ कर दूसरा घर लिया ही क्यों?

मोहित को मन में बार-बार यही बात कचोट रही थी।

कार से उतरकर मोहित ने घर का दरवाजा खोलकर अंदर प्रवेश किया। बाहर वाले कमरे में एक सोफा, टेबल और अन्य सामान वगैरह पड़ा था। अरसे से सफाई नहीं होने के कारण वहां धूल की परत जमने लगी थी।

सामने ही वो सोफा पड़ा था, जिस पर उसके पिता अक्सर बैठे काम किया करते थे।

मोहित की नजरें उस पर चिपक कर रह गईं।

बीती यादें किसी चलचित्र की तरह उसकी आंखें के सामने घूमने लगीं।

''पापा...पापा...''- 10 वर्षीय मानसी दौड़ती हुई सोफे पर बैठे किसी केस की फाइल का अध्ययन कर रहे गिरिराज वर्मा के पास आई-''देखो न, भईया मुझे मार रहा है।''

गिरिराज वर्मा ने फाइल पर से नजरें हटाकर चश्मे से झांककर मानसी की ओर देखा, अपनी भंवें उठाकर ऐसा चेहरा बनाया, जैसे डांटने वाले हों, फिर एकदम से मुस्कुरा कर बोले-''तो तुम भी उसे मारो।''

मानसी का चेहरा खिल उठा। उसी वक्त मोहित भी दौड़ते हुए वहां आ पहुंचा और मानसी के पास आकर खड़ा हो गया। मानसी ने धड़ाधड़ उसे मारना शुरू कर दिया।

''पापा।''-मोहित चिल्लाया, उसे हैरानी थी मानसी उसे पापा के सामने कैसे मार रही थी-''देखो, दीदी मुझे मार रही है।''

''मुझे पापा ने ही कहा है, बुद्धू।''-मानसी भी चिल्लाकर बोली।

अब गिरिराज वर्मा अपनी हंसी नहीं रोक पाए। उन्होंने मानसी को खींचकर मोहित से दूर किया।

''बस...बस-बहुत हो गया। इतना काफी है।''-वे बोले।

''लेकिन इसने मुझे ज्यादा मारा है।''-मानसी नाराजगीपूर्ण स्वर में बोली। वो अब भी मोहित को मारने की कोशिश कर रही थी।

''ये लो।''-गिरिराज वर्मा ने मोहित को आंख मारते हुए हाथ से हल्के से मोहित के कंधे पर चपत मार दी-''मैंने भी मार दिया। अब हिसाब बराबर हो गया।''

मोहित का चेहरा भी खिल गया। उसे समझ आ गया कि पापा उसे और पिटने से बचा रहे थे।

''पापा, ये क्या है?''-मानसी टेबल पर पड़ी फाइल को देखते हुए बोली।

''ये एक केस की फाइल है, बेटा।''

''इसमें क्या लिखा है?''-मोहित उत्सुकता से बोला।

''इसमें जो लिखा है वो तुम्हारे काम का नहीं है।''

''पापा, चलिए न हमारे साथ खेलिए।''

''अभी नहीं बेटा। अभी पापा काम कर रहे हैं। हम लोग रात में खेलेंगें।''

''पापा, आप दिन में हमारे साथ कभी नहीं खेलते।''-मोहित गुस्से से बोला।

‘‘अरे।’’-झूठे आरोप से गिरिराज वर्मा को ठेस पहुंची-‘‘रविवार को तो खेलते हैं न।’’

‘‘तो अभी क्यों नहीं खेल रहे?’’

‘‘क्योंकि अभी काम कर रहे हैं। काम करना भी तो जरूरी है। पहले काम, उसके बाद खेल। तुम लोग भी तो पहले होमवर्क करते हो, उसके बाद ही खेलने जाते हो न।’’

‘‘वो तो इसलिए’’-मानसी मासूमियत से बोली-‘‘क्योंकि आप हमें होमवर्क किए बिना खेलने नहीं देते।’’

गिरिराज वर्मा जोर से हंस पड़े।

‘‘हां, भई। ठीक है। मैं ही नहीं खेलने देता। लेकिन इसे ही डिसीप्लीन कहते हैं। अब तुम लोग जाओ, बाहर जाकर खेलो। पापा को काम करने दो।’’

‘‘चलो।’’-दोनों बच्चे उछलते-कूदते शोर मचाते हुए कमरे से पलायन कर गए।

दरवाजे पर कुछ आहट सुनकर मोहित की तन्द्रा भंग हुई।

मोहित ने चौंक कर दरवाजे की ओर देखा। इस वक्त उसे वहां किसी के होने की उम्मीद नहीं थी।

आखिर वो घर इतने समय से बंद पड़ा था।

‘‘हैलो।’’-दरवाजे की ओर से खनकता हुआ सा स्वर सुनाई दिया।

मोहित ने दरवाजे की ओर देखा। पहले से खुले हुए दरवाजे का पल्ला अंदर की ओर खुला और जीन्स-शर्टधारी एक बेहद खूबसूरत युवती ने अंदर कदम रखा।

मोहित पर नजर पड़ते ही उसके चेहरे पर चमक साफ दिखाई दी।

मोहित ने प्रश्नसूचक निगाहों से उसकी ओर देखा।

‘‘हैलो, मिस्टर मोहित।’’-वो मोहित से बोली-‘‘मैं ‘लेक सिटी ट्रिब्यून’ से शालिनी अवस्थी।

‘‘लेक सिटी ट्रब्यून?’’

‘‘यहां का प्रसिद्ध न्यूजपेपर है। पूरे उत्तराखण्ड में फेमस है। आप मोहित वर्मा हैं न?’’

‘‘जी हां।’’-मोहित ने स्वीकृति में सिर हिलाया-‘‘कहिए।’’

‘‘दरअसल, मोहित जी।’’-वो बोली-‘‘मै काफी समय से आपसे मिलना चाह रही थी। मैंने आपके घर पर भी फोन किया था। वहां से पता चला कि आप घर पर नहीं हैं। इत्तेफाक से मैं इधर से ही जा रही थी और इस घर का गेट खुला देखकर अपनी उत्सुकता रोक नहीं पाई।’’

‘‘आप मुझसे मिलना चाहतीं थीं? किसलिए?’’

उसके चेहरे पर एक नर्वस सी मुस्कान दिखाई दी, फिर वो बोली-‘‘आपके इंटरव्यू के लिए।’’

‘‘मेरा इंटरव्यू?’’

‘‘जी...वो गिरिराज वर्मा...आपके पिता के मर्डर केस में...आपका कोई बयान अब तक किसी न्यूजपेपर में नहीं छपा है। अगर मेरे माध्यम से हमारे पेपर में आपका इंटरव्यू सबसे पहले छपे तो...।’’

‘‘ओह।’’-मोहित ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया। फिर उसका ध्यान गया कि वो दोनों खड़े हुए थे।

‘‘बैठिए न।’’-उसने शालिनी से बैठने का अनुरोध किया।

दोनों सोफे पर आमने-सामने बैठ गए।

‘‘तो’’-मोहित बोला-‘‘कब देना होगा आपको बयान...इंटरव्यू?’’

‘‘जब आप चाहें।’’

‘‘आज शाम ठीक रहेगा?’’

‘‘बिल्कुल।’’

‘‘जगह?’’

‘‘जो आप कहें। चाहे तो मेरे ऑफिस आ जाएं। या फिर कोई और जगह आपकी निगाह में हो तो...।’’

‘‘आपका ऑफिस ही ठीक रहेगा।’’

उसने अपना कार्ड मोहित की ओर बढ़ा दिया।

‘‘वैसे सच कहूं!’’-वो बोली-‘‘आज मेरी और आपकी मुलाकात होनी तय थी।’’

‘‘अच्छा।’’

‘‘जी। दरअसल मैं शुरू से ही इस केस की कवरिंग कर रही हूं और आपका बयान बेहद महत्त्वपूर्ण है, जो कि आपके विदेश में होने के कारण अब तक नहीं मिल पाया।’’

‘‘हूं।’’-मोहित ने शालिनी द्वारा दिए गए कार्ड पर नजर डालते हुए कहा-‘‘तो शाम में पांच बजे मैं आपको आपके ऑफिस में मिलता हूं।’’

‘‘ओके, मोहित जी।’’-वो उठ खड़ी हुई-थैंक्स फॉर द कोऑपरेशन। मैं आपका इंतजार करूंगी।

‘‘एक बात और।’’-मोहित बोला।

‘‘कहिए?’’

‘‘मुझे भी कुछ जानकारी चाहिए थी इस घटना के बारे में। पुलिस से तो मैं जानकारी हासिल कर चुका हूं। मेरे ख्याल से एक पत्रकार से भी इस मामले पर जानकारी मिलने की उम्मीद की जा सकती है।’’

‘‘उसकी आप बिल्कुल फिक्र मत कीजिए। हमारे पेपर ने इस घटना की जितनी कवरेज की है, वो मैं पूरी आपको उपलब्ध करा दूंगी।’’

‘‘थैंक्स।’’

उसी टाइम बाहर से हॉर्न की आवाज सुनाई दी।

‘‘ओके, मोहित जी।’’-वो बोली-‘‘मैं चलती हूं। शाम में मिलते हैं।’’

मोहित ने सिर हिला दिया।

वो कमरे से बाहर निकल गई।

कुछ देर बाद मोहित भी उस मकान को लॉक करके हिल रोड वाले मकान की ओर रवाना हो गया।

मोहित हिल रोड स्थित उस मकान में पहुंचा, जहां उसके पिता अपने आखिरी समय में रह रहे थे।

वो उस घर में कभी नहीं आया था।

वो घर गिरिराज वर्मा ने उसके विदेश चले जाने के बाद लिया था। जहां तक मोहित की जानकारी थी, उनका पुराना घर भी काफी अच्छा था। ऐसे में उसके पिता ने दूसरा मकान क्यों खरीद लिया, ये मोहित के लिए हैरानी की बात थी। आखिर वो अकेले रह रहे थे। मोहित यूएसए में काम करने लगा था, मानसी की शादी हो गई थी, फिर आखिर गिरिराज वर्मा को इतना बड़ा मकान खरीदने की क्या जरूरत पड़ गई?

वो एक अच्छा-खासा बड़ा घर था, जिसे चारों ओर से घेरता एक बड़ा आंगन था। गेट के अंदर प्रवेश करते ही घर के सामने वाले आंगन के हिस्से में प्रवेश करते थे। उसके बाद मकान के दोनों ओर गलियां जैसी बनी हुईं थीं, जो घर के पिछले हिस्से में जाती थीं, जहां सामने वाले हिस्से से भी बड़ा आंगन था। उस आंगन में आखिरी छोर पर दो छोटे-छोटे मकान बने हुए थे, जो शायद सर्वेन्ट क्वार्टर के रूप में उपयोग करने के लिए बने थे। हालांकि सर्वेन्ट नहीं होने के कारण दोनों ही लम्बे अरसे से खाली पड़े थे। उन पर ताले लटके हुए थे।

वो पूरा मकान सचमुच ही बिल्कुल बियाबान और भुतहा लग रहा था।

मोहित ने गेट पर लगा ताला खोलकर अंदर प्रवेश किया।

सामने वीरान मकान किसी मौन वृक्ष की तरह चुपचाप खड़ा था।

गिरिराज वर्मा के कत्ल के बाद लम्बे समय तक वो मकान एक क्राइम सीन के रूप में लोगों के लिए ऑफ लिमिट था लेकिन उस घटना को अब तीन महीने बीत गए थे और उस मकान पर से सील काफी पहले ही हटा ली गई थी।

मोहित ने आंगन में नजर दौड़ाई। वहां साइड में उसके पिता की कार खड़ी थी। कार पर धूल की परत दिख रही थी। उस कार में गिरिराज वर्मा न जाने कितनी बार मोहित और मानसी को घुमाने ले जाते थे।

उसने घर में प्रवेश किया। उसने घर के सभी कमरों का निरीक्षण किया।

एक कमरे के बाहर उसके कदम ठिठक गए।

वो स्टडी रूम था।

मोहित खाली-खाली आंखों से स्टडी रूम में रखी उस टेबल, चेयर की ओर देखता रहा।

उसी चेयर पर उसके पिता की हत्या कर दी गई थी।

उस सनाया गौतम ने।

जिसका उस घटना से पहले मोहित ने कभी नाम तक नहीं सुना था।

वो थी उसकी बर्बादी की जिम्मेदार।

मोहित के जबड़ों में कसाव आ गया। अब वहां रूकना उसके लिए मुश्किल हो गया था। उसे लगने लगा कि एक सेकंड भी वो उस कमरे में रूका, उस चेयर की ओर देखता रहा, तो वो निश्चित रूप से पागल ही हो जाएगा।

मोहित कमरे से बाहर निकल गया।

वो मेन हॉल में पहुंचा। कुछ देर वो खाली-खाली निगाहों से कमरे को देखता रहा।

फिर वो ज्यादा देर वहां नहीं रूका।

बाहर गेट को ताला लगा कर जब वो वहां से जा रहा था तो उसने नोट किया कि बगल वाले बंगले के बाहर खड़ा गार्ड उसे काफी अजीब निगाहों से देख रहा था।

शाम 5 बजे मोहित ‘लेक सिटी ट्रब्यून’ के ऑफिस पहुंचा।

वो एक पांच मंजिला बिल्डिंग थी, जिस पर ‘लेक सिटी ट्रब्यून’ का बड़ा सा बोर्ड लगा था।

मोहित तीसरी मंजिल पर स्थित शालिनी के ऑफिस में पहुंचा।

शालिनी ने बेहद गर्मजोशी के साथ उसका स्वागत किया।

मोहित के मना करने के बावजूद उसने कॉफी भी मंगवाई।

‘‘बहुत खूबसूरत शहर है नैनीताल।’’-शालिनी खिडक़ी से बाहर झांकते हुए बोली, बाहर मौसम सुहावना हो रहा था-‘‘ऊपर से मौसम यहां की खूबसूरती में चार चांद लगा देता है।’’

‘‘मेरा बचपन ही यहां गुजरा है।’’-मोहित बोला।

‘‘सेम हेयर।’’-शालिनी मुस्कुराई।

कॉफी खत्म होने के बाद मोहित बोला-‘‘लेट्स गेट टू द पॉइंट। जिससे मैं जल्दी घर जा सकूं और आप भी अपने बाकी काम कर सकें।’’

‘‘ओके।’’-शालिनी ने सहमति में सिर हिलाया और इंटरव्यू स्टार्ट करने के लिए जेब से एक टेपरिकॉर्डर निकाला लेकिन मोहित ने उसे हाथ के इशारे से रोक दिया।

‘‘पहले’’-मोहित बोला-‘‘मुझे आपसे कुछ प्रश्न पूछने हैं।’’

‘‘मुझसे?’’-वो हैरानी से बोली।

‘‘मुझे उम्मीद है कि आप मेरे सवालों के जवाब दे सकेंगीं।’’

‘‘ये तो उल्टे बांस बरेली के लद गए।’’-उसके होंठों पर मुस्कान झलक उठी-‘‘आप ही मेरा इंटरव्यू लेने लगे।’’

‘‘जो भी आप ठीक समझें।’’

‘‘ओके।’’-उसने टेपरिकॉर्डर वापस अपनी जेब में सरका लिया-‘‘पूछिए। क्या पूछना चाहते हैं आप?’’

‘‘मुझे जानना है कि घटना के समय-और बाद में भी-इस मामले की सबसे अच्छी कवरिंग कौन से अखबार ने की थी। और मुझे ईमानदार जवाब चाहिए। आप अपने पेपर को बढ़ा-चढ़ाकर बताने के लिए इसी का नाम मत बता दीजिएगा।’’

उसके चेहरे पर एक मुस्कान आ गई। उसने अपना चेहरा झुका लिया।

फिर वो चेहरा ऊपर उठाकर मुस्कुराते हुए बोली-''एक्चुअली मिस्टर मोहित, वो हमारा ही पेपर है।''

''ओह।''

''और वो रिपोर्टर मैं ही हूं, जिसने इस केस की सबसे अच्छी कवरिंग की है। मुझे अपनी तारीफ करना अच्छा नहीं लगता लेकिन ये बात मैं एक फैक्ट के तौर पर कह रही हूं आपके सवाल के जवाब में।''

''तो अगर सबसे अच्छी कवरिंग आपने की है तो बताइए आपने ऐसा क्या-क्या पता लगाया है, जो पुलिस नहीं पता लगा सकी। ंअगर ऐसा कुछ आप पता लगा पाईं हों तो।''

''पुलिस ने उस घर से बरामद अश्लील सामग्री की बात मीडिया से छिपाई थी।''

''जी?''

''उस घर की तलाशी में पुलिस को बहुत सारी अश्लील सामग्री बरामद हुई थी। जैसे...जैसे ढेर सारा पोर्न, गंदी तस्वीरों के पूरे के पूरे एलबम। और इसी तरह का मैटेरियल।''

''कमाल है। आपको ये सब कैसे पता? मुझे तो बताया गया था कि इस बात को लीक नहीं होने दिया गया था। और अगर आपको पता थी तो...तो आपके न्यूजपेपर ने...।''-मोहित बोलते-बोलते चुप हो गया।

''पुलिस विभाग में मेरे अपने सोर्स हैं, जिनसे मुझे इस तरह की जानकारी मिल जाती है। और रही बात इस बारे में पेपर में नहीं छापने की...तो हमने उसी कारण से इस खबर को न्यूज में नहीं जाने दिया, जिस कारण से पुलिस ने नहीं जाने दिया था।''

''मतलब...मेरी फैमिली के लिए!''

''जी। आपके पिता नैनीताल के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों में गिने जाते थे। उनके बारे में उस तरह की बातें छापना सही नहीं लगा और पुलिस की तरह ही हमने भी उस न्यूज पर पर्दा डालना ही जरूरी समझा।''

''थैंक्स। बहुत अच्छे आदमी होंगें आपके सम्पादक महोदय।''

''एक्चुअली''-वो फिर मुस्कुराई-''ये मेरा ही फैसला था। हमारा गंजा एडीटर तो शायद ये कभी गवारा नहीं करता कि ऐसी न्यूज हमारे अखबार में न छापी जाए। वो भी तब जब हम सबसे पहले छाप सकते हों। मैंने ही इस इन्फॉर्मेशन को एडीटर तक पहुंचने ही नहीं दिया। एडीटर क्या अखबार के दफ्तर में ही किसी तक नहीं पहुंचने दिया।''

‘‘फिर आपका धन्यवाद।’’-मोहित बोला-‘‘आपने सही कदम उठाया है। इसके लिए मैं आपका अहसानमंद रहूंगा।’’

‘‘और मैं आपके इंटरव्यू के लिए आपकी अहसानमंद रहंूगी। जो आप मुझे अभी देने वाले हैं।’’

‘‘पूछिए।’’

‘‘नहीं नहीं। मुझे ऐसी कोई जल्दी नहीं है। पहले आप अपने सवाल पूछ लीजिए।’’

‘‘सनाया गौतम के बारे में आप क्या बता सकती हैं?’’

‘‘शी इज ए घोस्ट।’’

‘‘जी?’’

‘‘तो और क्या कहूं? एक ऐसी लडक़ी, जिसे बहुत कम लोगों ने देखा। जबकि वो करीब साल भर तक वहां रहती रही। यहां तक कि जिस लडक़ी को कुछेक बार आसपास पड़ोस के काम करने वाले लोगों ने देखा, वो सनाया गौतम थी भी या नहीं, इसका भी कोई पक्का सबूत हमारे पास नहीं है। सनाया गौतम नाम तो आपके पिता की वसीयत से प्रकाश में आया है। उसके बाद जो लडक़ी वहां देखी गई, उसे ही सनाया गौतम माना जा रहा है।’’

मोहित को हैरानी हुई। उसने सचमुच इस ढंग से नहीं सोचा था।

‘‘आप ये कहना चाहतीं हैं’’-मोहित बोला-‘‘कि पुलिस जिस लडक़ी को सनाया गौतम समझ रही है, हो सकता है वो वो न हो।

‘‘ये एक पॉसीबिलिटी हो सकती है।’’-शालिनी बोली-‘‘ज्यादा संभावना तो इसी बात की है कि वही लडक़ी सनाया हो। इसीलिए पुलिस, पब्लिक से लेकर मीडिया तक सभी इसी को सच मान रहे हैं लेकिन’’-वो ‘लेकिन’ पर जोर देते हुए बोली-‘‘हमें इस बात को भी नहीं भूलना चाहिए कि उसी लडक़ी के सनाया गौतम होने का कोई पुख्ता सबूत नहीं मिला है।’’

‘‘एक लडक़ी यहां पापा के साथ रह रही थी।’’-मोहित विचारपूर्ण मुद्रा में बोला-‘‘आसपास के कुछ लोगों ने कभी-कभार उसे देखा था लेकिन वो अक्सर बाहर नहीं दिखती थी। फिर वसीयत में पापा ने किसी सनाया गौतम के नाम सारी जायदाद कर दी तो उसी लडक़ी को सनाया गौतम समझ लिया गया।’’

‘‘मैं ये नहीं कह रही कि वो लडक़ी सनाया गौतम नहीं थी। मैं ये कह रही हूं कि हो सकता है कि वो लडक़ी सनाया न हो।’’

‘‘और सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हुए उस वीडियो में सेफ से चोरी करती हुई लडक़ी का चेहरा भी नहीं दिख रहा था।’’

‘‘इन तीनों बातों से मोटे तौर पर यही निष्कर्ष निकलता है कि हो सकता है कि इस घर में दिखने वाली लडक़ी और सेफ से चोरी करने वाली लडक़ी एक ही हो, जिसके नाम वसीयत में सारी जायदाद की गई यानी सनाया गौतम। लेकिन ये भी हो सकता है कि सनाया गौतम और यहां दिखने वाली लडक़ी अलग-अलग हो। हो सकता है सेफ से चोरी करने वाली लडक़ी भी कोई दूसरी हो।’’

‘‘दूर की कौड़ी है लेकिन मुझे कहना पड़ेगा कि आप सचमुच किसी डिटेक्टिव की तरह सोचती हैं।’’

‘‘क्राइम रिपोर्टर हूं न।’’-वो मुस्कुराई-‘‘ऐसे केसेज की रिपोर्टिंग में ऐसा ही सोचना पड़ता है।’’

‘‘सनाया गौतम की तलाश में इतनी मुश्किल क्यों आ रही है? मतलब पूरी पुलिस उसे ढूंढ रही है। अब तो सोशल मीडिया वगैरह की सुविधा भी उपलब्ध है। फिर अब तक पुलिस उसका पता क्यों नहीं लगा पाई?’’

‘‘इसका जवाब मैंने आपको शुरू में ही दे दिया था। शी इज ए घोस्ट। उसके बारे में अब तक बेहद कम जानकारी सामने आई है। और उतनी जानकारी के आधार पर उसका पता लगाना बहुत बहुत मुश्किल है। कौन जाने ये नाम भी असली है या नहीं।’’

‘‘नाम तो असली ही होगा।’’

‘‘क्यों?’’

‘‘आखिर प्रॉपर्टी उसने अपनी नाम करवाई है। नकली नाम पर प्रॉपर्टी की वसीयत करवाती तो क्या लगता उसके हाथ?’’

‘‘हाथ तो अभी भी कुछ नहीं लगा।’’

‘‘मतलब?’’

‘‘मतलब यही कि अब तो वो पुलिस से बचती फिर रही है। इस मर्डर केस की प्राइम सस्पैक्ट है। तो इस प्रॉपर्टी पर हक जताने खुल्लमखुल्ला सामने भी नहीं आ सकती।’’

‘‘अगर आना होता तो अब तक आ चुकी होती।’’

‘‘एग्जैक्टली।’’-फिर शालिनी थोड़ा रूक कर बोली-‘‘जो कि उसके दोषी होने की ओर भी इशारा करता है। अगर वो निर्दोष होती तो इस तरह फरार नहीं हो जाती। पुलिस से छिपती

नहीं घूम रही होती।''

मोहित ने सहमति में सिर हिलाया।

''ओके। माई टर्न इज ओवर। अब आप पूछिए आपको जो पूछना है।''-मोहित ने कहा।

शालिनी ने अपनी जेब से टेपरिकॉर्डर निकाल कर ऑन किया और उसे अपने और मोहित के बीच टेबल पर रख लिया।

''आप अमेरिका से कब लौटे?''

''दो दिन पहले।''

''आपको अपने पिता के मर्डर की सूचना कब मिली थी?''

''करीब ढाई महीने पहले।''

''आप उसी समय इण्डिया वापस क्यों नहीं लौटे?''

''मैं कंपनी के काम के सिलसिले में चीन में था। इम्पोर्टेंट काम था। कंपनी का रूल है कि उस तरह के काम के समय हम फैमिली से कॉन्टैक्ट नहीं कर सकते। जिससे एकदम से काम छोडक़र बीच में जाना न पड़े। मेरी बहन को भी इस रूल का पता था। फिर भी उसने कंपनी से कॉन्टैक्ट कर बात की थी और मुझे सूचना भिजवाने की कोशिश की थी। लेकिन कंपनी वालों ने अपने रूल के कारण चीन यात्रा के दौरान मुझे कोई जानकारी नहीं दी। फिर जब मैं करीब 20 दिन बाद चीन से वापस न्यूयॉर्क लौटा, मानसी से बात हुई, तब उसने मुझे पापा के बारे में बताया।''

''20 दिन? लेकिन आप तो उसके बाद भी काफी समय तक अमेरिका में रूके?''

मोहित ने गहरी सांस ली-''यहां लास्ट रिचुअल्स तो मानसी ने ही पूरे कर दिए थे। मेरे लिए...मेरे करने के लिए तो कुछ नहीं बचा था। वैसे भी अब मैं अमेरिका से पूरा किनारा करने की सोच रहा था। मैंने कंपनी की जॉब छोड़ने का इरादा कर लिया था। कुछ पेंडिंग कामों का झंझट था। कुछ अन्य फॉर्मेलिटीज थीं। उन्हीं सब के चक्कर में देर होती गई और इतने दिन बाद भारत लौट पाया।''

''आपने इस घटना से पहले कभी सनाया गौतम का नाम सुना था? अपने पिता के मुंह से या किसी और से? किसी भी सिलसिले में?''

''नहीं। इससे पहले मैंने कभी सनाया गौतम का नाम नहीं सुना था।''

‘‘फिर सनाया गौतम आपके पिता की इतनी करीबी कैसे हो गई कि उन्होंने अपनी पूरी प्रॉपर्टी उसके नाम कर दी? आपके, आपकी बहन के, आपके जीजा के नाम कुछ भी नहीं छोड़ा?’’

मोहित ने होंठ भींच लिए।

‘‘सॉरी।’’-वो बोली-‘‘आप जिन सवालों का जवाब न देना चाहें, मत दीजिए। आर्टिकल छपने से पहले मैं आपको दिखाऊंगी। अगर उसमें आपको कुछ पसंद न आए, तो उसे हटा दिया जाएगा। वैसे मेरी पूरी कोशिश होगी कि उसमें ऐसा कुछ न हो, जो आपको हटवाना पड़े।’’

‘‘ओके।’’-मोहित ने समझने वाले भाव से सिर हिलाया-‘‘मुझे नहीं पता पापा ने सनाया गौतम के नाम वो वसीयत क्यों बनाई? या उस...उस सनाया गौतम के पापा से कैसे सम्बंध थे। इसलिए मैं इस बारे में कुछ भी नहीं कह सकता।’’

‘‘घर में जो सेफ रखी थी, जिससे 45 लाख रूपए के गहने व नकद रकम चोरी हुए, उसका पासवर्ड कौन-कौन जानता था?’’

‘‘पापा, मैं और मानसी।’’

‘‘और आपके जीजा?’’

‘‘नहीं। वो नहीं जानते। क्योंकि उन्हें कभी जरूरत ही नहीं महसूस हुई। घर पर हम तीनों ही रहते थे इसलिए सेफ का पासवर्ड भी केवल हम तीनों ही जानते थे। बाकी जानते हुए भी लम्बे समय से हमें सेफ खोलने की जरूरत नहीं पड़ी थी। कभी-कभार पापा चैक करने के लिए खोलते थे बस।’’

‘‘एक बार फिर सोचकर बताइए कि उस सेफ का नम्बर आप तीनों के अलावा और कौन जानता था? कोई तो होगा? परिवार का कोई अन्य विश्वस्त शख्स?’’

‘‘नहीं। और कोई नहीं जानता था।’’

‘‘तो फिर उस सीसीटीवी फुटेज में वो लडक़ी कैसे उस नम्बर को डायल करके सेफ खोल कर उसमें से रूपये और गहने लेकर चलती बनी?’’

मोहित कुछ नहीं बोला। उसने बेचैनी से अपनी जगह पहलू बदला।

‘‘सॉरी।’’-शालिनी बोली।

‘‘नहीं...’’-मोहित ने हाथ उठाकर कहा-‘‘मुझे आपका तरीका पसंद आया है। कौन जाने आपकी क्राइम रिपोर्टिंग मेरे ही काम आ जाए।’’

‘‘आपके काम। वो कैसे?’’

‘‘मुझे किसी भी तरह उस सनाया गौतम का पता लगाना है। मैं अपने पापा की कातिल को सलाखों के पीछे देखना चाहता हूं।’’

जबकि हकीकत ये थी कि मोहित सनाया गौतम को दस गज जमीन के नीचे देखना चाहता था।

‘‘क्या पता’’-मोहित बोला-‘‘आपके माध्यम से ही मैं उस सनाया गौतम तक पहुंच जाऊं।’’

‘‘मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ेगा मोहित जी कि मेरे ख्याल से अभी क्राइम रिपोर्टिंग उस लेवल पर नहीं पहुंची है कि पत्रकार मर्डर केस ही सॉल्व करने लग जाएं। पुलिस से पहले कातिल का पता लगा लें।’’

‘‘हर चीज की कभी तो शुरूआत होनी ही होती है। वैसे भी पुलिस तो पता लगा नहीं पा रही है। अब आप लोगों से ही उम्मीद है।’’

‘‘थैंक्स। मैं उम्मीद करती हूं कि सनाया गौतम जल्द से जल्द पकड़ी जाए। मेरा अगला सवाल है कि आपके पिता का कैरेक्टर कैसा था? मेरा मतलब...उन्हें जानने वाले तो सभी जानते हैं कि वे काफी अच्छे, आदर्शवादी इंसान थे। लेकिन आप तो उनके बेटे हैं। आपसे बेहतर उन्हें कौन जान सकता है? क्या उनकी कोई महिला दोस्त, प्रेमिका वगैरह थी? इस तरह की कोई बात कभी आपके नोटिस में आई? या उन्होंने खुद कभी आपसे इस बारे में कोई जिक्र किया हो?’’

‘‘नहीं।’’-मोहित दृढ़ स्वर में बोला-‘‘और इसीलिए इस बात पर मेरे लिए विश्वास करना मुश्किल है कि उस सनाया गौतम ने पापा को अपने...अपने जाल में फंसा लिया होगा।’’

‘‘तो फिर उन्होने अपनी जायदाद उसके नाम क्यों की? वो इस तरह से गुपचुप ढंग से करीब साल भर तक अपने घर में एक लडक़ी के साथ क्यों रह रहे थे? वो भी अपने सामाजिक जीवन से दूरी बनाकर। यहां तक कि उन्होंने अपने निकटतम दोस्तों से मिलना-जुलना भी एकदम कम कर दिया था। और उस लडक़ी के बारे में भी उन्होंने किसी को हवा तक नहीं लगने दी।’’

‘‘इन सवालों के जवाब मेरे पास नहीं हैं। मुझे खुद भी जानना है कि ये सब कैसे हुआ?’’

‘‘क्या वकील साहब आपसे खुलकर बातचीत करते थे? मतलब अगर’’-उसने ‘अगर’ पर जोर देते हुए कहा-‘‘उनका कोई अफेयर या इस तरह का मामला होता तो क्या वो आपको इस बारे में बताते?’’

‘‘हमारा रिश्ता वैसा ही था जैसा बाप-बेटे का होना चाहिए। वो मुझसे कुछ भी कह सकते थे। मैं उनसे कुछ भी कह सकता था।’’

‘‘हो सकता है, जिस तरह करीब साल भर तक उन्होंने उस लडक़ी के अपने साथ अपने घर में होने की बात अपने दोस्तों से छिपाई, उसी तरह वो अपने अन्य अफेयर्स भी-अगर कोई थे तो-आप लोगों से भी छुपाते रहे हों और आप लोगों को पता न चल पाया हो।’’

मोहित कुछ नहीं कह सका। उसकी बात में पॉइंट था।

‘‘नहीं।’’-फिर वो थोड़ा देर रूक कर खोखले स्वर में बोला-‘‘ऐसा नहीं हो सकता था। पापा बिल्कुल भी ऐसे नहीं थे।’’

‘‘ओके।’’-शालिनी ने उस बात को और खींचने से परहेज करते हुए अगला प्रश्न किया-‘‘आपके पिता का कोई दुश्मन था।’’

‘‘दुश्मन?’’

‘‘ऐसा कोई दुश्मन जो उन्हें जान से मारने चाहता हो? जिसने कभी उन्हें धमकी वगैरह दी हो? ऐसा कोई शख्स जिससे उनका झगड़ा, लड़ाई वगैरह हुई हो?’’

‘‘थे तो कुछ लोग ऐसे। आखिर पापा वकील थे। लेकिन उनमें से कोई ऐसी हरकत कर सकता हो, ये तो मुश्किल ही लगता है।’’-फिर मोहित ठहरकर बोला-‘‘सिवाय एक शख्स के।’’

‘‘कौन?’’

‘‘प्रकाश नारंग।’’

नाम सुनकर शालिनी चौंकी।

‘‘क्या हुआ?’’-मोहित ने पूछा।

‘‘वही प्रकाश नारंग, जिसे लिकर किंग कहा जाता है?’’

‘‘वही।’’

‘‘वो तो काफी खतरनाक और सनकी किस्म का इंसान है। उसके साथ आपके पिता की क्या रंजिश थी?’’

‘‘काफी पुरानी बात हो गई है। मेरे अमेरिका जाने से करीब साल भर पहले की। पापा ने नारंग के किसी आदमी के खिलाफ कोई केस ले लिया था। नारंग उसे बचाने के लिए काफी

जोर लगा रहा था। उसने पापा पर काफी दबाव बनाने की कोशिश की। डराया धमकाया भी। उस समय हमें पुलिस सिक्योरिटी लेनी पड़ी थी।''

''हां। मुझे वो मामला याद है। उस समय मैं कॉलेज में थी।''

''कॉलेज?''

''बीएससी फाइनल। कॉलेज खत्म होने के बाद फिर पत्रकारिता की लाइन में आ गई थी।''

''ओह।''

''उस घटना को लेकर हंगामा तो इतना मचा था कि पूरे शहर में तनाव उत्पन्न हो गया था। हर जगह उसी घटना की चर्चा थी।''

''एसपी साहब ने खुद घर आकर पापा को सुरक्षा का आश्वासन दिया था। पुलिस सिक्योरिटी भी दिलवाई गई थी। लेकिन बाद में ऐसा सुनने में आया था कि नारंग ने ऐसा कुछ कहा था कि वो बाद में हिसाब बराबर कर लेगा।''

''हां। ऐसी चर्चा तो हुई थी उस समय।''

''बस वही एक पापा का बड़ा और सनकी दुश्मन मुझे याद आता है, जो इस हद तक जा सकता हो।''

शालिनी के माथे पर बल पड़ गए थे।

''क्या हुआ?''-मोहित ने पूछा।

''कुछ नहीं।''

''कुछ तो बात है।प्रकाश नारंग का जिक्र आने के बाद से आप थोड़ी परेशान दिखने लगीं हैं।''

''दरअसल...मोहित जी...वो बहुत खतरनाक आदमी है।''

''ओह।''

''बल्कि साफ शब्दों में कहूं तो यहां का सबसे बड़ा गैंगस्टर है। बहुत सनकी और खतरनाक किस्म का इंसान है वो। लोग उसके नाम से ही डरते हैं। पुलिस भी उसके किसी आदमी पर भी हाथ डालने से पहले सौ बार सोचती है।''

''आप कहना क्या चाहतीं हैं?''-मोहित गहरी सांस लेकर बोला।

''यही कि...कि आपके पिता के केस में उसका हाथ नहीं लगता।''

‘‘क्यों?’’

‘‘क्योंकि ये नारंग का तरीका नहीं है। वो किसी की जान इस तरह चोरी-छिपे लेने वालों में से नहीं है। उसके पास तो गुण्डों की पूरी फ़ौज है। किसी को भी उठवाकर कत्ल कर देना और लाश गायब करवा देना उसके बाएं हाथ का खेल है...।’’

‘‘जब कुछ साल पहले पापा के साथ उसका झगड़ा हुआ था, उस समय भी वो इसी तरह गुण्डागर्दी के लिए प्रसिद्ध था।’’

‘‘उस समय वो गुण्डागर्दी के लिए प्रसिद्ध था। लेकिन अब उससे दस कदम आगे बढ़ चुका है। अवैध शराब, ड्रग्स, बार, जुआघर, जितने भी गलत धंधे होते हैं, सब उसी के इशारे पर चलते हैं। आप समझ लीजिये वो यहां का पूरा माफिया डॉन बन चुका है।’’

‘‘होगा।’’

‘‘मुझे तो यही लगता है कि जिस तरह से वकील साहब का खून हुआ, उसमे नारंग का हाथ नहीं हो सकता।’’

‘‘आपको ऐसा क्यों लगता है?’’

‘‘मैंने अभी तो आपको बताया। वो इतना बड़ा डॉन है, मुम्बई अण्डरवर्ल्ड के एक बड़े ऑर्गेनाइज्ड गैंग के साथ उसके सीधे कनेक्शन हैं, वो इस तरह ढंके-छिपे ढंग से किसी का मर्डर नहीं कर सकता।’’

‘‘आपने मुझसे पूछा था कि पापा का कोई दुश्मन था तो मैंने आपको बता दिया। आप मेरे सामने ये प्रकाश नारंग का हौव्वा क्यों खड़ा कर रहीं हैं?’’

‘‘हौव्वा खड़ा नहीं कर रही हूं, मोहित जी।’’-शालिनी के स्वर में चिंता की झलक थी-‘‘समझने की कोशिश कीजिए। मैं आपको सावधान करने की कोशिश कर रही हूं।’’

‘‘किस चीज से? नारंग से?’’

‘‘जी हां। अभी जिस तरह आपने मेरे सामने उसका नाम ले लिया, उस तरह किसी और के सामने लिया तो आपके लिए खतरा हो सकता है। नारंग को पता चल गया कि आप इस तरह उस पर आरोप लगा रहे हैं, तो...तो वो तो पूरा सनकी है। वो कुछ भी कर सकता है।’’

‘‘मैं ऐसे दो कौड़ी के गुण्डों से नहीं डरता।’’

शालिनी ने हैरानी से उसे देखा।

मोहित अपलक उसकी ओर देखता रहा।

‘‘खैर!’’-शालिनी परेशान-से स्वर में बोली-‘‘आपको बताना मेरा काम था। आगे आपकी मर्जी है। मेरी सलाह तो आपके लिए यही है कि आप उसका नाम इस मामले से दूर रखें। हमारे पेपर में आपका जो बयान छपेगा, उसमें भी हमें नारंग वाला हिस्सा हटाना पड़ेगा।’’

‘‘कमाल है। मैंने तो सुना था पत्रकार बहुत ब्रेव होते हैं।’’

‘‘पत्रकार इंसान भी होते हैं, मोहित जी, और बाकी इंसानों की तरह उनकी भी जिंदा रहने की इच्छा होती है। वैसे भी आपके बयान से नारंग वाला हिस्सा हटाने की बात मैंने इसलिए कही है क्योंकि मेरा एडीटर कभी नारंग पर इस तरह के आरोप वाला कोई आर्टिकल, कोई न्यूज छापने की इजाजत नहीं देगा। क्योंकि उसे अखबार चलाना है।’’

मोहित ने कुछ नहीं कहा।

वो कुछ सोचता रहा, फिर अचानक बोला-‘‘मुझे आपसे एक और मदद चाहिए।’’

‘‘कैसी मदद?’’-शालिनी उत्सुकता से बोली।

‘‘मुझे एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित करनी है।’’

‘‘प्रेस कॉन्फ्रेंस? किस सिलसिले में?’’

मोहित ने बताया।

‘‘ओह!’’-शालिनी ने समझने वाले भाव से सिर हिलाया-‘‘वो तो प्रेस क्लब के माध्यम से हो जाएगा।’’

‘‘आप प्रेस क्लब की मेम्बर हैं?’’

‘‘बिल्कुल हूं। आप चाहें तो कल ही मैं प्रेस कॉन्फ्रेंस की व्यवस्था करवा देती हूं।’’

‘‘थैंक्स।’’

‘‘प्लीज। थैंक्स कह कर मुझे शर्मिंदा मत करिए।’

कुछ क्षण दोनों के बीच खामोशी रही।

‘‘ओके, मोहित जी।’’-शालिनी ने टेप रिकॉर्डर बंद कर दिया-‘‘थैंक्स। कल के एडीशन में फर्स्ट पेज पर आपके बयान वाली न्यूज ही होगी।’’

जैसे मुझे उसमें दिलचस्पी है।-मोहित ने मन ही मन सोचा।

लेकिन प्रत्यक्षत: मोहित ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

‘‘और उससे पहले मैं तैयार न्यूज आपको भी भिजवा दंूगीं, जिससे आप उसे देख सकें। वैसे मैं आर्टिकल ऐसा तैयार करने की ही कोशिश करूंगी कि उसमें आपको किसी तरह की कांट-छांट करने की जरूरत न पड़े।’’

‘‘ठीक है फिर।’’-मोहित कुर्सी से उठते हुए बोला-‘‘तो अब मुझे इजाजत दीजिये। और कल वो प्रेस कॉन्फ्रेंस की व्यवस्था करवा दीजिये। मेरे साथ शायद इंस्पेक्टर वैभव शुक्ला भी होंगें...।’’

‘‘आपके पापा के केस की जांच वे ही कर रहे हैं।’’

‘‘आप जानती हैं उन्हें?’’

‘‘प्रेस रिपोर्टर हूं। पुलिस से तो दिन-रात पाला पड़ता है। वैभव जी अच्छे आदमी हैं। थोड़े रूखे, कडक़मिजाज हैं। लेकिन हैं अच्छे इंसान। पुलिस में होने के कारण स्वभाव में सख्ती तो आ ही जाती है।’’

‘‘सही कहा आपने। अच्छे आदमी तो वो हैं। तो वो अच्छे आदमी भी कल प्रेस कांन्फ्रेंस में मेरे साथ होंगें शायद। अगर आने के लिए राजी हुए तो।’’

‘‘ओके। मैं प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए बात करके आपको सूचित करती हूं।’’

मोहित ने उससे विदा ली और ऑफिस से बाहर निकल गया।

मोहित सुबह दस बजे प्रेस क्लब की बिल्डिंग में पहुंचा।

प्रेस कॉन्फ्रेंस 11 बजे से शुरू होनी थी।

11 बजने से 15-20 मिनट पहले तक ही प्रेस कॉन्फ्रेंस की लगभग सारी तैयारी हो चुकीं थी। शालिनी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की तैयारी में उसकी पूरी सहायता की। हालांकि प्रेस कॉन्फें्रस में वो शामिल नहीं हो सकती थी क्योंकि उसे किसी अन्य काम से कहीं और जाना था। उसने मोहित को पहले ही बता दिया था कि उसके अखबार से कोई अजय नामक दूसरा पत्रकार प्रेस कॉन्फ्रेंस में उपस्थित रहेगा।

प्रेस क्लब जाते समय मोहित ने एक अजीब बात ये भी नोट की थी की एक वैन में एक ऊँचे कद का बॉडी बिल्डर जैसा दिखने वाला आदमी उसे 2-3 बार अपने पीछे दिखा।

क्या वो उसका पीछा कर रहा था?

लेकिन प्रेस क्लब पहुंचने के बाद मोहित को वो कहीं दिखाई नहीं दिया।

शायद मेरा वहम हो।-मोहित ने सोचा।

मोहित के आग्रह पर इंस्पैक्टर वैभव भी प्रेस कॉन्फ्रेंस में पहुंच गया था। मोहित ने उसे बता दिया था कि वो ये प्रेस कॉन्फ्रेंस क्यों आयोजित कर रहा है। वैभव ने पुलिस की ओर से भी इस पर कोई आपत्ति नहीं होने का आश्वासन दिया था। बल्कि मोहित के उस कदम से सनाया गौतम का कोई सुराग मिलने, उसके पकड़े जाने की सम्भावना बढ़ जाती, जिसके चलते वैभव मोहित के उस कदम से खुश ही था।

मोहित कॉन्फ्रेंस हॉल में बैठा इंस्पैक्टर वैभव से बातें कर रहा था। सामने लगी कुर्सियों में से कई कुर्सियों पर पत्रकार आकर जम भी गए थे।

‘‘तो आप हैं मिस्टर मोहित वर्मा।’’-एक पत्रकार मोहित के समीप आया।

मोहित ने उससे हाथ मिलाया।

‘‘मैं ‘खबर की तेजरफ्तार’ से अभिमन्यु चौहान। जान सकता हूं आपने ये प्रेस कॉन्फ्रेंस क्यों आयोजित की?’’

मोहित ने बोलने के लिए मुंह खोला ही था कि उससे पहले इंस्पैक्टर वैभव ने ही उस रिपोर्टर को जवाब दे दिया-‘‘थोड़ा सब्र करो भाई। अब प्रेस कॉन्फ्रेंस में आ ही गए हो तो पता भी चल जाएगा।’’

रिपोर्टर मुस्कुराया, फिर जाकर सामने लगी सीटों पर अन्य पत्रकारों के साथ जाकर बैठ गया।

कुछ ही देर में समय हो गया। सभी पत्रकारों की उत्सुक निगाहें मोहित की ओर थीं।

‘‘मैंने ये प्रेस कॉन्फ्रेंस इसलिए बुलाई है’’-मोहित ने अपने सामने लगे छोटे से माइक पर बोलना शुरू किया-‘‘क्योंकि मैं कुछ बातें स्पष्ट कर देना चाहता हूं। आज से करीब तीन महीने पहले मेरे पिता श्री गिरिराज वर्मा का हिल रोड स्थित मकान में कत्ल हो गया था। हत्यारे को अब तक नहीं पकड़ा जा सका है। पुलिस अपनी जांच में इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि उनका कत्ल उनके साथ रह रही किसी सनाया गौतम नामक युवती ने किया है। उसी ने घर की सेफ से 45 लाख रूपयों की चोरी भी की, जिसमें सोने-चांदी के गहने भी शामिल थे। इसके अलावा पापा की वसीयत में भी सारी प्रॉपर्टी उस सनाया गौतम के नाम ही कर दी गई थी, जिससे इस बात की और भी पुष्टि होती है कि उस सनाया गौतम ने ये सब पापा की जायदाद हथियाने के लिए किया।’’

कह कर मोहित एक सेकंड के लिए सांस लेने के लिए रूका ही था कि सामने बैठे एक पत्रकार ने सवाल दाग दिया-‘‘मिस्टर मोहित, ये सब तो हम पहले से ही जानते हैं। आपने तो कहा था कि आप कोई अपील करने वाले थे?’’

‘‘मैं उस पर पहुंच रहा हूं।’’-मोहित ने कहा-‘‘मेरी नैनीताल ही नहीं बल्कि पूरे प्रदेश की, पूरे देश की जनता से अपील है कि मेरे पिता की हत्यारी, उस सनाया गौतम को पकड़वाने में मेरी, पुलिस की मदद करे। जिससे उसे उसके किए की सजा मिल सके। और जो भी सनाया गौतम के बारे में पुख्ता सूचना देगा, जिससे उसकी गिरफ्तारी में मदद मिल सके, उसे दस लाख रूपए का नकद इनाम दिया जाएगा।’’

पत्रकारों के बीच में से सरगोशियों के स्वर उठने लगे।

‘‘और सीधे सनाया गौतम को गिरफ्तार कर पुलिस के हवाले करवाने की स्थिति में ये रकम दुगुनी होगी।’’

सरगोशियों के स्वर तेज हो गए।

‘‘अब आप अपने सवाल पूछ सकते हैं।’’-मोहित ने पत्रकारों से कहा।

‘‘मिस्टर मोहित-आप इतने दिनों तक कहां थे? आखिर ऐसा कौन सा जरूरी काम था, जिससे आप अपने पिता के लास्ट रिचुअल भी पूरे करने नहीं आ सके?’’

‘‘मैं उस समय चीन में कंपनी के काम के सिलसिले में गया था।’’-मोहित बोला, उसे पता था इन सवालों का सामना उसे बार-बार करना पड़ेगा-‘‘वहां से लौटने में मुझे करीब 20 दिन लग गए थे। इस दौरान मुझे इस घटना का पता भी नहीं चल पाया था। अमेरिका आने के बाद जब मेरी अपनी बहन मानसी से बात हुई, तब तक पापा के लास्ट रिचुअल भी पूरे हो चुके थे। उसके बाद मैंने कंपनी की जॉब छोडक़र भारत लौटने का इरादा बना लिया,

जिसके चलते कंपनी की जॉब छोडऩे और अन्य फॉर्मेलिटीज पूरी करने के चक्कर में कई दिन और लग गए।''

पत्रकारों ने उससे और भी सवाल पूछे, जिनके जवाब देने के बाद जब मोहित ने प्रेस कॉन्फ्रेंस समाप्त करने की घोषणा की, उसी समय पत्रकार दीर्घा में पीछे बैठे एक पत्रकार ने पूछा-''मिस्टर मोहित।''

''यस।''-मोहित ने प्रश्नवाचक भाव से उसकी ओर देखा।

''आपकी नजर में आपके पिता का कोई ऐसा दुश्मन है, जो उनका कत्ल करवा सकता हो? कोई पुरानी रंजिश रखने वाला शख्स?''

''प्रकाश नारंग।''

हॉल में सन्नाटा छा गया।

मोहित ने सामने बैठे पत्रकारों के चेहरों पर नजर डाली। ऐसा लग रहा था, जैसे उनको सांप सूंघ गया हो।

''क्या हो गया?''-वो खुद को पूछने से नहीं रोक पाया।

''आपको पता है प्रकाश नारंग कौन है?''-सामने बैठे एक वरिष्ठ पत्रकार ने कहा।

''हां।''-मोहित बोला-''हमारा उससे पहले भी पाला पड़ चुका है। और उसी सिलसिले में मैंने पापा के ऐसे दुश्मन के रूप में उनका नाम लिया है। आप लोगों को भी याद होगा।''

''हमें याद है।''-सामने ही बैठा एक अन्य पत्रकार बोला-''लेकिन प्रकाश नारंग अब पहले से बहुत ज्यादा शक्तिशाली हस्ती बन चुका है। बुरा मत मानियेगा लेकिन इस तरह सीधे उसका नाम लेकर आप उससे दुश्मनी मोल रहे हैं।''

''मेरी जानकारी में वही एक आदमी है, जिसने पापा को धमकी दी थी। और बाद में जब उसके किए कुछ हो नहीं पाया तो उसने बाद में हिसाब बराबर करने की धमकी भी दी।''

''तो आपको ऐसा लगता है कि''-दूसरी कतार के एक पत्रकार ने कहा-''नारंग ने आपके पिता के साथ हिसाब बराबर किया है?''

''नहीं। आप लोगों ने पापा से पुरानी रंजिश रखने वाले शख्स का नाम पूछा था। मैंने बता दिया। कोई और सवाल?''

उसके बाद कोई और सवाल नहीं पूछा गया लेकिन पत्रकारों के चेहरे के भाव बदले हुए दिख रहे थे।

मोहित के साथ बैठा वैभव भी बुरी तरह खिन्न दिख रहा था।

''मिस्टर मोहित।''-उसने खिन्न लेकिन धीमे स्वर में कहा-''आपने मुझे बताया नहीं था कि आप प्रकाश नारंग का नाम लेने वाले थे।''

''मुझे भी नहीं पता था।''-मोहित शांत स्वर में बोला-''उस पत्रकार ने पापा के पुराने दुश्मन का नाम पूछा तो...।''

''क्या सिर्फ नारंग ही आपके पिता का इकलौता दुश्मन था?''

''उन्हें जान से मारने की धमकी देने वाला, और बाद में हिसाब बराबर करने की बात कहने वाला इकलौता दुश्मन था।''

''लेकिन उस वक्त में और अब में काफी अंतर है।''

''इंस्पैक्टर साहब, आप जो भी कहना चाहते हैं, साफ-साफ क्यों नहीं कहते?''

''आपको साफ-साफ सुनना है तो सुनिए। चार साल पहले नारंग से जब आपके पिता का वास्ता पड़ा था, उस वक्त वो संपोला था। अब वो अजगर बन चुका है। अब लोग उसका नाम लेने से भी डरते हैं। कई बड़े नेताओं से लेकर मंत्रियों तक उसकी पहुंच है। आपके समय में वो जितना बड़ा गुण्डा था, उतने बड़े सैंकड़ों गुण्डे तो अब उसके अण्डर में काम करते हैं। उसका प्रभाव इतना है कि बड़े-बड़े लोग उसके खिलाफ बोलने से डरते हैं। उसके खिलाफ दर्ज अपराधों की लम्बी फेहरिश्त है लेकिन उसकी दहशत इतनी है कि कोई गवाह सामने आने की हिम्मत नहीं कर पाता। इतने अपराध दर्ज होने के बाद भी उसे उसे गिरफ्तार नहीं किया जाता। वो कभी भी किसी को भी मार कर उसकी लाश गायब करवा सकता है। आपने ऐसे खतरनाक और पॉवरफुल शख्स का नाम इस तरह प्रेस कॉन्फ्रेंस में ले कर ओखली में सिर देने का काम किया है।''

''कमाल है। मुझे पता नहीं था कि पुलिस भी इतनी अच्छी तरह एक क्रिमिनल के गुण गा सकती है।''

वैभव का चेहरा लाल हो गया। उसने गुस्से से घूर कर मोहित की ओर देखा।

मोहित ने उसके घूरने की परवाह न करते हुए कहा-''और मैंने ओखली में सिर दे दिया है का क्या मतलब है? वो नारंग मूसल है? खैर, आपने वो कहावत तो सुनी ही होगी। जब ओखली में सिर दे ही दिया है तो नारंग से क्या डरना?''

''देखिए, मिस्टर मोहित।''-वैभव किसी तरह खुद को जब्त करते हुए बोला-''मैं आपके भले के लिए ही समझा रहा हूं। नारंग के बारे में ये बातें आपको कोई भी बता सकता है। मैं

इसलिए बता रहा हूं क्योंकि मैं नहीं चाहता कि आपके साथ कुछ बुरा हो। मैं चाहता हूं कि आप जल्दी से जल्दी इस चीज को समझ लें और अपनी गलती सुधारने की कोशिश करें।''

''अच्छा। और वो कैसे होगा?''

''प्रेस वालों को फिर इकठ्ठा करके उन्हें कह दें कि नारंग का नाम आपने गलती से ले लिया था। उनसे कहिए कि आपके पिता और नारंग के बीच जो विवाद हुआ था, वो बहुत पुरानी बात थी।''

''इतने से हो जाएगा?''

''इसके अलावा और कोई रास्ता तो नहीं दिख रहा।''

''आपकी सलाह के लिए धन्यवाद, इंस्पैक्टर साहब।''-मोहित बोला-''लेकिन मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाला। लेकिन मुझे ये जानकर बड़ा अफसोस हुआ कि आप उस नारंग की जांच कराने के स्थान पर उल्टे मुझे उसके खौफ से परिचित करा रहे हैं। ये बता रहे हैं कि वो इतना खतरनाक, इतना ताकतवर आदमी है कि मुझे समूचा ही निगल जाएगा।''

''अब आपकी समझ में नहीं आ रहा है तो मुझे कुछ और नहीं कहना। मुझे लगा था आप समझदार आदमी हैं।''

''और मुझे लगा था आप पुलिस के जिम्मेदार अधिकारी हैं, जो कम से कम किसी गुण्डे-मवाली का खौफ तो नहीं खाता होगा।''

''आपकी बातों में जवानी का जोश है लेकिन बेवकूफी भी। ये कोई फिल्म नहीं चल रही है, जिसमें पुलिस विलेन को पकड़ लेती है, सत्य की जीत होती है, झूठ पराजित होता है और क्लाइमैक्स में हीरो-हीरोइन की शादी के सीन के साथ 'दी एंड' लिखा हुआ आ जाता है। असल जिन्दगी में बहुत कुछ ऐसा होता है, जो आपके कंट्रोल से बाहर होता है, चाहे आप कितने ही ताकतवर, कितने ही सामथ्र्यवान क्यों न हों। ये बात देर से ही सही लेकिन एक दिन आपको भी समझ में आ जाएगी। मैं इंस्पेक्टर हूं तो इसका मतलब ये नहीं कि सारे अपराधियों को अपने आगे घुटने टिकवा लूंगा। अगर पुलिस इतनी ही सामथ्र्यवान होती तो अपराधी पनपते ही नहीं। आए दिन जो इतने अपराध घटित हो रहे हैं, ये होते ही नहीं। आजकल तो अपराधी भी इतने सामथ्र्यवान हो गए हैं कि बड़े-बड़े अधिकारियों को अपनी उंगलियों के इशारों पर नचाते हैं।''

''पुलिस की ड्यूटी ऐसे अपराधियों को गिरफ्तार करना है या लोगों को उनके खौफ के बारे में जानकारी देकर उनके खिलाफ बोलने से रोकना?''

वैभव ने असहाय भाव से सिर हिलाया।

‘‘मैं चलता हूं।’’-मोहित उठ खड़ा हुआ-‘‘बाद में मिलता हूं आपसे। थैंक्स। प्रेस कॉन्फ्रेंस में मेरे साथ रहने के लिए।’’ उसने वैभव की ओर हाथ बढ़ा दिया।

वैभव ने बड़े उदासीन ढंग से उससे हाथ मिलाया।

फिर मोहित प्रेस क्लब से बाहर निकल गया।

मोहित ने दिल्ली में 'क्राइम इन्वेस्टिगेशंस' के ऑफिस में कदम रखा।

मानसी द्वारा प्राइवेट डिटेक्टिव हायर किए जाने की जानकारी दिए जाने के बाद से ही वो उस प्राइवेट डिटेक्टिव से मिलना चाहता था। इसीलिए नैनीताल में प्रेस कॉन्फ्रेंस से फुर्सत मिलने के बाद उसने सीधे दिल्ली का रूख किया।

वो प्राइवेट डिटेक्टिव अविनाश भारद्वाज की डिटेक्टिव एजेंसी थी, जिसे मानसी ने सनाया गौतम का पता लगाने के लिए हायर किया था।

ऑफिस के रिसेप्शन रूम में एक फिल्म स्टार्स जैसी खूबसूरत रिसेप्शनिस्ट ने उसका स्वागत किया।

''वेलकम सर।''-वो उसकी ओर एक हाईवोल्टेज मुस्कान बिखेरती हुई बोली-''आपकी अपॉइंटमेंट है?''

''हां।''-मोहित बोला-''मेरी सिस्टर ने मिस्टर अविनाश भारद्वाज को हायर किया है। मुझे उसी केस के सिलसिले में उनसे कुछ बात करनी है।''

''आपकी सिस्टर का नाम?''-युवती ने काउंटर पर रखे कम्प्यूटर पर निगाहें जमाते हुए कहा, उसकी उंगलियां की-बोर्ड पर नाच रहीं थीं।

''मानसी सक्सेना।''

''फ्रॉम नैनीताल?''-युवती ने उत्सुकता से मोहित की ओर देखा।

मोहित ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

युवती को कम्प्यूटर पर कुछ ही सेकेंड लगे। फिर वो मोहित की ओर घूमकर पहले की तरह ही मुस्कुराते हुए थोड़ी दूर पर स्थित दरवाजे की ओर इशारा करके बोली-''आप सर से मिल सकते हैं। ही इज वेटिंग फॉर यू।''

मोहित उस दरवाजे की ओर बढ़ गया।

उसने दरवाजा खोलकर अंदर ऑफिस में कदम रखा।

ऑफिस ज्यादा बड़ा नहीं था लेकिन करीने से सजा हुआ और व्यवस्थित था। सामने ही एक टेबल के पीछे एक नौजवान बैठा था, जिसकी उम्र 30-32 के आसपास थी। वो किसी हॉलीवुड हीरो तरह स्मार्ट लेकिन चेहरे से ही बेहद तेजतर्रार दिखने वाला युवक था।

''प्लीज, सिट डाउन!''-उसने मोहित को टेबल के सामने रखी रिवॉल्विंग चेयर पर बैठने के लिए इशारा किया।

मोहित ने बैठने से पहले उसकी ओर हाथ बढ़ाया, जिसके जवाब में उसने मुस्कुराते हुए हाथ जोड़ दिए।

मोहित ने उलझनपूर्ण भाव से उसकी ओर देखा तो उसने टेबल पर साइड में रखे सेनीटाइजर्स की बॉटल की ओर इशारा किया। उस टेबल पर जहां कुछ फाइल्स, लैपटॉप वगैरह रखे थे, वहीं सेनीटाइजर की बॉटल काफी अजीब लग रही थी।

''ओह।''-मोहित को समझ आया। वो भी उसकी नमस्ते के जवाब में हाथ जोड़ते हुए रिवॉल्विंग चेयर पर बैठ गया।

''इस बीमारी ने सभी की हालत खराब कर रखी है।''-वो मोहित से बोला-''सिक्योरिटी मेजर्स को तो पालन करना ही पड़ रहा है।''

''कोई बात नहीं।''-मोहित बोला-''इसमें कोई दिक्कत की बात नहीं है। आप ही हैं अविनाश भारद्वाज?''

''आपकी तेज निगाहों की दाद देता हूं, मिस्टर मोहित। मैं ही अविनाश भारद्वाज हूं। आप बताइए''-फिर वो गर्मजोशी के साथ बोला-''मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूं?''

''वही, जो करने के लिए आपको कहा गया है।''

''मतलब?''

''सनाया गौतम के बारे में आपकी तहकीकात कहां तक पहुंची?''

उसने एक गहरी सांस ली-''एकदम टू द पॉइंट। ओके।''

मोहित उसे एकटक देखता रहा।

''देखिए, मिस्टर मोहित''-उसने कहा, उसकी आवाज में कुछ ऐसा रौब, कुछ ऐसा प्रभाव था कि उसकी बात काटना मुश्किल लगता था-''कल रात ही आपकी बहन मिसेज मानसी सक्सेना की कॉल आई थी, जिसमें उन्होंने बताया था कि आप मुझसे मिलने आने वाले हैं। आपका स्वागत है। मिलने में मुझे कोई प्रॉब्लम नहीं है। लोगबाग को आपस में मिलते रहना चाहिए। मिलने से जान-पहचान का दायरा बढ़ता है। सामाजिकता बढ़ती है। मेल-जोल करते रहना बहुत जरूरी है। यहां तक कि एक गाने में भी कहा गया है कि एक मुलाकात जरूरी है सनम...।''

कहना क्या चाहते हो?

''...लेकिन...''-फिर उसने 'लेकिन' पर जोर देते हुए कहा-''मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि आपकी हसरत मैं इस वक्त पूरी नहीं कर सकता।''

‘‘जी?’’

‘‘मैं आपको सनाया गौतम से सम्बंधित अपनी इन्वेस्टिगेशन के बारे में जानकारी नहीं दे सकता।’’

‘‘क्यों?’’-मोहित आश्चर्य से बोला।

‘‘देखिए, मोहित जी, क्रिमिनल केसेज की जांच में कई पाबंदियां होती हैं, कई दायरे होते हैं, जिनसे बाहर निकलना मुश्किल होता है। केस की जांच प्रभावित न होने पाए, इसलिए कुछ नियमों, कुछ रूल्स का पालन करना जरूरी होता है।’’

‘‘जैसे?’’

‘‘जैसे जांच के बीच में उसकी जानकारी शेयर नहीं की जाती।’’

‘‘क्लायंट से भी?’’

‘‘किसी से भी नहीं। और किसी में क्लायंट भी आता है। वैसे भी’’-वो थोड़ा रूक कर बोला-‘‘आप मेरे क्लायंट नहीं हैं। मेरे क्लायंट अरविंद जी और मानसी जी हैं।’’

‘‘जीजा जी भी आए थे आपके पास?’’

‘‘हां। दोनों ही आए थे।’’

‘‘तो आप जानकारी नहीं देंगें तो क्लायंट को पता कैसे चलेगा, उसका काम हो भी रहा है या नहीं? इन्वेस्टिगेशन कहां तक पहुंची? सही दिशा में हो भी रही है या नहीं?’’

‘‘आप मेरे काम पर सवाल उठा रहे हैं? आप कहना चाह रहे हैं कि काम नहीं हो रहा है? आपकी बहन ने मुझे सनाया गौतम का पता लगाने के लिए हायर किया है और मैं ऐसा न करके यहां खाली बैठकर टाइम पास करते हुए उन्हें मूर्ख बना रहा हूं?’’

‘‘नहीं।’’-मोहित हड़बड़ा गया-‘‘मेरा ये मतलब नहीं था।’’

‘‘अगर आपका ये मतलब नहीं था, तब ठीक है।’’-वो शांत स्वर में बोला-‘‘आपकी जानकारी के लिए बता दूं कि हमारी डिटेक्टिव एजेंसी के कुछ रूल्स हैं, जिनके बारे में क्लायंट को पहले ही अवगत करा दिया जाता है। मानसी जी को कराया गया था लेकिन आपको नहीं क्योंकि जाहिर है आप हमारे क्लायंट नहीं है। आपको जानकारी नहीं थी इसीलिए आप अपने इस संदेह के साथ यहां तस्दीक करने आ गए कि हम लोग कुछ जांच कर भी रहे हैं या नहीं। वो रूल्स कुछ इस प्रकार हैं कि अगर केस की जांच लम्बी चलती है तो हम हर दो हफ्ते में क्लायंट को रिपोर्ट देते हैं, जो कि मानसी जी के केस के मामले में अभी नहीं हुए हैं। अगर हमें जरूरी लगता है तो रिपोर्टिंग करने का टाइम और भी बढ़ा

सकते हैं। इस दौरान केस की रिपोर्टिंग के लिए हम क्लायंट से पूछताछ कर सकते हैं लेकिन क्लायंट हमसे पूछताछ नहीं कर सकता। करने का कोई फायदा भी नहीं होगा क्योंकि हम कुछ बताएंगें नहीं।''

''अजीब रूल्स हैं।''-मोहित सामान्य रूप से बोला-''ऐसा लग रहा है ये रूल्स आपकी सुविधा के लिए ही हैं।''

''लगता है आपका पाला पहली बार किसी प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी से पड़ा है। एनीवे, बहुतों के साथ ऐसा होता है। बहुतों का पहली बार ही होता है। मैं आपको बता दूं कि ये रूल्स हमारी सुविधा के लिए नहीं हैं। आपको ऐसा इसलिए लगा क्योंकि आप छिद्रान्वेषी भाव से ऐसा ही कुछ ढूंढना चाह रहे थे। ये रूल्स केस की इन्वेस्टिगेशन को सीक्रेट रखने के लिए हैं। जिससे कोई जानकारी लीक न होने पाए।''

''क्लायंट से भी सीक्रेट रखके?''-मोहित हैरानी से बोला।

''बिल्कुल। क्लायंट कोई आसमान से उतरा हुआ नहीं होता। उसका कई लोगों के बीच उठना-बैठना होता है। हो सकता है कि हम उसे इन्वेस्टिगेशन के बारे में बता दें और वो बाहर जाकर अपने रिश्तेदारों, करीबियों से उसे शेयर कर दे और वो जानकारी अपराधी तक पहुंच जाए, जो नहीं पहुंचनी चाहिए। क्रिमिनल केसेज की इन्वेस्टिगेशन में ऐसा होने का खतरा बहुत होता है। इसलिए जब तक हम किसी ठोस नतीजे पर नहीं पहुंच जाते, तब तक इन्वेस्टिगेशन को सीक्रेट रखना हमारी मजबूरी होती है।''

''ओह।''

''दैट्स इट।''

''यानी आप मुझे केस की इन्वेस्टिगेशन के बारे में कोई जानकारी नहीं दे सकते।''

''फिलहाल मैं आपको इतना ही बता सकता हूं कि हमें सनाया गौतम का सुराग मिल गया है और हम उस दिशा में काम कर रहे हैं।''

''क्या सुराग मिला है आपको?''

''मैंने कहा न फिलहाल मैं आपको इतना ही बता सकता हूं कि सुराग मिला है। क्या सुराग मिला है, वो न ही पूछें तो बेहतर है।''

''फिर क्या फायदा हुआ?''

''सब्र रखिए, मिस्टर मोहित, सब्र। सब्र का फल मीठा होता है।''

‘‘लेकिन एक तरफ आप कह रहे हैं कि आपके पास सनाया गौतम का अहम सुराग है, दूसरी ओर बता भी नहीं रहे हैं कि वो सुराग क्या है?’’

‘‘मोहित जी, ऐसा समझिए कि वो अहम सुराग एक डिटेक्टिव के काम का ही है। आपके मतलब का नहीं है। या दूसरे शब्दों में खीर अभी आधी ही पकी है। एक समझदार आदमी कभी आधी पकी खीर की हंडिया में मुंह नहीं मारना चाहेगा। इंतजार कीजिए, जब तक खीर पूरी नहीं पक जाती। फिर मैं बाकायदा दस्तरखान बिछाकर शानदार क्रॉकरी में सजाकर वो खीर आपको, मानसी जी को और अरविंद जी को सर्व करूंगा। लेकिन तब तक के लिए सब्र रखिए। बड़े-बड़े काम सब्र रखने से ही हुए हैं।’’

मोहित ने गहरी सांस ली। प्राइवेट डिटेक्टिव बड़े फैंसी ढंग से बात करता था।

‘‘चलिए, आप मुझे अपनी इन्वेस्टिगेशन के बारे में, सनाया गौतम के बारे में कुछ नहीं बता सकते तो एक दूसरी ही मदद कर दीजिये।’’-मोहित बोला।

‘‘बताइए।’’

‘‘इसे एक निजी मदद समझिए। और इसके बारे में आपकी मुख्य क्लायंट-मेरी बहन मानसी-को पता नहीं चलना चाहिए।’’

‘‘ऐसी कौन सी मदद है?’’

‘‘पहले आप बताइए कि आप मेरी मदद करेंगें या नहीं? बिना मानसी की जानकारी में आए।’’

‘‘आप तो बहुत सस्पेंसफुल हो रहे हैं।’’

‘‘पहले बताइए।’’

‘‘जब आप काम बताएंगें, उसके बाद ही तो मैं इस सिलसिले मैं कुछ कह सकूंगा।’’

‘‘ऐसा कोई बड़ा काम नहीं है। मैं अकेले भी कर सकता हूं। लेकिन उसमें टाइम लगेगा और ज्यादा भटकना पड़ेगा। आप यहीं के रहने वाले हैं। लोगों को अच्छी तरह जानते हैं। किसी चीज की व्यवस्था करनी हो तो आपको उसका आइडिया होगा...।’’

‘‘लौंडिया चाहिए?’’

‘‘जी?’’-मोहित जैसे आसमान से गिरा।

उसने अपनी बात दोहराई।

‘‘क्या बकवास कर रहे हैं आप।’’-मोहित उखड़े स्वर में बोला।

‘‘अरे। आप तो गुस्सा होने लगे। बहन से छुपा कर करना चाहते हैं। इतना घुमा-फिरा कर, इतनी लाग-लपेट के साथ बोल रहे हैं। आदमी को शक तो होगा ही।’’

मोहित का मन कर रहा था कि या तो अपना सिर फोड़ ले या इस प्राइवेट डिटेक्टिव का। उसने खुद को जब्त किया।

‘‘नहीं।’’-वो धैर्यपूर्वक बोला-‘‘मुझे लौंडिया नहीं चाहिए।’’

‘‘तो फिर?’’

‘‘मुझे एक रिवॉल्वर चाहिए।’’

‘‘ओह। तो ये बात है।’’

‘‘जी।’’

‘‘तो लाइसेंस के लिए एप्लाई कर दीजिए और खरीद लीजिए।’’

‘‘नहीं। मुझे लाइसेंस-वाइसेंस के झंझट में नहीं पडऩा। मुझे ऐसे ही एक रिवॉल्वर चाहिए। और जल्दी चाहिए। जिससे नैनीताल वापसी के समय मुझे अपनी सुरक्षा को लेकर कोई चिंता न हो।’’

‘‘किससे खतरा है आपको?’’

‘‘वो सब छोड़िए। ये समझिए कि मैं इतने सालों तक अमेरिका में रहा हूं और वहां बहुत सारे लोग सुरक्षा की दृष्टि से अपने साथ आर्म्ड वैपन रखते हैं। अमेरिका में मेरे पास रिवॉल्वर है लेकिन वो न्यूयॉर्क वाले फ्लैट में ही रह गई। उसे मैं साथ नहीं ला पाया। हथियार रखने की आदत सी हो गई है अब। यहां साथ नहीं है तो इनसिक्योर फील होता है।’’

अविनाश ने गहरी निगाहों से मोहित को देखा।

मोहित ने अपलक उससे नजरें मिलाईं।

‘‘न्यूयॉर्क में-अमेरिका में-कितने लोगों की जानें लीं आपने उस रिवॉल्वर से?’’

‘‘जी?’’

‘‘चलिए, जानें लेने की बात छोड़िए, खुद को बचाने के लिए या किसी पर हमला करने के लिए कितनी बार रिवॉल्वर निकालने की जरूरत पड़ी आपको?’’

मोहित उस सवाल का सही-सही जवाब नहीं दे सकता था।

लेकिन उसे रिवॉल्वर तो चाहिए थी।

“2-3 बार।”-उसने झूठ बोला।

वो कुछ देर मोहित को घूरता रहा।

“आप झूठ बोल रहे हैं।”-फिर वो गहरी सांस लेकर बोला-“लेकिन चलिए, जाने दीजिए इस लम्बी बहस को। आप बस मुझे ये बता दीजिए कि ये जो रिवॉल्वर आप खरीदना चाहते हैं, इसका आप कोई गलत उपयोग नहीं करेंगें। अपनी सुरक्षा के लिए ही उपयोग करेंगें। तो शायद मैं आपके लिए इंतजाम कर सकूं।”

“इसके लिए आप निश्चिंत रहिए।”-मोहित विश्वास के साथ बोला-“मुझे बस सुरक्षा के अहसास के तौर पर रिवॉल्वर चाहिए।”

“ठीक है। दिलाता हूं मैं आपको सुरक्षा का अहसास। लेकिन अगर कुछ गड़बड़ हुई तो इतना याद रखिए, मैं आपकी शक्ल भी पहचानने से इनकार कर दूंगा। वैसे आप समझदार आदमी लगते हैं। उम्मीद है, ऐसी कोई नौबत नहीं आने देंगें।”

“भरोसा रखिए, डिटेक्टिव महोदय, ऐसा कुछ नहीं होगा।”

“आप पर भरोसा करना मुश्किल है। आप दिखते बड़े सीधे हैं लेकिन मेरा अब तक का एक्सपीरियंस कहता है कि आप बहुत पहुंची हुई चीज हैं।”

“तो कितने समय में रिवॉल्वर मिल सकती है?”

“आप दोपहर 2 बजे के बाद आ जाइये।”

“ओके। पैसे कितने लग जाएंगें?”

“बुलेट्स भी चाहिए होंगीं?”

“नहीं। बुलेट्स की क्या जरूरत है। मैं रिवॉल्वर में बताशे भरकर चलाऊंगा।”

अविनाश हंसा, फिर उसने बताया कि लोडेड रिवॉल्वर के लिए कितनी रकम दरकार होगी।

“ठीक है।”-मोहित ने जाने का उपक्रम किया-“मैं दोपहर दो बजे आता हूं।”

“लेकिन याद रखियेगा, मैं ये रिवॉल्वर आपके लिए इस भरोसे के साथ उपलब्ध करवा रहा हूं कि आप कोई सनकी, पागल, साइकोपैथ इंसान नहीं है। उस रिवॉल्वर को किसी बेवकूफी के लिए नहीं ले रहे हैं। उसे केवल अपनी सिक्योरिटी के लिए अपने साथ रखेंगें।”

“इस बात के लिए बेफिक्र रहिए, डिटेक्टिव साहब।”-मोहित बोला और दरवाजे की ओर बढ़ गया।

‘‘जाते-जाते एक सवाल और मोहित जी।’’-पीछे से अविनाश ने टोका।

मोहित ने प्रश्नसूचक भाव से उसकी ओर देखा।

‘‘बाहर जो मेरी सेक्रेट्री बैठी है, वो बहुत हॉट है न?’’

मोहित मन ही मन कलप गया।

दीदी और जीजा जी को भी ऐसा ठरकी प्राइवेट डिटेक्टिव ही मिलना था?

‘‘हां।’’-प्रत्यक्षत: मोहित उसके सुर में सुर मिलाते हुए बोला-‘‘बहुत हॉट है। मैं आया, उस वक्त तो लपटें उठ रहीं थीं।’’

अविनाश हंसा-‘‘रोशनी नाम है उसका।’’

‘‘तो मैं क्या करूं?’’

‘‘उसे समझाइये। बहुत संस्कारी लडक़ी है। किसी को घास नहीं डालती। खास तौर पर अपने बॉस को तो बिल्कुल भी नहीं। वो भी इतने हैण्डसम, इतने कूल, इतने स्टाइलिश बॉस को तो बिल्कुल भी घास नहीं डालती। उसे समझाइये कि इस तरह अपनी जवानी बर्बाद न करे। कुछ अपने बारे में सोचे, कुछ अपने बॉस के बारे में सोचे, जो सारा दिन उसकी चिंता में घुला जाता है।’’

‘‘कमाल है!’’-मोहित बोला।

‘‘क्या कमाल है?’’

‘‘आमतौर पर ‘ब्यूटी विद ब्रेन’ का संगम कम ही देखने को मिलता है।’’

‘‘ ‘ब्यूटी विद ब्रेन’? रोशनी? शायद आपको कोई गलतफहमी हुई है। वो ब्यूटीफुल तो है-बल्कि बहुत है-लेकिन ब्रेन के मामले में ढक्कन है। भगवान ने उसे खूबसूरती तो दिल खोल कर दी लेकिन अक्ल देने का नम्बर आया तो कंजूसी कर गए।’’

‘‘अभी-अभी तो आपने कहा वो आपको घास नहीं डालती। अगर वो ऐसा करती है, तब तो मेरे हिसाब से वो बहुत समझदार लडक़ी हुई।’’

‘‘आपने तो दिल तोड़ दिया।’’-अविनाश ने एक गहरी सांस ली।

मोहित मुस्कुराया और ऑफिस से बाहर निकल गया।

दोपहर दो बजे मोहित फिर प्राइवेट डिटेक्टिव के हुजूर में हाजिरी देने पहुंचा।

‘‘आइये, मिस्टर रैम्बो।’’-अविनाश ने उसका स्वागत किया।

मोहित ने उसकी ओर एक पैकेट बढ़ाया।

अविनाश ने पैकेट लेकर देखा, उसमें ऐन उतनी ही रकम थी, जितनी रिवॉल्वर के लिए उसने मोहित को बताई थी।

फिर उसने भी ड्राअर से एक पैकेट निकालकर मोहित की ओर बढ़ा दिया।

मोहित ने उसे खोलकर देखा। उसमें एक अच्छे किस्म की भरी हुई रिवॉल्वर थी।

‘‘थैंक्स।’’-मोहित बोला।

‘‘थैंक्स की कोई जरूरत नहीं। जस्ट बी केयरफुल विद इट।’’

‘‘उसके लिए आप चिंता मत करिये। जब तक एकदम सख्त जरूरत न पड़े, तब तक तो मैं याद भी नहीं करने वाला कि मेरे पास ऐसी कोई चीज है।’’

‘‘समझदार आदमी हैं फिर आप।’’

मोहित ने कुर्सी से उठने का उपक्रम किया।

‘‘अरे बैठिये, बैठिये।’’-अविनाश जल्दी से बोला-‘‘मुझे आपसे कुछ बात करनी है।’’

‘‘किस बारे में?’’

‘‘और किस बारे में? उसी सनाया गौतम के मामले में।’’

मोहित वापस बैठ गया। उसके इंट्रेस्ट की बात थी।

‘‘कहिये।’’-वो बोला।

‘‘आप जब अमेरिका में थे’’-अविनाश गम्भीर स्वर में बोला-‘‘आपकी अपने पिता से फोन पर तो बात होती ही होगी?’’

‘‘होती थी।’’

‘‘उन्होंने कभी आपसे सनाया गौतम का जिक्र नहीं किया?’’

‘‘नहीं।’’-मोहित ने इनकार में सिर हिलाया।

‘‘किसी भी सिलसिले में उन्होंने इस संबंध में कोई बात नहीं की? ऐसा कुछ कि वे नई जिंदगी शुरू करना चाह रहे थे या इस तरह का कुछ...।’’

‘‘नहीं। ऐसा तो कुछ भी नहीं कहा उन्होंने।’’

‘‘फिर आपको क्या लगता है कि ये सनाया गौतम नाम नाम की वाइल्ड कार्ड एंट्री कहां से हुई होगी?’’

मोहित सोच में पड़ गया। वो जितना इस बारे में सोचता था, उतना ही उसे अपना दिमाग घूमता हुआ महसूस होता था। सनाया गौतम के उसके पिता की जिंदगी में इस तरह आने के बारे में सोचकर वो उलझता ही चला जाता था। उसे लगता था जैसे वो एक ऐसे रास्ते पर आगे बढऩे की कोशिश कर रहा था, जिसके बीचों-बीच एक चट्टानी दीवार रास्ता रोके खड़ी थी।

‘‘यानि आप कोई अंदाजा नहीं लगा सकते?’’-कुछ पल की खामोशी के बाद अविनाश बोला।

‘‘जी हां।’’-मोहित ने स्वीकार किया-‘‘सनाया गौतम का मैंने कभी नाम भी नहीं सुना था।’’

‘‘क्या ऐसा भी हो सकता है कि आपके पिता काफी समय से सनाया गौतम को जानते हों और उन्होंने आपसे ये बात छिपाई हो?’’

‘‘ऐसा नहीं हो सकता।’’-मोहित दृढ़ स्वर में बोला-‘‘पापा हम लोगों से कोई बात नहीं छिपाते थे।’’

‘‘मेरे कहने का मतलब है कि आपको सचमुच ऐसा लगता है कि आपके पापा का किसी जवान लडक़ी से अफेयर होता तो वो उसे अपने जवान बेटे-बेटी के साथ साझा करते? आप दोनों को बुलाते और कहते-‘देखो बच्चों, मुझे एक लडक़ी पसंद आ गई है। मैं उसे बुलाकर अपने साथ यहां रखने की सोच रहा हूं। सोच रहा हूं अब गंगा नहाने जाने की उम्र में उस लडक़ी के साथ लिव इन रिलेशनशिप में रहना शुरू कर दूं’।’’

‘‘मिस्टर।’’

‘‘आपने बात ही ऐसी की। अरे भाई, हो सकता है आपके पिता आप लोगों से कोई बात न छिपाते हों लेकिन कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिन्हें न चाहते हुए भी आदमी को छिपाना पड़ता है। उन लोगों से भी जो उनके दिल के बेहद करीब होते हैं। आदमी उन बातों का ढिंढोरा पीटते हुए गली में नहीं घूम सकता। समझ लीजिए, सनाया गौतम भी आपके पिता के मामले में ‘वही बात’ थी।’’

‘‘लेकिन मुझे अब भी विश्वास नहीं कि पापा ऐसा कर सकते थे।’’

‘‘इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। उनकी उम्र में बहुत से बुजुर्गों को लगने लगता है कि उनकी लाइफ में ‘चीनी कम’ है।’’

मोहित चुप रहा।

‘‘आप इसे इस तरह भी तो सोच सकते हैं’’-अविनाश ने कहा-‘‘कि करीब साल-दो साल तक आपके पिता ने सनाया गौतम का आप लोगों से कोई जिक्र नहीं किया। आप लोगों को हवा तक नहीं लगने दी कि उनकी ऐसी किसी लडक़ी से जान-पहचान भी थी। हो सकता है वो पहले से इस बारे में सोच रहे हों। बस सही समय का इंतजार कर रहे हों, जब उनके और उस सनाया गौतम के बीच में कोई ‘बाधा’ न हो। और वो समय आते ही उन्होंने उसे अपने पास बुलाने में देर नहीं लगाई।’’

‘‘हो सकता है।’’-मोहित बोला-‘‘लेकिन पक्के तौर पर तो नहीं कह सकते न।’’

‘‘शायद वो आपके पापा की प्राइवेट सेके्रट्री के रूप में काम कर रही थी।’’

‘‘प्राइवेट सेक्रेट्री?’’

‘‘जी हां।’’

‘‘लेकिन पापा के सेक्रेट्री तो महानंद अंकल थे। रजत महानंद। वो काम तो अच्छा करते ही थे, उनसे हमारे साथ घर जैसे संबंध भी थे। पापा उन पर आंखें मूंद कर भरोसा करते थे।’’

‘‘लेकिन मुझे ऐसा पता चला है कि करीब साल भर पहले-आपके पापा द्वारा सोशल लाइफ से दूरी बना लेने से करीब एक-दो माह पहले-उन्होंने नौकरी छोड़ दी थी।’’

मोहित को आश्चर्य हुआ।

‘‘उन्होंने नौकरी क्यों छोड़ी?’’-फिर वो बोला।

‘‘ये तो अभी मुझे पता नहीं चल पाया है। जल्द ही उनसे मुलाकात कर इस बारे में भी पता कर लूंगा। तो मैं कह रहा था कि रजत महानंद के जाने के बाद आपके पिता जी को सेक्रेट्री की जरूरत थी। और उन्होंने इसके लिए पेपर में एड भी दिया था।’’-अविनाश ने एक फाइल मोहित की ओर सरकाई। उसमें एक पुराने अखबार की कटिंग थी, जिसमें सेक्रेट्री की रिक्वायरमेंट का एड छपा था।

मोहित ने पूरे एड को पढ़ा।

‘‘ऐसा लगता है कि’’-अविनाश ने कहा-‘‘इस पूरे मामले की शुरूआत यहीं से हुई।’’

‘‘एक एड से?’’

‘‘इस नई प्राइवेट सेक्रेट्री से।’’

मोहित ने फाइल से सिर उठाकर अविनाश की ओर देखा।

‘‘मुझे लगता है कि सनाया गौतम एक प्राइवेट सेके्रट्री के रूप में आपके पिता की जिंदगी में आई। उससे पहले उन्हें ऐसी प्राइवेट सेक्रेट्री का कोई एक्सपीरियेंस नहीं था। वो उनकी जिंदगी में इस तरह हावी हो गई थी कि वो केवल एक प्राइवेट सेक्रेट्री ही नहीं रह गई थी। वो उनका सब कुछ हो गई थी। वो आम सेक्रेट्री की तरह सुबह 9 बजे ऑफिस आकर शाम में 5 बजे वापस नहीं चली जाती थी। उनके ऑफिस में तो किसी ने उसे कभी देखा भी नहीं था। वो तो सीधे उनके घर में रहने लगी थी। और वो भी इतने सीक्रेट ढंग से कि आसपास के भी कुछ ही लोग नोटिस कर पाए कि उस घर में गिरिराज वर्मा के अलावा कोई लडक़ी भी रहती थी। आग दोनों तरफ बराबर लगी हुई थी। जितना वो लडक़ी खुद को छिपाती थी, उससे ज्यादा गिरिराज वर्मा ने उसे छिपाया। उन्होंने तो उस लडक़ी का राज राज रखने के लिए अपनी सोशल लाइफ तक कुर्बान कर दी। यहां तक कि उन्होंने आपसे या मानसी जी से भी एक बार भी उसका जिक्र तक नहीं किया। कोई बात छिपा कर रखने की इससे ज्यादा इंतेहा और क्या होगी?’’

‘‘घूम-फिरकर आप पुलिस की थ्योरी पर ही लौट रहे हैं।’’

‘‘इस मामले में इतना ज्यादा जानकारी का अभाव है कि जो छोटे-छोटे पीस उपलब्ध हैं, उन्हीं के आधार पर इस पजल को सुलझाया जा सकता है। अगर आप हर चीज को थ्योरी कहके किनारे कर देना चाहेंगें, तब तो इस केस में आगे बढऩा बहुत मुश्किल हो जाएगा। पहले ही कम मुश्किल नहीं है।’’

‘‘आई एम सॉरी। मेरा ये इरादा नहीं था। आप आगे बताइए।’’

‘‘जैसे कि पुलिस को ये पता है कि सनाया गौतम आपके पिता के घर में रह रही थी, उसने उन्हें अपने जाल में फंसा लिया था, इस हद तक फंसा लिया था कि उन्होंने अपनी सारी प्रॉपर्टी तक उसके नाम कर दी। लेकिन पुलिस जांच इस बात पर प्रकाश नहीं डालती कि ये सनाया गौतम नाम की मुसीबत का उद्गम कहां से हुआ? मतलब वो आपके पापा की लाइफ में आई कहां से? तो हमारी जांच से ये पता चलता है कि शायद प्राइवेट सेक्रेट्री के रूप में ही उसने आपके पापा की लाइफ में घुसपैठ की।’’

‘‘और?’’

‘‘और ये कि शायद उसका इरादा शुरू से ही आपके पिता की दौलत पर कब्जा करने का था। इसलिए उसने बड़े शातिर ढंग से उन्हें जाल में फंसाया होगा। सनाया ने जरूर उन्हें कुछ ऐसी पट्टी पढ़ाई होगी कि उस उम्र में उनके ऐसे सम्बन्धों को समाज स्वीकार नहीं करेगा। हो सकता है, उसी ने उन्हें सोशल लाइफ से दूरी बनाने के लिए प्रेरित किया हो। उसने जरूर उनकी बुद्धि ऐसी भ्रष्ट कर दी होगी कि वो उसे ऐसे गुपचुप ढंग से अपने साथ

रखने के लिए राजी हो गए। न सिर्फ सोशल लाइफ से दूरी बनाई बल्कि किसी के सामने एक बार भी, भूले से भी, सनाया गौतम का जिक्र तक नहीं किया। लोगों ने तो ये नाम भी तब सुना, जब आपके पिता के मर्डर के बाद उनकी वसीयत पढ़ी गई।''

''आप बुरा मानेंगें डिटेक्टिव साहब लेकिन कितनी भी सही लगने के बाद ये थ्योरी ही है। इसे साबित करने के कोई पुख्ता सबूत नहीं है।''

''पुख्ता सबूत भी मिल जाएगा।''

''कब?''

''जब सनाया गौतम पकड़ी जााएगी। और अपने मुंह से सारा अपराध कबूल करेगी।''

''जो कि होता नहीं दिख रहा है।''

''देर सवेर अपराधी पकड़ में आ ही जाता है। चाहे वो कितना ही शातिर, कितना ही पहुंचा हुआ क्यों न हो।''

''वो ऊपर वाले की अदालत में। मेरा फिलहाल उतना इंतजार करने का कोई इरादा नहीं है।''

''और पकड़ में आ जाएगी, फिर क्या करेंगें आप?''

''फिर मुझे क्या करना है, फिर जो करेगा कानून करेगा।''

''वैसे क्या बताया था आपने, किसलिये रिवॉल्वर चाहिये थी आपको?''

मोहित ने चौंक कर उसकी ओर देखा।

उसकी चुभती निगाहें मोहित पर थी।

''सुरक्षा के लिये।''-मोहित संयत स्वर में बोला।

''दैट्स गुड!''

''वैसे फिलहाल मुझे उसकी कोई जरूरत नहीं पडऩे वाली।''

''शायद जब सनाया गौतम का पता चल जाए, तब आपको उसकी जरूरत पड़े।''

मोहित ने जवाब नहीं दिया। वो अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ।

''ओके, मिस्टर अविनाश।''-वो बोला-''फिर मिलते हैं।''

''बिल्कुल।''-वो मुस्कुराया-''उम्मीद है हमारी अगली मुलाकात और भी मानीखेज रहेगी।''

‘‘आपसे नैनीताल में मुलाकात हो सकेगी?’’-मोहित बोला।

‘‘बिल्कुल। इन्वेस्टिगेशन के सिलसिले में नैनीताल तो जाना ही पड़ेगा।’’

‘‘तो कल आप मुझे नैनीताल में ही मिलियेगा। वहां मैं आपकी मुलाकात इस केस के इंचार्ज इंस्पेक्टर वैभव से और काफी समय से केस पर काम कर रहीं प्रेस रिपोर्टर शालिनी अवस्थी से भी करवाऊंगा।’’

‘‘वो किसलिये?’’

‘‘जिससे आप लोग आपस में मिल कर काम कर सकें। इन्वेस्टिगेशन में आपके बीच किसी तरह की उलझन न होने पाए। आप एक-दूसरे के सहयोग के साथ काम कर सकें।’’

‘‘ठीक है। मैं कल नैनीताल में आपसे मिलता हूं।’’

‘‘ओके।’’

मोहित ऑफिस से बाहर निकल गया।

मोहित वापस नैनीताल पहुंचा।

दिल्ली में प्राइवेट डिटेक्टिव से उसकी मुलाकात में प्रत्यक्षत: उसका एक ही काम हुआ था। अविनाश ने उसके लिए एक बढिय़ा रिवॉल्वर का जुगाड़ करवा दिया था, जिसके पैसे भी ज्यादा नहीं लगे थे वरना मोहित को गैरकानूनी हथियार का जुगाड़ करने में बहुत ज्यादा रकम खर्च होने का अंदेशा था। और होता भी वैसा ही, लेकिन अविनाश ने अपने सोर्स से उसे उम्मीद से काफी कम कीमत में अच्छी गन दिलवा दी थी।

रिवॉल्वर चलाने की मोहित को अच्छी-खासी प्रैक्टिस थी। न्यूयॉर्क में वो एक शूटिंग क्लब का मेंबर था, जहां फायरिंग रेंज में उसने जमकर अभ्यास किया था, जिससे उसका निशाना बहुत पक्का हो गया था।

कार के डैशबोर्ड में पड़ी उस रिवॉल्वर के चैम्बर में भरी 6 गोलियों में से किसी एक पर सनाया गौतम का नाम लिखा था।

या शायद उन सभी पर!

अब सनाया गौतम की भलाई इसी में थी कि उसका भूल से भी मोहित से सामना न होने पाए।

मोहित शाम को घर वापस लौटा तो उसने मानसी और अरविंद को कहीं जाने के लिए तैयार होते पाया।

''कहां जा रहे हैं आप लोग?''-उसने अरविंद से पूछा।

''एक दोस्त के यहां कार्यक्रम है।''-अरविंद बोला-''देहरादून। रात ज्यादा हो जाएगी तो उन्हीं के घर पर रूकेंगें। कल सुबह या दोपहर तक वापस लौट आएंगें।''

''ओके।''-मोहित ने सिर हिलाया। फिर उसे अचानक याद आया कि उनके जाने के बाद वो घर में अकेला नहीं रहने वाला था। वैशाली भी घर पर ही थी। लेकिन वैशाली को उसने घर पर बहुत कम ही देखा था। वो ज्यादातर अपने कमरे में ही घुसी रहती थी।

तो इसका मतलब आज रात घर पर वो और वैशाली अकेले रहने वाले थे।

उसे डिनर पर वैशाली दिखाई जरूर दी लेकिन रोज की तरह ही डिनर टेबल पर भी उसने डिनर के दौरान एक भी शब्द नहीं बोला और डिनर करने के बाद वापस अपने कमरे में चली गई।

मोहित अपने कमरे में चला गया।

कुछ ही देर में मानसी भी वहां आ पहुंची।

‘‘हम लोग जा रहे हैं।’’-मानसी बोली, उसके स्वर में शरारत महसूस करके मोहित का दिमाग ठनका। वो वैसे लहजे में तभी बोलती थी, जब किसी बात को लेकर मोहित को चिढ़ाने वाली हो।

‘‘ओके। बाय। जीजा जी से कहना कार ध्यान से चलाएं।’’

‘‘वो तो ठीक है। लेकिन मुझे तो यहां की चिंता हो रही है।’’

‘‘यहां की?’’-मोहित उलझनपूर्ण स्वर में बोला-‘‘यहां क्या होगा? मेरा रात में कहीं जाने का कोई इरादा नहीं है।’’

‘‘उसी की तो टेंशन है, बुद्धू।’’

‘‘तुम कहना क्या चाह रही हो?’’

‘‘साफ साफ कहूं?’’

‘‘तो और कैसे कहोगी?’’

‘‘पीछे वैशाली को तुम्हारे साथ छोडक़र जाते हुए डर लग रहा है।’’

‘‘व्हाट?’’

‘जैसे तुम दोनों एक-दूसरे को देखते हो...।’’

‘‘दीदी, आर यू आउट ऑफ योर माइण्ड? आप बोल क्या रही हो...?’’

‘‘ठीक है। ठीक है।’’-मानसी हंसते हुए बोली-‘‘इतना ओवररिएक्ट करने की जरूरत नहीं है। मैं बस ऐसे ही तुम्हें चिढ़ा रही थी।’’

‘‘नॉनसेंस।’’-मोहित ने बुरा सा मुंह बनाया।

‘‘और सावधान भी कर रही थी।’’

‘‘सावधान? किससे?’’

‘‘तुम वैशाली पर भले ही ज्यादा ध्यान नहीं देते हो लेकिन वो तुममें काफी इंट्रेस्ट लेती है।’’

‘‘इट्स एनफ...।’’

‘‘और वैसे भी नैनीताल का मौसम बहुत रोमांटिक होता है। तुम दोनों को रात भर यहां घर पर अकेले एक-दूसरे के साथ ही रहना है...।’’

मोहित अपनी जगह पर उछलकर खड़ा हो गया।

‘‘ओके। ओके बाबा।’’-मानसी हंसते हुए दरवाजे से बाहर निकल गई-‘‘बाय। ध्यान से रहना। वहां पहुंचकर कॉल करूंगीं।’’

मोहित गुस्से से उसे जाते देखता रहा। फिर उसकी नजर कमरे की दूसरी खिडक़ी पर पड़ी, जो दूसरे कमरे में खुलती थी। उस कमरे में उसे वैशाली जाती हुई दिखाई दी। उसके चेहरे पर मुस्कान थी।

पता नहीं क्यों मोहित को ऐसा लगा, जैसे उसने मानसी की बातें सुन ली थीं।

अचानक उसे लगने लगा कि अब रात चैन से नहीं गुजरने वाली थी।

मोहित का शक गलत नहीं था।

मानसी और अरविंद के जाने के थोड़ी ही देर बाद बारिश शुरू हो गई।

बाहर बारिश हो रही थी, बादल गरज रहे थे और बिजली कडक़ रही थी।

और बिजली घर के अंदर भी कडक़ रही थी।

वैशाली वैसे तो आम तौर पर अपने कमरे में ही घुसी रहती थी, मोहित को वो लंच या डिनर के समय ही नजर आती थी लेकिन अब वो अचानक हर तरफ दिखाई देने लगी थी। वो बार-बार किसी न किसी बहाने से मोहित के सामने से गुजर रही थी। उसने एक बेहद खूबसूरत टॉप और स्कर्ट पहन रखी थी, जिसमें वो किसी गुडिय़ा की तरह खूबसूरत लग रही थी। वे लोग जबसे उस घर में आए थे, मोहित ने उसे कम ही देखा था। ज्यादातर वो अपने कमरे में ही घुसी रहती थी। उस घर में आने के बाद से तो उनके बीच बातचीत तक नहंी हुई थी। ऐसे में मोहित को उसका रवैया और उनके बीच की खामोशी सचमुच काफी अजीब लग रही थी।

मोहित उससे बात करने की सोच रहा था लेकिन वो ये सोच कर हिचकिचा रहा था कि उसकी अब तक वैशाली से कोई ज्यादा बातचीत नहीं हुई थी। ऐसे में अब जब मानसी और अरविंद घर में नहीं थे तो इस तरह अचानक उससे बात करने की कोशिश करने पर कहीं वो कुछ गलत न समझ ले।

वो इसी उधेड़बुन में बाहर वाले रूम में बैठा था। पिछले आधे घंटे में वैशाली कम से कम छ: बार उसके सामने से गुजर चुकी थी, जो कि एक विलक्षण बात थी क्योंकि पिछले दिनों तो वो पूरा एक-दो घंटे भी डाइनिंग रूम में बैठा रहता था लेकिन वैशाली के दर्शन नहीं होते थे।

यहां तक कि अपने पिछले फेरे के 15 मिनट बीतने के बाद जब वैशाली दोबारा डाइनिंग रूम में नहीं आई तो मोहित को चिंता होने लगी।

कहां रह गई?

मोहित ने अपने दिमाग को झटकने की कोशिश की।

उसने सोच लिया कि वो अब अपने और वैशाली के बीच की ये ऑकवार्ड खामोशी तोडऩे की कोशिश करेगा। इस तरह मुंह में दही जमा कर बैठने से काम नहीं चलेगा।

तभी म्यूजिक बजने लगा।

वैशाली के कमरे से ‘रात अकेली है...’ गाने के बोल घर की फिजां में तैरने लगे।

होली शिट्।

मोहित ने एक गहरी सांस ली। उसने अपना लैपटॉप उठाया और अपने कमरे में चला गया।

लेकिन कमरे में खुद को सुरक्षित समझना उसकी गलतफहमी थी।

कुछ ही देर में दरवाजे पर हुई आहट ने उसका ध्यानाकर्षित किया।

दरवाजे पर वैशाली खड़ी थी।

“आइए।”-मोहित ने कहा।

वो मुस्कुराई। फिर अंदर आकर मोहित के सामने सोफे पर बैठते हुए बोली-“मुझे लगा तुम बिल्कुल ही भूल गए कि घर में तुम्हारे अलावा कोई और भी है।”

शिट्!

“ऐसा कैसे हो सकता है”-प्रत्यक्षत: मोहित बोला-“आपको ऐसा क्यों लगा भला?”

“वजह आपके हाथों में है।”

‘‘क्या?..ओह’’-मोहित ने लैपटॉप सामने टेबल पर रख दिया-‘‘ये कुछ नहीं बस कुछ जरूरी ई मेल्स वगैरह चैक कर रहा था।’’

‘‘मुझे भी शक था।’’

‘‘किस बात का?’’

‘‘आपकी दिलचस्पी मेल्स में है।’’

डबल शिट्!

‘‘क्या मतलब?’’

‘‘अमेरिका में तो ये आम बात है। मुझे कोई हैरानी नहीं हुई।’’

‘‘नहीं।’’-मोहित गहरी सांस लेकर बोला-‘‘ऐसा कुछ नहीं है।’’

‘‘तो कैसा है?’’-वो मुस्कुराते हुए बोली।

‘‘लड़कियों के मामले में मैं थोड़ा ओल्ड फैशन्ड हूं।’’

‘‘मुझे ओल्ड फैशन्ड लडक़े पसन्द हैं।’’

ट्रिपल शिट्। बेटा मोहित, आज ये लडक़ी तुझे हाजमोला की गोली समझकर गटक जाएगी।

‘‘तो फिर आपको मैं भी पसन्द होऊंगा।’’-मोहित गहरी सांस लेकर बोला।

‘‘आप तो बहुत ही ज्यादा पसन्द हैं।’’

‘‘ऐसी क्या खासियत है मुझमें?’’

‘‘हीरा खुद अपनी कीमत नहीं जानता।’’

‘‘हीरा। मैं? बस करिए वैशाली जी।’’

‘‘जी लगाने की कोई जरूरत नहीं है, आप मुझे वैशाली भी कह सकते हैं।’’

मोहित कुछ क्षण तक उसे देखता रहा, फिर बोला-‘‘ओके वैशाली। बताओ, क्या चल रहा है तुम्हारे दिमाग में?’’

‘‘सच बताऊं?’’

‘‘हां।’’

‘‘उसके लिए मुझे थोड़ा पास आना पड़ेगा।’’

आज तेरी इज्जत नहीं बचने वाली, बेटा मोहित।

‘‘ठीक है।’’

मोहित उठा और सोफे पर वैशाली के बगल में आकर बैठ गया।

‘‘अब बताओ।’’-मोहित बोला।

‘‘कैन आई बॉरो युअर शोल्डर?’’

‘‘क्या?’’

‘‘मेरा मन किसी के कंधे पर सिर रख कर रोने का कर रहा है। क्या थोड़ी देर के लिए तुम्हारा कंधा उधार मिल सकता है?’’

‘‘ऑफकोर्स।’’-मोहित अचकचा गया। उसे इस तरह की मांग की उम्मीद बिल्कुल नहीं थी।

उसके बाद जो हुआ, वो उससे भी ज्यादा चौंकाने वाला था। वैशाली सचमुच उसके कंधे पर सिर रख कर रोने लगी।

मोहित अपनी जगह पर जैसे जड़वत हो गया। उसका हाथ अपने आप ही उठकर उसके सिर पर पहुंच गया। कुछ देर हाथ को उसके सिर से थोड़ी दूर ऊपर हवा में रखने के बाद उसने धीरे-धीरे उसके सिर को थपकना शुरू किया, जैसे उसे चुप कराने की कोशिश कर रहा हो।

‘‘क्या हुआ?’’-फिर उसने पूछा।

‘‘बस एक मिनट और।’’-वो वैसे ही रोते हुए बोली।

मोहित चुप हो गया।

थोड़ी देर में ही वो उससे अलग हट गई और अपने आंसू पोंछने लगी।

मोहित हैरानी से उसे देख रहा था।

वो मोहित की ओर देख कर मुस्कुराई। उसने अब रोना बंद कर दिया था।

‘‘कुछ बताओगी हुआ क्या है?’’-मोहित उसके रवैये से बुरी तरह शॉक्ड था-‘‘आखिर बात क्या है?’’

‘‘कुछ नहीं।’’-वो सामान्य स्वर में बोली-‘‘समझ लो मेरे दिमाग का फितूर था। तुम बहुत अच्छे आदमी हो।’’

‘‘फॉर गॉड सेक एक मिनट के लिए तुम मेरे गुण गाना बंद करोगी और बताओगी आखिर बात क्या है?’’

उसने सिर नीचे झुका लिया, फिर थोड़ी देर चुप रहने के बाद धीमी आवाज में बोली-''आई एम ए बिग लूजर।''

''क्या मतलब?''

''मैं अमेरिका गई थी जॉब करने। भैया ने, मम्मी-पापा ने, सबने मना किया था लेकिन उसके बाद भी जिद करके गई थी। मम्मी-पापा ने मेरे लिए कुछ पैसे इकट्ठे किए थे, जिन्हें मैंने जिद करके अमेरिका जाने पर खर्च कर दिया। लेकिन...।''

''लेकिन क्या?''

''अमेरिका का एक्सपीरियंस और भी बुरा रहा। मुझे...मुझे वहां ड्रग्स की लत लग गई।''

''हे भगवान।''

''मुझे काफी समय तक रिहैबिलिटेशन सेंटर में रहना पड़ा। मैंने वहां बहुत बुरा वक्त गुजारा। एक लिहाज से वो वक्त अच्छा भी था लेकिन मैंने जो काम किए...वो कुछ अच्छे नहीं थे। मैंने वो सब किया, जो मुझे नहीं करना चाहिए था। मैं उस बारे में किसी को नहीं बता सकती। ये सब चीजें कई दिनों से मेरे अंदर घुट रहीं थीं। मुझे...मुझे किसी के सामने ये सब कहना था। वहां हम लोगों की-मुझ जैसे बाकी ड्रग्स एडिक्ट्स की-ग्रुप डिस्कशन थैरेपी भी करवाई जाती थी। ये...ये कंधे पर सिर रखकर रोने का आइडिया उसी थैरेपी का है। इससे काफी राहत मिलती है। दिल का गुबार निकल जाता है। मुझे पता है तुम्हें ये बहुत अजीब लग रहा होगा लेकिन...लेकिन मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि जब मुझे ड्रग्स की जरूरत महसूस होती है तो मेरी हालत कैसी हो जाती है। वो भी तब जब ड्रग्स छोड़े इतने दिन हो गए हैं।''

मोहित अविश्वसनीय भाव से उसकी ओर देखता रहा।

वो बुरी तरह नर्वस दिखाई दे रही थी।

''मैं और ड्रग्स नहीं लेना चाहती, मोहित।''-उसकी आवाज फिर कांपने लगी-''मैं ले भी नहीं सकती। मेरे पास है ही नहीं। लेकिन...लेकिन मेरा दिमाग घूम रहा है। मुझे...मुझे मदद की जरूरत है। वरना लगने लगता है कि मैं पागल हो जाऊंगीं।''

मोहित कुछ देर तक होंठ भींचे उसे देखता रहा।

उसके चेहरे के भाव उसकी बेचैनी को बयां कर रहे थे।

''तुमने कोल्ड शॉवर ट्राई किया?''-फिर मोहित शांत स्वर में बोला।

उसने इनकार में सिर हिलाया।

''तो तुम जाकर नहा लो।''-वो उठते हुए बोला-''फिर मैं तुम्हें बढिय़ा गर्मागर्म कॉफी बना कर पिलाता हूं। या नहाने का इरादा न हो तो इसे स्किप करके सीधे कॉफी पर भी आ सकते हैं।''

''डायरेक्ट कॉफी ठीक रहेगी। थोड़ी...थोड़ी स्ट्रांग बनाना।''

''उसकी चिंता मत करो। ऐसी स्ट्रांग कॉफी तुमने जिंदगी में नहीं पी होगी। वैसे अगर तुम्हें ज्यादा तबीयत खराब लग रही हो तो हम हॉस्पीटल भी चल सकते हैं। या डॉक्टर को सीधे घर पर भी बुला सकते हैं।''

''नहीं।''-वो बोली-''कॉफी ठीक रहेगी। रोने के बाद...तुमसे बात करने के बाद अब...अब थोड़ा ठीक लग रहा है।''

''उसके बाद मैं तुम्हें स्पेशल स्लीप थैरेपी भी दूंगा।''

''स्लीप थैरेपी?''

''अगर तुम लेना चाहो तो।''

''ठीक है।''

मोहित ने वैशाली और अपने लिए बढिय़ा सी स्ट्रांग कॉफी बनाई। इस दौरान वो वैशाली के बारे में ही सोचता रहा। वैशाली ने उसे जो कुछ भी बताया था, उससे वो अंदर तक हिल गया था। अभी वैशाली की उम्र ही क्या थी? इस उम्र में उसे कैसे कैसे हालातों से गुजरना पड़ा।

सिंगल, डबल, ट्रिपल सारे शिट् एक साथ।

वो कॉफी लेकर फिर रूम में पहुंचा। दोनों ने एक साथ अगल-बगल बैठकर कॉफी पी।

''अब स्पेशल स्लीप थैरेपी।''-कॉफी खत्म करने के थोड़ी देर बाद मोहित बोला।

उसने प्रश्नसूचक भाव से मोहित की ओर देखा।

''ये भी तुम्हारे वो रोने वाली थैरेपी जैसी ही है। अंतर सिर्फ इतना ही है कि उस थैरेपी में तुम्हें कंधे पर सिर रख कर रोना था, इस थैरेपी में कंधे पर सिर रख कर सोना है।''

उसने हैरानी से मोहित की ओर देखा।

''विश्वास करो!''-मोहित आंखों ही आंखों में उसे आश्वासन देते हुए मुस्कुराया-''ये तुम्हारी रोने वाली थैरेपी से भी ज्यादा असरदार है।''

‘‘ओके।’’-वो हिचकिचाते हुए सोफे पर मोहित के और पास आई और उसके कंधे पर सिर टिका लिया।

‘‘अब आंखें मूंद लो और सोने की कोशिश करो।’’-मोहित बोला।

उसने आज्ञा का पालन किया।

कुछ पलों तक वे वैसे ही रहे।

‘‘भैया को मेरे ड्रग एडिक्ट होने के बारे में पता चलेगा तो वे बहुत नाराज होंगें न?’’-फिर यकायक वैशाली बोली।

‘‘तुम अब ड्रग एडिक्ट नहीं हो। अब तो तुमने ड्रग्स छोड़ दी है न। कुछ भी मत सोचो। दिमाग को ब्लैन्क रखो। वरना स्लीप थैरेपी काम नहीं करेगी।’’

‘‘ओके।’’-उसने फिर आंखें मूंद लीं।

‘‘गाने सुनती हो?’’-मोहित ने पूछा।

‘‘थोड़े-बहुत।’’

‘‘इस गाने को ध्यान से सुनना।’’-मोहित ने अपने मोबाइल पर एक धीमा मेलोडियस सांग प्ले कर दिया।

गाना खत्म होने से पहले ही वैशाली सो चुकी थी।

कुछ देर बाद मोहित को भी नींद आ गई।

‘‘हे।’’-सुबह वैशाली की खनकती हुई आवाज से मोहित की नींद खुली-उसने आंखें मिचमिचाकर सामने देखा तो वैशाली का ताजे खिले गुलाब जैसा खूबसूरत चेहरा दिखाई दिया-‘‘कॉफी।’’

उसके हाथ में कॉफी के दो कप थे, जिनमें से एक उसने मोहित की ओर बढ़ाया हुआ था।

मोहित ने उसके हाथ से कप लेते हुए दीवार पर टंगी घड़ी पर नजर डाली, जिसमें 7 बजने में अभी 5 मिनट बाकी थे। कमरे की खिड़कियां खुली हुईं थीं और उन पर लगे सफेद रंग के खूबसूरत पर्दे बाहर से अंदर आ रही हवा से उड़ रहे थे। कमरे की लाइट बंद थी। बाहर से आ रही प्राकृतिक रोशनी से कमरे में अलौकिक सा प्रकाश फैला हुआ लग रहा था। सुबह की ताजी ठण्डी हवा स्वर्ग का अहसास दिला रही थी।

वो सुहानी सुबह, तन-मन को शीतल करता सुबह की ठण्डी हवा का मखमली स्पर्श और वैशाली का साथ...मोहित को वो सब किसी अलौकिक अहसास जैसा लग रहा था।

वो पल उसकी जिंदगी के सबसे यादगार लम्हों में से एक के रूप में उसके दिलोदिमाग में रच-बस गया।

‘‘थैंक्स।’’-मोहित बोला।

‘‘नहीं। थैंक्स तुम्हें।’’-वो मोहित के सामने बैठती हुई कॉफी की चुस्की लेते हुए बोली-‘‘रात में अच्छा ध्यान रखा तुमने मेरा।’’

‘‘उसके लिए थैंक्स कहने की जरूरत नहीं।’’-मोहित भी कॉफी की चुस्की लेते हुए बोला-‘‘बिल भिजवा दूंगा।’’

वो हंसी। फिर बोली-‘‘क्या सचमुच तुमने कभी किसी रिहैबिलिटेशन सेंटर में काम किया है?’’

‘‘काम नहीं किया है। कंपनी के काम के सिलसिले में एक सेंटर में गया था। वहां काम करने वालों को करीब से देखा। वैसे कल रात मैंने कोई चमत्कार नहीं किया। कॉफी और अच्छी नींद का जुगाड़ तो आदमी खुद भी कर सकता है।’’

‘‘करने को आदमी सब कुछ कर सकता है। लेकिन कोई साथ देने वाला हो तो सब कुछ...सब कुछ कितना अच्छा हो जाता है।’’

कोई साथ देने वाला हो कहते समय उसकी आवाज में कुछ ऐसे भाव आ गए थे कि मोहित के मुंह से अपने आप ही निकल गया-‘‘तुम्हारा कोई बॉयफ्रेंड वगैरह नहीं है?’’

‘‘अमेरिका में था।’’-वो नजरें झुका कर हाथ में पकड़े कॉफी के कप की ओर देखते हुए बोली-‘‘लेकिन धोखेबाज निकला। खैर, वो मेरी बेवकूफी थी। मुझे उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए था।’’

‘‘गलती लडक़ों की होती है। लड़कियां सचमुच आसानी से भरोसा कर लेती हैं।’’

उसने मुस्कुराकर मोहित की ओर देखा-‘‘मिस्टर फेमिनिस्ट।’’

‘‘इट्स ए फैक्ट।’’

‘‘वैसे तुम भैया-भाभी को इस बारे में बताओगे तो नहीं न...?’’

‘‘अमेरिका में तुम्हारे साथ जो हुआ, उसके बारे में? अगर तुम कहोगी तो नहीं बताऊंगा लेकिन मेरी सलाह यही है कि तुम्हें उन्हें ये सब बता देना चाहिए। वो लोग समझ जाएंगें। अगर तुम्हें जीजा जी का डर है तो मैं पहले दीदी से इस बारे में बात कर लेता हूं। वो जीजा जी को समझा लेगी। वो तुमसे नाराज नहीं होंगें। जो हो गया वो हो गया। उसके लिए रोने से अब कोई फायदा नहीं...।’’

वो हंसी-‘‘हां ये सब तो ठीक है लेकिन मैं रात के बारे में बात कर रही थी।’’

‘‘रात के बारे में?’’

‘‘मतलब तुम भैया-भाभी को ये तो नहीं बताओगे न कि हम दोनों ने एक साथ एक ही सोफे पर रात बिताई थी। एक बेचारी लडक़ी की इज्जत का सवाल है।’’-उसने विनोदपूर्ण स्वर में कहा।

‘‘अच्छा। रात के बारे में। उस मामले में तो तुम फंस गई हो। मैंने हम दोनों का वीडियो बना लिया है। अब जब मैं कहूंगा, तुम्हें दोबारा वो सब करना पड़ेगा वरना मैं उसे इंटरनेट पर वायरल कर दूंगा।’’

वो खिलखिलाकर हंसी। मोहित भी हंसा।

‘‘प्लीज, ऐसा मत करना।’’-वो हंसते हुए बोली-‘‘वैसा वीडियो देख कर लोगों का लडक़ों के कमीनेपन पर से विश्वास उठ जाएगा।’’

‘‘वाह!’’

‘‘लेकिन सच कहूं’’-फिर वो संजीदगी से बोली-‘‘मुझे अब भी यकीन नहीं आ रहा है।’’

‘‘किस बात का?’’

‘‘कि तुम बिल्कुल वैसे ही हो, जैसा मैंने सोचा था।’’

मोहित ने कॉफी की चुस्की ली।

''वैसे मैंने सोचा था कि आज के जमाने में ऐसे इंसान नहीं होते होंगें। लेकिन तुम...। तुम सबसे अलग हो।''

''कल रात से तो तुमने मुझसे ढंग से बात करनी शुरू की है''-मोहित गहरी सांस लेकर बोला-''उसमें भी तुम ज्यादातर मेरी तारीफ करके मुझे बोर कर देती हो।''

''पता है, एयरपोर्ट पर मैंने जब तुम्हें पहली बार देखा था, तब मेरे दिमाग में क्या आया था?''

''एयरपोर्ट पर? जब मैं और दीदी बात कर रहे थे और तुम आईं थीं?''

''नहीं। जब हमें कुछ पैसेंजर्स के साथ कोरोना की चैकिंग के लिए अलग ले जाया गया था।''

''अरे।''-मोहित को हैरानी हुई-''वहां तुमने मुझे नोटिस किया था? मुझे तो लगा था तुमने मेरी ओर ध्यान तक नहीं दिया।''

''मैंने ध्यान दिया था। उसी वक्त तुम्हारा चेहरा देख कर न जाने क्यों मेरे मन में आया कि काश...काश ये लडक़ा मुझे जिन्दगी में कभी कहीं दोबारा मिले। मैं इसके साथ और समय बिता सकंू। इसे जान सकूं। पहचान सकूं...।''

''बस...बस...। ऐसा तो लडक़े सोचते हैं लड़कियों के बारे में।''

''लेकिन तुम्हारे मामले में बात अलग है। उस वक्त मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि तुम्हारे साथ इतना वक्त गुजारने, इतनी बातें करने का मौका मिलेगा। फिर जब मैंने तुम्हें वेटिंग लाउंज पर भाभी के साथ देखा तो मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि भगवान ने इतनी जल्दी मेरी सुन ली।''

''सुबह सुबह बहुत रोमांटिक हो रही हो।''-मोहित ने कॉफी का खाली हो चुका कप टेबल पर रखते हुए कहा।

उसके चेहरे पर लाली दौड़ गई। फिर उसने कुछ और नहीं कहा।

थोड़ी ही देर में मानसी और अरविंद भी वापस आ गए।

मानसी किचन में कुछ काम कर रही थी, जब डोरबैल बजने की आवाज सुनाई दी।

मानसी ने ही जाकर दरवाजा खोला।

सामने एक बेहद खूबसूरत युवती नजर आई।

‘‘नमस्ते।’’-उसने मानसी के हाथ जोड़े-‘‘मैं मोहित जी से मिलने आईं हूं।’’

‘‘मोहित जी से मिलने तो लड़कियों की लाइन लगी ही रहती है।’’-मानसी शरारत से बोली-‘‘आपकी अपॉइंटमेंट है?’’

वो हंसी-‘‘अपॉइंटमेंट तो नहीं है पर आप उन्हें मेरा नाम बता देंगीं तो शायद वो मुझे निराश नहीं करेंगें। उनसे कहिए लेक सिटी ट्रब्यून से शालिनी अवस्थी आई है।’’

‘‘ओके। आइए।’’-मानसी ने मुस्कराते हुए दरवाजा खोल दिया।

उसे ड्राइंग रूम में बिठाकर मानसी मोहित के रूम में पहुंची।

मोहित अपने कमरे में बैठा लैपटॉप पर कुछ काम कर रहा था।

‘‘नॉक-नॉक।’’-मानसी ने दरवाजा खटखटाया।

‘‘कौन?’’-मोहित बोला।

‘‘चुड़ैल।’’

‘‘आ जाओ।’’

मानसी कमरे के अंदर आ गई। मोहित ने लैपटॉप से नजर उठा कर उसकी ओर झांका।

‘‘क्या है?’’-वो बोला।

‘‘देख रही हूं, लड़कियों के बीच काफी पॉपुलर हो रहे हो।’’

‘‘आपके पास मेरी टांग खींचने के अलावा और कोई काम है या नहीं?’’

‘‘एक लडक़ी तुमसे मिलने आई है। बाहर ड्राइंग रूम में बिठाया है। जल्दी जाओ, ज्यादा इंतजार मत कराओ बेचारी को।’’

‘‘कौन है वो?’’-मोहित दरवाजे से बाहर निकलते हुए बोला।

‘‘कहती है लेक सिटी ट्रिब्यून से आई है। शालिनी कुछ नाम बताया था शायद।’’

मोहित ड्राइंग रूम में पहुंचा।

वहां शालिनी को उसने मोबाइल पर बात करते पाया।

दोनों ने एक-दूसरे का अभिवादन किया। फिर शालिनी ने कॉल डिस्कनेक्ट कर मोबाइल अपने हैण्डबैग में रख लिया।

‘‘तो’’-मोहित बोला-‘‘क्या लेंगीं आप? चाय-कॉफी या कुछ और?’’

‘‘इसकी कोई जरूरत नहीं है...।’’

‘‘ऐसे-कैसे’’-मानसी बोली, जो मोहित के पीछे पीछे ही वहां आ गई थी-‘‘आप पहली बार हमारे घर आईं हैं। मैं कॉफी बनाकर लाती हूं।’’

शालिनी मुस्कुरा दी।

मानसी के कॉफी बनाने चले जाने के बाद कमरे में शालिनी और मोहित ही रह गए।

‘‘आज लेक सिटी ट्रब्यून में आपका बयान छपा है। आपने तो देख ही लिया होगा। ठीक-ठाक छप गया है न?’’-शालिनी उत्सुकता से बोली।

‘‘वो तो ठीक है’’-मोहित बोला-‘‘लेकिन मेरी दिलचस्पी सनाया गौतम का पता लगाने में है।’’

शालिनी ने सहमति में सिर हिलाया, फिर अपनी जगह से उठकर मोहित के पास आ बैठी। उसने एक फाइल मोहित की ओर बढ़ा दी।

‘‘ये क्या है?’’-मोहित उससे फाइल लेते हुए बोला।

‘‘इसमें अखबार की वो सारी कटिंग्स हैं, जो मैंने इस केस पर काम करने के दौरान इकट्ठा की थीं। आपने कहा था न कि आपको जानकारी चाहिए थी। इसलिए मैं इसे ले आई।’’

मोहित ने फाइल खोलकर नजर डाली, उसमें कई सारी कटिंग्स थीं।

मोहित कुछ क्षणों तक गम्भीरतापूर्वक उन्हें देखता रहा, फिर शालिनी से बोला-‘‘आप दस बजे मुझे पवन रेस्टोरेंट में मिलिएगा।’’

‘‘रेस्टोरेंट में?’’

‘‘मैं आपको कुछ लोगों से मिलवाना चाहता हूं। इंस्पेक्टर वैभव-जो इस केस के जांच अधिकारी हैं-और दिल्ली के प्राइवेट डिटेक्टिव अविनाश भारद्वाज। दीदी और जीजा जी ने उन्हें सनाया गौतम का पता लगाने के लिए हायर किया है।’’

‘‘ओके। मैं दस बजे पहुंच जाऊंगीं।’’

‘‘मैं चाहता हूं कि आप, इंस्पेक्टर साहब और प्राइवेट डिटेक्टिव केस से जुड़ी जानकारी आपस में शेयर करें, जिससे इस सनाया गौतम का जल्द से जल्द पता लगाया जा सके।’’

‘‘अच्छा आइडिया है।’’-शालिनी ने तारीफ की।

तभी मानसी कॉफी ले कर आ गई।

मानसी के सामने मोहित ने केस की बात नहीं उठाई। शालिनी ने मानसी से हल्की-फुल्की बातचीत की। कॉफी खत्म होने के बाद वो उठ खड़ी हुई-‘‘ओके, मोहित जी। अब मैं चलती हूं। दस बजे आपसे रेस्टोरेंट में फिर मिलना भी है।’’

उसकी इस बात पर मानसी ने चौंक कर मोहित की ओर देखा।

‘‘ठीक है।’’-मोहित भी अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ।

‘‘क्या है ये?’’-शालिनी के जाने के बाद मानसी ने मोहित की ओर आंखें तरेरकर देखा।

‘‘अब क्या हुआ?’’-मोहित बोला।

‘‘इतने भोले बनने की जरूरत नहीं है।’’

‘‘भोला? अरे आप कहना क्या चाह रहीं हों?’’

‘‘इतनी सुबह-सुबह ये घर आ गई। और अब 10 बजे रेस्टोरेंट में भी मिलने का प्रोग्राम है। चक्कर क्या है?’’

मोहित का मन किया कि अपना सिर धुन ले।

‘‘काम।’’-वो बोला-‘‘काम के सिलसिले में बुलाया है उसे। आपका रिकॉर्ड तो एक ही चीज पर अटक गया है।’’

‘‘अच्छा? मेरा रिकॉर्ड अटक गया है। और तुम जो ये सब करते घूम रहे हो, ये सब बहुत अच्छा है?’’

‘‘अरे क्या कर दिया मैंने?’’

‘‘एक तो वो बेचारी वैशाली तुम्हारे पीछे पागल हुई पड़ी है। और तुम हो कि दूसरी के चक्कर में घूम रहे हो। देखो, मोहित ये अच्छी बात नहीं है। अब तुम अमेरिका में नहीं, इंडिया में हो...।’’

‘‘हे भगवान।’’-मोहित की आत्मा आर्तनाद कर उठी-‘‘दीदी। दीदी। भगवान के लिए बस करो। मैं सचमुच उससे काम के सिलसिले में मिलने जा रहा हूं। आपका वो प्राइवेट डिटेक्टिव और इंस्पैक्टर साहब भी होंगें वहां। हद होती है किसी चीज की।’’

‘‘अच्छा।’’-मानसी हंसते हुए बोली-‘‘तब ठीक है। वैसे वो पत्रकार है ही इतनी खूबसूरत कि मुझे लगा कि...।’’

मोहित ने टेबल पर पड़ी फाइल समेटी और भुनभुनाता हुआ अपने कमरे की ओर चला गया।

शालिनी ‘लेक सिटी ट्रब्यून’ के ऑफिस में अपने रूम में बैठी किसी काम में व्यस्त थी। ‘लेक सिटी ट्रब्यून’ नैनीताल ही नहीं बल्कि पूरे उत्तराखण्ड के सबसे प्रसिद्ध दैनिक अखबारों में से एक था। शालिनी पिछले 2 सालों से वहां रिपोर्टर थी और इन दो सालों में अपनी मेहनत के बल पर उसने पत्रकारिता के क्षेत्र में अच्छी-खासी पहचान बना ली थी।

शालिनी ने घड़ी पर नजर डाली। अभी दस बजने में टाइम था। दस बजे उसे रेस्टोरेंट जाना था, जहां मोहित ने उसे बुलाया था। इसीलिए वो जल्दी-जल्दी काम निपटा रही थी।

तभी ऑफिस का दरवाजा खुला और अखबार के एडीटर मुकुल राय ने अंदर कदम रखा। वो एक पचास के पेटे में पहुंचा औसत कद का शख्स था, जो मोटापे की मार झेल रहा था। सिर पर एक भी बाल नहीं था और बहुत से लोग पीठ पीछे उसे गंजा एडीटर कह कर भी सम्बोधित करते थे। सिर ही क्या उसके पूरे चेहरे पर भी भौंहों को छोडक़र कोई बाल नहीं था। वो हमेशा क्लीनशेव्ड रहता था और चश्मा भी लगाता था। अपनी लगभग पूरी तरह बालविहीन मुखाकृति पर जब वो चश्मा पहनता था, जो कि वो लगभग हमेशा पहनता था, तो उसे देख कर शालिनी को ही नहीं बल्कि ऑफिस में काम करने वाले अधिकांश लोगों को बॉलीवुड फिल्मों के किसी विलेन की याद आने लगती थी।

‘‘सर...।’’-उसे रूम में आते देख कर शालिनी अपनी सीट से उठने लगी।

‘‘बैठो, बैठो।’’-उसने शालिनी को बैठे रहने का इशारा किया और खुद भी सामने पड़ी कुर्सियों में से एक पर बैठ गया।

‘‘मुझे तुमसे गिरिराज वर्मा के मर्डर केस के बारे में बात करनी थी।’’-राय ने कहा।

‘‘मुझे बुला लिया होता सर...।’’

‘‘नहीं। उसकी कोई बात नहीं। मैं खुद ही काम से इधर से जा रहा था तो सोचा तुमसे भी बात करता चलूं। सुना है तुमने उनके बेटे-क्या नाम है उसका, हां मोहित वर्मा का बयान भी ले लिया है।’’

‘‘जी सर। मैं अभी उस पर ही काम कर रही हूं।’’

‘‘तो कल वो हमारे ही अखबार में एक्सक्लूसिव छप रहा है न?’’

‘‘बिल्कुल सर। उसके लिए आप बेफिक्र रहिए।’’

‘‘लेकिन तुम उसका बयान लेकर सीधे मेरे पास क्यों नहीं आईं? जबकि मैंने तुमसे कहा था।’’

‘‘सर, इसमें काफी एडिटिंग की जरूरत है। मोहित ने मुझसे बयान देने के पहले ही शर्त रख दी थी कि आर्टिकल तैयार करने के बाद पहले उसे दिखाना होगा। अगर कुछ बातें उसे पसंद नहीं आईं तो उन्हें उसके बयान से रिमूव करना पड़ेगा। पूरी आर्टिकल तैयार होने के बाद ही आपके पास आने वाली थीं।’’

‘‘फिर भी। एक बार मैं कम से कम पूरा बयान देख लेता तो...।’’

‘‘प्लीज, सर। वो बड़ी मुश्किल से बात करने के लिए राजी हुआ था। अगर उसके मन की नहीं हुई तो वो काफी नाराज हो सकता है।’’

‘‘हूं। तुम तो बहुत बड़ी पत्रकार बन गईं हों। अपने मन से ही फैसले लेने लगी हो।’’

‘‘ऐसा नहीं है सर।’’

‘‘तुम और भी कई चीजें छिपाने लगी हो। मुझे पता लगा है कि इसी केस में तुम्हें पुलिस से कुछ जानकारी और भी मिली थी। वो भी तुमने अखबार को नहीं दी।’’

‘‘ऐसी कोई जानकारी नहीं थी, सर।’’-शालिनी ने गहरी सांस ली-‘‘वो एक अफवाह थी।’’

‘‘चलो, ठीक है। उम्मीद करता हूं कि ऐसा ही हो।’’

कुछ क्षण कमरे में शांति रही।

‘‘इस गिरिराज वर्मा मर्डर केस में ऐसा क्या है?’’-फिर राय बोला।

‘‘क्या क्या है?’’-शालिनी ने चौंक कर कहा।

‘‘जो तुम इतना इसके पीछे पड़ी हो।’’

‘‘मैं समझी नहीं, सर।’’-मन ही मन उसे कोसते हुए शालिनी ने कहा।

राय ने घूरकर उसे देखा, फिर बोला-‘‘उस केस को तीन महीने बीत चुके हैं। करीब एक महीने बाद ही वो खबर बासी होने लगी थी। लगभग सभी अखबारों ने उसके बारे में छापना भी बंद कर दिया था। लेकिन तुम्हारा उसमें से इंट्रेस्ट कम होने का नाम ही नहीं ले रहा है। जान सकता हूं क्यों?’’

‘‘वो एक अनसुलझा मर्डर केस है, सर। शहर के इतने बड़े प्रतिष्ठित वकील का इतनी रहस्यमयी परिस्थितियों में मर्डर हो जाता है और कातिल का पता आज तक नहीं चल पाता, ये कोई छोटा-मोटा मामला नहीं है। सब लोग जानना चाहते हैं कि गिरिराज वर्मा मर्डर केस की हकीकत क्या थी? क्या सचमुच सनाया गौतम ही कातिल है? और सबसे बड़ी बात सनाया गौतम कौन है? कहां है? उसका गिरिराज वर्मा से क्या सम्बन्ध था?

सवाल कई हैं। और इन सवालों के बारे में वो सभी लोग जानना चाहते हैं, जो अखबार पढ़ते हैं। न्यूज देखते हैं। आज की डेट में सनाया गौतम का कहीं पता चल जाता है या वो पकड़ी जाती है तो सभी अखबारों, न्यूज चैनलों की हैडलाइन यही खबर होगी। मुझे हैरानी है कि आप मुझसे पूछ रहे है कि मेरा इस केस में क्या इंट्रेस्ट है?''

''ज्यादा होशियार मत बनो। ये सब मुझे भी पता था। मैं बस तुम्हारे मुंह से सुनना चाहता था।''

शालिनी ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला लेकिन फिर खुद को जब्त कर लिया।

''हां। हां। कहो।''-राय उसे चश्मे में से घूरते हुए बोला।

''कुछ नहीं सर।''

''नहीं। तुम कुछ कहने वाली थीं।''

''नहीं। सर वो बस जम्हाई आ रही थी।''

''अच्छा। रात को ढंग से सोई नहीं क्या?''

शालिनी ने उस बात का कोई जवाब नहीं दिया।

कमरे में फिर कुछ देर शांति रही।

''आप कुछ लेंगें सर''-फिर शालिनी इच्छा के विरूद्ध बोली-''चाय-कॉफी कुछ...?''

''रहने दो।''-राय उठते हुए बोला-''महिला कर्मी के साथ चाय-कॉफी पिऊंगा तो ऑफिस में लोग तरह-तरह की बातें बनाने लगेंगें। तुम काम पर ध्यान दो।''

कह कर वो कमरे से बाहर निकल गया।

''उल्लू का पट्ठा।''-पीछे शालिनी होंठों में बुदबुदाई।

मोहित ने अविनाश, शालिनी और इंस्पैक्टर वैभव की मीटिंग कराने के लिए जगह के रूप में आर्थर रोड पर स्थित पवन रेस्टोरेंट को चुना था।

उस रेस्टोरेंट में फैमिली केबिन भी अवेलेबल थे, जिसमें बैठकर वे आराम से चर्चा कर सकते थे।

सुबह दस बजे मोहित ने तीनों को वहां बुलाया था। वो खुद दस मिनट पहले ही आ गया था। दस बजते-बजते अविनाश और वैभव भी वहां पहुंच गए थे हालांकि शालिनी अब तक नहीं आई थी।

''इनसे मिलिये''-मोहित ने अविनाश को इंस्पेक्टर वैभव से इंट्रोड्यूस कराते हुए कहा-''ये इंस्पेक्टर वैभव शुक्ला हैं। पापा के केस की यहीं जांच कर रहे हैं। और इंस्पैक्टर साहब, ये प्राइवेट डिटेक्टिव अविनाश भारद्वाज हैं। दीदी और जीजा जी ने इन्हें ही पापा के केस की जांच के लिए हायर किया है। दिल्ली में जानी-मानी हस्ती हैं ये।''

अविनाश और इंस्पैक्टर ने हाथ मिलाया।

''जिन्दगी में पहली बार किसी प्राइवेट डिटेक्टिव से मुलाकात हुई।''-वैभव ने कहा।

''इंडिया में अभी प्राइवेट डिटेक्टिव्स की जनसंख्या कंट्रोल में है।''-अविनाश ने कहा-''धीरे-धीरे, बढ़ते-बढ़ते ही बढ़ेगी।''

''क्या मतलब?''

''मतलब कम होते हैं यहां प्राइवेट डिटेक्टिव। दिल्ली में आपको ढूंढने से 10-12 आसानी से मिल जाएंगें लेकिन नैनीताल जैसी जगह में तो शायद ही होंगें।''

''यहां गाइड्स की भरमार है।''-वैभव ने कहा।

'वैसे काम तो उन्हीं का बढिय़ा होता है।''-अविनाश ने गहरी सांस लेकर कहा-''लेकिन क्या कहें? अब अपने काम को दोष देने का भी कोई मतलब नहीं। खैर, मैं कह रहा था कि जब नैनीताल की पुलिस सनाया गौतम का पता नहीं लगा सकी तो मैं किस खेत की मूली हूं? लेकिन आपसे मदद की उम्मीद रहेगी।''

''मुझसे इस केस की जांच के बारे जो मदद हो सकेगी, वो आपको मिल जाएगी। ये केस हमारे लिए भी लम्बे अरसे से सिरदर्द बना हुआ है। पुलिस की खूब फजीहत हुई है इस केस को लेकर। तीन महीनों से एक लडक़ी का पता नहीं लगा पाए। उस पर ये मीडिया वाले...।''

‘‘मीडिया वालों से याद आया’’-अविनाश मोहित से मुखातिब हुआ-‘‘आपने एक प्रेस रिपोर्टर के बारे में भी बताया था, जो इस केस पर काम कर रही है।’’

‘‘शालिनी। शालिनी अवस्थी।’’

‘‘लेक सिटी ट्रब्यून से?’’-वैभव चौंका।

‘‘आप जानते हैं उन्हें?’’-मोहित ने कहा।

‘‘बहुत तेज है वो। बात की जड़ में पहुंचे बिना नहीं रह पाती। एक बार किसी चीज के पीछे पड़ जाए तो जब तक उसे निपटा नहीं लेती, तब तक उसके पीछे लगी रहती है।’’

‘‘आप तो उसे काफी अच्छे से जानते हैं।’’-अविनाश बोला।

‘‘मीडिया वालों को पुलिस नहीं जानेगी तो और कौन जानेगा?’’-वैभव बोला-‘‘ऊपर से मीडिया वाला भी कौन? शालिनी अवस्थी। ‘लेक सिटी ट्रब्यून’ की खोजी पत्रकार। बल्कि खोजी क्यों? मैं तो कहता हूं कि महाखोजी पत्रकार। सबसे ज्यादा सवाल वही पूछती है। पुलिस ने ऐसा क्यों नहीं किया? पुलिस ने वैसा क्यों नहीं किया? इस चीज पर पुलिस का ध्यान क्यों नहीं गया? अगर पुलिस उस वक्त वैसा करती तो अच्छा होता। न्यूज स्टोरी कवर करने पुलिस स्टेशन से लेकर घर तक पहुंच जाती है। उससे ज्यादा खिटिर-खिटिर करने वाली दूसरी पत्रकार पूरे नैनीताल में नहीं है। कभी-कभी तो इतना परेशान कर देती है कि मन करता है कि पुलिस की नौकरी ही छोडक़र कहीं भाग जाऊं...।’’

‘‘मुझे याद कर रहे हैं, इंस्पेक्टर साहब?’’-दरवाजे पर से खनकता हुआ स्वर सुनाई दिया। सबके सिर आवाज की दिशा में घूम गए, जहां शालिनी खड़ी मुस्कुरा रही थी।

वैभव ने होंठ भींच लिए।

‘‘आइये शालिनी जी’’-मोहित बोला-‘‘इंस्पेक्टर साहब आप ही को याद कर रहे थे। विराजिये।’’-वो एक चेयर की ओर इशारा करते हुए बोला।

शालिनी मुस्कुराती हुई आकर उस चेयर पर जम गई। वैभव थोड़ा झेंप गया था।

मोहित ने अविनाश से भी शालिनी का परिचय कराया।

‘‘तो अब जब हम सभी लोग यहां एक साथ हैं’’-अविनाश बोला-‘‘तो मेरे ख्याल से इस केस की जड़ तक पहुंचने में एक-दूसरे से मदद करने पर सहमत हो सकते हैं।’’

‘‘बिल्कुल’’-शालिनी बोली-‘‘हमें एक-दूसरे के मोबाइल नम्बर शेयर कर लेने चाहिए, जिससे जानकारी एक-दूसरे को दे सकें।’’

सबने आपस में मोबाइल नम्बर शेयर किए।

''और इससे ये फायदा भी होगा''-मोहित बोला-''कि इन्वेस्टिगेशन के दौरान आपके बीच किसी तरह की मिसअण्डरस्टैण्डिंग होने की गुंजाइश कम होगी। जैसे अब इंस्पैक्टर साहब अविनाश जी को जानते हैं तो उन्हें यहां कहीं इन्वेस्टिगेशन करते देख कुछ गलत नहीं समझेंगे। बल्कि उनकी हैल्प ही करेंगें। क्यों इंस्पैक्टर साहब?''

वैभव ने सहमति में सिर हिलाया।

''इस आपसी समझौते में''-अविनाश बोला-''किसी तरह के रिस्ट्रिक्शन नहीं हैं। किसी तरह के नियम नहीं हैं। हमें जो जानकारी एक-दूसरे को बतानी जरूरी लगे, हम एक-दूसरे को बता सकते हैं। जरूरी न लगे, तो नहीं भी बता सकते हैं। कुछ जानना हो, तो एक-दूसरे से पूछ सकते हैं।''

शालिनी और वैभव ने सहमति में सिर हिलाया।

''दैन वी आर गुड। इंस्पैक्टर साहब, सनाया गौतम का पता लगाने के मामले में कुछ प्रोग्रेस?''

''अभी तक तो नहीं''-इंस्पेक्टर ने इनकार में सिर हिलाया-''समझ नहीं आता कि उसे जमीन खा गई या आसमान निगल गया।''

''किसे?''-शालिनी बोली।

''जिसकी डिटेक्टिव साहब बात कर रहे हैं।-वैभव खिन्न स्वर में बोला।

''आपका मतलब सनाया गौतम।''-वैभव के लहजे का शालिनी पर कोई असर नहीं हुआ। शायद वो उसके उस लहजे में बात करने की आदि थी।

''नहीं, मेरा मतलब जेनीफर लॉरेंस।''

''मेरा कहने का मतलब ये था, इंस्पेक्टर साहब''-शालिनी बोली-''कि सनाया गौतम के नाम का जो इतना बड़ा हौव्वा खड़ा किया गया है, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि कोई सनाया गौतम हो ही न? ये सब केस की जांच को गलत दिशा में मोडऩे का प्रोपेगंडा मात्र हो?''

सबने-मोहित को छोडक़र-हैरानी से शालिनी की ओर देखा।

''क्या मतलब?''-अविनाश बोला।

‘‘शी इज ए घोस्ट!’’-मोहित ने होंठों ही होंठों में वही बात दोहराई, जो उसका बयान लेने के दौरान शालिनी ने उससे सनाया गौतम के बारे में कही थी।

‘‘शी इज ए घोस्ट!’’-शालिनी ने भी अपनी वही बात दोहराते हुए कहा-‘‘सनाया। सनाया। सनाया। सिर्फ एक जगह ये नाम लिखा क्या मिल गया, उसके बाद से सबने इस नाम का हौव्वा खड़ा करके रख दिया। यहां तक कि उसे ही कातिल भी मानने लगे। उसने ही सेफ से लाखों रूपए भी लूट लिए। वही साल भर से गिरिराज वर्मा के घर पर भी रह रही थी। वकील साहब की वसीयत के अलावा मुझे एक, कोई एक बात बता दीजिये, जो ये साबित करती हो कि उस घर में कभी कोई सनाया गौतम नाम की लडक़ी रहती भी थी। मतलब, कम ऑन, आखिर सारी चीजें जाकर सनाया पर ही क्यों खत्म होती हैं? आप लोगों को अजीब नहीं लगता? इस केस में सनाया को जिस तरह फोकस किया गया है, उससे तो अगर कल को कोई ये कह दे कि प्लैनेट अर्थ सनाया गौतम का ही चक्कर लगाता है, तो भी मुझे कोई हैरानी नहीं होगी।’’

‘‘आप ये कहना चाहतीं हैं’’-वैभव बोला-‘‘कि पुलिस ने अब तक जांच के नाम पर भाड़ झोंकी है। जबर्दस्ती किसी सनाया को फंसाने की कोशिश की गई है। नहीं। बल्कि आप तो ये कहना चाहती हैं कि पुलिस को कुछ नहीं आता-जाता। पत्रकारों की झांसी की रानी शालिनी अवस्थी ही हकीकत का सही-सही अंदाजा लगा सकती हैं।’’

‘‘मैंने ऐसा नहीं कहा, इंस्पेक्टर साहब। आप खामख्वाह नाराज हो रहे हैं। मैं केवल एक सही बात की ओर आपका ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहीं हूं।’’

अविनाश को इंस्पेक्टर और शालिनी के बीच की चुहलबाजी में मजा आ रहा था।

‘‘आप खुशकिस्मत हैं इंस्पेक्टर साहब।’’-अविनाश बोला।

‘‘कैसे?’’-वैभव ने अविनाश की ओर घूरकर देखा।

‘‘शालिनी जी आपका ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहीं हैं। अगर ये मेरा ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहीं होतीं तो मेरे बगल में कोई बम भी फोड़ देता तो भी मेरा ध्यान इधर-उधर नहीं भटकने वाला था।’’

‘‘व्हाट नॉनसेंस, मिस्टर अविनाश।’’-वैभव ने बुरा-सा मुंह बनाया।

अविनाश के उस कमेंट पर शालिनी को बरबस ही हंसी आ गई।

‘‘जिस एक जगह सनाया गौतम का नाम लिखा मिला है’’-वैभव ने केस पर फोकस करते हुए कहा-‘‘वो कोई मामूली जगह नहीं है। वो वकील साहब की वसीयत है। जिसमें उन्होंने अपनी सारी जायदाद, जो कि करोड़ों में है, उस सनाया गौतम के नाम कर दी है। उससे

ज्यादा बड़ा हत्या का उद्देश्य किसी के पास था ही नहीं। और आप ऐसे कह रहीं हैं, जैसे पुलिस ने जबरन सनाया गौतम को फंसाने की कोशिश की हो। उसके नाम का हौव्वा खड़ा किया है।''

''लेकिन ये बात सही भी है।''-मोहित शालिनी के पॉइंट ऑफ व्यू से ही सोचने की कोशिश करते हुए बोला-''आप कहते हैं कि सनाया गौतम के पास सबसे बड़ा मोटिव था। पापा की करोड़ों की जायदाद। लेकिन इससे उसे ज्यादा फायदा नहीं हुआ। जायदाद पर वो कब्जा तो नहीं कर सकी।''

''कौन कहता है''-इंस्पेक्टर मोहित की बात बीच में ही काटकर गुस्से से बोला-''कि सनाया गौतम को इसमें कोई फायदा नहीं हुआ?''

''भले ही उसने जायदाद किसी तरह अपने नाम करवा ली हो''-मोहित बोला-''लेकिन इसमें उसे मिला क्या? अब वो किसी तरह उस प्रॉपर्टी पर अपना हक तो नहीं जता सकती न? अब तो वो खुद पुलिस से भागी-भागी फिर रही है। अब अगर वो किसी तरह से प्रॉपर्टी को क्लेम करने की कोशिश भी करेगी तो सीधे जेल में नजर आएगी। अब पुलिस वैसे भी उसे एक अपराधी के रूप में तलाश कर रही है इसलिए वो कानूनी रूप से प्रॉपर्टी उसके नाम पर होने के बाद भी उस पर अपना हक जताने आ तो नहीं सकती न...।''

''मुझे आश्चर्य है ये सब आप कह रहे हैं''-वैभव तिरस्कारपूर्ण स्वर में बोला-''वो शख्स, जिसे उस लडक़ी का सबसे बड़ा दुश्मन होना चाहिए, उसके खून का प्यासा होना चाहिए...

खातिर जमा रखिए, इंस्पेक्टर साहब। वो तो मैं हूं।-मोहित ने मन ही मन सोचा।

''...मत भूलिए साहब, उसने आपके पिता की हत्या की है। वो भी पूरी बेरहमी के साथ। वो शख्स, जिसकी पूरा नैनीताल इज्जत करता था। कैसी होगी वो लडक़ी, जिसने उस इंसान को मारने में जरा भी गुरेज नहीं किया, जिसने उसे अपने घर में शरण दी, अपनी छत्रछाया में लिया। और उस लडक़ी ने बदले में क्या किया? उस भले आदमी का खून। कौन कर सकता है ऐसा? क्या अब भी आप ऐसे शख्स को इंसान कहेंगें? और जहां तक रही उसके गुनाह बेलज्जत होने की बात तो आप सिर्फ प्रॉपर्टी के बारे में सोच रहे हैं। उन 20 लाख रूपयों को भूल रहे हैं, जो उसने सेफ से चुराए थे। उन 25 लाख के गहनों को भी भूल रहे हैं, जो आपकी ही मां के थे। 45 लाख रूपए का तो फौरी लाभ उसे हुआ, जिसके दम पर क्या पता, वो साल भर तक मजे से किसी ऐसी जगह छिपी रह सके, जहां पुलिस उसे न ढूंढ पाए। आप अमेरिका रिटर्न्ड हैं। वहां का एक डॉलर हमारे करीब 75 रूपए के बराबर होता है। हो सकता है, आपको 45 लाख रूपए ज्यादा बड़ी रकम न लगती हो। दो-चार लाख रूपए तो आप लोग अमेरिका आने-जाने में ही खर्च कर देते होंगें। लेकिन यहां हमारे

देश में 45 लाख रूपए बहुत बड़ी रकम होती है, साहब। इतनी रकम के लिए लोग एक क्या, दस खून करने के लिए तैयार हो जाते हैं। यहां कितने ही लोग अपनी सारी जिंदगी में भी इतना पैसा नहीं कमा पाते। और आपके पिता तो उस लडक़ी के लिए एकदम ईजी टारगेट थे। वैसे भी उसका टारगेट बढ़ा था। उसे तो आपकी-यानि आपके पिता की-करोड़ों की प्रॉपर्टी पर भी कब्जा करना था, जो कि उसने कर भी लिया था। वो तो ऐन वक्त पर मामला खटाई में पड़ गया। हत्या के मामले में उसका नाम आ गया। उस ने अपने शातिर होने का सबूत देते हुए खतरे भरी करोड़ों की प्रॉपर्टी का लालच छोड़ा, जो कि अब उसे किसी भी हालत में मिलने नहीं वाली थी और हाथ आई 45 लाख रूपए की रकम लेकर ही निकल गई।''

''मोहित जी ने केवल एक सम्भावना जाहिर की है।''-शालिनी बोली।

''सही है।''-अविनाश ने भी सहमति में सिर हिलाया।-''इस तरह के केसेज की जांच में सभी सम्भावनाओं को ध्यान में रखना चाहिए। लेकिन मैं पुलिस की थ्योरी से पूरी तरह सहमत हंू, इस्पैक्टर साहब। जिस तरह साल भर तक वो लडक़ी इस तरह वकील साहब के घर में चोरी-छिपे रहती रही और बाद में जायदाद अपने नाम कराने के कुछ दिन बाद ही रहस्यमयी ढंग से गायब हो गई, उससे यही एक निष्कर्ष निकलता है, जो पुलिस ने निकाला है। हम सभी इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि दोषी सनाया गौतम ही है। और हमें उसे ही ढूंढ निकालना है। लेकिन जिस तरह वो बिना कोई ट्रेल छोड़े गायब हुई है, उससे काम बेहद दुरूह साबित हो रहा है।''

''आपके लिए तो नहीं होगा दुरूह। आप तो डिटेक्टिव हैं। वो भी प्राइवेट। वो भी दिल्ली के नामी प्राइवेट डिटेक्टिव।''

''क्यों शर्मिन्दा कर रहे हो, दरोगा साहेब। जो काम आपकी पुलिस फोर्स नहीं कर पाई, उसे ये नाचीज क्या खाकर कर पाएगा। खैर, कोशिश करना अपना काम है। और उम्मीद पर दुनिया कायम है। क्या पता इस सनाया गौतम की किस्मत में इस खाकसार के फंदे में फंसना ही लिखा हो।''

''ओके फ्रेन्ड्स!''-शालिनी अपनी जगह से उठती हुई बोली-''मुझे अब ऑफिस वापस लौटना है। वरना मेरा खडूस एडीटर मेरा जीना हराम कर देगा। उम्मीद है हमारी अगली मुलाकात तक हम इस केस को हल करने के काफी करीब होंगें।''

''हम लोग भी अब चलते हैं।''-अविनाश भी उठ खड़ा हुआ, उसके साथ-साथ मोहित और वैभव भी उठ गए।

फिर सबने गर्मजोशी से एक-दूसरे से हाथ मिलाया और विदा ली।

अविनाश दोपहर को हिल रोड पहुंचा।

उसने अपनी कार गिरिराज वर्मा के घर से काफी दूर पर ही रोक दी और पैदल चलता हुआ गिरिराज वर्मा के घर तक पहुंचा।

वो रास्ता दिन के उस समय सुनसान था।

थोड़ी-थोड़ी देर में इक्का-दुक्का लोग ही वहां से आते-जाते दिख रहे थे।

अविनाश गिरिराज वर्मा के घर के पास पहुंचा। गेट पर ताला लगा था। चारों ओर करीब 6 फीट ऊंची बाउंड्री वाल थी, जिसपर से कूद कर अंदर जाना अविनाश के लिए कोई बड़ी बात नहीं थी। लेकिन वे मेन रोड पर वो करतब नहीं करना चाहता था। अविनाश बाउंड्रीवाल के साथ चलते हुए अंत तक पहुंचा, जहां बगल वाले घर के बीच एक बेहद संकरी सी गली थी। अविनाश उसी गली में चला गया। वहां अब उसे घर में इस तरह कूद कर प्रवेश करते देखने वाला कोई नहीं था। अविनाश ने कूद कर दीवार के ऊपरी हिस्से को पकड़ लिया, फिर पैरों की सहायता से बेहद दक्षता के साथ दीवार पर चढक़र अंदर आंगन में कूद गया।

अब वो गिरिराज वर्मा के घर में था।

वो पहले भी उस घर में आ चुका था लेकिन पुलिस की तरह ही उसे भी वहां से कोई अहम सुराग नहीं मिल पाया था, जिससे सनाया गौतम तक पहुंचा जा सकता।

पिछली बार की तरह ही इस बार भी वो मानसी से चाभी लेकर सीधे वहां आ सकता था लेकिन इस बार किसी वजह से उसने इस तरह चोरी छिपे घर में घुसने का फैसला किया था।

इस बार वो सबूत ढूंढने नहीं बल्कि किसी और इरादे से आया था।

अविनाश ने खामोशी के साथ पूरे घर का दौरा किया।

वो उस घर के स्टडी रूम में भी पहुंचा, जहां गिरिराज वर्मा का कत्ल हुआ था।

अविनाश ने स्टडी रूम का बारीकी से मुआयना किया।

पिछली बार की तरह ही इस बार भी उसे वहां से कोई सुराग नहीं मिल पाया लेकिन उसे सुराग मिलने की कोई विशेष उम्मीद भी नहीं थी।

फिर उसने अपनी जेब से एक छोटा-सा बॉक्स निकाला, जिसे बड़े करीने से वहां एक टेबल पर रख दिया।

बॉक्स को टेबल पर छोडऩे के बाद अविनाश घर के सामने वाले गेट पर पहुंचा। दोपहर के करीब तीन बज रहे थे और गेट से बाहर सडक़ वीरान दिख रही थी।

अविनाश किसी कुशल नट की तरह दीवार पर चढक़र बाहर कूद गया।

उसने अपने पीछे जो बॉक्स टेबल पर छोड़ा था, उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था-

सनाया गौतम

मोहित को रेस्टोरेंट में शालिनी, अविनाश और वैभव की मुलाकात करवाने के बाद वापस घर लौटे अभी थोड़ी ही देर हुई थी। वो बाहर वाले कमरे में बैठा था। उसी समय वैशाली भी आकर वहीं बैठ गई। उसके हाथ में एक मैगजीन थी, जिसे वो पढ़ रही थी।

उस रात जब वैशाली ने मोहित को अपने ड्रग एडिक्शन, रिहैबिलिटेशन सेंटर में रहने वगैरह के बारे में बताया था, उस रात के बाद से वैशाली पूरी तरह बदली-बदली लगने लगी थी। अब वो अपने कमरे में नहीं घुसी रहती थी। वो पूरे घर में घूमती रहती थी और ज्यादातर मोहित की आंखों के सामने ही रहती थी। हालांकि वो मोहित के कमरे में नहीं आती थी। मोहित जब डाइनिंग रूम या मेन हॉल वगैरह में होता था तो वो भी कभी कुछ पढऩे तो कभी टीवी देखने का बहाना करके वहां आकर बैठ जाती थी। कभी-कभी वो अपने मन से ही मोहित के लिए कॉफी बना लाती थी या कोई डिश बनाकर ले आती थी, जिसे खाए बिना मोहित का गुजारा नहीं हो पाता था।

मोहित जानता था कि ये सब किस ओर बढ़ रहा था।

लेकिन उसे उसमें कोई ऐतराज भी नहीं था।

उसे वैशाली पसंद थी।

पिछले करीब दो महीने से शोक और तनाव से जल रहे उसके शरीर और मन को वैशाली के करीब आने से आश्चर्यजनक रूप से राहत मिली थी।

वो वैशाली के बारे में सोचता था तो उसे अहसास होता था, जैसे वो अब तक अंगारों पर चलता रहा था और अब अचानक बारिश की ठण्डी फुहारें उसे भिगोने लगी थी।

लेकिन मन के किसी कोने में वो जानता था कि खुशियों के ये लम्हे अस्थायी थे।

उसे फिर उसी तनाव और गुस्से की आग में जलने वापस लौटना था।

वो तब तक चैन की सांस नहीं ले सकता था जब तक सनाया गौतम की सांसें बंद नहीं कर देता।

उसने एक बार फिर सामने वैशाली पर नजर डाली।

वैशाली उस समय भी उसके सामने ही एक कुर्सी पर बैठी एक मैगजीन पढ़ रही थी।

अमेरिका में मोहित इतने बरसों तक पढ़ाई और काम में डूबा रहा। कितनी ही लड़कियों ने उसमें दिलचस्पी ली लेकिन वो इतनी जल्दी शादी के बंधन में बंधना नहीं चाहता था और गर्लफ्रेंड का सिरदर्द पालने में भी उसकी दिलचस्पी नहीं रही थी। उस समय उसका पूरा फोकस पढ़ाई और काम पर ही रहा था।

लेकिन वैशाली की बात अलग थी।

वैशाली में आए बदलाव को मानसी ने भी अच्छी तरह नोट किया था। वो भी खूब शरारती ढंग से मुस्कुराने लगती थी और कई बार किसी न किसी बहाने वैशाली की बात उठाकर मोहित को छेड़ती रहती थी।

मोहित उठकर किचन में पहुंचा, जहां मानसी लंच तैयार करने में बिजी थी।

मोहित ने गिलास लिया और वाटर प्यूरीफायर के नल से उसे भरने लगा।

''क्या हुआ?''-मानसी शरारती अंदाज में बोली।

''क्या क्या हुआ?''-मोहित जान कर भी अनजान बनते हुए बोला। वो समझ गया था कि मानसी फिर से उसकी क्लास लेने वाली थी।

''तुम्हारे और वैशाली के बीच क्या खिचड़ी पक रही है?''

''कोई खिचड़ी नहीं पक रही है''-मोहित बोला-''बस, वो मेरी अच्छी दोस्त बन गई है।''

‘‘बस, अच्छी दोस्त? मुझे तो मामला ज्यादा गड़बड़ लग रहा है।’’

‘‘फिर वही बात। आपके पास तो मेरी टांग खींचने के अलावा दूसरा कोई काम रहता ही नहीं है।’’

‘‘वाह बेटा। हर बार यही डिलोग मार कर साफ बच कर निकल जाते हो।’’-इस बार मानसी आसानी से उसका पीछा छोडऩे के मूड में नहीं दिख रही थी-‘‘लेकिन इस बार ऐसा नहीं होगा। इस बार तुम्हें बताना ही होगा।’’

‘‘क्या बताना होगा?’’-मोहित बोला।

‘‘कि वो क्यों छुप-छुप कर तुम्हारी ओर देखती रहती है, तुम उसकी ओर देखते रहते हो। वो नहीं होती है, तो तुम्हारी आंखें हर ओर उसकी तलाश करती रहती हैं, तुम नहीं होते हो तो उसकी आंखें तुम्हें ढूंढती रहती हैं...।’’

‘‘बस करो, दीदी। बाहर के कमरे में ही बैठी है वो। सुनेगी तो उसे कैसा लगेगा।’’

‘‘एक भली लडक़ी की तरह शर्मा जाएगी, और क्या?’’

"देट्स एनफ..."

‘‘अरे, भाई, इसमें शर्माने वाली क्या बात है?’’-मानसी हंसते हुए बोली-‘‘तुम कम से कम मुझे तो बता ही सकते हो। मेरे कहने का मतलब तो ये है कि अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे जीजा जी से तुम दोनों के रिश्ते के बारे में बात करूं। वैसे अगर तुम्हारा शादी से पहले तीन-चार महीने रोमांस जारी रखने का इरादा है तो उससे भी कोई दिक्कत नहीं है।’’

मोहित ने घूरकर उसे देखा, फिर भुनभुनाता हुआ कमरे से बाहर निकल गया।

‘‘इस तरह वॉकआउट करने से काम नहीं चलने वाला, ब्रो।’’-पीछे से मानसी हंसते हुए बोली लेकिन मोहित रूका नहीं। उसके चेहरे पर भी मुस्कान आ गई थी, जिसे वो हर हालत में छिपाना चाहता था।

गिरिराज वर्मा के घर से बाहर निकलते ही अविनाश की नजर बगल वाले बंगले के आयरन गेट पर खड़े सिक्योरिटी गार्ड पर पड़ी, जो विस्फारित नेत्रों से उसी की ओर देख रहा था।

अविनाश उस गार्ड के पास पहुंचा।

''मैं दिल्ली से आया हूं।''-अविनाश ने उसे अपना कार्ड दिखाते हुए कहा-''प्राइवेट डिटेक्टिव। क्राइम इन्वेस्टिगेशंस। तीन महीने पहले इस घर में जो मर्डर हुआ था, मैं उसी की जांच कर रहा हूं।''

''जी, साहब। कहिए?''-गार्ड बोला। उसके चेहरे पर हवाइयां सी उड़ रहीं थीं। वो बार-बार अविनाश के पीछे उस मकान की ओर देख रहा था।

अविनाश ने एक बार विचित्र भाव से पीछे घूमकर देखा, फिर गार्ड से बोला-''पीछे क्या है?''

''जी?''

''तुम बार-बार पीछे की ओर देख रहे हो। पीछे क्या है?''

''कुछ नहीं साहब। आप उस मकान से निकलकर आए न...इसलिए। वो...वो मकान...।''

''क्या हुआ उस मकान को? अपनी जगह तो है। तुम तो यहां ड्यूटी करते हो। हमेशा ही देखते होगे उस मकान को।''

''वो तो देखना पड़ता है, साहब''-वो बेचारगी से बोला-''लेकिन मन नहीं करता देखने का।''

''क्यों मन नहीं करता? ऐसा क्या है उस मकान में?''

''वो भुतहा मकान है, साहब।''

''क्या?''

''उसमें चुड़ैल का वास है।''

''कैसी चुड़ैल?''

''बड़ी खूबसूरत चुड़ैल है साहब। दिखने में एकदम भोली-भाली, खूबसूरत इतनी कि नजरें हटाए न हटें। लेकिन...।''-वो कहते-कहते चुप हो गया।

''लेकिन क्या?''-अविनाश ने उसके प्रलाप में दिलचस्पी लेने की कोशिश की।

‘‘लेकिन चुड़ैलें बहुत शक्तिशाली होती हैं। जो किसी चुड़ैल के चक्कर में फंस जाता है, वो फिर जिन्दा नहीं बचता। बेचारे वकील साहब पर भी उस चुड़ैल का काला साया पड़ गया था। बेचारे असमय ही इस दुनिया से चले गए।’’

अविनाश कुछ क्षण तक उसे घूरता रहा, फिर उसने अपने दिमाग को झटका दिया।

‘‘एनीवे’’-वो गार्ड से बोला-‘‘तुम यहां कितने समय से काम करते हो?’’

‘‘करीब दो साल से।’’

‘‘पिछले तीन महीनों में’’-अविनाश बोला-‘‘तुमने पुलिस के अलावा किसी और को इस घर के अंदर जाते देखा है क्या? दिन में या रात में? किसी भी समय?’’

‘‘मैं तो दिन की ड्यूटी वाला हूं साहब। रात की ड्यूटी वाला गार्ड आपको रात के बारे में बता पाएगा। वैसे मैं भी पहले नाइट ड्यूटी करता था। लेकिन...लेकिन उस चुड़ैल के डर के कारण मैंने अपनी शिफ्ट बदलवा ली। दिन की ड्यूटी में पैसा कम मिलता है लेकिन जान है तो जहान है। कौन यहां रात भर खड़े रहकर उस भुतहा घर को देखेगा। और कहीं चुड़ैल आ गई तो...।’’

‘‘तो तुझे कच्चा चबा जाएगी।’’-अविनाश होंठों में बुदबुदाया।

‘‘जी साहब?’’

‘‘कुछ नहीं। मैं पूछ रहा था कि ये तुमने कुछ तो देखा होगा भाई? अपनी पुरानी नाइट ड्यूटी के समय, अभी की दिन की ड्यूटी के समय। कौन-कौन लोग आते थे यहां? इतने बड़े आदमी का मर्डर हो गया, ऐसा तो नहीं कि कोई आता नहीं होगा।’’

‘‘लोग तो बहुत आते थे उस...उस घटना के बाद करीब एक महीने तक। बाद में लोगों का आना कम होता गया।’’

‘‘लोग मतलब?’’

‘‘मतलब पुलिस के अलावा प्रेस रिपोर्टर वगैरह। वकील साहब के रिश्तेदार भी आते थे।’’

‘‘रिश्तेदार कौन-कौन? उनके तो ज्यादा रिश्तेदार नहीं हैं।’’

‘‘वही। उनकी बेटी और दामाद। आज सुबह तो उनके बेटे भी आए थे, जो विदेश से आए हैं।’’

‘‘ओह।’’

‘‘बेचारे बहुत दुखी लग रहे थे। लेकिन मुझे ये समझ नहीं आया कि वो इतने दिनों बाद क्यों आए? पहले क्यों नहीं...?’’

‘‘अच्छा वो लडक़ी’’-अविनाश बात बदलते हुए बोला-‘‘जो यहां वकील साहब के साथ रहती थी। उसे किस-किस ने देखा था? उसके बारे में कुछ बता सकते हो?’’

‘‘राम का नाम लीजिए, साहब। वो लडक़ी कहां थी? चुड़ैल थी चुड़ैल। साल भर तक वकील साहब के ऊपर रही, फिर उनकी जान लेकर वापस हवा में गायब हो गई। न किसी ने उसे इस घर में आते देखा था, न किसी ने जाते देखा। कौन जाने उसका काला साया अब भी इस घर में ही हो। मैं तो कहता हूं कि साहब के नाते-रिश्तेदार भी इस घर से दूरी बना कर रखें। वरना चुड़ैल का क्या भरोसा? किसी के साथ ही चिपककर चली जाए तो?’’

‘‘क्या यार, आज के जमाने में भी तुम कैसी चुड़ैल, भूत-प्रेत की बातें करते हो। अब कौन मानता है ये सब?’’

‘‘किसी के मानने न मानने से क्या होता है, साहब। जो चीज है, वो बदल थोड़े ही जाएगी। आपकी बातों से हमें वो इंस्पेक्टर साहब याद आ गए।’’

‘‘कौन से इंस्पेक्टर साहब?’’

‘‘इसी मामले की जांच कर रहे थे। हमको इतना विश्वास दिलाने की कोशिश किए कि भूत-प्रेत नहीं होता है। लेकिन हमने उन्हीं को समझा दिया कि भूत-प्रेत होते हैं।’’

‘‘तो तुम्हारे हिसाब से इस मकान में’’-अविनाश ने गिरिराज वर्मा के घर की ओर इशारा किया-‘‘चुड़ैल है, तो इस घर के मालिकों को लाखों की प्रॉपर्टी ऐसे ही छोड़ देनी चाहिए?’’

‘‘जान से बढक़र कुछ नहीं होता साहब। जान है तो जहान है। वैसे भी ये चुड़ैल, भूत-प्रेत ये सब ऐसी चीजें होतीं हैं, जो बुरी तरह तड़पा-तड़पाकर जान लेती हैं। मारने से पहले आदमी को पूरा नरक दिखाकर ही दम लेती हैं...।’’

‘‘लेकिन गिरिराज वर्मा की तो गोली मारकर हत्या की गई थी?’’

‘‘वो सब चुड़ैल का छलावा रहा, साहब। भूत-प्रेत भी अपने को छिपाकर रखते हैं...।’’

‘‘क्यों? भूत-प्रेतों को किस चीज का डर?’’

‘‘क्या बात करते हैं साहब। ऐसा कैसे हो जाएगा? क्या भूत-प्रेतों को भगवान का डर नहीं होता? शक्तिशाली ओझा-तांत्रिकों का डर नहीं होता? अगर भूत-प्रेत खुलकर उपद्रव मचाने लगें तो लोग भी तो उन्हें भगाने के लिए ओझा-तांत्रिक बुलवा लेंगें। फिर तो उन्हें भागना ही पड़ेगा। इसीलिए भूत-प्रेत खुलकर सामने नहीं आते। बहुत कम ही लोगों को दिखते हैं।

जिसको दिख जाते हैं, वो या मारा जाता है, या बहुत हिम्मत वाला या देवताओं के आशीर्वाद वाला होता है तो जी भी जाता है...।''

अविनाश ने गहरी सांस ली। इस गार्ड ने आज भूत-प्रेतों के गायब रहने के पीछे का रहस्य भी खोल दिया था।

तभी अविनाश की नजर थोड़ी दूर पर एक दूसरे बंगले के गेट पर पड़ी, जहां खड़ा एक गार्ड विचित्र निगाहों से उनकी ओर देख रहा था।

''म...मैं चलता हूं भाई''-फिर अविनाश घबराने का नाटक करते हुए उस गार्ड से बोला-''अब तो मुझे भी डर लगने लगा है। कहीं वो चुड़ैल मुझे भी न धर ले।''

''हैं?''

''क्या हैं? अभी तुम्हीं ने तो मुझे उस भूतनी की के बारे में इतनी डिटेल में बताया। अब मुझे भी याद आ रहा है कि उस घर में जाते वक्त मैंने एक काला साया लहराता हुआ देखा था। जरूर उस चुड़ैल का ही होगा। अच्छा भाई, मैं चलता हूं। मैं अब इस भुतहा दुनिया में और नहीं रह सकता।''-कह कर अविनाश उस गार्ड से पीछा छुड़ाते हुए उसके पार वाले बंगले के गेट पर खड़े गार्ड के पास पहुंचा, जो एकटक उन्हीं की ओर देख रहा था।

''क्या नाम है भाई तुम्हारा?''-अविनाश ने गार्ड से प्रश्न किया।

''जी, सुखलाल।''

''हां तो भाई सुखलाल, ये बताओ कि उस बगल वाले बंगले के गार्ड की तरह क्या तुम्हें भी लगता है कि उस घर में चुड़ैल है?''

''रूपलाल तो बावला है साहब।''

''लेकिन तुम समझदार लगते हो।''

''इसमें समझदारी वाली कौन सी बात है, साहब? आजकल हर आदमी मोबाइल पकडक़र घूमता है, उस पर इंटरनेट चलाता है। फिर भी कोई भूत-प्रेत की बात करे तो बाकी का पता नहीं लेकिन हमें तो हंसी ही आती है।''

''इसीलिए तो तुम्हें समझदार कहा भाई। अच्छा ये बताओ कि तुमने उस घर में रहने वाली उस लडक़ी को कभी देखा था।''

''देखा था साहब। लेकिन सिर्फ एक-दो बार। इसके अलावा आसपास के कुछ और लोगों ने भी देखा था। मिल्कमैन, पेपर बांटने वाले वगैरह ने। लेकिन वो बहुत कम ही दिखती थी

लोगों को। इस घर से किसी को बाहर निकलते भी लोगों ने कम ही देखा था। इस घर के गेट ज्यादातर बंद ही रहते थे। मिलने-जुलने वाले भी बेहद कम ही आते थे।''

अविनाश ने सिर हिलाया। फिर बोला-''वो लडक़ी-जो यहां रहती थी-किसी से बात वगैरह नहीं करती थी? लोगों से मिलती-जुलती नहीं थी?''

''उसे तो किसी ने घर से बाहर निकलते भी नहीं देखा था साहब। कभी-कभार हम लोग उसके बारे में बात करते थे तो हम लोगों को खुद हैरानी होती थी। आखिर ऐसे घर में घुसकर कौन रहता है? फिर बाद में अखबारों में छपा कि...''-वो बोलते-बोलते चुप हो गया।

''क्या छपा अखबारों में?''अविनाश बोला।

''यही कि वो बहुत बुरी लडक़ी थी। उसी ने वकील साहब का मर्डर किया। उसी ने उनको फंसाया था।''

अविनाश ने सहमति में सिर हिलाया। फिर वो बोला-''उस घर में या उससे जुड़ी कभी कोई अजीब बात नोट की? उस लडक़ी के अलावा?''

''अजीब बात तो यही थी साहब कि उस घर में लोग तो रहते थे-मतलब वकील साहब-लेकिन लोगों के रहने का अहसास नहीं होता था। ज्यादातर तो वो घर बंद ही रहता था। हम लोगों को यही नहीं समझ में आता था कि उस घर में कोई रह भी रहा है या नहीं?''

''किराना वगैरह जरूरत का सामान लेने तो निकलते होंगें?''

''नहीं, साहब।''

''अरे।''

''आजकल तो बड़ी किराना दुकानों वाले भी होम डिलीवरी देने लगे हैं। मैंने एक-दो बार देखा था, एक किराना दुकान वाले लडक़े लोग उनके घर सामान छोडक़र जा रहे थे। बहुत सारा सामान था। ऐसा लगता था कि पूरे महीने का सामान एक साथ मंगवा लेते थे।''

''देखो''-अविनाश अपना कार्ड उसकी ओर बढ़ाते हुए बोला-''मैं चाहता हूं कि तुम मेरा एक काम करो।''

''कैसा काम?''

''तुम यहां आसपास काम करने वाले लोगों से बात करो। सर्वेन्ट्स, मिल्कमैन से लेकर हॉकर वगैरह सबसे। और सनाया गौतम के बारे में अधिक से अधिक पता लगाने की

कोशिश करो। कुछ भी ऐसा, जो अब तक पता न चल पाया हो। अगर ऐसी कुछ जानकारी मिलती है तो उसका पता लगाने में आसानी होगी।''

गार्ड ने कार्ड को देखते हुए सिर हिलाया।

''और ये लो''-अविनाश ने उसे दो हजार का नोट दिया-''ऐसा एक नोट मैं तुम्हें और दूंगा, जब उस सनाया गौतम के बारे में कोई जानकारी मुझे दोगे।''

''अरे नहीं साहब''-गार्ड ने प्रतिरोध किया-''इतनी सी बात के लिए क्या पैसा लेना। और वो भी इतना सारा।''

''रख लो भाई। बच्चों के लिए मिठाई समझकर रख लो।''

''शुक्रिया साहब।''-अविनाश के जोर देने पर गार्ड ने नोट ले लिया।

''शुक्रिया कि कोई जरूरत नहीं। शुक्रिया तुम्हारा मैं अदा करूंगा, जब तुम मुझे उस सनाया गौतम के बारे में कोई जानकारी लाकर दे सकोगे। इसमें मेरा फोन नम्बर है। जैसे ही कुछ भी पता चले, तुरंत बताना।''

''बिल्कुल, साहब।''

गार्ड से बात करने के बाद अविनाश अपनी कार की ओर बढ़ गया।

मोहित घर में बैठा अखबारों की उन कटिंग्स को देख रहा था, जो उसे शालिनी ने मुहैया कराईं थीं।

उसी समय मानसी भी उसके पास आकर बैठ गई और उन कटिंग्स को देखने लगी।

‘‘मैं उस मकान में गया था।’’-मानसी को कटिंग्स का वि'श्लेषण करते देख कर मोहित ने दूसरी बात उठाते हुए फाइल को बंद कर दिया।

‘‘कौन-से मकान में?’’

‘‘हिल रोड वाले। जिसमें पापा रह रहे थे।’’

‘‘किसलिये?’’

‘‘बस। ऐसे ही। देखने के लिए। कि आखिर उस मकान में ऐसा क्या है, जो पापा ने उसे खरीद लिया।’’

उस मकान के जिक्र पर मानसी थोड़ी बेचैन दिखने लगी।

‘‘वैसे सच कहूं तो’’-मोहित उलझनपूर्ण स्वर में बोला-‘‘ये नये मकान का किस्सा मेरे गले से नीचे नहीं उतर रहा।’’

‘‘क्या मतलब?’’-मानसी बोली।

‘‘आखिर पापा ने दूसरा मकान क्यों लिया? वो भी यहीं पर। जबकि हमारे पुराने घर में ही कोई कमी नहीं थी। इतने सालों तक हम सब खुशी-खुशी वहां रहे। कभी किसी तरह की कमी महसूस नहीं की।’’

‘‘पापा ने जो मकान लिया था, उसके बारे में मैंने काफी अजीब बातें सुनीं हैं।’’-मानसी धीमे स्वर में बोली।

‘‘कैसी अजीब बातें? ’’

‘‘समझ नहीं आ रहा कैसे कहूं...मुझे तो ये सब काफी अजीब लगता है।’’-मानसी के स्वर में हिचकिचाहट थी।

‘‘क्या अजीब लगता है? आप बताओगी नहीं, तो मुझे पता कैसे चलेगा?’’

‘‘वहां के लोग उस घर को भुतहा मानते हैं।’’

‘‘क्या?’’

‘‘हां। दरअसल, वो मकान कई सालों से बंद पड़ा था। लोगों का कहना है कि उस घर में कई साल पहले कोई आदमी रहता था, जिसने आत्महत्या कर ली थी। उसके बाद से उस घर में कोई रहने नहीं आया। सस्ती कीमत पर भी न तो कोई उसे खरीदता था, न ही किराए पर लेता था। लम्बे समय तक खाली पड़े रहने से उसके भुतहा होने की अफवाह और भी जोर पकडऩे लगी। यहां तक कि करीब साल भर पहले जब पापा ने उसे खरीदा और उसमें रहने आए तो उस कॉलोनी के लोगों को इस बात पर बहुत हैरानी हुई कि कोई उस घर को ले भी सकता है।’’

‘‘अरे।’’

‘‘हां। तुम तो जानते ही हो कि ऐसी जगहों के साथ कई तरह के किस्से जुड़ जाते हैं। वहां भी उस घर को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं फैली हुईं हैं। कम से कम वहां के लोगों को तो इस बात का कोई यकीन नहीं दिला सकता कि वो मकान भुतहा नहीं है। उस पर किसी भूत-प्रेत, आसेब का काला साया नहीं है।’’

‘‘शायद वहां के लोग बहुत अंधविश्वासी हैं।’’

‘‘और ऐसी चीजों पर लोग तब और भी ज्यादा यकीन करने लगते हैं, जब उनके साथ और भी अजीब चीजें जुड़ जातीं हंैं। या कोई घटना हो जाती है। जैसे...जैसे पापा के साथ जो हुआ।’’

‘‘वो लोग क्या मानते हैं, इसे हमें क्या लेना-देना? मैं सिर्फ पापा के कातिल को फांसी के फन्दे तक पहुंचाना चाहता हूं।’’

‘‘मुझे पता है, मोहित।’’-मानसी बोली-‘‘मैं भी चाहती हूं। लेकिन मैं उस मकान की बात कर रही हूं। उसको लेकर वहां के लोगों में जो अफवाह या जो कुछ भी है, उसके बारे में बात कर रही हूं।’’

‘‘कहीं आप ये तो नहीं कहना चाहतीं कि आप भी इस बात पर विश्वास करने लगी हो?’’

‘‘पता नहीं।’’-मानसी के स्वर में चिंता और अनिश्चय के भाव थे-‘‘तुम ही ने तो उस दिन कहा था कि आखिर...आखिर पापा ने वो मकान लिया ही क्यों? हम इतने सालों तक अपने उसी पुराने घर में रहते रहे, वहां से हमारी कितनी यादें जुड़ी थीं। फिर ऐसा क्या हो गया, जो पापा को दूसरा मकान खरीदना पड़ गया? वो भी तब जब वो कोई काम भी नहीं कर रहे थे। उन्होंने कोर्ट जाना भी बंद कर दिया था।’’

‘‘यही बात मैं भी सोच रहा हूं।’’-मोहित बोला-‘‘आखिर पापा को उस मकान को खरीदने की जरूरत क्यों आ पड़ी?’’

‘‘मैंने भी उस इलाके के कुछ लोगों से बात की थी। उन सबका यही कहना है कि...।’’-मानसी बोलते-बोलते चुप हो गई।

‘‘क्या?’’

‘‘कि पापा पर किसी चुड़ैल का काला साया था।’’

‘‘इनफ विद इट।’’-मोहित हाथ उठाकर बोला।

‘‘नहीं, मोहित।’’-मानसी बोली-‘‘भले ही तुम इस बारे में बात न करना चाहो, मैं इस बारे में बात न करना चाहूं, लेकिन जो लोग बात करते हैं, उनका क्या? जो लोग वहां इतने सालों से रह रहे हैं, जब वो लोग इस चीज को मानते हैं, तो हम इसे पूरी तरह नकार भी नहीं सकते...।’’

‘‘नकार नहीं सकते तो क्या करें? विश्वास कर लें कि ये काम किसी चुड़ैल का है? किसी आत्मा का है? इन बकवास बातों से बाहर आओ, दीदी। आप अच्छी तरह जानती हो कि ऐसा कुछ नहीं होता है। और अगर होता भी है तो भूत-प्रेत कब से रिवॉल्वर चलाने लगे? चुड़ैलें कब से सेफ खोलकर गहने-पैसे लूटकर ले जानें लगीं?’’

मानसी खामोश हो गई। लेकिन उसके चेहरे से साफ था कि उसके दिमाग में विचारों की आंधियां चल रहीं थीं।

‘‘और भी वजहें हैं।’’-फिर वो बोली।

‘‘किस चीज की?’’-अब मोहित का दिमाग सचमुच खराब हो रहा था।

‘‘वो लडक़ी-वो सनाया गौतम या जो भी वो थी-करीब साल भर तक उस मकान में पापा के साथ रहती रही लेकिन लोगों ने उसे बहुत कम ही देखा। चंद लोगों ने ही कभी-कभार उसकी एक झलक ही देखी थी। अगर वो इंसान थी...तो...तो...ऐसा कैसे सम्भव है कि वो इस तरह सबसे छिपी रही? और क्यों रही?’’

‘‘इसी का तो पता लगाना है।’’-मोहित बोला-‘‘और जब वो सनाया गौतम गिरफ्तार हो जाएगी, तो ये सब पता चलने में देर नहीं लगेगी। तब तक के लिए आप भगवान के लिए मुझ पर एक अहसान करिये।’’

‘‘क्या?’’

‘‘ये भूत-प्रेत, आसेब, चुड़ैलों की चर्चा करनी बंद कर दीजिये।’’

मानसी खामोश हो गई। फिर उसने धीरे से सिर हिला दिया।

मोहित ने राहत की एक मील लम्बी सांस ली।

मोहित शालिनी से मिलने लेक सिटी ट्रिब्यून के ऑफिस गया लेकिन वहां उसे पता चला कि शालिनी ऑफिस में नहीं थी। किसी न्यूज की रिपोर्टिंग के सिलसिले में पास के गांव गई हुई थी।

मोहित घर वापस लौटा। अरविंद बाहर वाले रूम में बैठा टीवी देख रहा था।

‘‘क्या कर दिया, भई?’’-अरविंद ने मोहित से पूछा।

‘‘क्या मतलब?’’-मोहित उलझनपूर्ण स्वर में बोला।

‘‘मानसी बहुत गुस्से में है। घर के पीछे वाले हिस्से में है। मुझसे कहा है कि तुम आओ तो तुम्हें उसके पास भेज दूं। कुछ बात करना चाहती है तुमसे। बात क्या करना चाहती है लगता है अच्छी तरह क्लास लेने वाली है तुम्हारी।’’

‘‘अच्छा।’’-मोहित को हैरानी हुई। वो घर के पिछले हिस्से का गेट खोलकर बाहर निकला। वहां से थोड़ी ही दूरी पर एक छोटा सा तालाब था। मानसी उसी तालाब के किनारे लगी एक बैंच पर बैठी तालाब की ओर देख रही थी।

मोहित उसके पास पहुंचा और बैंच पर बैठ गया।

‘‘क्या हुआ?’’-वो मानसी से बोला।

मानसी ने उसकी ओर देखा। उसका चेहरा गुस्से से तमतमाया हुआ था।

‘‘क्या हुआ?’’-मोहित चौंक कर अपना प्रश्न दोहराया।

‘‘ये तुम्हारे पास कहां से आई?’’-मानसी ने हाथ आगे करके गुस्से में कहा। उसके हाथ में वही रिवॉल्वर थी, जिसे मोहित दिल्ली से लेकर आया था।

मोहित ने चौंक कर इधर-उधर देखा। वहां आसपास कोई और नहीं दिख रहा था।

‘‘ये तुम्हें कहां से मिली?’’-उसने हाथ बढ़ाकर रिवॉल्वर मानसी से लेने की कोशिश की लेकिन उसने मोहित का हाथ झटक दिया।

‘‘पहले मेरे सवाल का जवाब दो।’’-वो बोली।

‘‘दिल्ली में खरीदी।’’

‘‘तुम इसी काम के लिए दिल्ली गए थे?’’-मानसी के स्वर में नाराजगी थी।

‘‘नहीं। मिलने उस प्राइवेट डिटेक्टिव से गया था, जिसके बारे में तुमने बताया था। लेकिन इसे भी खरीदना ही था...।’’

‘‘क्यों? क्यों खरीदना ही था इसे? ऐसी क्या जरूरत आन पड़ी थी तुम्हें?’’

मोहित ने कोई जवाब नहीं दिया।

‘‘मोहित।’’-मानसी कड़े स्वर में बोली-‘‘गैरकानूनी हथियार रखना अपराध है, तुम जानते हो।’’

‘‘जानता हूं।’’

‘‘फिर?’’

‘‘लेकिन मुझे इसकी जरूरत थी।’’

‘‘जरूरत होने का मतलब ये नहीं है कि तुम गैरकानूनी काम करने शुरू कर दो। वैसे क्या जरूरत थी तुम्हें इसकी?’’

मोहित ने फिर कोई जवाब नहीं दिया।

‘‘इस तरह चुप रहने से काम नहीं चलेगा। मुझे जानना है कि मेरे भाई को अचानक ऐसी क्या जरूरत आ पड़ी, जो वो गैरकानूनी ढंग से हथियार खरीदने दिल्ली में अपराधिक किस्म के लोगों के बीच घूम रहा था? और ये...ये बकवास चीज खरीदकर भी ले आया।’’

‘‘मुझे ये इसलिए चाहिए क्योंकि मुझे किसी के साथ हिसाब बराबर करना है।’’

‘‘किसके साथ? इससे कौन सा हिसाब बराबर करना चाहते हो तुम?’’

‘‘सनाया गौतम। इसे मैंने सनाया गौतम के लिए खरीदा है।’’

‘‘आर यू आउट ऑफ युअर माइंड?’’

‘‘मुझे पता है कि तुम्हें ये पसंद नहीं आएगा। लेकिन मैं चाहता भी नहीं कि तुम्हें या किसी को भी पसंद आए। ये मेरा फैसला है। मुझे इसके लिए किसी की सहमति, किसी की अनुमति वगैरह की जरूरत नहीं है...।’’

‘‘तुम मेरे सामने खड़े होकर किसी का खून करने की बात कह रहे हो और कह रहे हो कि तुम्हें किसी की सहमति, अनुमति की जरूरत नहंीं है।’’

‘‘मुझे तुमसे बहस नहीं करनी...।’’

‘‘लेकिन मुझे करनी है। तुम अपने होश खो चुके हो। तुमने एक गलत फैसला लिया है लेकिन ईश्वर की कृपा से अभी बहुत देर नहीं हुई है। तुम्हें ये बेवकूफी भरा फैसला बदलना ही होगा।’’

‘‘मानसी, उसने पापा का खून किया है। उसकी सांसें मेरे लिए अपमान हैं। जब तक वो मर नहीं जाती, मुझे चैन नहीं आएगा।’’

‘‘और फिर? उसके बाद क्या? उसे मारने के बाद तुम जेल की हवा खाओगे? फांसी के फंदे पर झूलोगे? मतलब उस लडक़ी ने मुझसे मेरे पिता को तो छीन ही लिया, अब वो मेरे भाई को भी छीन लेगी? यानि वो दोबारा जीत जाएगी? लेकिन इस बार उसे जिताने वाले तुम होगे।’’

मोहित हतप्रभ सा उसे देखता रह गया।

‘‘तुमने अपने बारे में तो सोच लिया कि तुम उसे मार दोगे। अपना बदला पूरा कर लोगे। लेकिन मेरे बारे में सोचा? तुम्हारे बाद मेरा क्या होगा? जब लोग मुझसे कहेंगें मेरा भाई खूनी है, तब मुझे कैसा लगेगा? हमारे परिवार को कैसा लगेगा?’’

मोहित कुछ नहीं कह सका।

‘‘मैं तुम्हें दोषी नहीं ठहरा रही, मोहित।’’-मानसी की आंखों में आंसू थे-‘‘मैं जानती हूं तुमने जो फैसला लिया वो पूरी तरह गलत भी नहीं है। लेकिन कई बार सही और गलत के बीच की लाइन बेहद धुंधली हो जाती है। इतनी धुंधली कि सही गलत का फैसला करना मुश्किल हो जाता है। गलत भी सही लगता है और सही भी गलत। इसीलिए मैं तुम्हें समझा रही हूं, प्रार्थना कर रही हूं, भीख मांग रही हूं तुमसे कि अपना ये मनहूस फैसला बदल दो। उस नागिन के कत्ल का इरादा छोड़ दो। उसे उसके किए की सजा भगवान देगा। कानून देगा। वरना...वरना सब कुछ बर्बाद हो जाएगा। मैं पहले ही बहुत कुछ झेल चुकी हूं। तुम तो अमेरिका में थे। यहां सब कुछ मुझे अकेले देखना पड़ा, बर्दाश्त करना पड़ा। उस वक्त तुम्हें मेरे साथ होना चाहिए था। लेकिन मैं तुमसे इसकी शिकायत नहीं कर रही हूं कि तुम उस वक्त मेरे साथ नहीं थे। मैं तुमसे सिर्फ इतना कह रही हूं कि किस्मत ने पापा को तो मुझसे छीन लिया है, कम से कम मेरे भाई को तो मुझसे मत छीनो। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं।’’

मोहित ने उसके हाथ से रिवॉल्वर ली और तालाब में दूर फेंक दी।

अविनाश रजत महानंद के फ्लैट पर पहुंचा।

गिरिराज वर्मा के बारे में काफी पड़ताल करने के बाद उसे पता चला था कि वकालत से अघोषित रूप से किनारा कर लेने से पहले उनका एक पर्सनल सेक्रेट्री हुआ करता था, जिसका नाम रजत महानंद था। वो अजंता रोड पर स्थित सनशाइन अपार्टमेंट्स नामक बिल्डिंग में तीसरी मंजिल पर फ्लैट नंबर 16 में रहता था।

अविनाश ने डोरबैल बजाई।

थोड़ी देर में दरवाजा खुला। एक 50 वर्ष के आसपास आयु का चेहरे से ही गम्भीर दिखने वाला व्यक्ति नजर आया। उसकी मूंछें उसके व्यक्तित्त्व को प्रभावशाली बना रहीं थीं।

''कहिए?''-उसने प्रश्नसूचक भाव से अविनाश की ओर देखा।

अविनाश मुस्कुराया-''आप रजत महानंद जी हैं?''

''हां। मैं ही हूं। कहिए, क्या काम है आपको?''

''मैं प्राइवेट डिटेक्टिव अविनाश हूं। एडवोकेट गिरिराज वर्मा के मर्डर केस की तफ्तीश कर रहा हूं।''-फिर वो थोड़ा ठहरकर बोला-''आपके भूतपूर्व एम्प्लॉयर के मर्डर केस की।''

''ओह। कहिए, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूं?''

''सारी मदद दरवाजे पर ही करेंगें''-अविनाश मुस्कुराते हुए बोला-''या घर के अंदर आने के लिए भी पूछेंगें?''

''ओह।''-वो हड़बड़ाकर दरवाजे के सामने से हट गया-''आइए, आइए। अंदर आइए, प्लीज।''

अविनाश ने घर के अंदर कदम रखा। सोफे पर बैठने तक वो पैनी निगाहों से उस कमरे का जायजा ले चुका था।

''क्या लेंगें आप? ठण्डा, गर्म कुछ...।''

''इसकी कोई जरूरत नहीं।''-अविनाश बोला-''आप मेरे कुछ सवालों के जवाब दे दीजिए, वही मेरे लिए बहुत बड़ी हेल्प हो जाएगी।''

''फिर भी। आप पहली बार मेरे घर आए हैं। कुछ तो लेना पड़ेगा। वरना मैं आपके सवालों के जवाब नहीं दूंगा।''

''फिर कॉफी ठीक रहेगी।''-उसकी जिद के आगे हार मानते हुए अविनाश ने कहा।

''शामली!''-उसने आवाज दी-''कॉफी।''

“मिसेज?”-राज ने पूछा।

“जी हां।”

“कितने साल हो गए शादी को?”

“15 साल हो गए।”

“बच्चे नहीं दिखाई दे रहे?”

“एक ही बेटा है। वो भी बोर्डिंग में पढ़ता है।”

“ओह।”

कुछ ही देर में अंदर से एक महिला ट्रे में दो कप कॉफी और कुछ बिस्किट लेकर आ गई। उसने कॉफी के कप उन्हें दिए और ट्रे मेज पर रख कर वापस किचन में चली गई।

“गिरिराज वर्मा मर्डर केस में”-अविनाश ने कहा-“आप सनाया गौतम के बारे में क्या जानते हैं?”

“जी?”-वो हैरानी से अविनाश का मुंह देखता रह गया।

“सनाया गौतम। वो लडक़ी जिस पर वकील साहब की हत्या का आरोप है।”

“मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता।”

“कुछ भी नहीं जानते?”

“जी। दरअसल मैं तो करीब सवा साल पहले ही नौकरी छोड़ चुका था।”

“क्यों?”

“क्योंकि वर्मा सर अब और केस हाथ में नहीं लेते थे। उनका ज्यादातर समय उपन्यासें पढ़ते हुए, फिल्में देखते हुए या घूमते-फिरते हुए बीतता था। उन्होंने सामाजिक कार्यक्रमों में भी जाना कम कर दिया था। ऐसा लगने लगा था कि वे वकालत से सन्यास लेने वाले थे। हालांकि उन्होंने स्पष्ट रूप से कम से कम मुझसे तो ये कभी नहीं कहा। मेरे लिए काम एकदम कम होता जा रहा था। कोई केस वगैरह आता भी था तो वे या तो सीधे मना कर देते थे, या फिर किसी दूसरे लॉयर के पास भेज देते थे। ऐसे में मेरे लिए काम कम होता जा रहा था। नौबत यहां तक आ गई थी कि मैं ऑफिस में खाली बैठा मक्खियां मारता रहता था। उससे भी ज्यादा शर्मनाक ये कि ऑफिस पर तो सर के भी दर्शन नहीं होते थे। ज्यादातर समय वे अपने घर पर ही बिताते थे। कभी-कभी ऑफिस की बोरियत से तंग

आकर मैं भी उनके घर ही चला जाता था। दो-चार महीने ऐसे ही चला, फिर मुझे ही वेतन लेते हुए शर्म महसूस होने लगी तो मैंने जॉब छोड़ दी।''

''ऐसा क्यों करने लगे थे वो?''

''निश्चित रूप से तो कुछ नहीं कह सकता। मैंने शुरू शुरू में उनसे इस सिलसिले में बात की थी तो उन्होंने कहा था कि जीवन भर तो कमाई की है। अब किसके लिए कमाऊं? बच्चे खुद अपने पैरों पर खड़े हो गए हैं। इतना पैसा, प्रॉपर्टी भी इकट्ठा कर ली है। मन करता है कि ये सब भी किसी को दान में दें दूं।''

''और हरिद्वार निकल जाऊं?''

''नहीं। ये नहीं कहते थे।''

''मैंने एक आम बात कही। करोड़ों रूपये की प्रॉपर्टी दान करने की इच्छा रखने वाले शख्स के दिमाग में तो इसी तरह के विचार आ सकते हैं।''

''हो सकता है उनके दिमाग में हो। मुझसे तो उन्होंने ऐसा कुछ नहीं कहा।''

''आपने इतने वर्षों तक उनके यहां काम किया...।''

''15 साल तक''-वो गर्वपूर्ण स्वर में बोला-''और मुझे गर्व है कि मुझे इतने अच्छे आदमी के यहां, उनके साथ काम करने का मौका मिला।''

''फिर एकदम से ऐसे काम छोड़ दिया?''

''वजह मैंने आपको अभी तो बताई।''

''ये वजह तो काफी नहीं लगती।''

''तो दूसरी वजह कहां से लाऊं?''

''ओके!''-अविनाश ने सिर हिलाया-''अच्छा ये बताइए कि जॉब छोडऩे के बाद भी तो आपका वकील साहब के घर आना-जाना होता होगा?''

''नहीं। नहीं होता था।''

''ऐसा क्यों? आखिर वो आपके इतने पुराने एम्प्लॉयी थे। एक-दो साल किसी के यहां काम करने से घरेलू सम्बन्ध जैसे बन जाते हैं। आपने तो उनके यहां 15 साल तक काम किया। फिर एकदम से ऐसा क्या हुआ कि उनकी खबर लेना तक जरूरी नहीं समझा?''

''वे चाहते नहीं थे कोई उनकी खबर ले।''

‘‘अरे।’’

‘‘वे घर पर भी एकदम अलग-थलग रहने लगे थे। कई बार घंटों तक कमरे में बंद हो जाते। उनकी इस तरह की हरकतों से तो मुझे भी डर लगने लगा था। शायद काम छोडऩे की ये भी एक वजह थी। उनके एकांतवास में खलल पड़ता तो वे नाराज हो जाते थे। चिल्लाने लगते थे। डांट भी दिया करते थे, जो कि वे पहले कभी नहीं करते थे।’’

‘‘तो आपने उनके इस बदलाव की खबर उनके परिजनों, बेटी, दामाद या बेटे को नहीं दी?’’

‘‘जी वो दरअसल...उसके पीछे भी एक वजह थी।’’

‘‘जान सकता हूं क्या वजह थी।’’

‘‘मुझे ऐसा लगता था कि वे जान-बूझकर वो सब कर रहे थे।’’

‘‘मतलब?’’

‘‘मतलब...मुझे लगता था कि वैसा करने के पीछे उनका कोई उद्देश्य था। ऐसा नहीं था कि उन पर उम्र का असर होने लगा था या उनकी मानसिक स्थिति कुछ खराब थी। इसलिए खतरे वाली कोई बात मुझे नहीं लगी थी। मुझे सचमुच लगने लगा था कि वे कुछ समय के लिए एकांतवास चाहते हैं। और जॉब छोडऩे के बाद उनसे मिलने-जुलने न जाने के पीछे तो कारण यही था कि वे कई बड़े-बड़े लोगों को दरवाजे से चलता कर दिया करते थे तो मुझे लगता था कि मेरी क्या बिसात। इसीलिए मेरी भी...समझ लीजिए हिम्मत नहीं पड़ी, उनसे मिलने जाने की। उनकी खैर खबर लेने की।’’

‘‘ओह।’’

‘‘वे एकाकी जीवन के बड़े शौकीन थे। या शायद ये कहना ज्यादा ठीक होगा कि उन दिनों वे हो गए थे। वरना पहले तो उन्हें लोगों से मिलने-जुलने, कार्यक्रमों आदि में जाने से कोई परहेज नहीं था। एकदम से उन्हें एकांत इतना रास आने लगा था कि उन्होंने अपना सामाजिक जीवन तो छोड़ा ही, अपने काम तक से किनारा कर लिया। नए केस लेना भी एकदम से बंद कर दिया।’’

‘‘और इसकी वजह क्या थी?’’

‘‘मैं कैसे बता सकता हूं? उनके दिल में क्या था, वो जानें? मुझे तो उन्होंने बस इतना बताया था कि बच्चों की लाइफ सैटल्ड होने के बाद अब उनकी और पैसा कमाने में रूचि नहीं रह गई थी। जो कि मैंने अभी थोड़ी देर पहले आपको बताया।’’

‘‘ओह।’’

‘‘वकील साहब ऐसी-ऐसी अजीब हरकतें करने लगे थे, जिनके बारे में मैं आपको क्या बताऊं ? वो मिलने आने वालों से पीछा छुड़ाने के लिए कई बार मुझसे कहलवा देते थे कि वो घर पर नहीं हैं। शुरू-शुरू में तो चल गया लेकिन बाद में बहुत बेकार लगने लगा। मुझे ऐसी फीलिंग आने लगी कि मैं उनका वकालत के काम में असिस्टेंट न होकर घरेलू नौकर बनकर रह गया हूं।’’

‘‘तब तो आपको बहुत बुरा लगा होगा।’’

‘‘नहीं। उतना बुरा भी नहीं लगा। अगर वो वैसी जिंदगी जीना चाहते थे तो ये उनकी मर्जी थी। उन्होंने तो मुझसे भी नौकरी छोडऩे के लिए नहीं कहा था। मैंने खुद ही काम छोड़ा था।’’

‘‘यानि आपको उनसे कोई गिला-शिकवा नहीं था?’’

‘‘मुझे किस बात का गिला-शिकवा होता? शहर के इतने बड़े प्रतिष्ठित वकील के यहां इतने सालों तक काम करके मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला, समाज में, लोगों के बीच एक पहचान बनी, अच्छी तनख्वाह देते थे, वक्त जरूरत पर और भी पैसे दे देते थे और जब उन्हें अपनी तनख्वाह से लौटाने की कोशिश करता था तो डरा-धमकाकर पैसे वापस लेने से मना कर देते थे। उनके जैसे बॉस तो नसीब वालों को मिलते हैं।’’

‘‘आपकी बातों से पता चल रहा है कि नैनीताल में वे इतने प्रसिद्ध, इतने सम्मानित क्यों थे।’’

‘‘बिल्कुल सही समझे आप। उनका व्यवहार सिर्फ मेरे प्रति वैसा नहीं था। वे सभी के साथ ऐसा ही व्यवहार करते थे। जरूरत पडऩे पर किसी की मदद करने दौडक़र आगे आते थे। अब भी लोग उनके नाम की मिसालें देते हैं।’’

‘‘तो फिर ये सनाया गौतम कहां से टपक पड़ी?’’

महानंद चुप हो गया।

‘‘क्या हुआ?’’-अविनाश ने उसे बोलने के लिए प्रेरित किया।

‘‘सच कहूं तो मुझे भी समझ नहीं आता। साहब बिल्कुल भी ऐसे नहीं थे, जैसा बताया जाता है। ये जरूर...जरूर उसी चुड़ैल का काम रहा होगा।’’

‘‘चुड़ैल? आपको भी लगता है कि आपके भूतपूर्व बॉस की जान इसलिए गई क्योंकि उन पर किसी चुड़ैल का काला साया था?’’

‘‘नहीं...नहीं...। वो वाली चुड़ैल नहीं। मैंने गाली के रूप में कहा है।’’

‘‘ओह। मैं तो डर गया था कि इतने संभ्रांत, पढ़े-लिखे होने के बावजूद आप भी चुड़ैलों, भूत-प्रेतों में विश्वास करते हैं।’’

‘‘वैसे सचमुच वो सनाया गौतम किसी चुड़ैल से कम नहीं रही होगी, जो उसने वकील साहब को ऐसी पट्टी पढ़ा दी थी कि उन्होंने उसके साथ रहने के लिए खुद को पूरे समाज से अलग कर लिया। यहां तक कि अपने परिवार को भी।’’

‘‘लेकिन सबसे हैरानी की बात तो यही है, महानंद साहब"-अविनाश अपनी बात पर जोर देते हुए बोला-"कि इस बात को कोई नोटिस नहीं कर पाया। नोटिस तो दूर की बात उनके किसी करीबी को सनाया गौतम के बारे में पता तक नहीं चल पाया। किसी ने उसे देखा तक नहीं।’’

‘‘इसीलिए तो लोग मानते हैं कि वो चुड़ैल है।’’-पीछे से आवाज सुनाई दी।

अविनाश ने पलटकर देखा, अंदर वाले कमरे को दरवाजे पर महानंद की पत्नी शामली खड़ी थी।

‘‘शामली...।’’-महानंद ने उसे मना करना चाहा लेकिन अविनाश ने बीच में ही टोक दिया।

‘‘एक मिनट!’’-फिर वो शामली से मुखातिब हुआ-‘‘तो भाभी जी आपको भी लगता है कि ये किसी चुड़ैल का काम है?’’

‘‘और नहीं तो क्या?’’-वो बोली-‘‘वो लडक़ी भाई साहब के साथ इतने समय से थी, उसे किसी ने देखा तक नहीं, उनके साथ इतना बुरा कर गई, तो लोग उसे चुड़ैल नहीं तो और क्या कहेंगें?’’

‘‘वकील साहब की गोली मारकर हत्या की गई थी। चुड़ैलें, भूत-प्रेत ऐसा नहीं करते। और न ही जायदाद अपने नाम करवा लेते हैं। या फिर आप भी इनकी तरह उसके लिए गाली के रूप में चुड़ैल शब्द का प्रयोग कर रहीं थीं?’’

‘‘गाली नहीं दे रही। वो थी चुड़ैल। ऐसा भूत-प्रेतों की घटनाओं में ही तो होता है। कोई कहीं कब्रिस्तान वगैरह के पास से गुजर रहा हो, फिर उसे कोई बुरी आत्मा घेर लेती है। फिर तभी छोड़ती है, जब उसकी जान ले लेती है। लेकिन किसी को पता नहीं चलता कि उस पर किसी बुरी आत्मा का साया है। भाई साहब के साथ भी ऐसा ही हुआ। इतने समय तक वो सनाया गौतम उनके साथ रही लेकिन उसे किसी ने नहीं देखा। उससे पहले कोई उसके बारे में कुछ जानता भी नहीं था। फिर भाई साहब की मृत्यु के साथ ही वो हवा की तरह गायब भी हो गई। क्योंकि उसका काम हो चुका था। वो उनकी जान लेने आई थी और जान लेकर चली गई।’’

‘‘भाभी जी, बुरी आत्माएं रिवॉल्वर से गोली मारकर किसी की हत्या नहीं करतीं।’’

‘‘लेकिन करवा सकतीं हैं। बुरी आत्मा किसी को काबू कर ले तो फिर उससे दसवीं मंजिल से छलांग लगवा सकती है, खुद पर गोली चलवा सकती है, ट्रेन के आगे...।’’

‘‘चुप करो, शामली!’’-महानंद ने पत्नी को डांट लगाई, फिर वो विनयपूर्ण स्वर में अविनाश से बोला-‘‘आप भी किसके चक्कर में पड़ रहे हैं। मेरी पत्नी गांव की रहने वाली है, इसलिए थोड़ा ज्यादा ही सुपरस्टिशियस है। आपको यकीन नहीं होगा, उस घटना के बाद से ये कितनी बार हमारे घर का भी शुद्धिकरण करवा चुकी है। ये जो दीवार पर देवी-देवताओं की तस्वीरें आप देख रहे हैं न, पहले इतनी नहंी थीं। सर के साथ हुई घटना के बाद ही इन्होंने घर की सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाई है।’’

‘‘मैंने क्या गलत कहा!’’-शामली नाराज स्वर में बोली-‘‘सभी लोग तो यही कह रहे हैं।’’

‘‘नहीं देवी जी।’’-महानंद ने हाथ जोड़े-‘‘आप बिल्कुल सही कह रहीं हैं। लेकिन गलत आदमी से कह रहीं हैं। ये डिटेक्टिव साहब सर के कातिल को ढूंढने के लिए आए हैं। भूत-प्रेत, आत्मा को बोतल में बंद करने के लिए नहीं। इनकी जगह कोई तांत्रिक आया होता और आप उससे ये सब कहतीं तो ठीक भी होता। मैं ठहरा गरीब हसबैंड, मुझे तो ये सब दिन-रात ही सुनना पड़ता है लेकिन आपकी ये ऊंचे दर्जे की जानकारी डिटेक्टिव साहब के किसी काम की नहीं है। तो आप इन्हें बख्श ही दें तो अच्छा होगा।’’

शामली तुनककर वापस किचन में चली गई।

‘‘बड़ी दिलचस्प हैं, भाभी जी।’’-बरबस ही अविनाश के चेहरे पर मुस्कान आ गई।

‘‘आपको दिलचस्प लग रहीं हैं, यहां ऐसा लगता है, जैसे किसी ने कांटों के सिंहासन पर बिठा दिया हो।’’

अविनाश हंसा-‘‘कम से कम कॉफी के लिए उन्हें मेरी ओर से थैंक्स कह दीजियेगा। कॉफी बहुत शानदार थी।’’

‘‘अगर भूत-प्रेतों की रहस्यमयी दुनिया के बारे में और जानना चाहें तो मैं उन्हें ही बुला देता हूं। सीधे उन्हें ही थैंक्स कह लीजियेगा।’’

‘‘अभी रहने दीजिये, भूत-प्रेतों की रहस्यमयी दुनिया के बारे में जानकारी कभी और सही।’’-अविनाश मुस्कुराते हुए अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ, उसने अपना कार्ड महानंद को देते हुए कहा-‘‘अच्छा, महानंद जी, आपसे-और भाभी जी से भी-मिलकर बहुत खुशी हुई। अगर आपको इस केस से जुड़ी कोई भी महत्त्वपूर्ण जानकारी मिले या याद आए, सनाया गौतम के बारे में कुछ भी बात पता चले, चाहे वो कितनी भी छोटी से छोटी या गैर

महत्त्वपूर्ण लगने वाली क्यों न हो, कृपया मुझे जरूर बताइयेगा। इसमें मेरा मोबाइल नम्बर है।''

महानंद ने कार्ड ले लिया।

''एक चीज और''-चलते-चलते अविनाश ने पूछा-''मुझे लगता है कि सनाया गौतम को वकील साहब ने प्राइवेट सेक्रेट्री के रूप में रखा था।''

''मुझे तो इस बारे में कोई जानकारी नहीं है।''-महानंद हैरानी से बोला।

''उन्होंने अखबार में प्राइवेट सेक्रेट्री का एड भी दिया था। उसी एड को देख कर मुझे ऐसा लगा। लेकिन आपसे बात होने के बाद अब मुझे इस बात को लेकर उलझन हो रही है। जब उन्होंने कोर्ट जाना ही बंद कर दिया था, अपने काम से ही किनारा कर लिया था, आपने भी काम नहीं होने से बोर होकर उनका काम ही छोड़ दिया था, फिर ये प्राइवेट सेक्रेट्री का क्या चक्कर था? उन्होंने प्राइवेट सेक्रेट्री के लिए एड क्यों दिया था, जब उन्होंने अपने बरसों से काम कर रहे पुराने सेक्रेट्री को ही इस तरह छोड़ दिया।''

महानंद हिचकिचाया-''जी, उस एड के बारे में तो मुझे जानकारी नहीं है। क्या आप बता सकते हैं कि वो आपने कब के अखबार में देखा था?''

अविनाश ने उसे तारीख बताई।

''ये तो मेरे काम छोडऩे के बाद की तारीख है।''

''वही तो मेरा सवाल है, महानंद जी। अगर उन्हें सेक्रेट्री की आवश्यकता ही थी तो उन्होंने आपको ही काम छोडक़र क्यों जाने दिया? क्या उन्हें आपके काम से कोई शिकायत थी?''

''अब ये मैं कैसे कह सकता हूं?''-महानंद के स्वर में उलझन थी-''जहां तक मुझे जानकारी है, मेरे काम से तो सर को कभी कोई शिकायत नहीं रही। या रही भी हो तो उन्होंने मुझसे कभी ऐसा कुछ नहीं कहा या मुझ पर जाहिर नहीं होने दिया।''

''फिर?''

''एक वजह हो सकती है।''-महानंद सोचते हुए बोला।

''बताइए।''

''मैंने आपको बताया ही है कि मैंने काम अपनी मर्जी से छोड़ा था। क्योंकि काम था ही नहीं। सर तो पूरे एकाकी जीवन जीने के अभिलाषी हो रहे थे। नए केस लेना तो उन्होंने कई महीनों से बंद कर दिया था।''

"आप बता चुके हैं।"

‘‘सर ने खुद मुझसे काम छोडऩे के लिए कभी नहीं कहा था। न ही कोई ऐसा इशारा किया था कि उन्हें सेक्रेट्री की जरूरत अब नहीं थी। हो सकता है उन्हें सेके्रट्री की जरूरत तब भी हो। लेकिन जब मैंने ही उनसे काम छोडऩे के लिए कहा तो हो सकता है कि उन्होंने ये सोच कर मुझे मना न किया हो कि मैं अब उनके यहां काम नहीं करना चाहता था। या ऐसा ही कुछ और सोचकर उन्होंने मुझे तो काम छोडऩे से मना नहीं किया हो लेकिन उन्हें सेक्रेट्री की जरूरत हो और मेरे काम छोड़ कर जाने के बाद उन्होंने सेक्रेट्री के लिए एड दिया हो।’’

‘‘लेकिन उन्होंने दूसरा सेक्रेट्री रखा था, ये बात भी स्पष्ट रूप से सामने नहीं आई है।’’

‘‘एड दिया था तो सेक्रेट्री मिलने में उन्हें दिक्कत नहीं हुई होगी। बेरोजगारी का जमाना चल रहा है। छोटी-से-छोटी जॉब के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुंच जाते हैं जॉब मिलने की आस में।’’

‘‘उसी से मुझे लग रहा है कि उन्होंने सनाया गौतम को ही सेके्रट्री रखा होगा।’’

‘‘हो सकता है।’’

‘‘अगर किसी और को रखा होता तो उसका कहीं तो नाम आता। कुछ तो जिक्र होता। कुछ तो पता चलता। वकील साहब के आखिरी दिनों में उनसे जुड़े एक और केवल एक ही शख्स का नाम सामने आता है। और वो है सनाया गौतम। जिससे मेरी इस थ्योरी को बल मिलता है कि उन्होंने सनाया गौतम को ही सेक्रेट्री के रूप में हायर किया होगा।’’

‘‘अब आपकी बात सुनकर मुझे भी ऐसा ही लग रहा है।’’

‘‘लेकिन शायद वकील साहब को ही सनाया गौतम की हकीकत का अंदाजा नहीं होगा। शायद वकील साहब की करोड़ों की प्रॉपर्टी देखकर उसका ईमान डोल गया होगा और उसने उनके अकेलेपन का फायदा उठाने का इरादा कर लिया होगा। फिर उसने उन पर अपने रंग-रूप का जादू चला कर उसने उनसे सारी जायदाद अपने नाम करवा ली और बाद में उन्हें भी रास्ते से हटा दिया।’’

‘‘आपकी बात में दम है।’’

‘‘खैर!’’-अविनाश ने गहरी सांस ली-‘‘जब तक ये सब कुछ साबित नहीं हो जाता, तब तक तो ये सब एक थ्योरी ही है। चलता हूं महानंद जी। अपना कीमती समय देने और इतनी अच्छी कॉफी के लिए आपका और भाभी जी का बहुत-बहुत शुक्रिया। हो सकता है केस की जांच के सिलसिले में आगे भी आपको कष्ट दूं।’’

‘‘क्या बात कर रहे हैं? केस की जांच क्या, आप कभी भी आइये। स्वागत है आपका।’’

फिर अविनाश ने महानंद से विदा लेकर दिल्ली रवाना हो गया।

अब उसका इरादा वहां अपने साथी संजय को ड्यूटी पर लगाने का था।

मोहित घर पर अपने फैमिली एलबम में तस्वीरें देख रहा था।

एलबम का हर पन्ना पलटने के साथ ही कई पुरानी यादें उसके दिमाग में आ-जा रहीं थीं।

अचानक एक तस्वीर पर उसकी नजरें जम गईं।

उसमें गिरिराज वर्मा और रजत महानंद एक साथ खड़े थे।

रजत महानंद गिरिरराज वर्मा का प्राइवेट सेक्रेट्री था। उसने लम्बे समय तक गिरिराज वर्मा के साथ काम किया था। बल्कि मोहित को तो पता ही नहीं था कि महानंद का क्या हुआ था।

रजत महानंद एक समय उनके परिवार के सदस्य की तरह था। मोहित और मानसी छोटे थे तो उसे अंकल कहा करते थे।

इस पूरे मामले में महानंद का जिक्र नहीं आना सचमुच मोहित के लिए हैरानी की बात थी।

मोहित को प्राइवेट डिटेक्टिव अविनाश से बातचीत में महानंद के जिक्र की बात भी याद आ गई।

‘‘दीदी।’’-उसने मानसी को आवाज लगाई।

“क्या है?”-मानसी की आवाज सुनाई दी।

“पापा के सेक्रेट्री थे-महानंद अंकल-उनका क्या हुआ?”-मोहित ने पूछा।

मानसी अंदर वाले कमरे से निकल कर आई। उसके साथ अरविंद भी थे।

“महानंद अंकल काम छोडक़र चले गए थे।”-मानसी बोली।

“नहीं।”-अरविंद बोला-“वो छोडक़र नहीं गए थे। अंकल ने उन्हें निकाला था।”

“पापा ने?”-मानसी हैरानी से बोली-“क्यों?”

“पता नहीं। अंकल का किसी बात को लेकर उनसे झगड़ा हो गया था।”

“कैसा झगड़ा?”

“मुझे ठीक से नहीं पता।”-अरविंद बोला-“पिछली बार जब अंकल दिल्ली आए थे, तो बातों ही बातों में महानंद के बारे में बात चल निकली थी। अंकल ने ही बताया था कि वो उन पर बहुत सवाल उठाने लगा था। कहने लगा था कि वो इस तरह की हरकतें क्यों कर रहे हैं?”

“किस तरह की हरकतें?”

“मतलब घर में अकेले रहना। लोगों से दूर रहना। कोई घर आए तो भी उससे न मिलना। बाहर से ही चलता कर देना। अंकल ने कोर्ट जाना भी तो लगभग बंद कर दिया था। इसके अलावा वो अन्य सामाजिक कार्यक्रमों वगैरह में भी नहीं जाते थे।”

“ओह।”

“उस समय जब अंकल ने मुझे महानंद से झगड़ा होने और उसके काम छोडऩे के बारे में बताया था तो मुझे महानंद पर गुस्सा आया था। क्योंकि हम लोगों की जानकारी में वही एक उनका विश्वस्त आदमी था। और उनका ख्याल भी रखता था। ऐसे में ऐसे समय में उसका अंकल का साथ छोडऩा मुझे बिल्कुल पसंद नहीं आया था। लेकिन”-अरविंद हिचकिचाया-“अब सोचता हूं कि शायद उसकी गलती भी नहीं थी।”

मोहित ने प्रश्नसूचक भाव से उसकी ओर देखा।

“आखिर वो कुछ भी था, अंकल के यहां काम ही तो कर रहा था। अंकल का उस तरह से अकेलेपन, सॉलीच्यूड में जाना उसे पसंद नहीं आ रहा होगा। वैसे भी वो कई सालों से अंकल के सेक्रेट्री के रूप में काम कर रहा था। इतने समय तक कोई काम करे तो एक बाँडिंग बन ही जाती है। एक अनकहा दोस्ती का रिश्ता बन ही जाता है। आखिर उसे क्यों

अच्छा लगेगा कि अंकल इस तरह से खुद को दुनिया से पूरी तरह अलग कर लें। सम्भव है, वो उसी दोस्ती के नाते अंकल को समझाने की कोशिश कर रहा हो और अंकल ही उस पर नाराज हो गए हों।''

''सही है।''-मानसी बोली-''हमें अगर ये पता होता कि पापा इतने ज्यादा अकेलेपन में रहने लगे थे तो हम ही पापा को समझाते। उनसे पूछते कि वो ऐसा क्यों कर रहे हैं? हमें तो उन्होंने कुछ पता ही नहीं चलने दिया। एक-दो बार हम उनसे मिलने घर जाने वाले भी थे तो जब उनसे फोन पर बात करते तो वे खुद ही हमसे मिलने दिल्ली आ जाते थे।''

''ऐसा लगता है''-मोहित बोला-''वो सचमुच कुछ छिपाना चाहते थे।''

''मुझे सबसे ज्यादा हैरानी इस बात से होती है''-अरविंद बोला-''कि अंकल का स्वभाव ऐसा बिल्कुल नहीं था कि वो किसी से भी कोई भी बात छिपाते। न ही उनके पास ऐसी कोई छिपाने वाली बात होती थी। और...और सच पूछो तो मुझे पुलिस की इस थ्योरी पर भी बिल्कुल यकीन नहीं है कि वो...वो किसी लडक़ी के चक्कर में फंस गए होंगें।''

''तुम्हें लगता है कि''-मानसी बोली-''कि उस सनाया गौतम ने पापा का मर्डर नहीं किया?''

''मैं ये नहीं कह रहा। मेरे कहने का मतलब ये है कि अंकल उस तरह के आदमी नहीं थे। बिल्कुल नहीं थे। वैसे भी ये बात मुझसे ज्यादा अच्छी तरह से तुम लोग जानते हो। पुलिस कितना भी चीख चीख कर क्यों न कह ले कि उस उम्र में वो बहक गए थे लेकिन फिर भी ये बात मेरे गले से नीचे नहीं उतरती। और अगर ऐसा हुआ भी होगा-जैसा पुलिस कह रही है-तो भी इसमें पूरा हाथ उसी लडक़ी-उस सनाया गौतम का ही होगा। उसी ने जरूर कुछ न कुछ गड़बड़ करके अंकल को अपने जाल में फंसाया होगा।''

''कुछ लोग तो उसे चुड़ैल भी मानते हैं।''-मानसी धीरे से बोली।

''चुड़ैल का नहीं पता लेकिन अगर उसने अंकल पर कोई जादू-टोना करवाया हो तो मुझे हैरानी नहीं होगी।''-अरविंद सपाट स्वर में बोला।

''जादू-टोना?''-मानसी ने हैरानी से अरविंद की ओर देखा-''तुम विश्वास करते हो इन सब चीजों में?''

''उतना नहीं करता। लेकिन थोड़ा-बहुत होता है ये मानता हूं।''

''जीजा जी''-मोहित बोला-''ये भूत-प्रेत, जादू-टोने वाली बात को तो रहने ही दो। उस दिन दीदी ही शुरू हो गईं थीं तो बड़ी मुश्किल से इन्हें चुप कराया था।''

''नहीं।''-अरविंद ने प्रशंसात्मक स्वर में कहा-''मानसी बिल्कुल भी अंधविश्वासी नहीं है।''

मोहित ने सिर को झटका दिया। मानसी सचमुच अंधविश्वासी नहीं थी लेकिन पिछली बार हिल रोड वाले मकान के भुतहा होने पर उसने जिस तरह की बातें कहीं थीं, उससे अब मोहित का विचार बदलने लगा था।

तभी वैशाली ने कमरे में प्रवेश किया।

''भैया।''-वो अरविंद से बोली-''मुझे कुछ जरूरी सामान लेने बाजार जाना है।''

''मोहित के साथ चली जाओ।''-मानसी तपाक से बोली।

वैशाली ने मोहित की ओर देखा।

''हां।''-अरविंद बोला-''मुझे तो भी अभी बहुत काम है। तुम ही वैशाली के साथ चले जाओ।''

''ओके।''-मोहित सोफे पर से उठा और वैशाली के साथ घर से बाहर निकल गया।

बाहर कार में बैठते हुए उसने वैशाली पर नजर डाली। उसका चेहरा खुशी से जगमगा रहा था।

कुछ ही देर में उनकी कार नैनीताल की सडक़ों पर दौड़ रही थी।

''नैनीताल सचमुच बहुत खूबसूरत जगह है।''-वैशाली कार की खिडक़ी से बाहर झांकते हुए बोली।

वैशाली वो दूसरी लडक़ी थी, जिसके मुंह से मोहित वो बात सुन रहा था।

अभी पिछले दिनों ही ऐन वही बात उसने 'लेक सिटी ट्रिब्यून' के ऑफिस में शालिनी के मुंह से सुनी थी, जब वो उसका बयान ले रही थी।

''हां, खूबसूरत तो है।''-मोहित ने स्वीकार किया।

''ये पहाड़, ये वादियां, ये हसीन मौसम...।''

मोहित ने कार चलाते-चलाते हैरानी से वैशाली की ओर देखा।

''क्या हुआ?''-उसे इस तरह अपनी ओर देखते पाकर वैशाली खिलखिलाकर हंस पड़ी। उसकी हंसी भी उसकी आवाज की तरह ही सम्मोहक थी।

''तुम एकदम से कविता करने लगोगी और चाहोगी कि कोई हैरान भी न हो।''

''तुम्हें अच्छी नहीं लगी कविता?''

''नहीं। कविता तो अच्छी थी।''

“फिर?”

“कुछ नहीं।”-मोहित गहरी सांस लेकर बोला।

“बताओ न। तुम मुझसे कोई बात छुपाओगे तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा।”

“लगता है तुमने दृढ़ निश्चय कर ही लिया है।”

“किस बात का?”

“मिस वैशाली से मिसेज मोहित वर्मा बनने का।”

वैशाली ने उसके कंधे पर हल्के से घूंसा मारा।

“ज्यादा रोमांटिक होने की जरूरत नहीं है।”-वो शरारत भरे अंदाज में बोली।

“वाह। कविता खुद कर रही हो और रोमांटिक मैं हो रहा हूं?”

“हां। मैंने देखा है मेरे साथ होते हो तुम तो तुम्हारे चेहरे का रंग ही बदल जाता है।”

“सचमुच गलती हो गई मुझसे।”-मोहित बनावटी अफसोस भरे स्वर में बोला।

“क्या? मेरे साथ नहीं आना था?”

“नहीं। अमेरिका से सिंगल नहीं आना था। एक गोरी मेम पटा ही लेनी चाहिए थी।”

“अच्छा। मैं गोरी नहीं हूं?”

“गोरी तो हो...लेकिन अमेरिका की लड़कियों की बात ही कुछ और होती है।”

“बड़ा एक्सपीरियंस है अमेरिका की लड़कियों का।”

“अरे, तुम्हें मुझे न्यूयॉर्क में देखना चाहिए था। एक बगल में जेनीफर तो दूसरी बगल में शर्ली...बीच में मैं। उन दोनों की कमर में हाथ डालकर जब चलता था तो लगता था खुद ब्रूस वेन आ रहा है।”

वैशाली ने एक ओर-पिछली बार से ज्यादा जोर से-मुक्का उसके कंधे पर जमाया।

“आए बड़े ब्रूस वेन।”-वो गुस्से से बोली।

मोहित हंसा।

फिर थोड़ी देर तक वैशाली कुछ नहीं बोली। वो उसकी ओर से मुंह फेरकर कार की खिडक़ी से बाहर देख रही थी।

“क्या हुआ?”-मोहित ने उसे उकसाया।

‘‘कुछ नहीं।’’-वैशाली नाराज स्वर में बोली।

‘‘अरे, अभी तो अच्छी-खासी बात कर रहीं थीं। एकदम से क्या हो गया?’’

‘‘मुझे नहीं करनी बात किसी प्लेबॉय से।’’

मोहित मुस्कुराया-‘‘अच्छा, ये तो बता दो, जाना कहां है?’’

‘‘मेडिकल स्टोर।’’

‘‘क्यों? क्या हो गया?’’

‘‘मुझे अपने लिए कुछ दवाएं लेनी हैं।’’

‘‘क्या हुआ? तबीयत तो ठीक है?’’

‘‘हां। ठीक ही है।’’-उसके स्वर में उदासी थी-‘‘वही एडिक्शन के कारण कभी-कभी तबीयत खराब लगने लगती है। उसी की दवाई लेनी थी।’’

‘‘ज्यादा बेकार लग रहा हो तो किसी अच्छे डॉक्टर के पास चलें?’’

‘‘नहीं। दवाई से काम चल जाएगा। उसके बिना भी चल जाएगा लेकिन एहतियात के तौर पर दवा साथ रखना चाहती हूं।’’

‘‘दैट्स ए गुड गर्ल। वैसे रात में अगर तबीयत नासाज लगे तो चुपके से मेरे कमरे में आ जाना।’’

‘‘बको मत।’’

‘‘अरे, जब सब सो जाएं तब। किसी को पता नहीं चलेगा।’’

‘‘नहीं आऊंगी तुम्हारे कमरे में।’’-वैशाली की आवाज में फिर शरारत आ गई-‘‘तुमने पिछली बार ही वीडियो बना लिया था।’’

‘‘नहीं आईं तो इंटरनेट पर वायरल कर दूंगा।’’-मोहित ने एक मेडिकल स्टोर के सामने कार रोकते हुए कहा।

वैशाली को घर छोडऩे के बाद मोहित शालिनी से मिलने ‘लेक सिटी ट्रब्यून’ की ओर जा ही रहा था कि रास्ते में अचानक पीछे से आ रही एक कार ने उसे ओवरटेक किया और उसके सामने आकर उस कार की रफ्तार धीमी होने लगी।

मजबूरन मोहित को भी अपनी कार की रफ्तार कम करनी पड़ी।

एक दूसरी कार मोहित की कार के बगल में भी आ गई। अब मोहित सामने वाली कार के बगल से भी अपनी कार को आगे नहीं निकाल सकता था।

वो सडक़ कदरन सूनी थी और वहां इक्का-दुक्का वाहन ही दिख रहे थे।

बगल वाली कार में से एक गुण्डे जैसा दिखने वाला आदमी हाथ हिलाकर मोहित को कार रोकने का इशारा कर रहा था।

सामने वाली कार की रफ्तार भी बेहद कम हो गई थी। मोहित को कार रोकनी ही पड़ी।

कार रूकते ही वो दोनों कारें भी मोहित की कार को घेरते हुए रूक गईं। उसमें से तीन सूरत से ही गुण्डे-बदमाश जैसे दिखने वाले लोग उतरे और मोहित की कार के पास पहुंचे।

मोहित जानना चाहता था कि उनका इरादा क्या था।

उनमें से एक टकले आदमी ने मोहित की कार की खिडक़ी से अन्दर झांकते हुए कहा- "ओये हीरो, चल बाहर निकल।"

“क्यों?”-मोहित बोला-“कौन हो तुम लोग?”

“ज्यादा होशियारी मत कर। तेरा बुलावा आया है। सीधी तरह चलता है या...।”-उसके हाथों में एक रिवॉल्वर प्रगट हुई।

“ओके।”-मोहित बोला-“मेरे ख्याल से मुझे मालूम है तुम लोग मुझे कहां ले जाना चाहते हो।”

“मालूम है तो फिर देर मत लगा।”

‘‘मेरी कार का क्या होगा?’’

‘‘चाभी कार में छोड़। एक बंदा पीछे-पीछे ले आएगा।’’

मोहित चाभी कार में लगी छोड़ कर जैसे ही कार से उतरा, दो लोगों ने दाएं-बाएं से मजबूती से उसके दोनों हाथों को पकड़ा और उसे बगल वाली कार में बिठा लिया।

ड्राइवर ने तुरंत ही कार स्टार्ट करके दौड़ा दी।

पिछली सीट पर बैठे मोहित के अगल-बगल वही दोनों लोग बैठे थे, जिन्होंने उसे पकडक़र कार में बिठाया था।

फिर उनमें से एक ने मोहित के सिर पर एक बोरा जैसा डाल दिया, जिससे मोहित को आसपास का कुछ भी दिखाई देना बंद हो गया। उन दोनों ने मोहित के दोनों हाथ पीठ की ओर करके उन्हें रस्सी से बांधना शुरू कर दिया। मोहित ने विरोध करने की कोशिश की तो उसे अपनी गर्दन पर ठण्डे लोहे का स्पर्श हुआ।

‘‘ज्यादा होशियारी नही।’’-एक बदमाश खतरनाक स्वर में बोला-‘‘चुपचाप हाथ बंधवा ले।’’

मोहित ने अपने शरीर को ढीला छोड़ दिया। हालांकि हाथों को उसने इस तरह टाइट रखा कि रस्सी बांधे जाने के बाद बदमाशों ने उसे छोड़ा तो हाथों को ढीला करने पर बंधन अपने-आप ही थोड़ा ढीले हो गए।

करीब 20 मिनट तक कार चलती रही। इस दौरान रास्ते में कई बार कार मुड़ी। फिर कार रूकी। मोहित को कार से उतारा गया। वे लोग उसे लेकर चलते रहे। मोहित ने अंदाजा लगाया कि उसे किसी मकान के अंदर ले जाया जा रहा था।

फिर उसे एक कुर्सी पर बिठा दिया गया।

‘‘इसके हाथ खोल दो।’’-एक भारी आवाज सुनाई दी।

किसी ने उसके बंधन खोल दिए।

फिर किसी ने एक झटके से उसके सिर पर पड़ा कपड़ा हटा दिया।

मोहित ने आंखें मिचमिचाकर सामने देखा।

उसके सामने एक हट्टा-कट्टा राक्षस जैसे बदन का आदमी बैठा था।

वो प्रकाश नारंग था।

मोहित प्रकाश नारंग के सामने उपस्थित था।

प्रकाश नारंग 5 फीट 8 इंच कद का इंसान था लेकिन उसकी हाइट की कसर उसकी चौड़ाई में निकलती साफ दिख रही थी। ऊपर की ओर छोडक़र बाकी चारों दिशाओं में उसका भरपूर विस्तार हुआ था, जिससे उसे देख कर किसी रोड रोलर की याद आती थी। उसके चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूंछे भी थीं, जो उसकी मुखाकृति को और भी भयानक बनातीं थीं। ताकत के मामले में लोग उसकी तुलना हाथी से करते थे। वो दोनों हाथों से दबाकर आराम से नारियल फोड़ देता था और स्थानीय अण्डरवर्ल्ड में ये आम चर्चा थी कि उसने उस तरह से कई सिरों को भी तोड़ा था।

प्रकाश नारंग मुम्बई अण्डरवर्ल्ड के बड़े गैंग का प्रमुख सदस्य रह चुका था लेकिन उसका मन पहाड़ों में बहुत रमता था। ये भी एक कारण था कि उसने पहले-बहुत पहले ही-अपने गैंग के आकाओं की मान-मनौव्वल कर उसे नैनीताल भेजने पर राजी कर लिया था। यहां वो कई सालों से गैंग का काम-धंधा संभाल रहा था, जो कि शराब के अवैध व्यापार से लेकर सब तरह के दो नम्बर के काम थे। लेकिन लम्बा अरसा मुम्बई में गुजारा होने के कारण उसकी बातचीत में मुम्बईया लहजे की काफी झलक देखने को मिलती थी। ‘क्या’, ‘इधरीच’, ‘भीडू’ जैसे शब्द उसके मुंह से आम तौर पर निकल ही जाते थे।

मोहित ऐसे शख्स के सामने खड़ा था।

वो एक बड़े गोदाम जैसी जगह थी, जिसमें इधर-उधर बड़े-बड़े टायर, ड्रम्स, बोरे आदि कई तरह की चीजें रखी हुईं थीं। वो गोदाम इतना बड़ा लग रहा था कि एक छोटा-मोटा हवाई जहाज भी उसमें आराम से आ जाता।

‘‘हां तो बेटा’’-प्रकाश नारंग ने कहा, उसका स्वर आश्चर्यजनक रूप से विनम्र था-‘‘तो तू है मोहित वर्मा। मरहूम गिरिराज वर्मा का वारिस। एक मिनट...’’-फिर उसने रूक कर अपने आस-पास खड़े अपने संगी-साथियों की ओर निगाह दौड़ाई-‘‘वारिस नहीं। नक्को। वारिस तो सनाया गौतम है। तेरे हाथों में तो उसने एक मूंगफली तक नहीं छोड़ी।’’

नारंग के उस कमेंट पर उपस्थित सभी लोग जोर से हंस पड़े।

मोहित शांत भाव से उसे देखता रहा।

‘‘बता भई।’’-फिर थोड़ी देर में जब हंसी थमी तो नारंग ने मोहित से पूछा-‘‘क्या दुश्मनी है तेरे को मेरे से? क्यों बदनाम करता घूम रहा है मेरे को?’’

‘‘मैं तुम्हें बदनाम करता नहीं घूम रहा।’’-मोहित बोला।

‘‘आप।’’-उसकी आंखों में हिंसक चमक दिखाई दी-‘‘आप करके बात करने का। क्या?’’

‘‘मैं आपको बदनाम करता नहीं घूम रहा।’’-मोहित धैर्यपूर्वक बोला।

‘‘तो ये...ये क्या है’’-उसने हाथ में थमे अखबार को मोहित के आगे लहराते हुए उस पर अपनी मोटी उंगली ठकठकाई-‘‘ये प्रकाश नारंग तेरे बाप का दुश्मन है, पुरानी रंजिश है, धमकी दी थी, क्या है ये सब?’’

वहां एकदम सन्नाटा छा गया।

नारंग की आवाज अब भी तेज नहीं हुई थी लेकिन उसके अगल-बगल खड़े उसके संगी साथी अच्छी तरह जानते थे कि वो एक बड़े तूफान की शुरूआत हो सकती थी। किसी भी क्षण नारंग का पारा चढ़ता तो मोहित की अंतड़ियां जमीन पर बिखरी दिखाई दे सकती थीं।

वो नारंग का पसंदीदा काम था, जो वो अपने आदमियों से करवाने से परहेज करता था।

जान लेना।

‘‘मुझे अपने पिता के कातिल की तलाश है।’’-मोहित बोला-‘‘सबको लगता है कि वो कोई सनाया गौतम है।’’

‘‘और तेरे को क्या लगता है? मैं है तेरे बाप का कातिल?’’

मोहित कुछ क्षण उसे देखता रहा। फिर बोला-‘‘नहीं।’’

‘‘नहीं?’’

‘‘नहीं।’’

नारंग ने अपने चारों ओर खड़े आदमियों पर नजर डाली। फिर जोर से ठहाका लगा कर हंस पड़ा।

उसकी इस प्रतिक्रिया पर उनमें से कुछ साथी चौंके, कुछ नहीं चौंके। जो नहीं चौंके वो उसके सनकीपन को ज्यादा अच्छी तरह समझते थे।

‘‘देखा? देखा? मैं बोलता था न लौंडा समझदार लगता है। मैं अखबार में फोटो देख कर ही समझ गया था। सामने से तो ये और भी ज्यादा इंटेलीजेंट दिखता है। एकदम वो...वो...अरे वो कौन सा फिल्म था साला जिसमें वो हीरो कम्प्यूटर के अंदर घुस जाता था...।’’

‘‘मैट्रिक्स।’’-एक साथी बोला।

‘‘हां। मैट्रिक्स। सामने से तो ये एकदम मैट्रिक्स का हीरो का माफिक दिखता है। मेरे को वो हीरो बहुत पसंद। ऐसे हीरो जैसे दिखने वाले लौंडे को कैसे मार देगा मैं? हां भाई, मोहित तू थोड़ा इधर आ"-वो मोहित का हाथ पकड़कर उसे खींच कर अपने और करीब ले आया-"ये

बता, तुझे क्यों लगता है मैं तेरे बाप का कातिल नहीं? डर गया क्या मेरे से?"-आखिरी वाक्य नारंग ने अजीब सा चेहरा बनाते हुए रोने की सी आवाज में कहा था।'

''नहीं।''-मोहित बोला-''अगर इसमें आपका हाथ होता तो आप मुझे यहां इस तरह नहीं बुलाते।''

वो जोर से ठहाका मार कर हंस पड़ा।

''देखा?''-वो फिर अपने साथियों से बोला-''देखा? साला उससे भी ज्यादा समझदार है, जितना मैं सोचा। इसको पता है कि अगर मैं इसके बाप को जहन्नुम रसीद किया होता-सॉरी भाई''-फिर वो मोहित की ओर देख कर बोला-''जन्नतनशीन किया होता तो इसको इस तरह यहां नहीं बुलवाता। सीधा खल्लास करवा दिया होता। अब तक तो इसकी लाश में कीड़े भी पड़ चुके होते।''

वहां खड़े उसके साथियों ने भी हंसी में उसका साथ दिया।

मोहित शांत रहा।

''तो मैं तेरी तरफ से बेफिक्र हो जाऊं?''-फिर हंसी थमने के बाद नारंग मोहित के चेहरे के सामने हाथ हिला कर बोला-''निश्चिंत हो जाऊं कि तू मेरे लिए कोई नया रगड़ा खड़ा नहीं करेगा? रायता नहीं फैलाएगा? और मेरा नाम उछालते हुए नहीं घूमेगा यहां-वहां?''

मोहित ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

''मुंडी मत हिला भाई। मुंडी मत हिला। जबान हिला। मुंडी हिलती देख कर मेरा मन मुंडी तोडऩे का करने लगता है।''

''हां।''

''ये हुई न बात। चल इसी बात पर मैं तेरे को सफाई देता है। तू भी क्या याद करेगा। तुझे प्रकाश नारंग ने अपनी सफाई दी। वरना नारंग किसी को सफाई नहीं देता। तो सुन। अपुन ने तेरे बाप को नहीं मारा। नहीं मारा मतलब नहीं मारा। चार साल पहले तेरे बाप के साथ जो लफड़ा हुआ था न, जिसको लेकर तू अखबारों के सामने टर्राया, वो झगड़ा तो अपुन कब का भूल गया। भूलेगा नहीं तो और क्या करेंगा? तब से लेकर अब तक कितने लोगों को मारा मैं, मेरे को खुद को याद नहीं। ये छोटे-मोटे खालीपीली झगड़े याद करके रखे, ऐसा पॉवर अपुन के दीमाग में हैईच नहीं। होता तो साला अपुन कम्प्यूटर पिरोगरामर होता, साला कहीं सूट पहनकर कोई कंपनी चला रहा होता, ब्रिज बना रहा होता लेकिन नहीं। अपुन के पास उतना दिमागीच नहीं। अपुन बस एक चीज ही सीखा। केवल एक ही चीज। और तुझ पर सचमुच ऊपरवाले का मेहरबानी है कि उसका डेमो आज तुझे देखने को नहीं

मिल रहा है। क्योंकि तू उस...उस हीरो जैसा दिखता है। चल जा अब। स्वस्थ्य रह, मस्त रह।"-फिर अचानक नारंग अपनी ही बात पर चौंक गया-"अरे, स्वस्थ्य से याद आया, तू तो अमेरिका से आया है न?''-फिर उसने इधर-उधर खड़े अपने साथियों पर नजर मारी-''अबे सालों, चैक-वैक करके लाए थे न इसे? कोरोना-वोरोना तो नहीं है न इसे?''

''वो...वो...बॉस...।''-उसका एक साथ हकलाता-सा बोला।

''चुप।''-नारंग गरजा, फिर वो मोहित से मुखातिब हुआ-''अपुन के लिए कोरोना तो नहीं लाया न अमेरिका से?''

''मेरी एयरपोर्ट पर चैकिंग हो चुकी है।''-मोहित के मुंह से निकला।

''बस। फिर ठीक है। पता चले साला अकेला आदमी हम सबको ठिकाने लगा कर चलता बना। साउथ फिल्मों का माफिक। हा हा हा। बड़े-बड़ों को ठिकाने लगाने वाले नारंग को कोरोना ने ठिकाने लगा दिया। बहुत सावधानी बरतना पड़ रहा है। दिन में दस बार हाथ धोता है मैं, पता है? ये''-नारंग ने जेब से निकाल कर एक मास्क मोहित की आंखों के आगे लहराया-''ये मास्क भी रखता है साथ में 24 घंटा।''

मोहित कुछ नहीं बोला।

''चल। अब फूट यहां से। शो खतम।''-उसने चुटकी बजाई, और अपने साथियों को इशारा किया।

मोहित खुद भी उठने लगा लेकिन उसके बाद भी दो गुण्डों ने उसकी दोनों बाहों को मजबूती से पकड लिया। वे लोग मोहित को दरवाजे तक ले गए।

''और सुन।''-अचानक पीछे से नारंग का स्वर कोड़े की फटकार की तरह सुनाई दिया।

मोहित और उसे ले जा रहे आदमियों के कदम दरवाजे पर ही थम गए। मोहित ने घूमकर नारंग की ओर देखा।

''इस बार तेरी किस्मत तेरे साथ थी। लेकिन अगली बार प्रकाश नारंग के बारे में आय-बांय बकने से पहले अपने लिए कफन पहले से ही खरीद कर रख लियो। वैसे हो सकता है उसकी जरूरत न पड़े। नारंग से पंगा लेने वालों को कई बार कफन भी नसीब नहीं होता।''

फिर उसके इशारे पर उसके आदमी मोहित को वहां से बाहर ले गए।

नारंग के आदमी मोहित को धकियाते हुए बाहर दूर तक ले आए। वो एक छोटा सा मैदान जैसा था, जहां थोड़ी दूर पर मोहित की कार खड़ी दिख रही थी।

वहां ले जाकर दोनों ने मोहित को आगे धकेलते हुए उसके हाथों को छोड़ दिया। लडख़ड़ाते हुए मोहित ने खुद को संभाला वरना वो जमीन पर गिर पड़ता।

''बॉस सही बोला। तेरी किस्मत अच्छी है।''-मोहित को लाने वाले दोनों बदमाशों में से एक-जिसकी लम्बी दाढ़ी-मूंछें थीं-बोला-''आज बॉस का मूड एकदम फ्रैश था। अगर बॉस अपने रूटीन मूड में होता न तो तेरे चिथड़े साफ कर रहे होते हम लोग गोडाउन के फर्श से।''

मोहित ने जवाब नहीं दिया। उसने बस शांत भाव से उसकी ओर देखा।

फिर उसी लम्बी दाढ़ी मूंछ वाले बदमाश ने आगे बढक़र मोहित की शर्ट की जेब में एक दो सौ रूपए का नोट ठंूस दिया।

''ये क्या है?''-मोहित बोला।

''घर तक जाने का किराया।''-उस बदमाश ने अपने होंठ फैला कर मोहित को गुटखे से सड़ रहे दांतों के दर्शन कराए।

''किराया?''-मोहित अपने-आप में बड़बड़ाया। फिर घूम कर अपनी कार की ओर बढ़ गया।

अभी वो कार से थोड़ा दूर ही था कि अचानक जोरदार धमाका हुआ। कार आग की लपटों में घिर गई। मोहित के दोनों हाथ स्वत: ही चेहरे के सामने आ गए और वो तेजी से पीछे हटते हुए लडख़ड़ाकर जमीन पर गिर गया।

फिर उसने अपने चेहरे के सामने से हाथों को हटा कर कार की ओर देखा। कार धूं-धूं करके जल रही थी।

आग की तपिश उसे अपने चेहरे पर महसूस हो रही थी।

पीछे से उन बदमाशों के हंसने की आवाज आ रही थी।

"टैक्सी करके घर जाना"-पीछे से उसी लम्बी दाढ़ी-मूंछ वाले गुण्डे की आवाज सुनाई दी-"और शुक्र मनाना कि कार में तू नहीं था।"

मोहित ने पलटकर उन दोनों की ओर देखा। दोनों बदमाश खड़े-खड़े मोहित की ओर देखते हुए कुछ देर तक हंसते रहे, फिर घूमकर गैराज के गेट की ओर बढ़ गए।

मोहित भी अपने कपड़े झाड़ते हुए उठा। कुछ देर तक उन बदमाशों को जाते देखता रहा, फिर उसने पलटकर आग की लपटों में घिरी हुई कार की ओर देखा।

कुछ देर तक वो जलती हुई कार को देखता रहा, फिर उसने कोट की जेब से महंगी अमेरिकन ब्रांड की मार्लबोरो सिगरेट का पैकेट निकाला।

उसने पैकेट खोला। उसमें से एक सिगरेट निकाली। वो आगे बढ़कर जलती हुई कार के समीप पहुंचा और सिगरेट को कार से उठ रही लपटों से ही सुलगाया।

उसने सिगरेट के एक-दो गहरे कश लिए।

फिर सिगरेट को जमीन पर पटक कर उसे जूते से कुचला और थोड़ी दूरी पर दिख रही सडक़ की ओर बढ़ गया।

उसके चेहरे पर किसी तरह के गुस्से या अपमान के भाव नहीं थे। वो बिल्कुल शांत लग रहा था।

जैसे कुछ हुआ ही न हो।

उसके पीछे कार धूं-धूं करके जल रही थी।

शाम को मोहित को शालिनी का फोन आया।

‘‘हैलो।’’-मोहित ने फोन पर कहा।

‘‘गुड ईवनिंग मोहित जी। शाम में आप खाली हैं क्या?’’

‘‘बिल्कुल। बताइये क्या करना है?’’

‘‘क्या आप मेरे ऑफिस आ सकेंगें?’’

‘‘ठीक है। मैं 6 बजे पहुंच जाता हूं।’’

‘‘नहीं। 6 बजे नहीं। उस वक्त मैं ऑफिस पर नहीं मिलूंगीं। आप सात बजे आइयेगा। दरअसल मैं एक बार वकील साहब के पुराने ऑफिस को अच्छी तरह देखना चाहती हूं।’’

‘‘पुराना ऑफिस?’’

‘‘जहां वो बैठा करते थे। पुलिस जांच के दौरान मुझे एक बार वहां जाने का मौका मिला था लेकिन तब ठीक से नहीं देख पाई थी। आप साथ होंगें तो और बारीकी से चैक कर सकेंगें।’’

‘‘ओके। मैं ऑफिस की चाभियां लेता आऊंगा।’’

‘‘थैंक्स।’’-उसने कॉल डिस्कनेक्ट कर दी।

शाम में मोहित कार से 'लेक सिटी ट्रब्यून' के ऑफिस पहुंचा, जहां शालिनी बिल्डिंग के बाहर ही उसे इंतजार करती मिली।

मोहित ने दूसरी कार का इंतजाम कर लिया था। नारंग के साथ हुए एक्सपीरियेंस के बारे में उसने घर में किसी को कुछ नहीं बताया था।

उसका इरादा नारंग से बाद में हिसाब-किताब बराबर करने का था।

शालिनी को लेकर वो माल रोड स्थित अपने पिता के ऑफिस में पहुंचा।

इस दौरान रस्ते में फिर उसे वही वैन कर के पीछे आती हुई दिखी, जिसमें उस बॉडी बिल्डर जैसे लगने वाले आदमी को मोहित ने एक बार पहले भी अपना पीछा करते हुए महसूस किया था।

लेकिन कुछ ही दूर जाने के बाद उस आदमी ने अपनी वैन दूसरी और मोड़ ली।

पता नहीं कौन था वो और क्या चाहता था?

ऑफिस पहुंचते-पहुंचते करीब साढ़े सात बज चुके थे। अंधेरा भी छा गया था। ऑफिस मॉल रोड के जिस हिस्से में था, वो उस समय काफी सुनसान लग रहा था।

मोहित ने कार ऑफिस के बाहर साइड में लगाकर रोक दी, फिर वे दोनों कार से उतरे।

''ऑफिस की जांच तो पुलिस ने भी की है।''-मोहित बोला-''आपको लगता है कि यहां से कुछ मिल पाएगा?''

''कोशिश करके तो देखना ही होगा।''-शालिनी बोली-''क्या पता हमारे हाथ कुछ ऐसा लग जाए, जो पुलिस की नजरों से बच गया हो। या पुलिस को उतना महत्त्वपूर्ण नहीं लगा हो।''

''ओके।''-मोहित ने ऑफिस का ताला खोलते हुए कहा।

ऑफिस काफी बड़ा था। गिरिराज वर्मा वहां के सबसे बड़े वकीलों में से एक थे। एक समय उस ऑफिस में लोगों का आना-जाना लगा ही रहता था। लेकिन करीब साल भर से वहां कोई नहीं आया था।

सिवाय पुलिस के।

मर्डर केस की जांच के सिलसिले में आई पुलिस के बाद आज मोहित और मानसी के ही कदम उस ऑफिस में पड़े थे।

मोहित और शालिनी ने ऑफिस को खंगालना शुरू कर दिया।

करीब दो घंटे की मेहनत के बाद दोनों थके से लगने लगे थे। यहां-वहां फाइलें बिखरी हुईं थीं। दोनों को अब तक कोई ऐसी चीज नहीं मिली थी, जो सनाया गौतम से जुड़ी लगती हो। या किसी और तरीके से केस की इन्वेस्टिगेशन में मददगार साबित होने वाली लगती

हो। मोहित एक ओर रखी एक चेयर पर ढेर हो गया। उसकी नजरें एक ओर रखी टेबल और उसके पीछे रखी उस चेयर पर जम गईं, जिस पर कभी उसके पिता बैठा करते थे।

वो कुछ क्षण तक उसे ही देखता रह गया।

शालिनी एक ओर एक फाइल खंगालने में जुटी हुई थी।

वो फाइल के पन्ने पलट ही रही थी कि अचानक उसमें से एक विजिटिंग कार्ड जैसा कुछ निकलकर नीचे गिरा।

शालिनी ने नीचे झुककर उसे उठाया। उस कार्ड पर लिखा था-

डॉ. अनिरूद्ध मेहता

साइकियाट्रिस्ट

वी केयर्स मेंटल हेल्थ क्लीनिक

यमुना विहार, दिल्ली

शालिनी ने उसे उलट-पलट कर देखा, उस पर और कुछ भी नहीं लिखा था।

उसने वो कार्ड मोहित को दिखाया।

‘‘इसके बारे में कुछ जानते हो?’’-शालिनी ने पूछा।

‘‘नहीं।’’-मोहित ने इनकार में सिर हिलाया-‘‘मुझे नहीं पता पापा का वास्ता कभी किसी मेंटल हेल्थ क्लीनिक या साइकियाट्रिस्ट वगैरह से पड़ा हो।’’

‘‘और ये डॉक्टर अनिरूद्ध मेहता...इनके बारे में कुछ पता है?’’

‘‘नहीं।’’

‘‘मैं इस कार्ड को रख लूं?’’

‘‘बिल्कुल। वैसे हो सकता है पापा के कोई परिचित दे गए हों। आखिर मैं भी उनके सभी परिचितों को तो नहीं जानता न।’’

‘‘वो तो ठीक है लेकिन पहले ही हमारे पास कोई जानकारी नहीं है। हर चीज को ठोके-परखे, चैक बिना यहां गुजारा नहीं होने वाला।’’

‘‘ये भी सही है।’’-मोहित उठ खड़ा हुआ। फिर वो भी शालिनी के साथ ऑफिस की जांच पड़ताल की मुहिम में जुट गए।

‘‘और जरा इस पर भी नजर डालो।’’-शालिनी ने एक और फाइल मोहित की ओर बढ़ाई।

‘‘इसमें क्या है?’’-मोहित वो फाइल उससे लेता हुआ बोला।

‘‘कुछ अखबार की कटिंग्स हैं। ये फाइल बाकी फाइल्स से एकदम अलग-थलग शेल्फ में रखी थी। जैसे कुछ खास हो।’’

मोहित ने फाइल खोलकर अंदर नजर मारी। उसमें सचमुच अखबार की कटिंग्स भरी हुईं थीं। लेकिन कटिंग्स काफी पुरानी थीं।

मोहित ने उनमें से एक कटिंग उठाकर उसे पढ़ा।

हैडिंग थी-

गांव के दबंगों द्वारा पति-पत्नी की नृशंस हत्या

निर्मम हत्याकाण्ड की वारदात से दहला अमृतपुर

मोहित एक ही सांस में नीचे पूरी खबर पढ़ गया। वो बिहार के रक्सौल के किसी अमृतपुर गांव में हुई किसी दोहरे हत्याकाण्ड की खबर थी। मोहित ने बाकी अखबारों की कटिंग्स पर भी नजर डाली। वो भी उसी खबर की लेकिन दूसरे अखबारों की कटिंग्स थीं।

कटिंग्स कई थीं। मोहित को पहले तो लगा कि सारी कटिंग्स एक ही खबर की थीं लेकिन ऊपर की कटिंग्स पलटने के बाद नीचे उसे उसी घटना से रिलेटेड लेकिन कुछ दूसरी कटिंग्स भी मिलीं।

मोहित ने उन कटिंग्स की खबरों को भी पढ़ा।

उनके अनुसार उस हत्याकाण्ड में जिस महिला की मृत्यु हुई थी, उसके भाई ने अपनी बहन व जीजा के हत्यारों से बदला लेते हुए उन्हें मौत के घाट उतार दिया था।

फाइल में उन कटिंग्स के सिवा कुछ नहीं था।

‘‘किसी पुराने केस की फाइल लगती है।’’-मोहित फाइल शालिनी को लौटाते हुए बोला-‘‘पापा ने तो ऐसे कई केसों पर काम किया होगा।’’

‘‘ओके।’’-शालिनी ने उससे फाइल ले ली लेकिन शेल्फ में वापस रखने से पहले उसने उस फाइल को खोला और उन कटिंग्स को गौर से पढ़ा। उसके बाद उसने अपने मोबाइल से कटिंग्स की तस्वीरें भी लीं।

‘‘कुछ खास है क्या इसमें?’’-मोहित ने उससे पूछा।

‘‘पता नहीं।’’-वो अनिश्चित भाव से बोली-‘‘फैक्ट चैक करने के बाद ही कुछ पता चल सकेगा।’’

मोहित ने सिर हिलाया। दोनों फिर ऑफिस को खंगालने में जुट गए।

एक घंटे की और मेहनत में भी उन्हें कोई अहम सुराग नही मिल पाया। हालांकि शालिनी ने ऐसे ही जांच-पड़ताल करने के उद्देश्य से कुछ चीजें जरूर नोट कीं।

‘‘अब चला जाए?’’-मोहित बोला।

‘‘ओके।’’-शालिनी बोली।

दोनों ऑफिस से बाहर निकले, मोहित ने ऑफिस को पूर्ववत् लॉक किया, फिर दोनों कार में बैठकर वहां से रवाना हो गए। रास्ते में मोहित ने शालिनी को 'लेक सिटी ट्रब्यून' के ऑफिस छोड़ा, फिर वहां से अपने घर की ओर रवाना हो गया।

संजय गिरिराज वर्मा के घर के पिछले हिस्से में बेहद उबाऊ ड्यूटी कर रहा था, जिस पर उसे अविनाश ने लगाया था।

रात हो चुकी थी और अब संजय के लिए वक्त बिताना कठिन होता जा रहा था।

वो उस घर के पिछले हिस्से से काफी दूर एक कार की पिछली सीट में अधलेटा-सा घर के पिछले हिस्से पर नजर रख रहा था। पिछले दो दिनों से तो वहां कोई पक्षी भी पर मारने नहीं आया था लेकिन संजय जानता था कि उसके बॉस को विश्वास था कि वहां देर-सवेर मोटा पंछी जरूर फंसेगा।

ये जासूस लोगों का काम भी कितना अजीब होता है-उसने मन ही मन सोचा-*नजर रखो, पीछा करो, पता लगाओ। साला कोई ढंग का काम नहीं कर सकते? इसीलिए मां-बाप*

बच्चों को कलेक्टर, डॉक्टर, इंजीनियर बनाना चाहते हैं, पर जासूस नहीं बनाना चाहते। क्योंकि उन्हें पता होता है कि बच्चा जासूस बनेगा तो उसे इसी तरह कहीं सडऩा पड़ेगा।

जहां पर संजय ने कार खड़ी की थी, उस एंगल से उसे ये फायदा था कि घर के पिछले हिस्से के अलावा उसके बगल से होने वाली संकरी गली का नजारा भी उसे दिख रहा था। इससे अगर कोई सामने के हिस्से से भी उस गली में आकर घर में प्रवेश करने की कोशिश करता तो संजय उसे देख सकता था।

अचानक संजय को घर की खिडक़ी के पास साया-सा लहराता दिखाई दिया।

व्हाट द...?

संजय अपनी जगह संभल कर बैठ गया। वो अंधेरे में आंखें फाडक़र देखने की कोशिश करने लगा कि खिडक़ी पर वो क्या था?

थोड़ी देर तक देखते रहने के बाद उसे समझ आया कि वो खिडक़ी पर लगे पर्दे थे, जो कि हवा के साथ इस तरह हिल रहे थे कि वो उन्हें 'कुछ और' समझ बैठा था।

अपने उस ख्याल पर उसे खुद ही हंसी आ गई।

फिर उसके विचारों की धारा दूसरी ओर मुड़ गई।

वहां बहुत से लोग सनाया गौतम को चुड़ैल समझते थे।

समझते थे क्या अभी भी समझते हैं।

अगर सचमुच चुड़ैल हुई तो...?

उसने आसपास निगाह डाली। घर के पीछे का वो हिस्सा बिल्कुल सुनसान था और दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आ रहा था। किसी कमजोर दिल वाले आदमी के लिए तो वहां पांच मिनट अकेले गुजारना भी मुश्किल था। संजय तो पिछले कई घंटों से वहां मुस्तैदी से जमा हुआ था। रात के सन्नाटे के अलावा भूत-प्रे्रत के ख्याल उसे रोमांचित कर रहे थे।

उसने कार की खिडक़ी की ओर देखा।

क्या हो अगर अभी एक हाथ इस खिडकी के शीशे पर आकर चिपक जाए?

या फिर सफेद साड़ी पहने कोई औरत कार के सामने से गुजरे।

नहीं-उसने सोचा-*औरत के हाथ में मोमबत्ती भी होनी चाहिए। बिना मोमबत्ती के बात नहीं बनेगी।*

लेकिन तब वो करेगा क्या?

ये देखने के लिए कार से उतरेगा कि वो औरत कौन है? भूत है या नहीं?

या फिर कार में ही बैठा रहेगा?

उसने अपने दिमाग को झटका दिया। खुद को याद दिलाया कि वो उस मकान की निगरानी करने वहां बैठा था। किसी भुतहा फिल्म की स्क्रिप्ट लिखने के लिए नहीं।

कान में ईयरफोन लगाए वो फिलहाल गाने सुनकर टाइम पास कर रहा था।

तभी उस मकान के बगल वाली गली में हरकत होती देख कर संजय अपनी सीट पर सम्भल कर बैठ गया। उसने ईयरफोन कान से निकाल दिए।

एक लम्बा-चौड़ा आदमी उस संकरी गली में चलता दिख रहा था।

वो घर के पिछले हिस्से की ओर से तो आया नहीं था क्योंकि वहां तो संजय उतनी देर से निगरानी कर रहा था।

यानि उसने सामने की ओर से ही उस गली में प्रवेश किया होगा।

इतना डेयरिंग!

हो सकता है हल्का होने आया हो-संजय ने सिर को झटका दिया-*प्राइवेट डिटेक्टिव के साथ काम करते-करते हर चीज में जासूसी घुसेडऩे की अब आदत सी पड़ गई है।*

लेकिन संजय का दूसरा अंदाजा गलत था। उस संकरी गली में खड़े उस रीछ जैसे लम्बे और हट्टे-तगड़े आदमी ने एक नजर इधर-उधर डाली, फिर बला की फुर्ती से कूदकर चहारदीवारी पर चढ़ा और घर के अंदर कूदकर नजरों से ओझल हो गया।

आश्चर्य से संजय का मुंह खुला का खुला रह गया।

उतने लम्बे-चौड़े आदमी से उसे उतनी फुर्ती की उम्मीद नहीं थी।

खुद को अच्छा-खासा जिमनास्ट समझने वाले संजय को भी उस दीवार को फलांग कर अंदर जाने में कम से कम उस आदमी से दुगुना टाइम लगता।

क्या चीज था वो बंदा?

बहरहाल, वो जो भी चीज था, उतनी देर से उस घर पर निगरानी रखने की मेहनत अब सार्थक होती दिख रही थी।

हालांकि उसे स्पष्ट निर्देश थे कि किसी को उस घर में घुसपैठ करते देख कर उसे क्या करना था लेकिन फिर भी उसने तत्काल अपने बॉस अविनाश को मैसेज किया।

बॉस...पंछी आ गया।

ये देख कर उसे राहत मिली कि अविनाश ने तत्काल ही उसका मैसेज देख लिया।

पंछी का पीछा करो।-जवाब आया।

पंछी का पीछा कैसे करूं...मेरे पास पंख तो हैं ही नहीं।-संजय ने मैसेज किया।

तत्काल लाल रंग की गुस्से वाली इमोजी परिलक्षित हुईं।

मुस्कुराते हुए संजय ने मोबाइल जेब में रखा, फिर पैनी निगाहों से गिरिराज वर्मा के घर की ओर देखने लगा।

उसे ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। मुश्किल से 20 मिनट बाद ही वो रीछ जैसा विशालकाय लगने वाला आदमी वापस उसी तरह कूदकर घर से बाहर निकला लेकिन इस बार वो घर के आगे के हिस्से की ओर न जाकर पिछले हिस्से की ओर आ रहा था।

इस बार भी वो जितनी फुर्ती के साथ कूदकर बाहर निकला था, उससे स्पष्ट हो गया था कि पिछली बार उसने जो आश्चर्यजनक फुर्ती वाली छलांग मारी थी, वो कोई वन टाइम इवेंट या संयोग नहीं था।

वो शख्स सचमुच में खिलाड़ी था।

उसके संकरी गली पार करके बाहर निकलने के बाद संजय कार की पिछली सीट में छिप गया। हालांकि उसकी कार दूर खड़ी थी लेकिन फिर भी वो किसी तरह का जोखिम नहीं लेना चाहता था।

कुछ ही देर में वो शख्स घर के पिछले हिस्से से निकलकर रोड पर जा रहा था। संजय ने भी कार स्टार्ट कर ली थी और काफी दूर रहकर वो उसका पीछा कर रहा था।

साले के पास कोई गाड़ी नहीं है क्या?-मन ही मन संजय झुंझलाया। इस तरह पैदल चलते आदमी का कार से पीछा करना बहुत मुश्किल होता है। कितनी भी दूरी से सही, आदमी को कार दिख ही जाती है। कार से पैदल आदमी का पीछा करना बिना उसकी नजर में आए बेहद मुश्किल होता है।

और वही हुआ, जिसका डर था।

थोड़ी दूर तक लापरवाही से चलने के बाद वो शख्स अचानक तेजी से सडक़ के बगल में बने मकानों के बीच कहीं जाकर गुम हो गया।

उसकी नजर में आने से बचने के लिए संजय ने कार काफी दूर रखी थी। उसके इस तरह नजरों से ओझल होने पर संजय बुरी तरह हड़बड़ा गया। उसने तत्काल एक्सीलरेटर पर पांव रखा और वहां पहुंचा, जहां से वो शख्स गायब हुआ था।

वहां दो मकानों के बीच एक पतला सा रास्ता नजर आ रहा था लेकिन वहां कोई नहीं था।

कमीना जरूरत से ज्यादा ही फुर्तीला है।-संजय ने उसे मन ही मन कोसा।

संजय उसकी तलाश में आसपास की गलियों की खाक छान सकता था लेकिन उसे इस बात में संदेह था कि वो उस चीते जैसी फुर्ती वाले शख्स को दोबारा ढूंढ सकता था।

उम्मीद के खिलाफ उसने कार आसपास की गलियों, सडक़ों पर दौड़ाते हुए उस शख्स की तलाश करने की कोशिश भी की लेकिन उसका नतीजा वही निकला, जो उसने सोचा था।

वो शख्स उसे कहीं नहीं दिखा।

फिर संजय ने अपनी असफलता की सूचना बॉस को देने मोबाइल संभाला।

वो निकल भागा बॉस।-उसने मैसेज भेजा।

संजय जवाबी मैसेज में झाड़ खाने की प्रतीक्षा कर रहा था।

या हो सकता है डांट पिलाने के लिए बॉस कॉल ही कर देता। आखिर कर्मचारी को डांट लगाना बॉस लोगों को पसंदीदा काम होता है।

अविनाश का मैसेज आया-

डोंट वरी। मुझे पता है वो कहां जा रहा है।

ऑफिस पहुंचकर शालिनी ने सबसे पहला काम वी केयर्स मेंटल क्लीनिक में फोन लगाने का किया।

‘‘हैलो। वी केयर्स मेंटल क्लीनिक।’’-कॉल लगते ही दूसरी ओर से रिसेप्शनिस्ट का मधुर स्वर सुनाई दिया।

‘‘क्या मेरी डॉ. अनिरूद्ध मेहता से बात हो सकती है?’’-शालिनी बोली।

‘‘सॉरी मैडम, डॉक्टर साहब तो अभी थोड़ी देर पहले ही गए हैं।’’

‘‘ओह।’’-शालिनी को निराशा हुई।

‘‘आप मुझे बता दीजिए आपको क्या काम है। मैं डॉक्टर साहब को इन्फॉर्म कर दूंगी।’’

शालिनी का दिमाग तेजी से दौड़ रहा था। हो सकता है वो यूं ही अंधेरे में तीर मार रही हो। गिरिराज वर्मा कभी यूं ही उस डॉक्टर से मिले हों। उनकी उस डॉक्टर से ऐसे ही फॉर्मल जान-पहचान हो। या हो सकता है वो उससे किसी केस के सिलसिले में ही मिले हों।

‘‘एक्चुअली’’-फिर वो मीठे स्वर में फोन पर बोली-‘‘आप भी मेरा काम कर सकती हैं।’’

‘‘मैं आपकी मदद किस तरह कर सकती हूं, मैडम?’’-उधर से पूछा गया।

‘‘मुझे गिरिराज वर्मा के बारे में जानकारी चाहिए।’’-शालिनी फोन पर बोली।

‘‘सॉरी मेम, लेकिन कौन गिरिराज वर्मा?’’

‘‘वो शायद आपके यहां पेशेंट थे।’’

‘‘पेशेंट? क्या बीमारी थी उन्हें?’’

आई हैव नो आईडिया-शालिनी ने मन ही मन सोचा।

‘‘वो...मुझे उस बीमारी का नाम याद नहीं रहता।-प्रत्यक्षत: शालिनी बहाना बनाते हुए बोली-"ये मानसिक बीमारियों के नाम बड़े अजीब और लम्बे चौड़े टाइप के होते हैं। मैंने कई बार याद रखने की कोशिश की लेकिन हमेशा दिमाग से उतर जाता है। प्लीज, आप सिर्फ गिरिराज वर्मा करके सर्च करिए। बीमारी का नाम भी आपको उसी में मिल जाएगा।’’

‘‘ओके मैडम में देखती हूं। एक मिनट होल्ड करिये।’’

‘‘थैंक्स।’’-शालिनी फोन पर इंतजार करती रही।

थोड़ी देर में उधर से स्वर सुनाई दिया-‘‘सॉरी मेम, लेकिन हमारे यहां गिरिराज वर्मा नाम का कोई पेशेंट नहीं है।’’

‘‘अरे।’’-शालिनी को हैरानी हुई।

‘‘एनीथिंग ईल्स, मेम?’’

शालिनी ने तेजी से अपना दिमाग दौड़ाया। गिरिराज वर्मा को कोई मानसिक परेशानी नहीं थी तो साइकोलॉजिस्ट से उनका क्या वास्ता था?

अचानक उसके दिमाग में एक ख्याल आया।

‘‘प्लीज, आप एक नाम और सर्च करेंगीं मेरे लिए?’’

‘‘बताइए, मेम।’’

‘‘सनाया। सनाया गौतम।’’

‘‘वेट ए मिनट। वैसे आपको इनके बारे में जानकारी क्यों चाहिए?’’

‘‘वो मैं उनकी रिश्तेदार हूं। उनकी रिकवरी के बारे में जानना है।’’

‘‘ओह। मैं आपको अभी एक मिनट में बताती हूं।’’

कुछ पल फोन पर शांति छाई रही, फिर आवाज सुनाई दी-‘‘यस मेम। सनाया गौतम हमारे यहां से ट्रीटमेंट ले रहीं हैं।’’

‘‘किस चीज का ट्रीटमेंट ले रहीं हैं वो?’’-शालिनी उत्साहित हो उठी।

‘‘सॉरी मैडम, मैं हमारी पेशेंट के बारे में और जानकारी डिस्क्लोज नहीं कर सकती। ये हमारी पॉलिसी के अगेंस्ट है।’’

‘‘ओह।’’-शालिनी के स्वर में निराशा की झलक थी।

‘‘सॉरी, मेम बट पेशेंट की प्राइवेसी और सिक्योरिटी को ध्यान में रखते हुए ये जरूरी है। अगर आपको उनके बारे में और जानकारी चाहिए तो आप यहां आकर मिल सकती हैं।’’

‘‘कोर्इ बात नहीं। थैंक्स फॉर द हेल्प। थैंक यू वेरी मच।’’

शालिनी ने कॉल डिस्कनेक्ट कर दी।

सनाया गौतम का ट्रीटमेंट चल रहा था।

एक साइकोलॉजिस्ट से।

तो क्या सनाया सचमुच एक साइकोपैथ किलर थी?

फिर उसके हाथ कम्प्यूटर के की बोर्ड पर तेजी के साथ चलने लगे।

वो इंटरनेट पर वी केयर्स मेंटल हैल्थ क्लीनिक का एड्रेस सर्च कर रही थी।

कुछ ही देर में क्लीनिक का डिटेल्ड एड्रेस उसकी आंखों के सामने था।

अब क्या करे वो?

इसके बारे में जांच पड़ताल करने दिल्ली जाए?

नहीं।

उसके पास एक बेहतर तरीका था।

शालिनी ने प्राइवेट डिटेक्टिव अविनाश को फोन लगाया।

''हैलो।''-दूसरी ओर से अविनाश की आवाज सुनाई दी।

''हैलो, मिस्टर अविनाश।''-शालिनी बोली-''कैसे हैं?''

''फाइन। आप बताइए।''

''आई एम फाइन टू।''

''गुड। बताइये कैसे फोन किया?''

''मुझे कुछ जानकारी मिली है।''

''किस बारे में?''

''सनाया गौतम के बारे में।''

''दैट्स इंटरेस्टिंग। बताइए, क्या जानकारी मिली है?''

''मैं आपको मेल कर देती हूं।''

''मैं आपको अभी अपना ई मेल आईडी सेन्ड करता हूं।''

''और आप कहां तक पहुंचे?''

''पहुंचा नहीं, पहुंचने वाला हूं।''

''कहां?''

''पहुंचकर बताऊंगा। अभी पहुंचा नहीं हूं न।''

''आपकी बात से तो लग रहा है बहुत पहुंचे हुए हैं आप।''

उधर से अविनाश के हंसने की आवाज आई-''ऐसा नहीं है, शालिनी जी। खातिर जमा रखिए, कोई भी ठोस जानकारी मिलते ही मैं उसे आपसे शेयर करूंगा। वैसे भी उसकी जरूरत आपको अभी नहीं होगी। जब तक इस पूरे मामले पर से पर्दा नहीं उठ जाता, तब तक ये क्लूज आपके लिए उतने महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। क्योंकि आप इनके बारे में अखबार में नहीं छापने वालीं। मुझे यकीन है कि इस केस की मामले की सबसे एक्सक्लूसिव न्यूज आपके पेपर में ही छपेगी क्योंकि इसकी सबसे डिटेल्ड जानकारी आप ही के पास होगी।''

"थैंक्स। और मैं चाहती हूं कि आप दिल्ली में वी केयर्स मेंटल क्लीनिक में भी सनाया गौतम के बारे में दरयाफ्त कर लें। वहां कोई डॉ. अनिरूद्ध मेहता साइकोलॉजिस्ट हैं। मैं आपको क्लीनिक का एड्रेस भेज रही हूं।''

''मेंटल क्लीनिक में सनाया गौतम के बारे में पता करूं?''

''मुझे पता चला है कि सनाया गौतम का उसमें कोई ट्रीटमेंट चल रहा था।''

''मानसिक रोगों के अस्पताल में? क्या बीमारी थी उसे?''

''ये तो मुझे पता नहीं चल पाया। फोन पर क्लीनिक वालों ने पेशेंट की जानकारी डिस्क्लोज करने से मना कर दिया। कहा आपको आकर मिलना पड़ेगा। ये काम आपको ही करना पड़ेगा क्योंकि मैं तो फिलहाल दिल्ली नहीं आ सकती। वैसे मुझसे पूछें तो मुझे लगता है कि सनाया गौतम कोई साइकोपैथ किलर है।''

''मेंटल क्लीनिक में साइकोपैथ का भी इलाज होता है?''

''होता होगा। आखिर है तो वो भी एक तरह का पागलपन ही।''

''ठीक है। मैं पता करता हूं मेंटल क्लीनिक में भी। थैंक्स फॉर आल द इन्फॉर्मेशन, मिस शालिनी।''

''युअर वेलकम।''

कॉल डिस्कनेक्ट हो गई।

शालिनी संतुष्ट थी। अविनाश उसे काफी जहीन किस्म का प्राइवेट डिटेक्टिव लगा था। शालिनी को यकीन था कि इस केस को हल करने में अविनाश की अहम भूमिका होगी। जो जानकारी उसे मिली थी, उसे अविनाश के साथ शेयर करके वो अपनी ही मदद कर रही थी। अगर ये केस हल होता है तो अविनाश और मोहित के माध्यम से पूरे मामले की एक्सक्लूसिव जानकारी उसी के पास होगी।

आज के लिए इतना काफी था। अब वो घर पर जाकर कम से कम आठ घंटे की चैन की नींद लेने वाली थी।

संजय अविनाश के बताए एड्रेस पर पहुंचा।

गिरिराज वर्मा के घर के पास उस रीछ जैसे आदमी ने उसे चकमा दे दिया था लेकिन बाद में राज ने ही उसे एक एड्रेस मैसेज किया था और उस शख्स के वहां होने के बारे में बताया था। राज ने उसे उस मकान की निगरानी करने और किसी तरह हो सके तो अंदर जाकर पड़ताल करने के लिए भी कहा था, जिससे उस शख्स के बारे में और जानकारी मिल सके।

वो शहर के बाहरी हिस्से में बियाबान इलाके में स्थित एक पुराना-सा मकान था। बाहर से घर की हालत देखकर संदेह होता था कि उसमें कोई रहता भी था। मकान चारों ओर से चहारदीवारी से घिरा हुआ था लेकिन चहारदीवारी ज्यादा ऊंची नहीं थी, जिसके चलते संजय के लिए उसे लांघना बाएं हाथ का खेल था।

संजय मकान के पिछले हिस्से में पहुंचा और दीवार फांदकर सावधानीपूर्वक आंगन में कूद गया।

उसकी चौकस नजरें चारों ओर देख रहीं थीं कि कहीं किसी ने उसे कूदते हुए देखा तो नहीं।

संतुष्ट होने के बाद वो बिल्ली की तरह दबे पांव चलते हुए घर के पिछले दरवाजे के पास पहुंचा।

उसने पहले दरवाजे की झिर्री से अंदर झांक कर देखा। अंदर एक खाली गलियारा दिखाई दे रहा था। लाइट नहीं जल रही थी, जिससे गलियारे में थोड़ा अंधेरा था। केवल रोशनदान से ही थोड़ी बहुत रोशनी आ रही थी।

शायद घर में कोई नहीं था।

संजय ने हल्के से दरवाजे को अंदर की ओर ठेल कर देखा। दरवाजा टस से मस न हुआ। यानी दरवाजा अंदर से बंद था।

आते टाइम संजय ने सामने के गेट को भी देख लिया था। वहां ताला लगा था और कोई गाड़ी भी नहीं दिख रही थी। शायद वो अभी घर नहीं आया था।

संजय एक खिडक़ी के पास पास पहुंचा। उसने खिडक़ी को खोलने की कोशिश की। थोड़ी सी मशक्कत के बाद खिडक़ी खुल गई। संजय ने सावधानी से अंदर कमरे में झांककर देखा। अंदर भी कोई लाइट नहीं जल रही थी लेकिन खिडक़ी, रोशनदार से आ रही रोशनी से कमरे में थोड़ा-बहुत प्रकाश था।

खिडक़ी पर ग्रिल नहीं लगी थी, जिसका फायदा उठाते हुए संजय खामोशी के साथ खिडक़ी से अंदर प्रवेश कर गया।

कमरे में आने के बाद उसने बेहद सावधानी से कमरे का निरीक्षण किया। वहां घरों में पाए जाने वाले जरूरत के आम सामान, फर्नीचर आदि के अलावा कुछ भी संदिग्ध किस्म का नहीं दिख रहा था।

एक ओर कमरे का दरवाजा था, जो उसी गलियारे में खुलता था, जो संजय ने पिछले दरवाजे से देखा था।

संजय उस गलियारे में पहुंचा। वो बेहद दबे पांव चलते हुए कम से कम खुद तो कोई आवाज नहीं ही कर रहा था, इसके अलावा उसके कान किसी भी तरह की हल्की सी आवाज भी सुनने के लिए तैयार थे।

गलियारे में बिल्ली की तरह दबे पांव चलते हुए वो दूसरे कमरे में पहुंचा।

उस कमरे में एक पलंग पड़ा था, जिसके नीचे एक बैग रखा हुआ दिख रहा था। पलंग के किनारे एक मेज रखी थी, जिस पर कुछ कागज वगैरह पड़े हुए थे।

संजय मेज के पास पहुंचा। उसने मेज पर पड़े कागजों को उठाकर सावधानी से उनका निरीक्षण किया।

उनमें से एक पटना से लखनऊ का रेलवे टिकट और काठगोदाम से नैनीताल का रेलवे टिकट था। उसने टिकट पर अंकित डेट पर नजर डाली। डेट करीब तीन महीने पुरानी थी।

तीन महीने पुरानी। जब गिरिराज वर्मा की हत्या हुई थी।

तो क्या...।

अचानक संजय को अपने पीछे से एक हिसकारती हुई-सी आवाज सुनाई दी-

‘‘कईसा है?’’

संजय बिजली की फुर्ती से पलटा लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। उसके ठीक पीछे वही रीछ जैसा आदमी खड़ा था। उस लम्बे-चौड़े शख्स को एकदम अपने सिर पर खड़े देखकर संजय बुरी तरह कांप उठा।

उस शख्स ने उसे अगली कोई हरकत करने का मौका नहीं दिया। उसका हाथ बिजली की तेजी से संजय के गले पर कस गया।

संजय उसकी मजबूत पकड़ में कबूतर की तरह फडफ़ड़ा उठा। ऐसी परिस्थिति में बच निकलने के दांव-पेंचों की उसने ट्रेनिंग ली थी लेकिन वास्तविक परिस्थिति और ट्रेनिंग में बहुत अंतर होता है। संजय अपने दोनों हाथों से अपनी गर्दन पर कसे उसके हाथ को बस किसी भी तरह गर्दन पर से हटा देना चाहता था।

लेकिन वो ऐसा नहीं कर सका। अचानक उसे अपनी कनपटी के पास कुछ रेंगता सा महसूस हुआ और अगले ही क्षण उसके दिमाग में पटाखे से फूटने लगे।

फिर उसका दिमाग अंधेरे में डूबता चला गया।

मोहित ने अविनाश भारद्वाज को फोन लगाया।

‘‘हां, मोहित जी।’’-उधर से अविनाश की आवाज सुनाई दी।

‘‘आपने महानंद अंकल से बात की?’’-मोहित ने पूछा।

‘‘हां। क्यों? कोई खास बात?’’

‘‘नहीं। कोई खास तो नहीं। पूछने के लिए फोन किया था कि आपको उनसे कुछ पता चला?’’

‘‘कुछ खास तो नहीं। वो भी सनाया गौतम से उतना ही अनजान थे, जितने आप और मैं। कभी कभी तो सचमुच शालिनी जी की बात सही लगने लगती है। ये सनाया गौतम सचमुच कोई भूत-प्रेत ही है, जो न दिखाई देती है, न मिलती है, न उसका कुछ पता चलता है। हवा की तरह गायब हो गई है।’’

‘‘महानंद अंकल से आपको कुछ पता नहीं चल पाया?’’

‘‘कुछ खास तो नहीं। वैसे आदमी बढिय़ा लगे वो मुझे। बता रहे थे कि आपके पिता की एकांतप्रियता के कारण उन्होंने काम छोड़ दिया था...।’’

‘‘उन्होंने ऐसा कहा?’’-मोहित हैरानी से बोला।

‘‘हां। कोई और वजह थी?’’

‘‘मुझे पता चला है कि पापा ने महानंद अंकल को नौकरी से निकाला था।’’

‘‘अरे।’’-अविनाश की आवाज में हैरानी थी।

‘‘पापा ने तो जीजा जी से यहां तक कहा था कि उनका महानंद अंकल से कोई झगड़ा हो गया था, जिसके चलते पापा ने उन्हें नौकरी से निकाल दिया था।’’

‘‘फिर महानंद ने मुझसे झूठ क्यों बोला?’’-अविनाश की आवाज में उलझन थी।

‘‘आप उनसे कहां मिले थे?’’-मोहित बोला-‘‘मैं भी उनसे मिलना चाहता हूं।’’

‘‘उनके घर पर ही मिला था।’’

‘‘अभी कहां रह रहे हैं वो?’’

अविनाश ने उसे महानंद का अजंता रोड पर स्थित सनशाइन अपार्टमेंट्स वाला पता बताया।

‘‘थैंक्स। मैं मिलूंगा उनसे।’’

‘‘ओके। गुडनाइट।’’

‘‘गुडनाइट।’’

मोहित ने घर में प्रवेश किया तो उसे बाहर वाले कमरे में ही अरविंद बैठा दिखाई दिया। वो एक फाइल में उलझा हुआ था।

‘‘आइये, आइये, साले साहब।’’-अरविंद ने फाइल से नजर उठाकर मोहित की ओर देखा।-‘‘कहां से आ रहे हैं?’’

मोहित अरविंद के पास ही सोफे पर पसर गया।

‘‘बाहर से।’’-वो बोला।

‘‘वो तो मैं भी देख रहा हूं।’’-अरविंद ने फाइल सामने टेबल पर रखते हुए कहा-‘‘कुछ पता चला?’’

‘‘किस बारे में?’’

‘‘और किस बारे में? उसी सनाया गौतम के बारे में।’’

‘‘नहीं। वैसे अब वो नहीं बचेगी।’’

‘‘उसके बारे में कुछ पता चला है क्या?’’-अरविंद उत्सुकता से बोला।

‘‘नहीं। लेकिन दिल्ली के जिस प्राइवेट डिटेक्टिव को आप लोगों ने हायर किया है, वो बहुत तेजतर्रार है। मुझे उम्मीद है वो उसका पता जरूर लगा लेगा।’’

‘‘इतना तेजतर्रार है कि जो काम पुलिस नहीं कर पा रही है, वो कर लेगा?’’

‘‘लगता तो है।’’

अरविंद एक क्षण शांत रहा, फिर बोला-‘‘सनाया गौतम को जब तक फांसी नहीं हो जाती, तब तक मुझे भी चैन नहीं मिलेगा।’’

‘‘फांसी होना तो मुश्किल ही है। औरत होने के कारण कानून उसके साथ नर्मी से ही पेश आएगा। बड़ी हद उम्रकैद ही हो सकती है। पर पहले उसका पता तो चले।’’

अरविन्द ने सिर हिलाया।

‘‘मुझसे तो हर कोई यही सवाल करता है’’-मोहित बोला-‘‘कि मैं उसी समय भारत वापस क्यों नहीं आया, जब घटना हुई थी। लोगों को ऐसा लगता है, जैसे मैं जान-बूझकर विदेश में बना रहा।’’

‘‘हमने ने तुमसे कॉन्टैक्ट करने की काफी कोशिश की थी’’-अरविंद धीमे स्वर में बोला-‘‘लेकिन न्यूयॉर्क की तुम्हारी कम्पनी के ऑफिस से हमेशा यही जवाब दिया गया कि तुम कॉन्फीडेन्शियल काम से चीन गए हो।’’

‘‘थैंक्स।’’-मोहित कृतज्ञ स्वर में बोला।

‘‘किस बात के लिए?’’-अरविंद हैरानी से बोला।

‘‘आपने मेरे पीछे दीदी का ध्यान रखा। उन्हें संभाला। मैं तो यहां था भी नहीं कि उनके आंसूं ही पोंछ पाता।’’

‘‘वो समय बड़ा मुश्किल था।’’-अरविंद ने कहा, उसका स्वर गमगीन हो गया-‘‘हम सभी दुखी थे। और स्तब्ध भी। आखिर...आखिर अंकल जैसे अच्छे इंसान के साथ कोई ऐसा कैसे कर सकता है?’’

मोहित ने कुछ नहीं कहा। उसके होंठ भिंच गए।

‘‘उन्होंने हमेशा सबका भला चाहा। सबके साथ अच्छा ही किया। लोगों की मदद करने उनका हाथ सबसे पहले उठता था। दूसरों की तो क्या, उन्होंने मेरे लिए भी कितना कुछ

किया लेकिन मैं कभी उनके लिए कुछ नहीं कर पाया। उनका कर्ज मैं जिंदगी भर नहीं चुका सकता। कॉलेज में जब मेरे पास फीस भरने के पैसे नहीं थे, तब उन्होंने मेरी फीस भरी, तब जाकर मैं अपनी पढ़ाई जारी रख पाया। वरना मेरा लॉयर बनने का सपना कभी पूरा नहीं हो पाता। उन्होंने हमेशा मुझ पर पिता के समान स्नेह किया। उनके मेरी जिंदगी में आने के बाद मुझे कभी इस बात अहसास नहीं हुआ कि...कि मेरे पिता इस दुनिया में नहीं थे।''

''अपनों पर अहसान नहीं किया जाता''-मोहित धीरे से बोला-''पापा ने आपके लिए जो भी किया, उसे अहसान कहके आप उन्हें दुख पहुंचा रहे हैं।''

कुछ देर दोनों के बीच खामोशी रही।

''मानसी ने मुझे तुम्हारी रिवॉल्वर के बारे में बताया था।''-यकायक अरविंद ने कहा।

''उसके लिए दीदी मुझे पहले ही बहुत खरी-खोटी सुना चुकी हैं।''

''लेकिन मेरे हिस्से की खरी-खोटी बची है।''

''आप भी सुना दीजिये।''

''देखो, मोहित।''-अरविंद ने गम्भीर स्वर में कहा-''मुझे पता है कि जो हुआ, बहुत गलत हुआ। ऐसे में सचमुच उस सनाया गौतम को जिन्दा रहने का कोई हक नहीं है। लेकिन कानून हमें इसकी इजाजत नहीं देता। वही कानून, जिसकी वकालत अंकल अपनी सारी जिंदगी करते रहे। और मैं भी करता हूं। कानून समाज के लिए, हर व्यक्ति के लिए जरूरी है। और वही कानून कहता है कि सनाया गौतम को हम सजा नहीं दे सकते। उसे सजा देने का काम कानून का है। हम ज्यादा से ज्यादा इतना ही कर सकते हैं कि उसका पता लगा कर उसे गिरफ्तार कर जेल भिजवा सकें, जिससे कानून अपना काम कर सके।''

''उसी पर काम कर रहा हूं।''-मोहित बोला-''सनाया गौतम अब ज्यादा समय तक नहीं बच पाएगी।''

''इसका मतलब ये समझूं न कि अब उसका खून करने जैसा कोई वहशी इरादा तुम्हारे दिमाग में नहीं है? मानसी ने मुझे ठोक-ठोक कर समझाया है कि तुम्हारे दिल की बात पता करूं और अगर अब भी तुम्हारे मन में सनाया गौतम को मारने जैसा कोई इरादा है तो तुम्हें अच्छी तरह समझाकर उसे बदल दूं।''

''अच्छा। तो आप मुझे खूनी बनने से रोकने की कोशिश नहीं कर रहे थे। दीदी के आदेश का पालन कर रहे थे।''

''क्या बताऊं भाई। जमाना तो है नौकर बीवी का।''

‘‘आप मुझे पिछले कुछ दिनों से काफी परेशान-परेशान से लगते हैं।’’-यकायक मोहित बोला।

‘‘कुछ खास बात नहीं है।’’-अरविंद बोला-‘‘काम के सिलसिले में आजकल थोड़ा परेशान हूं।’’

‘‘क्या हो गया?’’

‘‘क्या करोगे जानकर? तुम पहले ही परेशान हो। और अपनी परेशानी बताकर तुम्हारी टेंशन बढ़ाने का क्या मतलब?’’

‘‘फिर भी। बताइये तो सही। हो सकता है कि मैं आपकी कुछ मदद कर सकूं।’’

‘‘कर सकते हो लेकिन मुझे अच्छा नहीं लगेगा।’’

‘‘पैसों का मामला है?’’

अरविंद ने सिर हिलाया।

‘‘कितने पैसों का?’’

‘‘बहुत ज्यादा हैं।’’

‘‘आप बताइये तो? मुझे बता भी नहीं सकते?’’

‘‘करीब दस लाख रूपये।’’-अरविंद हिचकिचाते हुए बोले।

‘‘बस?’’

‘‘बस? तुम्हें बस लगता है। मेरा तो दिमाग खराब हुआ पड़ा है। ऐसे समय में ये पैसों की समस्या और गले में ढोल की तरह अटक गई है।’’

‘‘मैं कल ही रकम आपके खाते में ट्रांसफर करता हूं।’’

‘‘नहीं।’’-अरविंद ने प्रतिरोध जताया-‘‘ये गलत है। मैं तुमसे पैसा नहीं लेना चाहता।’’

‘‘क्यों? क्या मुझे जरूरत होती तो आप मना कर देते? या मदद नहीं करते?’’

‘‘ये बात नहीं है मोहित।’’-अरविंद परेशान स्वर में बोला-‘‘मुझे...मुझे अच्छा नहीं लगेगा इस तरह तुमसे पैसे लेते हुए।’’

‘‘अच्छा चलिये उधार समझकर ले लीजिये। बाद में जब आपको पास हों तब लौटा दीजियेगा। अब तो ठीक है?’’

अरविंद के चेहरे पर थोड़ी राहत के भाव आये।

‘‘अब जब तुम पैसों से मेरी मदद कर ही रहे हो’’-फिर वो बोला-‘‘तो मैं तुम्हें ये भी बता देता हूं कि मुझे पैसों की जरूरत क्यों है? दरअसल मैं एक वकीलों की फर्म खोलने की तैयारी में था। उसके लिये मैंने दस लाख रूपये का लोन लिया था। लेकिन वो लोन मैं अब चुका नहीं पा रहा हूं। फर्म वाला प्रोजेक्ट भी बेकार साबित हुआ।’’

‘‘अभी और कोई समस्या तो नहीं है?’’

अरविंद ने इनकार में सिर हिलाया।

‘‘और मैं दीदी को भी नहीं बताऊंगा इस बारे में।’’

‘‘ऐसी बात नहीं है।’’-अरविंद ने कहा-‘‘मानसी से छिपाने की जरूरत नहीं है। लोन के बारे में तो उसे पता है ही। वो बस मेरी कॉन्शियंस पर ठीक नहीं लग रहा था तुमसे पैसे लेने इसलिये...।’’

‘‘कम ऑन, जीजा जी। लगता है पुरानी बॉलीवुड फिल्में ज्यादा देखते हैं आप।’’

उसी समय मानसी ने दरवाजे से अंदर कदम रखा। उसके साथ वैशाली भी थी। दोनों बाजार से कुछ सामान की खरीददारी करके वापस लौटी थीं। उनके आने के साथ ही मोहित और अरविंद के बीच चल रही बातचीत पर विराम लग गया।

संजय को होश आया।

अपने आसपास के वातावरण के प्रति सचेत होने के बाद उसे अहसास हुआ कि उसके दोनों हाथ पीठ पीछे मजबूती से बंधे हुए थे और पैर भी बंधे हुए थे।

उसके सामने वही शख्स बैठा था, जिसने उसे बेहोश किया था।

‘‘कईसा है?’’-उसने एक चौड़ी मुस्कान मुस्कुराते हुए संजय से पूछा।

संजय को अपने दिमाग में तीव्र गुस्से की लहर उठती महसूस हुई। वो कम्बख्त वही बोल रहा था, जो उसने उसे बेहोश करने से पहले कहा था।

‘‘कौन हो तुम?’’-संजय बोला-‘‘मुझे इस तरह क्यों बांधा है?’’

‘‘पूछना तो मुझे तुझसे चाहिए’’-उसकी आवाज में कुछ ऐसा था कि संजय कि अपने शरीर में सिहरन सी दौड़ती महसूस हुई-‘‘कि तू मेरे घर में क्यों घुसा? क्या चाहता है तू मुझसे?’’

‘‘मैं...मैं तो चोरी करने घुसा था’’-संजय अपने को संभालने की कोशिश करते हुए बोला-‘‘प्लीज मुझे माफ कर दो। चाहे तो...चाहे तो पुलिस के हवाले कर दो। प्लीज...मैंने कुछ नहीं चुराया है। मैं अभी घर में घुसा ही था, जब...जब तुमने मुझे पकड़ लिया।’’

वो हंसा। रीढ़ की हड्डी में कंपकंपी पैदा करने वाली हंसी।

अचानक संजय को लगने लगा कि हालात बहुत ज्यादा बुरे थे। उससे भी ज्यादा, जितने दिख रहे थे।

‘‘तो तू एक मामूली चोर है?’’-फिर वो संजय से बोला-‘‘ऐसे ही चोरी करने घर में घुसा था। हिल रोड वाले घर से मेरा पीछा नहीं कर रहा था?’’

संजय को जैसे सांप सूंघ गया।

वो तो सब कुछ जानता था।

‘‘क्या...क्या मतलब?’’-संजय ने एक आखिरी कोशिश की-‘‘पीछा? हिल रोड वाला घर? मेरी...मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है, आप क्या कह...।’’

उसने संजय के कंधे पर हाथ रखा। वो जिस तरह उसकी ओर देख रहा था, उससे संजय अपनी बात पूरी करने तक की हिम्मत नहीं जुटा सका।

कहां फंस गया?-उसने मन ही मन खुद को लानत भेजी।

‘‘अब और नौटंकी करने की जरूरत नहीं है।’’-वो शख्स बोला-‘‘मैंने तुझे तभी देख लिया था, जब तूने हिल रोड वाले मकान से मेरा पीछा करना शुरू किया था...।’’

देख लिया था? हे भगवान? क्या बाज की नजर है इसकी?

‘‘...और तू मुझसे कभी झूठ नहीं बोलता, अगर तुझे पता होता कि तेरे सामने एक सीरियल किलर बैठा है।’’

सीरियल किलर।

संजय को अपनी रगों में खून जमता सा महसूस हुआ।

वो शख्स उसे कहीं से भी मजाक करता हुआ नहीं लग रहा था।

‘‘मुझे छोड़ दो।’’-संजय अस्फुट से स्वर में बोला-‘‘मैं किसी के लिए काम करता हूं। मेरी तुमसे कोई दुश्मनी नहीं। मैं...मैं तो तुम्हें जानता तक नहीं...।’’

वो हंसा और कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। संजय को उसके चेहरे की ओर देखने के लिए अपने सिर की ओर इतना मोडऩा पड़ा कि उसे गर्दन में दर्द महसूस होने लगा। उसका कद कम से कम 6 फीट 3 इंच था।

‘‘चिंता मत करो’’-उसने कहा-‘‘मैं तुम्हें ज्यादा दिनों तक तकलीफ में नहीं रखूंगा। कोशिश करूंगा कि तुम्हें कम से कम दर्द हो।"-फिर वो थोड़ा ठहरकर बोला-"और तुम जिसके लिए काम करते हो, उसे भी देख लूंगा।’’

कह कर वो कमरे से बाहर निकल गया।

उसके पीछे जमीन पर पड़ा संजय विस्फारित नेत्रों से उस दरवाजे की ओर देखता रहा, जिससे वो बाहर निकल गया था।

अब उसे एक ही आस थी।

कि अविनाश किसी और को या पुलिस को इस घर में भेजे या खुद आ जाए।

शायद तभी उसकी जान बच सकती थी।

लेकिन न जाने क्यों संजय को ऐसा लग रहा था कि ऐसा कुछ नहंी होने वाला।

वो बंधनों से आजाद होने की कोशिश करते हुए मन ही मन उस घड़ी को कोसने लगा, जब उसने खुद को बड़ा तीस मार खां जासूस समझते हुए इस घर में प्रवेश किया था।

अविनाश सामने टेबल पर रखे एक कागज पर गिरिराज वर्मा मर्डर केस से जुड़े तथ्यों के नोट्स बना कर तीर के आड़े-टेढ़े निशानों से उन्हें आपस में जोडऩे के लिए माथापच्ची कर रहा था।

उस उलझा देने वाले केस में किसी क्लू, किसी नतीजे पर पहुंचने की तलाश में वो शुरू से केस का रिवीजन कर रहा था।

नैनीताल में गिरिराज वर्मा मर्डर केस में पुलिस पिछले करीब तीन महीने से सनाया गौतम नामक युवती की तलाश कर रही थी। पुलिस के अनुसार उसने गिरिराज वर्मा की बेरहमी से हत्या कर दी थी। हत्या करने के बाद उसने घर की सेफ में रखा करीब 45 लाख रूपए का सामान, जिसमें 20 लाख रूपए नकद व 25 लाख के सोने-चांदी के गहने शामिल थे, भी लूट लिए थे। वो गहने गिरिराज वर्मा की स्वर्गवासी पत्नी शिवानी वर्मा-के थे। वो मर्डर अपने-आप में बेहद रहस्यमयी था, जिसके चलते उस घटना को लेकर नैनीताल में कितना हंगामा मचा था, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता था कि उस घटना को करीब तीन महीने बीतने के बाद भी आज भी जब उस घटना से रिलेटेड कोई खबर अखबार में छपती थी, तो वो फ्रंट पेज पर ही जगह पाती थी।

इस केस में सबसे बड़ी हैरानी की बात ये भी थी कि गिरिराज वर्मा ने अपनी वसीयत के अनुसार अपनी सारी जायदाद सनाया गौतम के नाम कर दी थी।

जो कि उनकी कुछ नहीं लगती थी।

यहां तक कि गिरिराज वर्मा के परिजनों से लेकर कोई रिश्तेदार, कोई जानने वाला सनाया गौतम के नाम से वाकिफ नहीं था।

सनाया ने किस तरह गिरिराज वर्मा से उनकी जायदाद अपने नाम करवाई होगी, ये भी एक रहस्य ही था लेकिन पुलिस-बल्कि पुलिस ही क्या, आम लोग भी-एक सीधे निष्कर्ष पर ही पहुंचे थे। एक अधेड़ उम्र, अकेले रहने वाले मर्द के साथ जब कोई हसीन-तरीन जवान युवती रहती हो तो उससे अपनी मनमर्जी के अनुसार काम कराने के लिए वो कौन से हथकण्डे अपनाती होगी, ये अंदाजा लगाना पुलिस के लिए-और बाकी लोगों के लिए भी-कोई मुश्किल काम नहीं था। पुलिस को इस बात में रंचमात्र भी शक-सुबहा नहीं था कि गिरिराज वर्मा से उसकी प्रॉपर्टी अपने नाम कराने में सनाया ने उस बेचारे बूढ़े पर अपनी सेक्स अपील का प्रयोग किया होगा। अपने हुश्र का जादू चलाया होगा।

जो कि चला भी। और क्या खूब चला।

लेकिन उतना होने के बाद भी सनाया गौतम के मामले में ‘क्राइम डजन्ट पे’ वाली कहावत चरितार्थ होती हुई दिख रही थी। अब वो अपने उस मेहरबान मालिक की ‘असाधारण

नजरेइनायत’ के कारण करोड़ों रूपए की प्रॉपर्टी की मालकिन होने के बाद भी उसी मेहरबान मालिक के कत्ल के आरोप में पुलिस से बचती फिर रही थी।

पुलिस वसीयत से जुड़े कानूनी पहलू भी खंगाल रही थी, जिसमें पता चला था कि मरने से पूर्व तक गिरिराज ने अपनी पूरी जायदाद अपने बेटे के नाम की थी-जो कि सामान्य भी था, आमतौर पर पिता अपनी जायदाद अपने बेटे के ही नाम करता है-लेकिन उस मर्डर से करीब एक माह पहले ही आश्चर्यजनक रूप से गिरिराज ने अपनी वो पुरानी वसीयत निरस्त करवा दी थी और नई वसीयत बनाई थी, जिसके अनुसार अब उनकी प्रॉपर्टी की एकमात्र स्वामिनी सनाया गौतम थी।

गिरिराज वर्मा नैनीताल की बहुत प्रसिद्ध और प्रभावशाली हस्ती थे, जिसके चलते उनकी हत्या की घटना से काफी हंगामा मचा था। वो केस पुलिस के लिए एक अनसुलझी पहेली जैसा ही था, जिसके चलते पुलिस को जबर्दस्त आलोचना भी झेलनी पड़ी थी। उस केस में ले-देकर पुलिस के लिए कोई राहत की बात थी, तो वो यही थी कि पुलिस ने सनाया गौतम की उनके हत्यारे के रूप में शिनाख्त कर ली थी। लेकिन सनाया गौतम का घटना के बाद से ही कोई अता-पता नहीं था। नैनीताल ही नहीं बल्कि पूरे प्रदेश के विभिन्न इलाकों में पुलिस उसकी तलाश में व्यापक अभियान चला चुकी थी लेकिन वो तो जैसा हवा में बदल गई थी। हत्यारे का पता चल जाने के बाद भी उसकी गिरफ्तारी नहीं हो पाने के कारण भी पुलिस की अच्छी-खासी किरकिरी हो रही थी।

गिरिराज वर्मा मर्डर केस था ही इतना हाई-प्रोफाइल!

अविनाश अभी केस की उधेड़बुन में ही था कि उसी समय रोशनी ने ऑफिस में कदम रखा।

‘‘कैसे हो, बॉस?’’-वो दरवाजे पर खड़े-खड़े ही बोली।

अविनाश ने सिर उठाकर सामने देखा, रोशनी सुपरमॉडल्स की तरह खूबसूरत थी और अविनाश का तभी से उस पर दिल आया हुआ था, जब वो इंटरव्यू देने के लिए आई थी।

पलक झपकने से भी तेजी से अविनाश ने उसे जॉब पर रख लिया था।

काम में तो उसके कोई शिकायत नहीं थी लेकिन अविनाश को उससे जो सबसे बड़ी शिकायत थी वो यही शिकायत थी कि वो सिर्फ काम से काम रखती थी।

अविनाश को बॉस होने के अलावा वो कोई भाव नहीं देती थी।

‘‘आइये मोहतरमा।’’-अविनाश ने ठण्डी सांस ली-‘‘आइये। आप ही का इंतजार था।’’

‘‘अरे?’’-रोशनी ने बनावटी हैरानी जताई-‘‘मेरा इंतजार करने की क्या जरूरत थी? एक आवाज लगा देते, हाजिर हो जाती। कॉल ही कर देते या फिर।’’

‘‘अरे, यही तो कमी है तेरे अंदर।’’

‘‘क्या?’’

‘‘काम को बहुत ज्यादा सीरियसली लेती हो। कभी काम से आगे भी देख लिया करो। मुझे तुम्हारा वैसा इंतजार नहीं था।’’

‘‘तो कैसा इंतजार था?’’

‘‘शायरी वाला इंतजार था।’’

‘‘शायरी वाला इंतजार? मैं तो शायरी नहीं करती।’’

‘‘मैं करता हूं। अच्छा ऐसे समझ, ‘झूमती चली हवा, याद आ गया कोई...’।’’

‘‘तो आप मुझे याद कर रहे थे? लेकिन अभी तो आपने कहा इंतजार कर रहे थे।’’

‘‘अरे वही। याद और इंतजार एक ही चीज होता है।’’

‘‘खामख्वाह। याद और इंतजार कब से एक ही चीज होने लगे?’’

"जिसे याद करते हैं, उसका इंतजार करते हैं। जिसका इंतजार करते हैं, उसे याद करते हैं। क्यों मेरे नाम को बट्टा लगा रही है? इतने बड़े, नामी-गिरामी प्राइवेट डिटेक्टिव की प्राइवेट सेक्रेट्री होकर इतना भी नहीं समझ सकती?’’

‘‘यानि आप मेरा इंतजार कर रहे थे, मुझे याद कर रहे थे लेकिन मुझे आवाज देना जरूरी नहीं समझा। न ही मुझे कॉल करना।’’

‘‘हां। क्योंकि पता था कि कोई फायदा नहीं होने का।’’

‘‘वो कैसे?’’

‘‘तुझसे मूढ़ मारके ऐसा ही लगता है कि इससे तो अच्छा दीवार पर सिर मार लिया होता। इसीलिए यहां अकेले ही अपने ख्यालों में ही शायरी करके, तुझे याद करके, तेरा इंतजार करके ही अपना दिल बहला लेता हूं।’’

‘‘ठीक है, फिर। जब आपको अभी मेरी जरूरत ही नहीं है तो मैं बाहर जाकर ड्यूटी बजाती हूं। आप यहां अकेले बैठकर शायरी कीजिए।’’-उसने जाने का उपक्रम किया।

‘‘अरे अरे रूक रूक।’’-अविनाश जल्दी से बोला-‘‘अब आ ही गई है तो थोड़ी देर बैठ।’’

‘‘बाहर रिसेप्शन खाली पड़ा है...।’’

‘‘पड़ा रहने दे खाली। कोई पेपरवेट चुरा कर नहीं ले जाने वाला। वैसे भी ये प्राइवेट डिटेक्टिव का ऑफिस है। कोई बैंक नहीं जो आने-जाने वालों की कतार लगी रहे।’’

अविनाश के उतना कहने पर वो सामने पड़ी कुर्सियों में से एक पर बैठ गई।

‘‘तो बताइये।’’-फिर वो अविनाश से बोली।

‘‘क्या बताऊं? दिल का हाल सुनेगी?’’

‘‘नहीं। दिल का हाल रहने दीजिये। वो गिरिराज वर्मा मर्डर केस की प्रोग्रेस कैसी चल रही है, उसके बारे में कुछ बताइए?’’

‘‘तौबा। मैं तेरा नहीं तू मेरी बॉस हो गई। अब मैं तुझे रिपोर्ट करूं?’’

‘‘रिपोर्ट मत करिये। ऐसे ही बात करने के लिहाज से पूछा। नहीं बताना चाहते तो मत बताइये।’’

‘‘चल बताता हूं। तू भी क्या याद करेगी।’’-अविनाश दयानतदारी भरे अंदाज में बोला-‘‘तुझे पता है वो जो सनाया गौतम है, जिस पर गिरिराज वर्मा के मर्डर का शक है-शक क्या है, बहुतों को तो यकीन ही है कि उसी ने गिरिराज वर्मा का कत्ल किया है-मेरी रिपोर्ट कहती है कि वो सनाया गौतम गिरिराज वर्मा की वही थी।’’

‘‘वही क्या?’’

‘‘जो तू मेरी है।’’

‘‘सेक्रेट्री?’’

‘‘वो भी प्राइवेट वाली।’’

‘‘तो उससे क्या?’’

‘‘उससे यही कि उससे कुछ सीख।’’

‘‘क्या सीखूं? आपका मर्डर कर दूं?’’

‘‘कर दी न ब्यूटी विदाउट ब्रेन वाली बात।’’-अविनाश ने सिर पर हाथ मारा-‘‘मर्डर क्यों करेगी मेरा? तुझे मैं इतना बुरा लगता हूं?’’

‘‘तो आप ही कह रहे थे उससे कुछ सीखूं।’’

‘‘गिरिराज वर्मा पर उसने कैसे अपना जादू चलाया हुआ था, वो सीख।’’

‘‘कैसे चलाया हुआ था?’’

‘‘अपनी खूबसूरती के दम पर।’’

‘‘अफसोस। मैं तो ऐसा कुछ नहीं कर सकती।’’

‘‘क्यों नहीं कर सकती?’’

‘‘क्योंकि मैं खूबसूरत नहीं हूं।’’

‘‘क्या बात कर रही है?’’

‘‘सच कह रही हूं।’’

‘‘तो ये गोरे-गोरे गाल, ये गुलाबी होंठ, ये सुतवां नाक, ये झील सी नीली हसीन आंखें, जिनमें डूब जाने का मन करता है, ये रेशमी जुल्फें, ये सब क्या तूने सूर्पणखा की तरह माया कर रखी है?’’

वो जोर से खिलखिलाकर हंसी।

‘‘हर बात को मजाक में मत लिया कर।’’

‘‘बॉस, सचमुच आपका खूबसूरती की तारीफ करने का तरीका भी एकदम निराला है।’’

‘‘तारीफ से खुश हुई हो तो मेरे खाते में एक पॉइंट बढ़ा लेना।’’

‘‘आप कह रहे थे’’-फिर रोशनी अचानक फिर गिरिराज वर्मा केस के मुद्दे पर आते हुए बोली-‘‘कि सनाया गौतम गिरिराज वर्मा की प्राइवेट सेक्रेट्री थी। लेकिन इसकी पुष्टि तो नहीं हो पाई है।’’

‘‘तुझे कैसे पता?’’

‘‘मैंने केस की फाइल पढ़ी है न।’’

अविनाश को मन ही मन अपनी सेक्रेट्री पर गर्व हुआ। वो सचमुच काबिल थी। अविनाश पर तो उसकी खूबसूरती का जादू चल गया था, जिसके चलते उसने उसे तत्काल नौकरी पर रख लिया था लेकिन वो अपना काम पूरी दिलचस्पी से करती थी। केस की फाइलों को भी बारीकी से पढ़ती थी और कई बार केस से जुड़ी बेहद महत्त्वपूर्ण बातों की ओर अविनाश का ध्यान आकर्षित भी कराती थी।

सब कुछ करती थी लेकिन बस वही नहीं करती थी, जो अविनाश चाहता था।

‘‘फाइल पढ़ी है’’-अविनाश बोला-‘‘तो तुझे ये भी पता होगा कि गिरिराज वर्मा ने पेपर में प्राइवेट सेक्रेट्री के लिए एड दिया था। उसके बाद ऐसे किसी शख्स का पता नहीं चला है, जिसे उन्होंने सेक्रेट्री के रूप में रखा हो। और फिर ये सनाया गौतम इतनी रहस्यमयी शख्सियत के रूप में उनकी जिंदगी में आ गई। तो डिटेक्टिव तो छोड़ एक आम आदमी की तरह भी सोचेगी, तब भी दिमाग में यही ख्याल आयेगा कि जरूर गिरिराज वर्मा ने सनाया को ही प्राइवेट सेक्रेट्री के रूप में रख लिया होगा।’’

‘‘हो सकता है।’’-उसने सहमति में सिर हिलाया।

‘‘बल्ले भई। मान गई मेरी बन्नो। दिल जीत लिया कसम से। बोल चा-शा कुछ मंगाऊं?’’

‘‘नहीं रहने दीजिए।’’-वो हंसी, फिर तत्काल ही संजीदा होकर बोली-‘‘तो अगर सनाया गौतम गिरिराज वर्मा की प्राइवेट सेक्रट्री भी थी तो उससे क्या?’’

‘‘तो उससे क्या? अरे तेरे बॉस ने समंदर में से सीप निकालने वाले ढंग से इतनी गहरी बात पता लगाई है और तू शाबासी देने की जगह कह रही है तो उससे क्या?’’

‘‘शाबासी अपने से छोटों को दी जाती है।’’

‘‘तो तारीफ ही कर दे।’’

‘‘अच्छा। बहुत अच्छा काम किया आपने। वाह-वाह। कमाल ही कर दिया।’’

‘‘थैंक यू।’’-अविनाश ने बड़ी अदा से सिर नवाया।

‘‘मेरा एक सवाल है।’’

‘‘पूछ।’’

‘‘क्या गिरिराज वर्मा एकदम ही दुनियादारी से अनजान, एकदम सीधे-सादे भोले-भाले इंसान थे?’’

‘‘ये मैं कैसे बता सकता हूँ? ये तो ऐसा ही कोई बता सकता है, जो उनकी जिंदगी में उनसे मिलता रहा हो।’’

‘‘डिटेक्टिव होने के लिहाज से बताइये।’’

‘‘ओह। डिटेक्टिव वाले फॉर्मेट में सुनना चाहती है? तो सुन। गिरिराज वर्मा वकील थे। और बहुत बड़े वकील थे। बहुत प्रतिष्ठित आदमी थे। करोड़ों की प्रॉपर्टी के मालिक थे। तो ऐसा आदमी बिल्कुल ही सीधा-सादा तो नहीं हो सकता। ऐसे आदमी को दुनियादारी से अंजान समझना भी पाप है।’’

‘‘तो क्यों कर रहे हैं ये पाप?’’

‘‘मैं कर रहा हूँ?’’

‘‘और नहीं तो क्या?’’

‘‘कैसे? थोड़ा समझाकर कहेगी तो मेरे दिमाग का तेल निकलने से बचेगा। चिंता, टेंशन से बचूंगा। कच्ची उम्र में बाल नहीं झड़ेंगें मेरे।’’

‘‘आप-और सब लोग-कहते हैं कि सनाया गौतम ने गिरिराज वर्मा को फांस लिया। अपने जाल में फंसा लिया। उन्हें अपने इशारों पर नचाती रही। अब आपने तो ये निष्कर्ष भी निकाला है कि वो उनकी प्राइवेट सेक्रेट्री थी। सेक्रेट्री बनकर आई और उन पर अपने रूप का ऐसा जादू चलाया कि उन्हें पूरी दुनिया से दूर कर लिया। वो भी ऐसे शातिर ढंग से कि लोगों को-यहां तक उनके घरवालों को भी-भनक तक नहीं लगने दी। और उनकी करोड़ों की प्रॉपर्टी भी अपने नाम करवा ली। लेकिन क्या गिरिराज वर्मा जैसा इतना बड़ा वकील, समाज में इतना प्रतिष्ठित आदमी सचमुच में इतना सीधा, इतना बेवकूफ, इतना आसानी से मूर्ख बन जाने वाला था कि सनाया गौतम ने उससे इतना सब करवा लिया। मेरे गले से तो ये बात नीचे ही नहीं उतरती।’’

‘‘ऐसा इसलिए है, मेरे कलेजे की ठण्डक, क्योंकि तुझे औरतों की उस ताकत का अंदाजा ही नहीं है, जिसके दम पर वो इतना सब करवा सकती हैं। किसी को भी-मेरा मतलब किसी भी मर्द को-अपने इशारों पर नचवा सकती हैं। जो-जो कुछ तूने अभी सनाया गौतम वर्सेस गिरिराज वर्मा के बारे में कहा, उससे भी कई गुना करवा सकती हैं।’’

‘‘क्या?’’-रोशनी उलझनपूर्ण स्वर में बोली, फिर उसकी समझ में अविनाश की बात आई-‘‘आपका मतलब, सेक्स अपील?’’

अविनाश मन ही मन कलपकर रह गया। वो बात रोशनी ने ऐसे भावहीन ढंग से, ऐसे सपाट स्वर में कही थी, जैसे किसी ने पत्थर खींचकर मारा हो।

‘‘हां।’’-वो मरे से स्वर में बोला-‘‘सेक्स अपील की ही बात कर रहा था मैं।’’

‘‘माफ करिये बॉस पर मैं आपसे सहमत नहीं।’’

‘‘क्यों?’’

‘‘आप सनाया गौतम के जिस तरह के जादू की बात कर रहे हैं, वो लम्पट, मूर्ख, चरित्रहीन किस्म के लोगों पर ही काम करता है। और मेरे ख्याल से गिरिराज वर्मा इनमें से कुछ भी नहीं थे। समझदार, विवेकशील, चरित्रवान लोगों पर इस तरह के लटके-झटकों का कोई असर नहीं होता।’’

‘‘तू किसी मठ में जाकर नन क्यों नहीं बन जाती?’’

‘‘अभी सोचा नहीं इस बारे में।’’

‘‘तो अब सोच ले। वहां बहुत तरक्की करेगी तू।’’

‘‘मठों में भी तरक्की होती है?’’

‘‘होती है न। मठाधीश बन जाना जाकर।’’

रोशनी हंसी।

अविनाश भुनभुनाया।

‘‘बॉस।’’-फिर वो संजीदगी से बोली-‘‘मैंने कुछ पता किया है।’’

‘‘अच्छा। और वो क्या है?’’

‘‘कुछ ऐसा है कि आप देखकर उछल पड़ोगे।’’

‘‘तो देर क्यों लगा रही है? जल्दी दिखा कर मुझे उछाल दे। थोड़ा धीरे उछालना। कहीं सिर छत से न टकरा जाए।’’

रोशनी ने एक फोटो उसकी ओर बढ़ी।

अविनाश ने देखा, वो एक बेहद खूबसूरत युवती की फोटो थी।

‘‘कौन है ये?’’

‘‘वही, जिसे इस केस में सब ढूंढ रहे हैं।’’

अविनाश ने विस्फारित नेत्रों से पहले तस्वीर की ओर, फिर रोशनी की ओर देखा।

‘‘क्या हुआ?’’-रोशनी हंसी-‘‘आपकी हालत देख कर मुझे भी शायरी याद आ गई।’’

‘‘क्या शायरी?’’

‘‘तस्वीर हो गया हूं, तस्वीर देखकर।’’

‘‘लेकिन क्या सचमुच ये उसी की तस्वीर है? और तुझे ये कहां से मिली? और सबसे बड़ी बात तुझे इस बारे में कैसे पता चला?’’

‘‘सब विस्तार से बता दूंगी बॉस। फिलहाल तो इतना जान लीजिये कि मैंने आपका चण्डीगढ़ का टिकट भी बुक करवा दिया है।’’

‘‘चण्डीगढ़ में क्या है?’’

‘‘ये।’’

‘‘हे भगवान। तुझे ये भी पता है।’’

‘‘मैं कच्चा काम नहंी करती।’’

‘‘ये तो बहुत अच्छा करती है।’’

‘‘तो आप जल्दी से जो-जो तैयारी करनी है, कर डालिये। और याद रखिये, ये केस हल होने के बाद मुझे बोनस चाहिये होगा।’’

‘‘तेरा बोनस पक्का। लेकिन भगवान के लिए अब और सस्पेंस क्रिएट मत कर। जल्दी से सब कुछ खोल-खाल के...।’’

‘‘क्या?’’

‘‘...मेरा मतलब विस्तार से अच्छी तरह समझा कर बता कि ये फोटो तुझे कहां से मिली? इसके बारे में तुझे कैसे पता चला? वरना सस्पेंस के मारे मेरा भेजा ही फ्राई हो जाएगा।’’

रोशनी ने बताना शुरू किया।

जब वो शांत हुई तो अविनाश चेहरे पर प्रशंसात्मक भाव लिए उसे देख रहा था।

‘‘क्या हुआ?’’-रोशनी ने पूछा।

‘‘जीती रह पट्ठी।’’-अविनाश बोला-‘‘अपनी क्या कहूं, तूने तो शरलॉक होम्स के भी कान काट लिये। कहां से लेकर आई इतना तेज दिमाग?’’

वो शर्मा गई।

‘‘ठीक है फिर। अब तू जाकर रिसेप्शन संभाल। चाहे तो छुट्टी लेकर घूमने-फिरने भी जा सकती है। बहुत बड़ा तीर माना है तूने। तेरी आरती उतारने का मन कर रहा है।’’

‘‘उसकी जरूरत नहीं।’’-वो उठ खड़ी हुई-‘‘और न ही छुट्टी की। मैं डेस्क पर जा रही हूं। आप अपनी तैयारी कीजिए। असल काम तो आपको ही करना है।’’

‘‘लो। और यहां मुझे लग रहा है कि असल काम तो तूने कर दिया है।’’

‘‘बस करिये, बॉस। ज्यादा तारीफ सेहत के लिए अच्छी नहीं होती।’’

‘‘और ये बार-बार बॉस-बॉस मत कहा कर।’’

‘‘बॉस को बॉस न कहूं तो और क्या कहूं?’’

‘‘कुछ भी कह लिया कर। या प्रोनाउन्स का प्रयोग किया कर।’’

‘‘प्रोनाउन्स?’’

‘‘अरे आदि काल से प्रथा चली आ रही है हमारे यहां औरतों द्वारा प्रोनाउन्स का ही प्रयोग किया जाता है। सुनते हो जी। अजी सुनिये। ऐ जी। ओ जी...।’’

‘‘बॉस ही ठीक है।’’

‘‘ओल्ड फैशन्ड है। सुनकर मुगैम्बो वाली फीलिंग आती है।’’

‘‘मैं हूं ओल्ड फैशन्ड। अच्छा, मैं जा रही हूं। यहां खड़ी रही तो आप तो बोलते ही रहेंगें। जाने नहीं देंगें।’’

‘‘तो मत जा न। कितना अच्छा लग रहा है तुझे ऐसे देख कर।’’

‘‘क्या?’’

‘‘मतलब तेरी तरक्की देख कर। देख न पूरी जासूस बन गई है तू। मुझे तो डर लगने लगा है कल को अपनी अलग से प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी न खोल ले। रोशनी मेहरा। सुपर प्राइवेट डिटेक्टिव। पलक झपकते केस का पर्दाफाश हमारे यहां किया जाता है। आज ही सम्पर्क करें।’’

‘‘जासूसी आपको ही मुबारक। मैं तो बस ऐसे ही टाइम पास कर रही थी।’’

‘‘ये टाइम पास था? हे भगवान। तो जासूसी करने लगेगी तब तो पता नहीं क्या करेगी?’’

‘‘मैं चली, बॉस।’’

फिर वो सचमुच चली गई।

अविनाश भी चण्डीगढ़ जाने की तैयारी में जुट गया।

रोशनी सचमुच धमाकेदार जानकारी लेकर आई थी।

मोहित रजत महानंद से मिलने अजंता अपार्टमेंट जा रहा था।

कार से हाथ धोने के बाद अब वो या तो टैक्सी का इस्तेमाल करता था, या फिर कहीं से बाइक या दूसरी कार का जुगाड़ करता था।

इस वक्त वो एक टैक्सी में था।

रास्ते में मोहित ने एक अजीब चीज नोट की थी।

वही ऊंचे कद का बॉडी बिल्डर जैसा दिखने वाला आदमी, जिसे मोहित नैनीताल में भी दो-तीन बार अपने आसपास देख चुका था, एक वैन में उसके पीछे आ रहा था।

क्या वो उसका पीछा कर रहा था?

''सुनो।''-मोहित ने टैक्सी ड्राइवर से कहा-''माल रोड होकर चलो।''

''माल रोड?''-ड्राइवर हैरानी से बोला-''लेकिन वो तो दूसरी ओर है साहब। बहुत घुमावदार रास्ता है। उधर से अजंता अपार्टमेंट्स कैसे...?''

''उधर से ही चलो भाई। मीटर तो चल रहा है न।''

ड्राइवर ने सिर हिलाया और टैक्सी दूसरी ओर मोड़ दी।

करीब 20 मिनट तक टैक्सी इधर-उधर भटकाते रहने के बाद अब मोहित को पूरा विश्वास हो गया था कि पीछे आ रही वैन उनके ही पीछे थी।

अब शक की कोई गुंजाइश नहीं थी।

लेकिन वो शख्स था कौन?

और उसका पीछा क्यों कर रहा था?

शायद नारंग ने उस पर नजर रखने के लिए इस आदमी को उसके पीछे लगाया हो।

लेकिन नारंग ऐसी हरकत करेगा, इस पर मोहित को संदेह था।

वो तो अपने ही घमंड में चूर था।

उसके हिसाब से तो मोहित एक मच्छर था, जिसे वो कभी भी मसल सकता था।

मोहित की कार को उड़ाकर उसने अपने शक्ति का नमूना भी दिखाया था।

खुद को इतना शक्तिशाली समझने वाला नारंग इस तरह उसका पीछा करवाएगा, इस पर मोहित को यकीन नहीं था।

वैसे भी फिलहाल मोहित नारंग के बारे में नहीं सोचना चाहता था। मोहित का इरादा बाद में उसके साथ हिसाब-किताब करने का था।

लेकिन इस वक्त तो उसके सामने सवाल ये था कि ये बंदा कौन था, जो बार-बार उसका पीछा कर रहा था।

अजंता अपार्टमेंट्स आने पर मोहित ने टैक्सी ड्राइवर से कहा-‘‘एक काम करो, टैक्सी को पार्किंग में ले चलो।’’

‘‘वेट करना है क्या, साहब?’’-टैक्सी वाला बोला-‘‘उसके लिए अलग से चार्ज लगेगा।’’

‘‘नहीं। वेट नहीं करना है। मुझे पार्किंग में काम है। तुम वहां से चले जाना।’’

ड्राइवर ने सिर हिलाया।

फिर उसने टैक्सी बिल्डिंग के बाहर ही रोकने की जगह बिल्डिंग की अंडरग्राउंड पार्किंग की ओर बढ़ा दी।

मोहित रियर व्यू मिरर में पीछे से आ रही उस शख्स की वैन को भी देख रहा था।

उसी समय टैक्सी ड्राइवर ने पार्किंग के अंदर ले जाकर टैक्सी मोड़ दी। टैक्सी ड्राइवर की उस हरकत पर मोहित को गुस्सा आ गया। क्योंकि टैक्सी मुड़ कर पार्किंग में पहले से खड़ी कारों की ओट में चले जाने से उसे पीछे से आ रही वैन का व्यू मिलना बंद हो गया था।

जबकि टैक्सी ड्राइवर ने ऐसा इसलिए किया था क्योंकि उसे वहां सामने टैक्सी पार्क करने के लिए कोई जगह नहीं दिख रही थी।

"यहीं रोक दो।"-मोहित टैक्सी ड्राइवर से जल्दी से बोला। वो टैक्सी को आगे ही बढ़ाए लिए जा रहा था।

ड्राइवर ने टैक्सी रोक दी।

मोहित टैक्सी से उतरा और उसे किराया देकर जल्दी से रफा-दफा किया।

मोहित की नजरें पार्किंग की एंट्रेंस की ओर थीं।

वहां से उस वैन ने प्रवेश नहीं किया।

वैन कहां गई?

शायद बाहर ही खड़ी हो।

अण्डरग्राउंड पार्किंग में लाइट की व्यवस्था नहीं थी इसलिए थोड़ा अंधेरा भी था।,

वहां कुछ कारें पहले से खड़ी थीं, बड़े-बड़े पिलर भी लगे थे लेकिन मोहित के अलावा वहां और कोई नहीं दिख रहा था।

मोहित कुछ देर एंट्रेस की ओर नजरें गड़ाए वहीं खड़ा रहा, फिर एंट्रेस की ओर बढ़ गया।

जैसे ही मोहित उनमें से एक पिलर के बगल से गुजरा, अचानक उसे पीछे से एक आवाज सुनाई दी-

''कईसा है?''

मोहित तेजी से पलटा तो उसे अपने पीछे वही हट्टा तगड़ा आदमी नजर आया, जो वैन से उसका पीछा कर रहा था।

लेकिन उसके बाद मोहित कुछ नहीं कर सका।

उस आदमी का हाथ बिजली की तेजी से मोहित की कनपटी से टकराया और मोहित की आंखों के आंगे अंधेरा छाता चला गया।

उसकी चेतना लुप्त हो गई।

आरती तनेजा मॉल में शॉपिंग करने में व्यस्त थी।

उसे चण्डीगढ़ बहुत पसन्द आया था। ये जगह तो स्वर्ग जैसी थी। घूमने के लिए इतनी सारी जगह। जब से वो यहां आई थी, उसके पांव जमीन पर ही नहीं पड़ रहे थे। इसी जिन्दगी के सपने तो उसने हमेशा से देखे थे।

अपने लिए कुछ महंगी ड्रेसेज खरीदने के बाद वो एस्केलेटर की ओर बढ़ गई।

एस्केलेटर से मॉल के ऊपर के सेक्शन की ओर जाते समय उसने नोटिस किया कि एक सूट-बूटधारी ऊंचे कद का सुदर्शन युवक उसी की ओर देख रहा था।

उस युवक पर आरती का ध्यान इसलिये भी गया क्योंकि पिछले करीब आधे घंटे में उसकी नजर कई बार उस पर पड़ चुकी थी और वो उसे देख कर मुस्कुरा भी रहा था।

क्या वो उस पर लाइन मार रहा था?

दिखने में तो ठीक-ठाक ही था बंदा। अगर लाइन भी मार रहा था तो बुरा क्या था?

लेकिन न जाने क्यों आरती को उसके बारे में कुछ गड़बड़ लग रही थी।

एस्केलेटर से ऊपर पहुंचने के बाद वो शॉपिंग करने में व्यस्त हो गई।

करीब 10-15 मिनट बाद उसने पाया कि वो युवक फिर उससे थोड़ी दूर पर खड़ा मुस्कुराते हुए उसकी ही ओर देख रहा था।

इस बार आरती ने उसे घूरकर देखा। लेकिन उसके घूरने पर भी वो जरा भी विचलित नहीं हुआ, जिससे आरती को घबराहट हुई। आम तौर पर किसी लडक़ी के घूरने पर फ्लर्ट करने वाले युवक डर जाते हैं कि कहीं वो उनकी शिकायत न कर दे। लेकिन उस युवक पर रोशनी के घूरने का कोई फर्क पड़ता नहीं दिख रहा था।

आरती ने मन ही मन उसे सबक सिखाने का फैसला किया और थोड़ी दूर पर खड़े मॉल के ही एक सिक्योरिटी गार्ड को इशारे से अपने पास बुलाया।

गार्ड तत्परता से उसके पास पहुंचा।

‘‘यस मैडम।’’-गार्ड विनम्रता के साथ बोला-‘‘ऐनी प्रॉब्लम...?’’

‘‘वो आदमी जो वहां खड़ा है’’-आरती ने उस युवक की ओर इशारा किया-‘‘काफी देर से मुझे घूर रहा है। और...और मुझे लग रहा है वो मेरा ही पीछा कर रहा है। मैं काफी देर से नोटिस कर रही हूं। अब तो मुझे उससे घबराहट भी होने लगी है।’’

गार्ड ने युवक की ओर देखा, फिर बोला-‘‘टेंशन मत लीजिये, मैम, मैं अभी उसे ठीक करके आता हूं।’’

कह कर गार्ड उस युवक की ओर बढ़ गया।

आरती अपनी जगह खड़ी उनकी ओर देखती रही।

गार्ड युवक के पास पहुंचा। उसने युवक से कुछ कहा, जिसके जवाब में युवक भी कुछ बोला लेकिन आरती को वहां से उनकी बातें नहीं सुनाई दे रहीं थीं।

कुछ ही देर में गार्ड वापस आरती के पास पहुंचा।

‘‘क्या हुआ?’’-आरती ने उत्सुकता से पूछा।

‘‘मैडम।’’-गार्ड बोला-‘‘वो तो आपको जानते हैं।’’

‘‘मुझे?’’-आरती हैरानी से बोला।

‘‘जी हां। उन्होंने कहा कि शायद आप उन्हें पहचान नहीं पा रही हैं। उन्होंने एक नाम लेने के लिए भी कहा, जिसे सुनकर शायद आपको याद आ जाएगा कि वो कौन हैं? आप उन्हें पहचान जाएंगीं।’’

‘‘नाम? किसका नाम?’’

‘‘सनाया गौतम।’’

आरती जैसे आसमान से गिरी।

अविनाश ने गहरी सांस ली। अब लुकाछिपी का खेल लम्बा खींचने का कोई मतलब नहीं था।

वो आगे बढ़ा और आरती के पास पहुंचा।

आरती अपने चेहरे पर से घबराहट के भाव छिपाने की कोशिश कर रही थी।

‘‘हैलो।’’-आरती के पास पहुंचकर अविनाश एक मोहक मुस्कान के साथ बोला।

आरती जवाब देने की जगह उसे देखती रही। वो चाहकर भी अपनी घबराहट को छिपा नहीं पा रही थी।

‘‘क्या हुआ मैडम?’’-गार्ड आशंकित स्वर में बोला-‘‘कोई गड़बड़ है क्या?’’

‘‘गड़बड़ वाली क्या बात है?’’-अविनाश बोला-‘‘क्या हुआ आरती?’’-फिर वो सीधे आरती से ही बोला-‘‘कोई तुम्हें परेशान कर रहा है क्या? ऐसा है तो पुलिस को बुला लेते हैं।’’

पुलिस के नाम पर आरती को झटका सा लगा। लेकिन फिर उसने अपनी पूरी क्षमता का प्रयोग करते हुए अपने चेहरे के भावों को सामान्य किया और मुस्कुरा कर बोली-‘‘नहीं। ऐसी कोई बात नहीं है।’’

‘‘तो मैं जाऊं?’’-गार्ड बोला।

‘‘हां। थैंक्स।’’

गार्ड चला गया।

पीछे अविनाश और आरती एक-दूसरे के सामने खड़े थे।

गार्ड के जाने के बाद आरती के चेहरे पर घबराहट के भाव लौट आए थे।

‘‘कौन हो तुम?’’-आरती दबे स्वर में बोली।

‘‘मेरा एक नाम तो है लेकिन मुझे वो लोग ज्यादा पसंद हैं, जो कई नामों से जाने जाते हैं।’’-अविनाश मुस्कुराते हुए बोला।

उसकी घबराहट और बढ़ गई।

‘‘खरीददारी पूरी हो गई हो तो चलें?’’-अविनाश ने कहा-‘‘मुझे तुमसे गुफ्तगू करने के लिए यहां से ज्यादा अच्छी एक जगह मालूम है।’’

‘‘कहां?’’-उसने अविनाश की ओर देखा।

‘‘वो मैं बता दूंगा, पहले यहां से हिल के तो दो।’’

‘‘तुम...मैं तो तुम्हें ठीक से जानती भी नहीं। मैं तुम्हारे साथ ऐसे नहीं जा सकती।...’’

‘‘देखो।’’-अविनाश शांत स्वर में बोला-‘‘तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम जो-जो मैं कहता हूं, उसे मानती जाओ। वरना...।’’

‘‘वरना क्या?’’

‘‘वरना मैं तुम्हारे गार्ड के बुलाने का बदला पुलिस को बुलाकर लूंगा।’’

धमकी ने तत्काल असर किया। वो कुछ देर तक अविनाश को घूरती रही, फिर मरे-से स्वर में बोली-‘‘चलो।’’

दोनों मॉल से बाहर निकले। अविनाश ने पार्किंग में खड़ी अपनी कार निकाली, जिसका जुगाड़ उसने वहां चण्डीगढ़ के अपने एक दोस्त से किया था।

आरती भी उसके साथ ही कार में बैठी थी। उसके चेहरे पर हवाईयां उड़ रहीं थीं। उसे एकदम से सब कुछ उजड़ा हुआ लगने लगा था। थोड़ी देर पहले जहां उसे हर तरफ सावन की हरियाली छाई हुई दिख रही थी, वहीं अब पतझड़ की दस्तक जोर-जोर से सुनाई देने लगी थी।

पता नहीं आज किस मनहूस घड़ी में घर से बाहर निकली थी?-उसने मन ही मन खुद को कोसा।

इसके ठीक विपरीत अविनाश अब भी पूर्ववत् मुस्कुराए जा रहा था। उसके मुस्कुराने से आरती को डर भी लग रहा था और झुंझलाहट भी हो रही थी।

रास्ते में एक जगह रेड सिग्नल पर अविनाश ने कार रोकी।

आरती के लिए अब चुप्पी बर्दाश्त करना मुश्किल हो रहा था।

‘‘आखिर तुम चाहते क्या हो?’’-वो बम की तरह फट पड़ी।

अविनाश ने मुस्कुराकर उसकी ओर देखा।

‘‘तुम्हें।’’-वो मीठे स्वर में बोला।

‘‘क्या?’’-आरती हक्की-बक्की रह गई।

‘‘मजाक था’’-अविनाश हंसा-‘‘घबराने की कोई जरूरत नहीं। मेरे साथ तुम सेफ हो।’’

आरती के चेहरे पर व्याकुलता के भावों में कोई कमी नहीं आई।

‘‘फिलहाल तो मैं ये जानना चाहता हूं कि’’-सिग्नल ग्रीन होते ही अविनाश ने कार आगे बढ़ाते हुए कहा-‘‘कि तुम गेंहू के साथ पिसने वाला घुन बनना चाहती हो या डूबते जहाज पर से उतर जाने वाला समझदार यात्री?’’

‘‘क्या मतलब?’’

‘‘अरे, तुमने कहावत नहीं सुनी? गेंहू के साथ घुन भी पिस जाता है। डूबते जहाज से उतरने में ही समझदारी होती है। कभी स्कूल नहीं गईं क्या?’’

‘‘आखिर तुम कहना क्या चाहते हो?’’-आरती झुंझलाकर बोली।

‘‘तुम्हें सुनने की बड़ी जल्दी है?’’

‘‘हां। अब मुझसे ये सस्पेंस और बर्दाश्त नहीं होता।’’

‘‘वाह! क्या बात कही है। हजारों लोगों को तीन महीने से सस्पेंस में डुबा कर रखने वाली कह रही है कि सस्पेंस बर्दाश्त नहीं होता।’’

उसने भयभीत भाव से अविनाश की ओर देखा।

अविनाश के होंठों पर एक दिलकश मुस्कान थी।

आरती ने अपने हैण्डबैग से मोबाइल निकाला।

‘‘मोबाइल मुझे दो।’’-अविनाश ने एक हाथ स्टेयरिंग पर से हटाकर आरती की ओर बढ़ाया।

‘‘क्यों? ये मेरा मोबाइल है...।’’

‘‘मोबाइल मुझे दो।’’-अचानक अविनाश का स्वर सख्त हो गया-"अभी।"

आरती ने मोबाइल उसके हाथ पर रख दिया, जिसे अविनाश ने अपनी जेब के हवाले कर दिया।

कुछ देर दोनों के बीच शांति छाई रही।

अचानक आरती की आंखें फैल गईं। वो लोग अजंता अपार्टमेंट की ओर ही जा रहे थे।

जहां उसका फ्लैट था।

वो जानता था कि वो कहां रहती थी।

आरती ने एक बार फिर घबराई आंखों से अविनाश की ओर देखा। वो शांत भाव से कार चलाने में व्यस्त था।

अविनाश ने सचमुच कार अजंता अपार्टमेंट्स की पार्किंग में ही ले जाकर रोकी।

वो अपनी ओर से कार का दरवाजा खोलकर उतरा।

आरती पत्थर के बुत की तरह कार में ही बैठी रही।

‘‘चलो, उतरो मैडम।’’-अविनाश बोला।

‘‘मेरे फ्लैट का नम्बर क्या है?’’-आरती सपाट स्वर में बोली।

‘‘वाह। मुझे कैसे पता होगा तुम्हारे फ्लैट का नम्बर? मैं क्या कोई नजूमी हूं? अरे हां। याद आया। 148।’’

आरती ने घूरकर उसे देखा, फिर बोली-''तुम मुझ पर कब से नजर रख रहे हो?''

''नजर नहीं रख रहा। मैं तो आज ही चण्डीगढ़ आया हूं।''

''तो तुम्हें मेरे बारे में इतना कुछ कैसे पता?''

''पहुंची हुई हस्तियों के बारे में जानकारी एकत्र करके रखना मेरा शौक है। अब खुश? अब उतरो कार से और चुपचाप फ्लैट में चलो, अगर तमाशा नहीं चाहती हो तो।''

बड़ी ही अनिच्छापूर्वक आरती कार से बाहर निकली।

दोनों पार्किंग के गेट की ओर बढ़े।

''अगर तुम्हें लग रहा है कि''-अविनाश ने आरती को सांत्वना दी-''कि मेरा इरादा तुम्हें तुम्हारे ही फ्लैट में ले जाकर तुम्हारा चीरहरण करने का है तो बेफिक्र रहो। मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है। मेरे साथ तुम पूरी तरह सेफ हो। लेकिन तभी तब, जब तक गड़बड़ नहीं करोगी। कायदे में रहोगी, फायदे में रहोगी।''

आरती कुछ नहीं बोली, लेकिन उसके चेहरे के भाव थोड़े सामान्य हुए।

दोनों लिफ्ट से चौथी मंजिल पर पहुंचे, जहां रोशनी ने अपने फ्लैट का लॉक खोला। अविनाश फ्लैट में प्रवेश करते ही सोफे पर इतनी बेतकल्लुफी से पसर गया, जैसे वो उसी का फ्लैट हो।

''बैठो, बैठो।''-वो आरती से बोला-''शर्माओ मत। इसे अपना ही घर समझो।''

आरती ने उसे घूर कर देखा, फिर उसके सामने ही सोफे पर बैठ गई।

''अब बताओ''-वो अपने स्वर को सहज रखने की कोशिश करती हुई बोली-''क्या चाहते हो तुम मुझसे?''

''अरे, कमाल है? ऐसे व्यवहार किया जाता है घर आए मेहमान के साथ? न कुछ चाय-कॉफी के लिए पूछना, न कोई खातिरदारी...?''

''तुम मेहमान नहीं हो।''

''अच्छा। तो क्या हूं मैं?''

''बेताल।''

अविनाश हंसा।

''मैंने क्या गलत कहा?''

‘‘तुम चाहती हो मैं तुम्हारी पीठ पर लदूं?’’

‘‘बकवास मत करो। और अब इस बात को खींचना बंद करो। साफ-साफ कहो कि तुम चाहते क्या हो?’’

‘‘तुम्हें बचाना चाहता हूं।’’

‘‘मुझे?’’

‘‘हां। डूबती नाव के साथ डूबना समझदारी नहीं होती।’’

‘‘और क्या सोचा है तुमने? किस तरह बचाओगे मुझे?’’

‘‘मैं नहीं बचाऊंगा।’’-अविनाश ने एक कागज रोशनी की ओर बढ़ा दिया-‘‘तुम खुद बचाओगी अपने आप को। अगर बचाना चाहती होगी तो। ऐसी कोई जबर्दस्ती नहीं है। असल में मैं तुम्हारे साथ बहुत दयानतदारी से पेश आ रहा हूं। पता नहीं क्यों पेश आ रहा हूं पर आ रहा हंू। आम तौर पर अपराधियों के साथ ऐसे पेश आना मेरी आदत के खिलाफ है। शायद तुम्हारी कमसिन जवानी पर तरस खाकर ही मैं तुम्हें ये ऑफर दे रहा हूं। लेकिन ऐसे ऑफर बार-बार नहीं मिलते। और ये लिमिटेड टाइम पीरियड वाला ऑफर है। सोचने का ज्यादा टाइम नहीं है तुम्हारे पास। जो फैसला करना हो, जल्दी करना।’’

आरती ने एक ही सांस में कागज को पढ़ लिया।

‘‘और उसका क्या होगा?’’-फिर वो बोली।

‘‘तो अब तुम्हें उसे भी बचाना है?’’-अविनाश व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला।

आरती कुछ नहीं बोली। उसके चेहरे पर व्याकुलता छाई हुई थी।

‘‘ये ‘बाय वन-गेट वन फ्री’ वाला ऑफर नहीं है।’’-अविनाश शुष्क स्वर में बोला-‘‘तुम्हारे लिए मुफ्त की एडवाइस है-फिलहाल अपनी ही फिक्र करो। तुम्हारा अगला कदम तुम्हारे आने वाले समय को संवार भी सकता है और बिगाड़ भी। तो मेरी सलाह यही है कि बहुत सोच समझकर डिसाइड करना कि तुम्हें किसके साथ जाना है। अब तक जिस गलत रास्ते पर चलती रहीं, अगर उसी पर चलती रहना चाहती हो तो फिर भुगतने के लिए भी तैयार रहना।’’

‘‘नहीं।’’-आरती जल्दी से बोली-‘‘मैं तुम्हारी बात मानने के लिए तैयार हूं।’’

‘‘राइट डिसीजन। मैंने तुम्हें पहली ही नजर में देख कर जान लिया था कि तुम बेवकूफ लडक़ी नहीं हो। अब मुझे उस रात की पूरी दास्तान सुनाओ।’’

आरती ने किसी टेप-रिकॉर्डर की तरह बजना शुरू कर दिया।

चण्डीगढ़ से वापस लौटते समय अविनाश के चेहरे पर संतोष की झलक थी।

वो अब केस की तह तक पहुंच चुका था।

रोशनी ने उसे जो जानकारी दी थी, वो सचमुच इस केस को हल करने में बेहद अहम साबित हुई थी।

इसके अलावा शालिनी द्वारा दिए गए क्लू से भी काफी मदद मिली थी।

नैनीताल में हंगामा मचाने वाला गिरिराज वर्मा हत्याकाण्ड-जिसे पुलिस भी नहीं हल कर पाई थी-उसने सॉल्व कर दिया था।

अब उसकी मंजिल पहले दिल्ली, फिर वहां से सीधे नैनीताल ही थी।

मोहित को होश आया तो उसने अपने आप को एक वैन की पिछली सीट पर लेटा हुआ पाया।

बेहोश होने से पहले आखिरी बार उसने जिस बॉडी बिल्डर जैसे लगने वाले शख्स को देखा था, जिसने उसे बेहोश किया था, वो उसके सामने ही बैठा था।

मोहित तेजी से उठकर बैठ गया हालांकि एकदम से उठकर बैठने पर उसे चक्कर-सा आया।

उसके सामने बैठे उस शख्स ने ही हाथ बढ़ाकर मोहित का कंधा पकडक़र उसे सहारा दिया।

''कईसा है?''-फिर वो दांत निकालकर बोला। मोहित को गुस्से की तीव्र लहर की अनुभव हुआ। वो वही सवाल पूछ रहा था, जिसे पूछने के बाद उसने मोहित को बेहोश कर दिया था।

''कौन हो तुम?''-मोहित सख्त स्वर में बोला-''इस तरह से मुझे बेहोश करने का क्या मतलब?''

जवाब देने की जगह उसने एक लिफाफा मोहित की ओर बढ़ा दिया।

''ये क्या है?''-मोहित हैरानी से बोला।

''तेरे स्वर्गवासी पिता की अमानत। जो वो तुझ तक पहुंचाना चाहते थे। इसको रखने की जिम्मेदारी मुझे दी थी उन्होंने।''

मोहित ने उलझनपूर्ण भाव से लिफाफे को अलट-पलटकर देखा। ऐसा लग रहा था उसमें कागज के अलावा कोई चीज भी रखी हुई थी।

''हम कहां हैं?''-फिर मोहित ने खिडक़ी से बाहर झांकते हुए कहा।

''दिल्ली में।''

मोहित को हैरानी हुई।

''तुम मुझे यहां लेकर क्यों आए हो? तुम आखिर हो कौन?''

''बाप से बढक़र कुछ नहीं होता।''-जवाब देने की जगह उसने कहा-''जब यहां तेरे बाप के साथ इतना बड़ा घटना हो गया था तो विदेश में मलांघता क्यों घूम रहा था तू?''

मोहित को हैरानी हुई। वो प्रश्न उसने इतने अधिकार से पूछा था, जैसे मोहित का कोई सम्बन्धी हो।

“मुझे कई दिनों तक पता ही नहीं चल पाया।”-मोहित बोला-“बाद में जब पता चला, तब तक यहां अंतिम क्रिया वगैरह सब हो चुके थे। मैंने फिर हमेशा हमेशा के लिए भारत लौटने का इरादा कर लिया था। इसलिए अमेरिका में कंपनी की जॉब छोडऩे से लेकर अन्य फॉर्मेलिटीज वगैरह पूरी करने में टाइम लग गया।”

फिर मोहित ने लिफाफा खोलकर देखा। उसमें एक कागज था, जिस पर दिल्ली के एक बैंक का नाम लिखा था और नीचे लिखा था-लॉकर नम्बर 348 पासवर्ड-बर्थ डेट।

मोहित ने लिफाफे को झटका दिया तो अंदर से एक चाभी फिसलती हुई उसके हाथ में आ गई। चाभी लॉक में लगने वाले हिस्से की ओर से किसी कार की चाभी जैसी लग रही थी, वहीं उसका पकडऩे वाला हिस्सा थोड़ा ज्यादा मोटा था और उस पर बड़े-बड़े अंग्रेजी लैटर्स में एक नम्बर भी गुदा हुआ था-

348

“तुम्हें क्या लगा”-वो आदमी बोला-“तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए कुछ नहीं छोड़ा?”

मोहित उस बैंक के सामने खड़ा था, जिसका पता उसे उस लिफाफे में मिला था, जो उस आदमी के अनुसार उसके पिता उसके लिए छोड़ कर गए थे।

और उन्होंने उस बैंक में मोहित के लिए एक लॉकर भी लिया था।

क्या था उस लॉकर में?

वो एक नया लेकिन कई तरह की फैसिलीटीज वाला बड़ा बैंक था, जिसमें ग्राहकों के लिए प्राइवेट लॉकर्स की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाती थी।

मोहित वहां उसी आदमी के साथ वैन में आया था, जिसने कहने को उसका अपहरण किया था लेकिन अब मोहित को वो कहीं से भी खतरनाक नहीं लग रहा था।

मोहित कुछ क्षण तक उलझनपूर्ण भाव से बैंक की ओर देखता रहा। फिर उसने पलटकर वैन की ओर देखा।

वैन की ड्राइविंग सीट पर बैठे उस आदमी ने मोहित को सिर हिला कर बैंक के अंदर जाने का इशारा किया।

मोहित ने एक गहरी सांस ली और बैंक की ओर बढ़ गया। लिफाफे से निकली वो फैन्सी सी दिखने वाली चाभी उसकी जेब में थी।

उसने बैंक के मुख्यद्वार से अंदर प्रवेश किया। एक शानदार कॉरीडोर पार करने के बाद वो एक हॉल में पहुंचा, जहां कई काउंटर बने हुए थे। कुछ लोग काउंटरों के आगे खड़े थे। दो-तीन सिक्योरिटी गार्ड भी तैनात थे, जो पैनी निगाहों से हॉल में नजर रख रहे थे। हॉल काफी बढ़ा था और काउंटरों के अलावा एक तरफ 3 दरवाजे भी नजर आ रहे थे, जिनमें से एक के ऊपर लॉकर्स लिखा हुआ था।

मोहित ने आगे बढक़र उस ऑफिस में प्रवेश में किया।

अंदर एक टेबल रखी थी, जिसके पीछे एक सूट-बूटधारी शख्स कुछ फाइलों में व्यस्त दिखाई दिया।सामने टेबल पर एक नेमप्लेट जैसी रखी हुई थी, जिस पर लॉकर मैनेजर अंकित था।

उसने सिर उठाकर मोहित की ओर देखा।

''यस?''-उसने मोहित से पूछा।

मोहित उसके पास पहुंचा और सामने रखी चेयर पर बैठते हुए कहा-''मुझे लॉकर नम्बर 348 खोलना है।''

''348?''

‘‘जी।’’

‘‘एक मिनट, सर।’’-उसने टेबल पर रखे कम्प्यूटर के कीबोर्ड पर उंगलियां दौड़ाईं, फिर मोहित से मुखातिब हुआ-‘‘आपका नाम?’’

‘‘मोहित वर्मा।’’

‘‘मैं आपका आईडी देख सकता हूं?’’

मोहित ने उसे अपना आईडी कार्ड दिखाया।

‘‘आपके पास पासवर्ड तो होगा?’’-आईडी कार्ड देखकर तसल्ली करने के बाद वो बोला।

‘‘जी हां। है।’’

‘‘बताइए।’’

‘‘आपको?’’

‘‘जी हां। मुझी को। और किसे?’’

मोहित को हैरानी हुई। उसने सोचा था कि पासवर्ड लॉकर खोलने के समय काम आएगा। यहां मैनेजर उससे सीधे ही पासवर्ड पूछ रहा था।

‘‘मैं पासवर्ड आपको कैसे बता सकता हूं?’’-फिर मोहित थोड़ा हिचकिचाहट के साथ बोला।

‘‘जी?’’

‘‘पासवर्ड तो सीक्रेट रखना चाहिए।’’

उसने अजीब सी निगाहों से मोहित की ओर देखा।

‘‘ओके।’’-फिर उसने बोलना शुरू किया-‘‘हमारे बैंक में लॉकर ईशू करने का एक प्रोसेस है। लॉकर सिर्फ उसी आदमी को खोलने दिया जाता है, जिसके नाम पर ईशू किया गया हो या फिर अधिकतम 2 नॉमिनीज को। इसके अलावा आपके पास लॉकर नम्बर, पासवर्ड और लॉकर की चाभी होनी चाहिए। हर लॉकर की अपनी चाभी है। पासवर्ड यहां पर बताना होता है, जो समझ लीजिए एक तरह से लॉकर का आईडी है। हम वो पासवर्ड सिस्टम में डालते हैं, तब वो लॉकर वॉल्ट में ओपन होता है। उसके बाद उसे आपको खोलने के लिए दिया जा सकता है लेकिन उसे खोलने के लिए आपके पास लॉकर की स्पेशल चाभी होनी चाहिए।’’

‘‘ओह।’’

‘‘जी। शायद आप पहली बार हमारे बैंक में आए हैं। खैर, लॉकर एक्सेस करने के लिए आपको पासवर्ड बताना होगा। आप हमारे यहां लॉकर एक्सेस करने की प्रोसेस पर एक बार फिर से नजर डाल लीजिए। शायद आपके जिन रिश्तेदार ने यहां लॉकर ईशू कराया था, उन्होंने आपको पूरी जानकारी नहीं दी।’’

लिफाफे में निकले कागज पर पासवर्ड की जगह बर्थडेट लिखा था। मोहित के पिता अक्सर सेफ, ई मेल आदि के पासवर्ड के तौर पर मोहित या मानसी की बर्थडेट का ही उपयोग करते थे। वो भी उल्टे क्रम में। लेकिन मोहित सिर्फ अंदाजा ही लगा सकता था कि उस लॉकर के लिए उसके पिता ने कौन सा पासवर्ड इस्तेमाल किया होगा।

लिफाफा उसके लिए छोड़ा गया था तो वो पासवर्ड उसकी बर्थडेट ही होनी चाहिए थी।

‘‘58915021’’-मोहित ने कहा।

मैनेजर ने सहमति में सिर हिलाया, फिर उसने की बोर्ड पर फिर उंगलियां दौड़ाईं।

कुछ देर तक वो स्क्रीन को देखता रहा।

फिर उसने मोहित के चेहरे पर नजर मारी।

‘‘सॉरी मिस्टर।’’-वो बोला-‘‘आपने गलत पासवर्ड बताया है।’’

शिट्।

वो अपनी जगह पर स्थिर बैठा मोहित की ओर देखता रहा।

‘‘लॉकर खोलने के लिए आपको चाभी की भी जरूरत होगी।’’-मैनेजर ने कहा।

‘‘चाभी मेरे पास है।’’-मोहित ने जेब से चाभी निकाल कर उसे दिखाई।

उसने एक नजर चाभी पर डाली, फिर वापस मोहित की ओर देखते हुए बोला-‘‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। लॉकर खोलना जरूरी नहीं है। आप चाहें तो लॉकर को केवल देखकर भी वापस भेज सकते हैं। लेकिन लॉकर तक पहुंचने के लिए आपको पासवर्ड बताना होगा।-फिर वो थोड़ा ठहरकर बोला-सही पासवर्ड।’’

‘‘एक मिनट।’’-मोहित बोला-‘‘शायद मैंने गलती से आपको दूसरा पासवर्ड बता दिया। लेट मी ट्राइ वन्स मोर।’’

‘‘श्योर। देयर्स नो रिस्ट्रीक्शन फॉर ट्राइंग टू रिमेम्बर।’’

‘‘48912012’’-मोहित ने मानसी की बर्थडेट उल्टे क्रम में बताई।

मैनेजर ने कीबोर्ड पर उंगलियां दौड़ाईं।

मोहित धडक़ते दिल से उसकी प्रतिक्रिया का इंतजार कर रहा था।

‘‘दैट्स इट।’’-फिर वो बोला-‘‘राइट पासवर्ड। लॉकर नम्बर 348 इज ओपन नाओ। ये लीजिए मिस्टर मोहित’’-उसने एक फॉर्म पर पैन से कुछ लिखा, फिर उसे मोहित की ओर बढ़ाते हुए बोला-‘‘इसमें अपने नाम, फोन नम्बर वगैरह की एंट्री कर दीजिए। मैं आपको लॉकर तक पहुंचाने की व्यवस्था करवाता हूं।’’

मोहित ने फॉर्म लिया। उस फॉर्म के ऊपर ‘लॉकर एक्सेस फॉर्म’ प्रिंट था। इसके अलावा भी इंग्लिश में बहुत कुछ लिखा था। एक जगह पर लॉकर नम्बर के आगे पेन से 348 लिखा था, जो कि जाहिर था कि अभी-अभी मैनेजर ने ही लिखा था।

कस्टमर की जानकारी के तौर पर नाम, मोबाइल नम्बर, आईडी नम्बर और साइन मांगा गया था।

मोहित ने फॉर्म फिलअप कर साइन कर दिया। इस दौरान मैनेजर ने टेबल पर रखे फोन से किसी को कॉल किया और फोन पर केवल इतना कहा-348-और फोन रख दिया।

थोड़ी ही देर में सूट पहने एक व्यक्ति कमरे में पहुंचा।

‘‘आप इनके साथ जाइए।’’-मैनेजर ने मोहित से कहा।

मोहित उस आदमी के साथ हो लिया। वो मोहित को लेकर ऑफिस से बाहर निकला और उस हॉल से निकलकर एक दूसरा गलियारा पार करते हुए वे लोग लिफ्ट तक पहुंचे। लिफ्ट से वो लोग तीसरी मंजिल पर पहुंचे, जहां उस व्यक्ति ने मोहित को ले जाकर एक कमरे में बिठाया, जिसके बाहर एक हथियारबंद गार्ड खड़ा था।

उस कमरे में एक बड़ा सोफा रखा था और एक टेबल पर एक बड़ा फैन्सी सा लगने वाला बड़े साइज का बॉक्स रखा था, जिसके ऊपर 348 लिखा हुआ था।

''आपके पास जो चाभी है''-वो आदमी बोला-''आप उससे इसे खोल सकते हैं। आधा घंटा, एक घंटा आप जितना टाइम चाहे यहां बिता सकते हैं। अगर चाहेंगें तो टाइम बढ़ाया भी जा सकता है।''

''मेरे ख्याल से इतनी देर नहीं लगेगी।''-मोहित बोला।

''ये बेसिक रूल्स हैं, सर, जो हम हर कस्टमर को बताते हैं।''

''ओके।''-मोहित ने सिर हिलाया।

उसने मुस्कुराकर मोहित की ओर देखा और कमरे से बाहर निकल गया।

मोहित ने दरवाजा अंदर से बंद कर लिया। फिर उसने वो चाभी निकाली और लॉकर को खोला।

लॉकर के अंदर एक डायरी रखी थी, एक फाइल थी और...

और बाकी पूरा लॉकर नोटों की गड्डियों से ठसाठस भरा हुआ था।

मोहित ने नोटों को हाथ भी नहीं लगाया। उसने फाइल निकाली। उसमें कुछ कागज, कुछ अखबार की कटिंग्स, कुछ तस्वीरें वगैरह थे, जिन्हें देखकर मोहित को आश्चर्य का तेज झटका लगा।

जैसे-जैसे वो फाइल में रखे कागजों को पढ़ रहा था, तस्वीरों को देख रहा था, वैसे-वैसे सारी तस्वीर उसकी आंखों के सामने साफ होती जा रही थी।

फिर उसने वो डायरी उठाई।

उसने डायरी पढऩा शुरू किया तो आखिरी पेज पर ही जाकर उसे होश आया।

डायरी खत्म होने के बाद उसकी आंखों में आंसू थे, वहीं चेहरे पर पत्थर जैसी सख्ती छाई थी।

फाइल और डायरी निकाल कर उसने अपने कोट की जेब में रखे और लॉकर को पूर्ववत् बंद कर दिया।

लॉकर को वापस जमा करवाकर वो जब बैंक से बाहर निकला तो उसे अपना पूरा शरीर आक्रोश की आग में जलता महसूस हो रहा था।

थोड़ी ही दूर पर पार्किंग में वही वैन खड़ी थी, जिसमें वो रीछनुमा शख्स उसे लेकर वहां आया था।

वो शख्स वैन की ड्राइविंग सीट पर बैठा जैसे उतनी देर से मोहित का ही इंतजार कर रहा था। मोहित को आते देखकर उसने वैन स्टार्ट की और बैंक के सामने ले आया।

मोहित ड्राइविंग सीट पर उसी के बगल में बैठ गया।

उस शख्स ने चुपचाप वैन आगे बढ़ा दी।

‘‘आपने ये सब मुझे पहले क्यों नहीं बताया?’’-मोहित बोला।

‘‘मुझे तुम तक बस ये लिफाफा पहुंचाने के लिए कहा गया था।’’-वो शांत स्वर में बोला-‘‘मुझे सही वक्त का इंतजार था। आज तुम मेरे हत्थे चढ़े।’’

मोहित कुछ देर तक सोचता रहा, फिर उसने अपनी जेब से वो डायरी निकाली, जो उसे लॉकर से मिली थी और उस शख्स की ओर बढ़ा दी।

‘‘आपको मेरे लिए एक काम करना होगा।’’-मोहित बोला।

‘‘क्या?’’

‘इस डायरी को क्राइम इन्वेस्टिगेशंस के ऑफिस में प्राइवेट डिटेक्टिव अविनाश मेहरा तक पहुंचा दीजिए। उसका ऑफिस यहीं यमुना विहार में है।’’

‘‘तुम खुद उसे क्यों नहीं दे सकते?’’-उसने मोहित के चेहरे पर नजर डाली।

‘‘नहीं। मुझे दूसरे काम से जाना है। ये काम आपको ही करना होगा।’’

उसने मोहित की ओर देखा, फिर उससे डायरी ले ली।

‘‘और तुम कहां जा रहे हो?’’-फिर वो मोहित से बोला।

‘‘नैनीताल।’’-मोहित बोला-‘‘अविनाश को ये डायरी देने के बाद आप भी वहीं आ जाइयेगा। फिर हमारी मुलाकात वहीं होगी।’’

उसने सहमति में सिर हिलाया।

फिर मोहित वहीं थोड़ी दूर पर उतर गया, जिससे नैनीताल जाने के लिए साधन तलाश कर सके।

उस शख्स ने वैन मोहित द्वारा बताए गए क्राइम इन्वेस्टिगेशंस के पते पर मोड़ दी।

अविनाश भारद्वाज नैनीताल रवाना होने की तैयारी में था।

केस लगभग सुलझ चुका था।

अब बस पर्दा उठाना बाकी था।

और वो पर्दा सबकी मौजूदगी में उठाना चाहता था।

जिसके लिए वो नैनीताल रवाना होने वाला था।

तभी उसे दरवाजे पर आहट सुनाई दी। अविनाश की नजर दरवाजे की ओर घूम गई लेकिन जिस शख्स ने दरवाजा से अंदर कदम रखा, उसके वहां होने की उम्मीद अविनाश को बिल्कुल भी नहीं थी।

उसे सामने देख कर अविनाश को झटका-सा लगा।

वो एक 6 फीट 3 इंच का विशालकाय आदमी था, जिसकी डील-डौल देखकर किसी गोरिल्ले की याद आती थी।

अविनाश उस शख्स से पहले कभी आमने-सामने तो नहीं मिला था लेकिन हालिया केस की जांच के दौरान अविनाश को उसके बारे में बड़ी विस्फोटक जानकारी हासिल हुई थी, जिसके चलते उसके इस प्रकार धड़धड़ाते हुए अपने ऑफिस में घुसे चले आने से अविनाश बुरी तरह हैरान था।

''कईसा है?''-उस शख्स ने अविनाश की ओर देखकर दांत निकाले।

''फर्स्ट क्लास।''-अविनाश के मुंह से अपने-आप ही निकल गया-''तुम सुनाओ?''

वो हंसा-''जानता है मेरे को?''

''बिल्कुल। और सच तो ये है कि तुम्हें यहां देखकर हैरान हूं।''

''मैं तेरा ज्यादा टाइम नहीं लूंगा''-उसने मोहित के सामने मेज पर एक डायरी डालते हुए कहा-''मुझे मोहित ने तुझे ये देने के लिए भेजा है।''

अविनाश ने डायरी उठाई, उसे उलट-पलटकर देखा, फिर बोला-''बस इतना ही?''

''बस इतना ही।''

''क्या है इस डायरी में?''

''पढऩे पर पता चलेगा न भाई।''

कह कर वो घूम कर जाने लगा लेकिन अविनाश ने उसे पीछे से टोका-''एक मिनट।''

उसके कदम ठिठके। वो वापस अविनाश की ओर घूमा-‘‘क्या है?’’

‘‘मोहित कहां है?’’-अविनाश व्यग्र स्वर में बोला।

‘‘मुझे क्या पता?’’

‘अभी तुमने कहा कि ये डायरी मुझे देने के लिए तुमसे मोहित ने कहा। क्या तुम्हारी मोहित से फोन पर बात हुई थी?’’

‘‘नहीं। लेकिन वो मुझे बताकर नहीं गया कि वो कहां जा रहा है। मेरे ख्याल से वो नैनीताल ही गया है। और कहां जाएगा?’’

‘‘पांच मिनट रूको।’’-अविनाश ने आग्रहपूर्ण स्वर में कहा।

फिर अविनाश ने वो डायरी उठा ली और उसे जल्दी-जल्दी पढऩे लगा। जैसे-जैसे वो डायरी पढ़ता जा रहा था, उसके चेहरे का रंग बदलता जा रहा था।

वो शख्स अपनी जगह पर खड़ा अविनाश की ओर देखता रहा।

डायरी खत्म करने के बाद अविनाश उठ खड़ा हुआ और अपने मोबाइल पर मोहित का नम्बर मिलाने लगा। नम्बर मिलाते-मिलाते उसने डायरी लेकर आने वाले उस शख्स की ओर देखा और बोला-‘‘मोहित को पता चल गया है। वो उसे जान से मार डालेगा।’’

‘‘ठीक तो करेगा।’’-उस शख्स ने लापरवाहीपूर्वक कंधे उचका दिए।

अविनाश ने एक बार उसे घूरकर देखा और फिर मोबाइल कान से लगा लिया। दूसरी ओर से जैसे ही मोहित ने कॉल रिसीव की, राज तेजी के साथ बोलने लगा-‘‘मोहित, मेरी बात ध्यान से सुनो...।’’

मोहित को कन्विन्स करने में राज को अच्छी-खासी मेहनत लग गई। फिर उसने इंस्पेक्टर वैभव को कॉल की।

‘‘हैलो।’’-उधर से वैभव का गम्भीर स्वर सुनाई दिया।

‘‘हैलो, इंस्पेक्टर साहब।’’-अविनाश बोला-‘‘आपको गिरिराज वर्मा के कातिल को गिरफ्तार करना है?’’

‘‘आपको सनाया गौतम का पता चल गया?’’-उधर से वैभव हैरानी से बोला।

‘‘मुझे सब कुछ पता चल गया है।’’

‘‘कैसे?’’

‘‘मेरे पास जो जादू की छड़ी है, उसे घुमाने से।’’

‘‘व्हाट नॉनसेंस?’’

‘‘जल्द ही आपको इस नॉनसेंस में सेंस ही सेंस लगने लगेगी, इंस्पेक्टर साहब। मैं गिरिराज वर्मा के कातिल को आपको तश्तरी में रखकर वरक लगा कर पेश कर दूंगा लेकिन उसके पहले आपको मेरा एक काम करना होगा।’’

‘‘कैसा काम?’’

‘‘मैं चाहता हूं आप इन लोगों को लेकर’’-उसने इंस्पेक्टर को कुछ नाम गिनाए-‘शाम 7 बजे मुझे मोहित के घर पर मिलिए। वहीं पर मैं हत्यारे का कच्चा चिट्ठा खोलूंगा।’’

‘‘क्यों? फोन पर क्यों नहीं बता सकते? आप मुझे अभी बता दीजिये। मैं उसे अभी...।’’

‘‘नहीं। फोन पर नहीं। सब वहीं मिलो।’’-अविनाश बोला-‘‘वहीं मैं इस राज से पर्दा उठाऊंगा।-कहने के साथ ही अविनाश ने कॉल डिस्कनेक्ट कर दी।’’

कमरे में 7 लोग थे।

अविनाश, मोहित, मानसी, अरविंद, शालिनी, इंस्पेक्टर वैभव खुद और किसी समय गिरिराज वर्मा का सेक्रेटरी रहा रजत महानंद।

वे सब लोग नैनीताल में अरविन्द और मानसी के घर पर ही एकत्र हुए थे।

ये देखकर अविनाश को सचमुच काफी संतुष्टि हुई कि इंस्पेक्टर ने उसके बताए सभी लोगों को वहां बुला लिया था।

बाहर बारिश हो रही थी, जिसकी आवाज घर के अंदर भी आ रही थी।

‘‘तो दोस्तों’’-अविनाश ने कहना शुरू किया-‘‘मैंने आप सबको यहां ये बताने के लिए इकट्ठा किया है कि आखिरकार वकील साहब के मर्डर केस पर से पर्दा उठ चुका है। उनके हत्यारे का पता चल गया है...।’’

‘‘हत्यारा’’-मानसी बोली-‘‘या हत्यारी?’’

उसने मानसी को आंखों ही आंखों में आश्वासन दिया, फिर बोला-‘‘गिरिराज वर्मा का कातिल ऐसा शख्स था, जो उनका बेहद करीबी था, जो कई सालों से उनके साथ था, जिस पर वे बेहद भरोसा करते थे। लेकिन उस शख्स ने उनके साथ ऐसा विश्वासघात किया, जिसके बारे में वे सोच तक नहीं सकते थे।’’

‘‘आपके कहने से तो लगता है’’-इंस्पेक्टर वैभव गम्भीर स्वर में बोला-‘‘कि वो शख्स सनाया गौतम नहीं है?’’

‘‘ऐसा तो कभी साबित नहीं हो पाया था कि सनाया गौतम ही गिरिराज वर्मा की कातिल है।’’

‘‘यही तो मैं पूछ रहा हूं।’’

‘‘और मैं बता रहा हूं। सनाया गौतम के गिरिराज वर्मा के साथ रहने का पता चला, साल भर तक वे दुनिया की नजरों से छिपकर वहां उसके साथ रहते रहे, समाज से भी रिश्ता करीब-करीब तोड़ लिया, फिर एक रात रहस्यमयी ढंग से उनकी हत्या हो गई, जिसे आत्महत्या का रूप देने का पूरा प्रयास किया गया था और वो सनाया गौतम भी उतने ही रहस्यमयी तरीके से गायब हो गई, जितने रहस्यमयी ढंग से वो उनकी जिंदगी में आई थी। घर में लगे सीसीटीवी फुटेज में एक लडक़ी 45 लाख रूपये की चोरी करते हुए भी दिखी लेकिन उसका भी चेहरा नहीं दिख पाने के कारण हम नहीं कह सकते कि वो सनाया गौतम थी या नहीं? वैसे भी हम सनाया गौतम को नहीं पहचानते। हमारे पास उसकी कोई तस्वीर नहीं मौजूद, सिवाय उस ड्राइंग के, जो आसपास के लोगों द्वारा बताए गए हुलिए के

आधार पर बनाई गई है हालांकि उसे भी बिल्कुल सही नहीं माना जा सकता क्योंकि उन लोगों ने भी बहुत समय पहले कभी-कभार सनाया की एक झलक ही देखी थी, वो भी बहुत पहले। और ये भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने जिस लडक़ी को गिरिराज वर्मा के घर में देखा था,वो सनाया गौतम ही थी।''

''आप कहना क्या चाहते हैं?''

''मैं कहना चाहता हूं कि पुख्ता तौर पर ये कभी साबित नहीं हो पाया कि सनाया गौतम ने ही गिरिराज वर्मा की हत्या की थी। इस मामले में वो एक बेहद रहस्यमयी किरदार जरूर बनी रही लेकिन उसके हत्यारी होने का प्रमाण कभी नहीं मिल पाया।''

''इतनी रहस्यमयी''-शालिनी ने कहा-''कि सभी लोगों ने सहज ही मान लिया कि उसी ने गिरिराज वर्मा की हत्या की होगी।''

''इसीलिए कहा गया है''-महानंद बोला-''बद अच्छा बदनाम बुरा।''

''इसका क्या मतलब हुआ?''-इंस्पेक्टर बोला-''कि 'बद' कोई और था? सनाया गौतम केवल 'बदनाम' थी?''

''धैर्य रखिए, इंस्पेक्टर साहब, अब आप यहां हमारी महफिल में आए हैं, तो सारी सच्चाई आपको पता चलेगी ही। बल्कि सबको पता चलेगी। मेरी आपसे केवल इतनी रिक्वेस्ट है कि सब्र से काम लीजिए। जिससे मैं अपनी बात पूरी तफसील से कह सकूं। तभी मैं इस अचम्भित कर देने वाले घटनाक्रम के एक-एक पहलू को उजागर कर पाऊंगा। सारे रहस्यों पर से पर्दा खुलेगा। बमय सबूत आज आपको सनाया गौतम से जुड़े हर उस सवाल का जवाब मिलेगा, जिसे जानने के लिए पिछले तीन महीनों से नैनीताल की पुलिस ने जमीन-आसमान एक करने में कोई कसर नहीं छोड़ी होगी।''

इंस्पेक्टर ने गहरी सांस ली। प्राइवेट डिटेक्टिव 'रैजल-डैजल' का भरपूर शौकीन था।

''इस पूरे मामले में एक शख्सियत ऐसी थी, जिस पर सारे जुर्म आयद हो रहे थे। जिसे सबसे शेडी कैरेक्टर बताया जा रहा था। जिसके बारे में जो भी सुनता था, यही सोचता था कि इससे ज्यादा बुरी कोई और हो ही नहीं सकती।''

''बुरी? यानी घूम फिरकर आप फिर सनाया गौतम पर आ गए?''

''अगर मैं लैंगिक शब्द का प्रयोग नहीं भी करता तो भी आपको समझ ही जाना था।''

इंस्पेक्टर ने सहमति में सिर हिलाया।

‘‘सनाया गौतम का किरदार ऐसा था कि हर कोई उस पर शक करता। बल्कि वो तो इतनी ज्यादा शापित थी कि जिसके साथ उसका नाम जुड़ा, वो भी बदनाम हो गया। उस पर भी लोगों ने उंगलियां उठाईं। बिना उसके कई वर्षों के मजबूत कैरेक्टर की परवाह किए। लोगों ने ऐसे सहज ही उसे अपने उच्च आदर्शों से गिरा हुआ मान लिया, जैसे वो एक मामूली बात हो। जैसे वो आदमी इतने वर्षो से जो अच्छा बना रहा था, वो भी केवल एक नाटक ही था, एक दिखावा, जिससे वो बुढ़ापे में ऐश कर सके।’’

‘‘गिरिराज वर्मा।’’

‘‘एग्जैक्टली।’’

‘‘तो तुम कहना चाहते हो’’-इंस्पेक्टर बोला-‘‘कि ऐसा नहीं था?’’

‘‘बिल्कुल नहीं था।’’-अविनाश दृढ़ स्वर में बोला।

‘‘तो कैसा था? तुम ही बता दो। क्यों गिरिराज वर्मा दुनिया की नजरों से छुप कर एक जवान लडक़ी के साथ घर में अकेले रहता था? क्यों उसने उस लडक़ी के बारे में पूरी दुनिया से छिपाया, यहां तक कि अपने परिवार वालों से भी।’’

‘‘सब्र, इंस्पेक्टर साहब, सब्र। मुझे अपनी बात समझाकर, विस्तार से, मेरे तरीके से कहने की इजाजत दीजिए।’’

‘‘ठीक है।’’-इंस्पेक्टर धैर्यपूर्वक बोला-‘‘तो फिर बताइए। अपनी फुर्सत से अपने हिसाब से ही बताइए।’’

‘‘थैंक्स।’’-उसने नाटकीय ढंग से इंस्पेक्टर की ओर सिर नवाया, फिर कक्ष में उपस्थित सभी लोगों से मुखातिब हुआ-‘‘तो दोस्तों, मैं एक वाक्य में, एक सीधे-सादे वाक्य में सनाया गौतम की निर्दोषिता सिद्ध करना चाहूंगा। उसके और गिरिराज वर्मा के बारे में लोगों ने जो समझा, गलत समझा। उसके और गिरिराज वर्मा के बीच में कभी ऐसा कुछ नहीं था-हो भी नहीं सकता था-जैसे उन पर आरोप लगाए गए थे। और न ही वो गिरिराज वर्मा का खून ही कर सकती थी।’’

‘‘क्यों नहीं कर सकती थी?’’-इंस्पेक्टर ने पूछा।

‘‘क्योंकि वो उनकी बेटी थी।’’

कमरे में सन्नाटा छा गया। इंस्पेक्टर, मानसी, अरविंद और महानंद हैरानी से अविनाश की ओर देख रहे थे जबकि मोहित और शालिनी शान्त थे। ऐसा लग रहा था, जैसे अविनाश जो कहने वाला था, उस बात को वो पहले ही जानता था।

''व्हाट नॉनसेंस?''-मानसी गुस्से से बोली-''क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? अब ये क्या बकवास है।''

''इसका कोई तुक नहीं बनता।''-अरविंद भी नाराजगीपूर्ण स्वर में बोला-''हम यहां तुम्हारी गप्प सुन कर अपना टाइम बर्बाद करने नहीं आए हैं। पहले ही इस केस पर तुमने कोई अच्छा काम नहीं किया। काम करने का नाटक करते रहे। और अब मनगढ़ंत कहानी गढ़ के ये जताने की कोशिश कर रहे हो कि तुमने कोई तीर मार लिया है...।''

''मानसी जी, सक्सेना साहब, प्लीज धैर्य रखिए। यहां कानून को मेरी बात सुनने से कोई ऐतराज नहीं है और आप लोग कूद कर नतीजे पर पहुंचे जा रहे हैं। विश्वास रखिए, मेरी बात खत्म होने के बाद आप इसे गप्प नहीं कह पाएंगें क्योंकि जो मैंने अब तक कहा है और जो आगे कहना वाला हूं, उसका एक-एक शब्द सच है और मैं इसे आपके सामने साबित भी करके दिखाऊंगा।''

अरविंद ने फिर विरोध करने के लिए मुंह खोला लेकिन इंस्पेक्टर ने उसे शांत रहने का इशारा किया तो उसने अनिच्छापूर्वक होंठ भींच लिए।

''सनाया गौतम वो लडक़ी थी''-अविनाश ने कहना जारी रखा-''जिसने बचपन में ही अपने माता-पिता को खो दिया था...।''

''क्या बकवास है।''-अरविंद गुस्से से बोला-''अभी तुम कह रहे थे वो अंकल की बेटी थी और अब अपने ही मुंह से कह रहे हो कि उसने बचपन में ही अपने माता-पिता को खो दिया। तुमने कोई नशा-वशा कर रखा है क्या?''

''उसे अपनी बात कहने दीजिए, वकील साहब।''-वैभव बोला।

''गिरिराज वर्मा के कातिल का पर्दाफाश करने से पहले जरूरी है कि मैं आप सबके सामने उससे जुड़ी एक दूसरी-लेकिन बेहद महत्त्वपूर्ण कहानी पेश करूं।''-अविनाश ने कहा-''उस बदनसीब सनाया गौतम की कहानी, जिसे सारी जिन्दगी दुख और बदनामी के सिवा कुछ नहीं मिला। उसके बारे में आपको बताना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि तभी आपको गिरिराज वर्मा की हत्या की असल वजह का पता चल सकेगा और आप उसे सही तरीके से समझ भी सकेंगें, महसूस भी कर सकेंगें।''

इस बार किसी ने अविनाश की बात पर कोई आपत्ति नहीं जताई।

‘‘ये कहानी शुरू होती है आज से करीब 18 साल पहले बिहार के रक्सौल के एक छोटे से गांव अमृतपुर से, जहां एक छोटा सा लेकिन सुखी परिवार रहता था। दिनेश गौतम और उसकी पत्नी अंजली का परिवार। उनकी एक चार साल की मासूम बेटी थी। दिनेश गांव के स्कूल में शिक्षक का काम करता था। उनके दिन हंसी-खुशी के साथ गुजर रहे थे। जब तक उनके परिवार की खुशियों को किसी की बुरी नजर नहीं लग गई। दिनेश का गांव के कुछ दबंगों के साथ विवाद हो गया। उन दबंगों पर गांव के एक निचले गरीब तबके की लडक़ी के शारीरिक शोषण का आरोप था, जिसमें दिनेश ने उस लडक़ी को न्याय दिलाने की ठानी थी। वो गांव का इकलौता शख्स था, जो उस लडक़ी के साथ पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने थाने गया था। उन दबंगों के आतंक से पूरा गांव त्रस्त था और दिनेश की गलती सिर्फ इतनी थी कि वो उनसे डरा नहीं। उसने सही को सही और गलत को गलत कहा। जिसका भयानक परिणाम उसे भुगतना पड़ा।’’

‘‘क्या?’’-वैभव स्तब्ध स्वर में बोला।

‘‘उन दबंगों ने, जो कि पांच लोग थे, दिनेश और उसकी पत्नी के घर में घुसकर उनका गला काट कर नृशंसतापूर्वक उनकी हत्या कर दी। ऐसा करके वे अपना बदला तो ले ही रहे थे-बदला सिर्फ इस बात का कि दिनेश ने उनके खिलाफ आवाज उठाई थी-साथ ही गांव वालों पर भी अपने आतंक की हुकूमत को और भी ज्यादा मजबूत कर रहे थे क्योंकि वो जानते थे कि दिनेश और उसकी पत्नी की उस प्रकार निर्ममतापूर्वक हत्या करने के बाद गांव के किसी और व्यक्ति की उनके खिलाफ आगे आने की हिम्मत नहीं पड़ेगी।’’

‘‘फिर क्या हुआ?’’-महानंद बोला।

‘‘उस घटना में दिनेश और अंजली की चार वर्षीय मासूम बच्ची सिर्फ इसलिए बच सकी क्योंकि उसकी मां ने अपनी बेटी को बचाने के लिए उसे घर के पीछे स्थित गाय बांधने की जगह में भूसे के ढेर में छिपा दिया। कई घंटों तक वो बच्ची उसी भूसे के ढेर में छिपी रही क्योंकि मां ने उसे सख्ती से मना किया था कि वो उसमें से तभी निकले, जब वो उसे लेने के लिए वापस आए। लेकिन बेचारी मां अपनी बच्ची को लेने कभी वापस नहीं आ सकी। कैसे आती? वो तो इस दुनिया से ही जा चुकी थी।’’

‘‘उस बच्ची का नाम सनाया था?’’-वैभव गम्भीर स्वर में बोला।

‘‘दैट्स राइट।’’

‘‘फिर बच्ची का क्या हुआ?’’

‘‘बाद में घटना की जांच करने पहुंची पुलिस जब घर के आसपास की तलाशी लेते हुए भूसे के ढेर के पास पहुंची, तब उन्हें बच्ची के रोने की आवाज सुनाई दी। सनाया को भूसे के ढेर

से निकाल कर ले जाया गया। उसे शायद किसी अनाथाश्रम ले जाया जाता लेकिन उसका एक रिश्तेदार, उसका मामा देवराज सिंह आगे आया। पुलिस ने बच्ची को उसके संरक्षण में सौंप दिया।''

''फिर?''

''लेकिन उसके मामा देवराज के इरादे की उस वक्त पुलिस को भनक नहीं लग सकी। उसने कसम खाई थी कि वो अपनी बहन और जीजा के हत्यारों से बदला लेकर रहेगा। उसके बाद के कई दिन गांव में मौत का खूनी खेल चला। देवराज ने अपनी बहन व जीजा की हत्या करने वाले उन दबंगों के घर में रात में जा-जा नंगे हाथों से उनका गला घोंट कर उनकी हत्या कर दी। देवराज इस मामले में बहुत वहशी साबित हुआ जबकि पुलिस के अनुसार ही उसका पिछला कोई अपराधिक रिकॉर्ड नहीं था। उससे पहले तक वो एक शांत प्रवृत्ति का इंसान था, जो कभी किसी से मारपीट तो दूर, ऊंची आवाज में बात तक नहीं करता था। उसी देवराज ने उन पांचों दबंगों की हत्या एक ही तरीके से की। आधी रात को वो उनमें से एक के घर में जा घुसता और उसका गला घोंट कर उसे मार आता। उन दिनों देवराज का आतंक इतना ज्यादा हो गया था कि उस इलाके के लोग उसके नाम से कांपने लगे थे। उसकी दहशत इतनी ज्यादा थी कि जब देवराज की बहन और जीजा के हत्यारों में से आखिरी शख्स जिंदा बचा तो पुलिस द्वारा उसे कड़ी सुरक्षा मुहैया कराई गई। कई दिनों तक पुलिस उसके घर पर पहरा देती रही, जिससे कहीं देवराज आकर उसका काम-तमाम न कर जाए। पुलिस की कड़ी सुरक्षा के बाद भी वो आरोपी हर रात भय के साए में जीता रहा। कहते हैं कि वो पागल-सा हो गया था। वो रात में क्या, दिन में भी डरा-डरा रहता था। सोते-सोते चीख मार कर उठ बैठता था। कहता था कि कोई उसका गला दबा रहा है। पूरे गांव ने उन पापियों को अपने किए का दण्ड भुगतते देखा लेकिन सबसे ज्यादा दुर्गत आखिरी वाले की ही हुई। उसे हर रोज मौत आई। आखिर उसने अपने चारों साथियों की लाशें अपनी आंखों से देखी थीं। आखिर पुलिस भी कब तक सुरक्षा देती? करीब डेढ़ महीने बाद जब पुलिस ने उसे सुरक्षित मान कर, ये मान कर कि अब उस पर हमला नहीं होने वाला था, सुरक्षा हटा ली, उस के बाद उस आरोपी को भी अगली सुबह का सूरज देखना नसीब नहीं हुआ। आधी रात को देवराज उसके घर में घुसा और उसके चारों साथियों की तरह ही उसका भी गला घोंट कर उसे जहन्नुम पहुंचा दिया और अपनी बहन और जीजा का बदला पूरा किया।''

कमरे में सन्नाटा छाया हुआ था।

''कहते हैं कि उस पांचवे आरोपी को मारने के बाद देवराज वहीं बैठकर फूट-फूटकर रोने लगा था। उसके रोने की आवाज सुनकर ही घर के बाकी लोगों की नींद खुली और लोग

वहां पहुंचे। पुलिस ने देवराज को गिरफ्तार कर लिया। अब नन्हीं सनाया की देखभाल करने वाला कोई नहीं था।''

''फिर सनाया का क्या हुआ?''-वैभव ने पूछा।

''तब देवराज के बुलावे पर उसका पुराना दोस्त, जो कि एक वकील था, रक्सौल पहुंचा। उसने देवराज को आश्वासन दिया कि वो उसका केस लड़ेगा लेकिन देवराज ने इनकार कर दिया। उसने अपने दोस्त से विनती की कि वो उसकी भांजी सनाया को अपने संरक्षण में ले ले। उसका पालन-पोषण करे। जो कि जेल में होने के कारण अब देवराज खुद नहीं कर सकता था।''

''तो फिर उसके वकील दोस्त ने सनाया को गोद ले लिया?''

''वो सनाया को अपने घर ले गया। लेकिन सनाया से थोड़े ही बड़े उसके दो बच्चे पहले से थे। और उसकी पत्नी ने एक पराई बच्ची को घर में रखना कभी गवारा नहीं किया।''

''क्यों?''

''क्या पता क्यों? इसका सही सही जवाब तो वो दोनों ही दे सकते थे। लेकिन दोनों में से कोई अब दुनिया में नहीं है। सम्भवत: उस वकील की बीवी को शक था कि वो उसके पति की नाजायज संतान थी, जिसे उसका पति झूठी कहानी गढक़र परिवार में शामिल करना चाहता था। उसने ये कभी बर्दाश्त नहीं किया। पति-पत्नी में झगड़े होने लगे, जो कि पहले कभी नहीं हुआ करते थे और आखिरकार में पति को ही हार माननी पड़ी।''

''फिर सनाया का क्या हुआ?''

''वकील ने अपनी पत्नी से कहा कि वो उसे किसी अनाथाश्रम में छोड़ आएगा।''

''उसने वैसा किया?''

''नहीं। उसने अपनी पत्नी से झूठ बोला था। वो सनाया को अनाथाश्रम नहीं ले गया। उसने उस बच्ची का दाखिला एक बोर्डिंग स्कूल में करा दिया। फिर वो उसी तरह उसका ध्यान रखने लगा। सनाया बोर्डिंग स्कूल में रहकर ही पढऩे लगी। उसकी परवरिश इसी तरह हुई। बीच-बीच में वकील किसी तरह बहाना बना कर उससे मिलने जाता रहता था, उसके खैरियत से होने का पता करता रहता था। लेकिन सनाया के साथ एक और बड़ी दिक्कत थी।''

''क्या?''

''उसे एक मानसिक बीमारी थी।''

‘‘मानसिक बीमारी? कैसी मानसिक बीमारी?’’

‘‘उसे अगोराफोबिया था।’’

‘‘अगोराफोबिया? वो क्या होता है?’’

‘‘अगोराफोबिया एक मेंटल डिसऑर्डर है, जिसमें आदमी को भीड़ में जाने से डर लगता है। जहां चार-छ: आदमी होते हैं, उसे घबराहट होने लगती है। भीड़ में तो हालत ही खराब हो जाती है। ऐसी समस्या बहुत से लोगों को होती है। कुछ में कम, कुछ में ज्यादा। कम वाले बर्दाश्त कर लेते हैं। लेकिन जिन्हें ज्यादा होती है, उन्हें भीड़ में दौरा तक पड़ सकता है।’’

‘‘इतनी फैन्सी बीमारी सनाया को थी?’’

‘‘इसमें फैन्सी जैसा कुछ नहंीं है। किसी तरह के ट्रॉमेटिक एक्सपीरियेंस से गुजरे लोगों में इस तरह की बीमारियां आम चीज होती हैं। सनाया के साथ भी बचपन में बहुत भयानक घटना घटित हुई थी। ऐसे में उसका मानसिक रूप से डिस्टब्र्ड होना कोई बड़ी बात नहीं थी।’’

‘‘फिर?’’

‘‘अगोराफोबिक होने के कारण सनाया को बोर्डिंग स्कूल में काफी दिक्कत होती थी। वहां के टीचर्स वगैरह भी उससे परेशान रहते थे। बच्चे भी उससे दूर रहते थे। वो खुद बच्चों से दूर रहना चाहती थी। कई बच्चों के बीच होने पर वो बेचैन हो जाती थी, चिल्लाने लगती थी, रोने लगती थी। इसके चलते वकील को बार-बार बोर्डिंग स्कूल बदलने पड़े।’’

‘‘ओह।’’

‘‘अपने दोस्त से किए वादे को पूरा करने के लिए वकील सनाया को छोडऩे के लिए तैयार नहीं था। लेकिन वो उसे घर में भी नहीं ले जा सकता था क्योंकि उसने अपनी पत्नी से कसम खाकर कहा था कि वो उसे कभी घर नहीं लाएगा। अपने बच्चों पर उस बच्ची की छाया तक नहीं पडऩे देगा।’’

‘‘आखिर उसकी पत्नी को उस मासूम से इतनी नफरत क्यों थी?’’

‘‘क्या पता? शायद वो अंधविश्वासी भी थी और ऐसा मानती थी कि वो बच्ची ही अपने माता-पिता को खा गई। इसीलिए वो अपने परिवार को उसके साए से भी दूर रखना चाहती थी। कुछ भी कारण हो सकता है। बहरहाल, हकीकत कोई नहीं जानता। हम अंदाजा ही लगा सकते हैं।’’

‘‘सनाया का क्या हुआ?’’

‘‘तमाम मुश्किलें उठाकर भी वकील गुपचुप ढंग से सनाया की देखभाल करने की कोशिश करता रहा। उसे एक बोर्डिंग स्कूल से निकाल दिया जाता तो वो उसे दूसरे में भर्ती कराता। उसने साइकोलॉजिस्ट से सनाया का इलाज करवाने की कोशिश भी की।’’

‘‘वो ठीक हुई?’’

‘‘कहां से होती? वहां तो उसके लालन-पालन के ही लाले पड़े हुए थे। साइकोलॉजिस्ट को दिखाने का इतना फायदा जरूर हुआ कि उसकी बीमारी इतनी काबू में आ गई कि उसे बोर्डिंग स्कूल से लात मारकर निकालने की नौबत आनी बंद हो गई।’’

‘‘ओह।’’

‘‘वकील ने लम्बे समय तक सनाया का राज राज रखा। जब उसकी बीवी ने ही इतनी बेरहमी के साथ एक मासूम बच्ची को अपनाने से इनकार कर दिया तो उसका सब पर से ही विश्वास उठ गया थो। उसे लगने लगा था कि सनाया को अपनाने के मामले में उसका कोई साथ नहीं देगा। उसने लम्बे समय तक अपने नजदीकी लोगों से सनाया की बात छिपाई। वैसे भी जो सबसे नजदीकी लोग थे, वो तो जानते ही थे।’’

‘‘फिर?’’

‘‘लेकिन इंसानी फितरत होती है कि वो हमेशा अपना मुंह बंद नहीं रख सकता। खासतौर पर तब, जब उसे लगे कि उसके पास कोई अपना, कोई करीबी, कोई विश्वासी है, जिसे वो अपना राज बता सकता है। ऐसा ही एक शख्स उस वकील के पास भी था, जिस पर वो हद से ज्यादा भरोसा करने लगा था।’’

‘‘कौन था वो शख्स?’’

अविनाश ने रजत महानंद के ऊपर नजर डाली, जिसके चेहरे पर बेचैनी दिखाई देने लगी थी।

‘‘धैर्य रखिए, इंस्पेक्टर साहब।’’-अविनाश बोला-‘‘जहां इतना सब्र किया, वहां थोड़ा और सही।’’

‘‘ठीक है। आप कहते रहिए।’’

‘‘वकील ने सनाया की खुशहाली के लिए इस राज में उस शख्स को अपना साझेदार बनानी की कोशिश की लेकिन उसे नहीं पता था कि सनाया का राज उसे बता कर वो अपनी जिन्दगी की बड़ी भूल कर रहा था।’’

‘‘वो कैसे?’’

“वो ऐसे क्योंकि सनाया वकील के उस तथाकथित विश्वस्त साथी के एक खास उद्देश्य को पूरा करने में बहुत बड़ी बाधा बन कर उभरी थी। वकील ने उस शख्स को सनाया का पूरा किस्सा बताया। इस उम्मीद में कि वो सनाया की देख-रेख करने में, उसका इलाज कराने में उसकी मदद करेगा। लेकिन इसका बिल्कुल उल्टा इफैक्ट हुआ।”

“कैसा उल्टा इफैक्ट?”

“उस शख्स को सनाया अपने लिए बहुत बड़ा खतरा नजर आई। वो शख्स एक बेहद लालची, बेहद खतरनाक, बेहद शातिर प्रवृत्ति का इंसान था, जो हमेशा अपने चेहरे पर अच्छाई का मुखौटा लगाए रहता था, जिसके पार देखना बेहद मुश्किल था। यही कारण था कि वकील ने भी उस पर भरोसा कर लिया। लेकिन उस पर भरोसा करने की कीमत उसे अपनी जान देकर चुकानी पड़ी।”

“बेटी की शादी होने और बेटे के विदेश चले जाने के बाद वो वकील अकेला रह गया। अब सनाया को अपनाने में आपत्ति करने वाला कोई नहीं था। लेकिन पिछली बार के एक्सपीरियेंस से वकील के मन में चिंता थी, जब वो एक बच्ची को घर ले कर आया था और उसकी अपनी ही पत्नी ने कड़ा विरोध जताते हुए उसे उस बच्ची को घर में नहीं रखने दिया था। ऊपर से सनाया मानसिक रूप से भी डिस्टब्र्ड थी। वो भीड़भाड़ में जाना बर्दाश्त नहीं कर पाती थी। उसे अभी लम्बे इलाज-या यंू कहें कि थैरेपी-की जरूरत थी। वकील ने सनाया को दिल्ली के एक बड़े साइकोलॉजिस्ट को दिखाया, जिसने उसे थैरेपी के हिस्से के रूप में सनाया को भीड़-भाड़ से दूर रखने की सलाह दी। वकील अपने दोनों बच्चों के प्रति अपना फर्ज पूरा कर चुका था। बेटी की शादी कर चुका था। बेटा भी अपने पैरों पर खड़ा हो चुका था। विदेश में जॉब कर रहा था। अब वकील को एक सनाया ही दिखती थी, जिसके प्रति उसका फर्ज अब भी बाकी था। जिसे वो अपनी बेटी के समान ही मानता था। बस, फिर क्या था? वो जी-जान से सनाया के इलाज की मुहिम में जुट गया। उसके लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने के लिए तैयार हो गया। पहली कुर्बानी उसने अपने सामाजिक जीवन से दूरी बना कर की। जिससे उसका लोगों से मिलना-जुलना कम हो, जिससे वो पूरे समय घर पर रह कर सनाया का ध्यान रख सके। उस घर में एक सुखी संसार था। एक बाप-बेटी, जो खून के रिश्ते से भले ही बाप-बेटी नहीं थे लेकिन उनका रिश्ता उतना ही मजबूत था। लेकिन बदकिस्मती ने उनके सुखी संसार को नजर लगा दी, जब उस वकील ने भूलवश इस राज को अपने उस करीबी, विश्वस्त साथी पर उजागर कर दिया, जो आस्तीन का सांप था।”

कमरे में उपस्थित अधिकांश लोगों को जैसे सांप सूंघ गया था।

‘‘वकील के उस साथी को सनाया एक बड़े खतरे के रूप में दिखाई दी, जो उसके एक खास उद्देश्य में बाधक थी...।

कैसा उद्देश्य?

‘‘प्रॉपर्टी।’’

‘‘प्रॉपर्टी?’’-मानसी चौंकी।

‘‘धीरे-धीरे वकील को भी खतरे का आभास होने लगा। एक दिन उसने अपनी नई वसीयत तैयार की और अपनी सारी जायदाद सनाया के नाम कर दी।’’

‘‘सनाया के नाम क्यों?’’-इंस्पेक्टर ने पूछा।

‘‘क्योंकि वही एक थी, जिसके साथ सबसे ज्यादा नाइंसाफी हुई थी। जिसके माता-पिता को बचपन में ही बेहद क्रूर तरीके से उससे छीन लिया गया था। जिसकी देख-रेख करने का उस वकील ने अपने जिगरी दोस्त से वादा किया था। लेकिन वादा करके भी वो निभा नहीं पाया। उस बच्ची को उसे न चाहकर भी अपने से दूर करना पड़ा। जिसे वो अपने बच्चों की तरह ही सदा अपनी आंखों के सामने रखना चाहता था, उसे अपने से दूर, बहुत दूर भेजने के लिए मजबूर होना पड़ा। उस वकील को लगता था कि उसने सनाया के साथ बहुत बड़ी नाइंसाफी की थी। इतनी बड़ी नाइंसाफी, जिसकी भरपाई दौलत से तो सम्भव ही नहीं थी। ऐसे में उसके हिसाब से अपनी सारी जायदाद उसके नाम करके वो उसके साथ हुई नाइंसाफी की भरपाई करने की छोटी सी कोशिश ही कर रहा था। और उसे यकीन था कि उसके बेटे-बेटी को उसके इस फैसले से कोई तकलीफ नहीं होगी। क्योंकि वे खुद सक्षम थे। उन्हें पैसों की ऐसी कोई कमी नहीं थी, जो उन्हें पिता की दौलत के लिए ताकना पड़ता। वैसे वो एक भावनात्मक फैसला था। वसीयत की पूरी कहानी भी अभी आपको आगे पता चलेगी। फिलहाल वकील के उस विश्वस्त साथी पर ही फोकस करते हैं, जो असल में आस्तीन का सांप था।

सब चुप रहे।

‘‘वकील द्वारा अपनी वसीयत में सारी प्रॉपर्टी सनाया के नाम करने का पता चलने पर उसका वो तथाकथित विश्वस्त साथी आगबबूला हो गया। गुस्से में पागल होकर उसने वकील की हत्या करने का ही षड्यंत्र रच डाला। जिस रात वकील की हत्या हुई, वो खामोशी से उसके घर पहुंचा था। वो वकील के कमरे में पहुंचा। घर उसका अच्छी-तरह देखाभाला था इसलिए वकील के कमरे तक जाने में उसे कोई दिक्कत नहीं हुई। फिर उसने वकील के चेहरे पर क्लोरोफॉर्म से भीगा रूमाल रखा। उन्हें बेहोश करने के बाद वो उन्हें

उठाकर स्टडीरूम में ले गया। जहां उसने वकील को उसकी स्टडी टेबल पर बिठाया, उन्हीं की रिवॉल्वर उनकी कनपटी से सटाई और गोली चला दी।''

मानसी की आंखों से झर-झर आंसू बह रहे थे और मोहित के चेहरे पर भूकम्प जैसे भाव थे।

अविनाश अभी आगे बोलने के लिए मुंह खोला ही था कि अचानक मानसी पलटी और उसने अपने बगल में बैठे अरविंद पर ताबड़तोड़ घूंसे-थप्पड़ों की बौछार कर दी।

''हरामजादे।''-वो चीख रही थी-''तूने मेरे पापा को मार दिया...आई विल किल यू...। आई विल किल यू।''

इंस्पेक्टर और शालिनी ने मानसी को रोकने की कोशिश की। मानसी किसी मशीन की तरह अरविंद पर घूंसे-थप्पड़ बरसाए जा रही थी। अरविंद ने मानसी को रोकने की भी कोशिश की लेकिन मानसी में तो जैसे कोई शैतान प्रवेश कर गया था। अरविंद के चेहरे पर जगह-जगह चोटें लग गईं थीं।

''हरामजादी।''-फिर अचानक अरविंद भडक़ उठा और उसने पलटकर एक झांपड़ मानसी के चेहरे पर जड़ दिया, जिससे मानसी के होंठों से खून छलक आया।

कमरे में एक क्षण के लिए बिल्कुल सन्नाटा छा गया। अरविंद को भी अपनी गलती का अहसास हुआ लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मोहित ने बिजली की तेजी से अरविंद की कॉलर पकडक़र उसे खींचकर कुर्सी से उठा लिया और इतनी जोर से धक्का देकर दीवार में मारा कि उसके मुंह से चीख निकल गई। अभी वो उस धक्के से सम्भल भी नहीं पाया था कि उसके पेट में मोहित का प्रचण्ड घूंसा पड़ा। उसकी आंखें बाहर को उबल पड़ीं। उसने विस्फारित नेत्रों से मोहित की ओर देखा। लेकिन मोहित ने उतने पर ही बस नहीं किया। अगले ही क्षण मोहित का उससे भी प्रचण्ड घूंसा अरविंद के मुंह पर पड़ा। मोहित उसे उसी तरह मारता रहता लेकिन इंस्पेक्टर और राज ने फुर्ती दिखाते हुए उसे पकड़ लिया और खींच कर अरविंद से दूर कर दिया हालांकि उसके लिए उन्हें पूरी ताकत लगानी पड़ गई थी।

''हरामजादे!''-मोहित इतनी जोर से गरजा कि कमरे में उपस्थित बाकी लोगों को लगा कि कमरे की छत ही उड़ जाएगी-''मेरी बहन को मारता है। मेरे सामने मेरी बहन को हाथ लगाता है। तेरे टुकड़े-टुकड़े करके कुत्तों को खिला दूंगा, सूअर के पिल्ले।''

मोहित की पकड़ से छूटने के बाद अरविंद दीवार से घिसटते हुए नीचे जमीन पर ढेर हो गया। मोहित के घूंसे उसे काफी भारी पड़े थे। उसके नीचे गिरने का फायदा उठाते हुए मोहित ने उसे दो-चार जोरदार लातें भी जमा दीं।

‘‘उतनी देर से चुपचाप बैठा हूं’’-मोहित की आवाज इतनी तेज थी कि इंस्पेक्टर और राज को लगा कि उनके कान के पर्दे ही फट जाएंगें-‘‘तो तूने समझ लिया कि तू बच जाएगा। मुझे तेरी हकीकत पहले ही पता चल गई थी। अब तक अपने-आप को कैसे रोका ये मैं ही जानता हूं। अभी इसी वक्त कुत्ते की मौत मरना चाहता है तो छू कर दिखा मेरी बहन को।’’

‘‘मोहित।’’-इंस्पेक्टर मोहित को खींचकर अरविंद से और दूर करने की कोशिश करते हुए बोला-‘‘होश में आओ।’’

‘‘इस हरामजादे ने पापा का खून किया।’’-मोहित गुस्से में पागल हुआ जा रहा था-‘‘मैं इसे जिंदा नहीं छोड़ूंगा।’’

‘‘इसे कानून सजा देगा।’’-इंस्पेक्टर बोला-‘‘तुम अपने आपको संभालो, मोहित।’’

तभी मानसी अपनी जगह से उठकर तेजी से अरविंद के पास पहुंची। इंस्पेक्टर को लगा कि वो उस पर फिर लात-घूंसे बरसाने वाली थी लेकिन मानसी ने जमीन पर पड़े अरविंद के ऊपर थूक दिया।

‘‘ये है तेरी औकात।’’-वो नफरत से बोली-‘‘घिन आ रही है मुझे तुझसे। और ये सोचकर अपने-आप से भी कि मैंने तुझसे शादी की।’’

अरविंद वैसे ही सिर नीचे किए पड़ा रहा। उसमें अब सिर उठाकर उन लोगों का सामना करने की हिम्मत बाकी नहीं रही थी।

इंस्पेक्टर वैभव ने मोबाइल निकाला और पुलिस स्टेशन फोन कर अरविंद की गिरफ्तारी का इंतजाम करने के लिए निर्देश देने लगा।

‘‘मानसी।’’-फर्श पर पड़े अरविंद ने सिर उठाया-‘‘प्लीज...प्लीज...मुझे बचा लो मानसी। मैं...मैं जेल नहीं जाना चाहता। मैं...मैं तुम्हारा पति हूं...। प्लीज मानसी...मुझे माफ कर दो...।’’

‘‘तू शुक्र मना’’-अविनाश शुष्क स्वर में बोला-‘‘कि तुझे गिरफ्तार ही किया जा रहा है। अगर तू बाहर रहा तो तेरी मौत पक्की है। अपनी भांजी के जीवन में जहर घोलने इतना बड़ा षड्यंत्र रचने वाले शख्स की गर्दन मरोडऩे के लिए उसके मामा देवराज की बांहें फडक़ रहीं हैं। जेल ही एक जगह है जहां तू चंद सांसें और ले सकता है। और कहीं देवराज की हट गई तो फिर जेल तो क्या, दुनिया के किसी भी कोने में तुझे उसके हाथों से कोई नहीं बचा पाएगा।’’

अरविंद आंखों में आंसू भरकर मानसी की ओर देखता रहा। मानसी कुछ देर तक उसे नफरत से देखती रही, फिर उसने चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया।

अरविंद को पुलिस गिरफ्तार करके ले जा चुकी थी।

कमरे में अब भी अविनाश, मोहित, मानसी, शालिनी, इंस्पेक्टर वैभव और रजत महानंद उपस्थित थे। मोहित के समझाने पर मानसी शांत हो गई थी लेकिन उसकी आंखों में अब भी आंसू थे और उसके चेहरे से लग रहा था कि वो किसी भी वक्त फिर से रोने लगेगी।

''जिस तरह आप महानंद जी को घूर रहे थे''-वैभव बोला-''उससे तो मुझे इन्हीं पर शक होने लगा था।''

''खुद मुझे खुद पर शक होने लगा था''-महानंद भुनभुनाया-''ये मेरी ओर देख ही ऐसे रहे थे। उस पर सर का विश्वस्त आदमी, उनका करीबी बोल रहे थे, जिससे मुझे भी लगने लगा कि मेरी ही बात हो रही है। मुझे तो लग रहा था कि मैं आज इस कमरे से हथकड़ियों में ही बाहर निकलूंगा।''

''खामख्वाह।''-अविनाश बोला-''जब आपने कुछ किया ही नहीं तो...?''

''वकील हूं साहब, बेशुमार निर्दोष लोगों को बेवजह झूठे इल्जामों में जेल जाते देखा है।''

''आपको तो मैं इसलिए देख रहा था क्योंकि मेरे दिमाग में भी यही ख्याल आया था कि अरविंद की तरह आप भी वकील साहब के बेहद करीबी, बेहद विश्वासी थे। आप और अरविंद इस मामले में लगभग एक जैसे ही थे। लेकिन अपने ने दगा किया, पराये ने तो हमेशा मान ही रखा।''

''तो डिटेक्टिव साहब''-वैभव ने कहा-''बताइए। राज पर से पूरा पर्दा उठाइए।''

''अब तो पूरा पर्दा उठ गया। कातिल को भी आप लोगों ने गिरफ्तार कर लिया।''

''लेकिन आपने ये तफसील से नहीं बताया कि अरविंद ने ये सब क्यों किया? गिरिराज वर्मा का वो विश्वस्त आदमी अरविंद ही था, ये आपको कैसे पता चला?''

''अरविंद की पूरी हिस्ट्री अब मेरे पास है। कैसे उसने गिरिराज वर्मा का मर्डर किया, किस उद्देश्य से किया, सनाया गौतम को क्यों फंसाया, कैसे फंसाया। सारे सबूत मैं आपको उपलब्ध करा दूंगा, उसकी आप बिल्कुल चिंता मत करिये। लेकिन आपको मुझसे एक वादा करना होगा।''

''कैसा वादा?''

''आपको आरती तनेजा को सरकारी गवाह बनाना होगा।''

''आरती तनेजा कौन है?''

‘‘वो लडक़ी, जिसने गिरिराज वर्मा के घर की सेफ से 45 लाख की चोरी की थी।जो अरविन्द ने उससे करवाई थी। जिसका इल्जाम भी सनाया गौतम के सिर पर मढ़ा जा रहा था। वैसे तो इस साजिश में सभी कुछ सनाया के सिर पर ही मढ़ा जा रहा था।’’

‘‘आप कह रहे हैं कि इस आरती ने एक मर्डर स्पॉट पर इतनी बड़ी लूट की वारदात को अंजाम दिया और मैं उसे सरकारी गवाह बनाऊं?’’

"आरती ने अरविंद के कहने पर सेफ से चोरी की थी।"

‘‘बात को किश्तों में कहना बंद कीजिए। कृपया करके विस्तार से कहिए, जिससे कुछ समझ आए। वैसे ही जैसे अभी थोड़ी देर पहले कह रहे थे।’’

‘‘विद प्लेजर।’’-अविनाश मुस्कुराया-‘‘तो मैं थोड़ा पीछे से शुरू करता हूं। वकील साहब-यानि गिरिराज वर्मा-का वो साथी अरविंद सक्सेना ही था, जिस पर वे शुरू में अंधा विश्वास कर बैठे थे। उन्हें अरविंद की नीयत पर शक हुआ जरूर लेकिन बहुत देर से। तब तक अरविंद अपना प्लान बना चुका था। उनकी हत्या का प्लान। दरअसल, अरविंद की दोहरी शख्सियत से हर कोई धोखा खा जाता है। दुनिया के सामने उसने जहां अपनी एक भले आदमी की, एक विश्वास करने लायक आदमी की छवि बनाई हुई है, जिसके बारे में सोचना भी मुश्किल है कि वो किसी को धोखा दे सकता है, वहीं असलियत में वो इतना गिरा हुआ इंसान है कि उस शख्स को मारने में भी नहीं हिचकिचाया, जिसने बुरे वक्त में उसका साथ दिया। पिता की तरह संरक्षण दिया। जब उसके पास कॉलेज की फीस भरने तक के पैसे नहीं थे तो उसे माली इमदाद भी दी, तब कहीं जाकर वो अपनी कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर पाया। वकालत की पढ़ाई में भी वकील साहब ने हर तरह से उसका मार्गदर्शन किया। यहां तक कि उसे एक अच्छा इंसान मान कर अपनी बेटी की शादी भी उससे कर दी।’’

मानसी ने हिचकी ली।

‘‘यहां मैं आपको आरती तनेजा के बारे में थोड़ा बता दूं। आरती अरविंद की प्रेमिका है-या मेरे ख्याल से रखैल कहना ज्यादा ठीक होगा।’’

सबकी नजरें मानसी की ओर उठ गईं। सबको लगा कि अपने पति की इस नई करतूत पर मानसी कोई प्रतिक्रिया देगी लेकिन उसने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। शायद वो उस बारे में पहले से जानती थी। या फिर अरविंद के बारे में अभी-अभी सामने आई सच्चाई के बाद उसे अरविंद की किसी करतूत से उसे कोई हैरानी नहीं हो रही थी।

‘‘आरती हीरोइन बनने के लिए अपनी किस्मत आजमाने मुम्बई आई थी। अपनी बेपनाह खूबसूरती के बल पर वो फिल्मी दुनिया में अपना सिक्का जमाना चाहती थी। लेकिन जल्द ही उसे अहसास हो गया कि वहां उसकी दाल नहीं गलने वाली थी। डायरेक्टर-प्रोड्यूसर के

यहां चक्कर काटते-काटते वो परेशान हो गई थी। इसी सिलसिले में उसका दिल्ली से मुम्बई आना-जाना लगा रहता था। दिल्ली में ही एक पार्टी में उसकी मुलाकात अरविंद से हुई। अरविंद उस पर बुरी तरह लट्टू हो गया। वो किसी भी तरह उसे अपने साथ रहने के लिए मनाने की कोशिश करने लगा। आरती ने अरविंद से जमकर खर्चा करवाया, ये सोचकर कि वो महंगे खर्च से परेशान होकर वो खुद ही उसका पीछा छोड़ देगा। लेकिन अरविंद उस पर पैसा पानी की तरह बहाता रहा और उसका पीछा छोडऩे के लिए भी तैयार नहीं हुआ। आखिरकार आरती ने भी उसक 'बात' मान ली। वो जानती थी कि अरविंद पहले से शादीशुदा था लेकिन आरती के लिए उसका पर्स हमेशा खुल जाता था। तो आखिरकार उसने अरविंद के साथ रहना स्वीकार कर ही लिया...।''

''ये सब आपको कैसे पता चला?''

''मुझे खुद आरती ने बताया। वो पुलिस को भी गवाही देने के लिए तैयार है। असल में वो इस केस की बेहद महत्त्वपूर्ण गवाह है।''

''और मुख्य आरोपी की संगिनी भी।''

''पहले मेरी पूरी बात तो सुन लीजिये इंस्पेक्टर साहब, फिर आपको आरती के सम्बन्ध में जो कहना हो, कह लीजियेगा।''

''ओके।''

''अब अरविंद के बारे में ये भी सुन लीजिए। उसकी शुरू से गिरिराज वर्मा की दौलत पर नजर थी। इसीलिए वो जी-जान से उनके सामने एक अच्छा, आदर्श इंसान बनने का नाटक करता रहा, जिसमें वो कामयाब भी रहा। यहां तक कि मानसी भी उसे चाहने लगी। गिरिराज वर्मा भी खुशी-खुशी अपनी बेटी की शादी उससे करने के लिए तैयार हो गए। अरविंद की तो जैसे लॉटरी ही निकल आई। उसे लगने लगा कि वो दिन दूर नहीं जब मानसी के माध्यम से उसे अपने ससुर गिरिराज वर्मा की आधी दौलत-जो कि करोड़ों में है-मिल जाएगी। इसी दौरान उसकी मुलाकात आरती से भी हो गई। उसने आरती पर इतनी दौलत लुटाई, इतनी दौलत लुटाई कि उसकी आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो गई। लेकिन वो किसी हालत में आरती को नहीं खोना चाहता था। उसने इधर-उधर से कर्जा लेकर आरती पर पैसा उड़ाना जारी रखा। जब मित्रों-परिचितों से उधार मिलना बंद हो गया तो वो लोन शार्क के चक्कर में पड़ गया।''

''लोन शार्क?''

''जो हद से ज्यादा मोटे ब्याज पर रकम कर्ज पर देते हैं, फिर किसी भी तरह उसकी वसूली भी करते हैं। ये लोन शार्क आम तौर पर अपराधिक किस्म के लोग होते हैं, अण्डरवर्ल्ड के

किसी गैंग से ताल्लुक रखते भी हो सकते हैं। लोन शार्क से पैसा लेना अरविंद को भारी पड़ गया। वे उसे धमकाने लगे। अरविंद के सामने उनका पैसा चुकाने की बड़ी समस्या आ गई, जो कि करीब दस लाख रूपये का कर्ज था। इधर गिरिराज वर्मा वाला मामला अलग चल रहा था, जिससे भी अरविंद का दिमाग खराब हुआ पड़ा था।''

''कैसा मामला?''

''सनाया के इलाज-या थैरेपी-के लिए गिरिराज वर्मा लगातार भागदौड़ कर रहे थे। अरविंद के साथ उन्होंने जब उन्होंने सनाया का राज साझा किया तो ये जानकर अरविंद की आंतें-पींतें जल गईं कि गिरिराज वर्मा किसी पराई लडक़ी पर इस तरह पानी की तरह पैसा बहा रहे थे। यहां उसे पैसों की सख्त जरूरत थी, उसकी गिद्धदृष्टि गिरिराज वर्मा की दौलत पर टिकी हुई थी, वहां गिरिराज वर्मा अपनी दौलत इस तरह लुटाने में लगे थे। इस तरह तो उसके हाथ एक फूटी कौड़ी तक नहीं आनी थी। फिर भी उसने सब्र रखा। उसने गिरिराज वर्मा के सनाया को संरक्षण देने के निर्णय को पसंद करने का नाटक किया और उनका सहयोगी बना रहा, जिससे सनाया के मामले को और भी गहराई से समझ पाता। शायद उसे भी शक था कि सनाया उनकी नाजायज औलाद थी। तभी वो उसके लिए इतनी भागदौड़ कर रहे थे। खैर, धीरे-धीरे वो मामले को समझता चला गया। वो जान गया कि गिरिराज वर्मा सनाया को भी अपने बेटे मोहित और बेटी मानसी की तरह ही चाहते थे। न सिर्फ चाहते थे बल्कि उसके प्रति अपराध बोध भी महसूस करते थे क्योंकि वो सनाया को बचपन में मोहित और मानसी की तरह एक पिता का प्यार नहीं दे सके थे। न ही उचित परवरिश दे सके थे। उसे उतनी छोटी उम्र में बोर्डिंग में भेजने के लिए विवश हो गए थे। और उस अपराध बोध को वो किसी भी तरह दूर करना चाहते थे। चाहे उन्हें अपनी प्रॉपर्टी ही सनाया के नाम क्यों न करनी पड़ती।''

''ओह।''-वैभव के मुंह से निकला।

''सनाया की पढ़ाई पूरी होने के बाद वो एक गर्ल्स हॉस्टल में ही रहती थी। लेकिन मोहित के अमेरिका चले जाने और मानसी की शादी हो जाने के बाद अब सनाया को घर लाने में गिरिराज वर्मा को कोई दिक्कत नहीं दिखाई देती थी। लेकिन दिल्ली में डॉ. अनिरूद्ध मेहता नामक जिस साइकोलॉजिस्ट के पास वे सनाया का ट्रीटमेंट करवा रहे थे, उसने सनाया को भीड़-भाड़ से दूर, एकांतवास में रखने की सलाह दी।''

''ऐसा क्यों?''

''क्योंकि सनाया की बीमारी ही वही थी। उसे भीड़ से डर लगता था। उसका इलाज जिस थैरेपी से चल रहा था, उसके लिए जरूरी था कि कम से कम साल भर तक वो लोगों से दूर

रहे। इसीलिए गिरिराज वर्मा ने नया घर खरीदा। उसे सनाया की थैरेपी के लिए ‘सैनेटाइज’ करना शुरू किया। उन्होंने समाज से दूरी बना ली। यहां तक कि अपने निकटतम लोगों से भी दूर हो गए। और हर जगह उन्होंने यही बहाना बनाया कि उम्र के उस मोड़ पर वे एकांतवास चाहते थे। हालांकि उन्होंने ये किसी को नहीं बताया कि उन्हें वह एकांतवास अपने लिए नहीं, अपनी मुंह बोली बेटी सनाया के लिए चाहिए था। सिवाय एक शख्स के।''

''अरविंद सक्सेना।''

''सही पकड़े हैं। अरविंद सक्सेना ही वो शख्स था, जिसके साथ उन दिनों गिरिराज वर्मा हर राज साझा कर रहे थे। अरविंद ने अपनी भलमनसाहत का उन पर कुछ ऐसा जादू चला दिया था कि वे उन दिनों सपने में भी उसके बारे में गलत नहीं सोच पाते थे।''

''जिस पर हम सबसे ज्यादा भरोसा करते हैं''-महानंद बोला-''उसी के आस्तीन का सांप निकलने का खतरा सबसे ज्यादा होता है।''

''माफी चाहूंगा, महानंद जी''-वैभव बोला-''शुरू शुरू में तो मुझे आप पर ही शक हो रहा था।''

''कोई बात नहीं इंस्पेक्टर साहब।''-महानंद बोला-''लेकिन मैं वर्मा सर के साथ ऐसा करने की सपने में भी नहीं सोच सकता था।''

''अरविंद शुरू से जानता था''-अविनाश बोला-''कि सनाया उस घर में रह रही थी। वो बस वार करने के लिए सही समय का इंतजार कर रहा था।''

''वार करने?''-महानंद हौलनाक स्वर में बोला-''तो क्या उसने सनाया को...?''

''नहीं महानंद जी। वो नुकसान पहुंचाना तो चाहता था सनाया को भी लेकिन वो कहते हैं न जाको राखे साईंया, मार सके न कोय। सनाया उसके पंजे से कैसे बची, ये मैं अभी आगे बताऊंगा, पहले अरविंद के मामले से निपट लें। अरविंद सनाया का हमदर्द बनने, गिरिराज वर्मा के विचारों से पूरी पूरी सहमति रखने का दिखावा करते हुए धीरे-धीरे गिरिराज वर्मा को शीशे में उतारने की कोशिश करने लगा था। वो उन्हें अपनी पूरी प्रॉपर्टी मानसी के नाम करने की पट्टी पढ़ाने लगा था।''

''मानसी के नाम?''-वैभव ने कहा।

''हां। क्योंकि एक बार पूरी प्रॉपर्टी मानसी के नाम हो जाती तो मानसी के पति होने के नाते उसका भी उस प्रॉपर्टी पर अधिकार हो जाता। वैसे उसकी फितरत के बारे में सोचता हूं तो''-अविनाश राज एक क्षण ठहरकर बोला-''ये सोचने पर मजबूर हो जाता हूं कि शायद

प्रॉपर्टी मानसी जी के नाम कराने के बाद उसका इरादा इनके साथ भी कुछ बुरा करने का था। जिससे इनके बाद पूरी प्रॉपर्टी का वो अकेला मालिक बन सकता।''

मानसी चुपचाप शून्य में ताकती रही जबकि मोहित के चेहरे पर गुस्से की तीव्र लहर दिखाई दी। उसने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं।

''जब बार-बार-बेहद धीमे-धीमे ही सही लेकिन बार-बार-अरविंद अपने ससुर से मानसी के नाम सारी प्रॉपर्टी कराने की रिक्वेस्ट करने लगा तो गिरिराज वर्मा को शक होने लगा। अरविंद उन्हें ये दलील देता था कि मोहित तो विदेश में ही रहने लगा है। वो अमेरिका में ही ग्रीन कार्ड लेकर वहीं सैटल हो जाएगा। अच्छी जॉब करता है। उसे पैसे की कोई जरूरत नहीं। इसलिए सारी प्रॉपर्टी मानसी के नाम करना ही ठीक रहेगा। वैसे भी जैसे मानसी के पास, वैसे मोहित के पास। जरूरत पडऩे पर भाई-बहन के बीच प्रॉपर्टी या पैसे को लेकर किसी तरह की दुविधा की नौबत नहीं आनी थी। लेकिन इस सब में वो अपनी भूमिका को गोल कर जाता था। उसका इरादा ही यही था कि मानसी के माध्यम से पूरी जायदाद पर कब्जा कर ले। लेकिन उसके इन बार-बार होने वाले अनुरोधों से गिरिराज वर्मा का उस पर संदेह होने लगा।''

''फिर?''

''तब भेड़ की खाल में छिपे भेडिय़े को पहचानने के लिए गिरिराज वर्मा ने वो कदम उठाया, जिससे दोहरी वसीयत की कहानी की शुरूआत हुई। उन्होंने अरविंद के सामने बातों ही बातों में ये जाहिर करना शुरू किया कि वे अपनी सारी जायदाद सनाया के नाम करना चाहते थे। जब पहली बार उन्होंने ये बात अरविंद से कही तो अरविंद अपने गुस्से को छिपा नहीं पाया। उससे गिरिराज वर्मा का शक और भी मजबूत हो गया। उन्होंने अगली बार उससे भी बड़ा कदम उठाया। उन्होंने एक वसीयत तैयार की, जिसमें अपनी सारी जायदाद उन्होंने सनाया के नाम कर दी थी। और वो वसीयत उन्होंने बकायदा इरादतन अरविंद को दिखाई। उस वसीयत को देखने के बाद तो अरविंद अपना आपा ही खो बैठा। उसने शायद उसी क्षण अपने ससुर की हत्या करने का निश्चय कर लिया।''

''उसी क्षण कैसे?''-इंस्पेक्टर बोला-''ये आपको किसने बताया?''

''हां, ये बात शायद मुझे कभी पता नहीं चल पाती''-अविनाश हंसा-''लेकिन वकील साहब अपने बच्चों के नाम एक डायरी छोड़ कर गए थे, जिसमें उन्होंने साफ शब्दों में लिखा है कि अरविंद के वो वसीयत देखने के बाद ही मुझे अहसास हो गया था कि वो कोई बड़ा, गलत कदम उठाने वाला है। इसीलिए उन्होंने दिल्ली के एक बैंक के लॉकर में वो डायरी, 10 लाख रूपए नकद और वो अपनी दूसरी, सबसे बाद में बनाई गई, वसीयत रख दी थी।

उस डायरी में उन्होंने पूरे मामले के बारे में विस्तार से बताया था। और उस दूसरी वसीयत में अपनी जायदाद के पांच हिस्से किए थे। उन्हें लगा था कि अगर अरविंद कुछ गड़बड़ करेगा तो उस लॉकर के माध्यम से उसकी सारी सच्चाई सामने आ जाती। वैसे उन्हें वसीयत की ज्यादा टेंशन नहीं थी। अगर नई वसीयत नहीं मिलती, पुरानी ही प्रभावी रहती और सारी जायदाद सनाया की ही हो भी जाती तो इससे उन्हें कोई दिक्कत नहीं थी। क्योंकि मोहित और मानसी के सामने तो वैसे भी पैसों की कोई दिक्कत नहीं थी। और सनाया को भी वे अपनी बेटी जैसी ही मानते थे।''

''यानी सारा राज उस लॉकर के माध्यम से फाश हुआ?''

''ये बात कबूलते हुए कलेजा फटता है लेकिन काफी हद तक आपकी बात सही है। मेरी और शालिनी जी की सारी मेहनत एक तरफ और वो लॉकर की बरामदगी एक तरफ। खैर, उस लॉकर के मिलने से पहले ही हम बहुत कुछ पता लगा चुके थे लेकिन वो लॉकर तो जैसे तुरूप का पत्ता था। वो मोहित को काफी लेट से मिला...।''

''आज दोपहर ही को।''-मोहित बोला।

''...वरना इस पूरे केस पर से पर्दा बहुत पहले ही उठ गया होता।''

''लेकिन आप लोगों ने भी अच्छा काम किया।-मोहित बोला-"लॉकर की जानकारी मिलने से पहले ही आप आरती तक पहुंच गए थे। शालिनी भी सनाया के गांव की घटना का पता लगा चुकी थी। मुझे विश्वास है कि लॉकर नहीं मिलने पर भी आप लोग पूरा केस हल कर ही लेते थे।''

''केस तो आरती की गवाही से ही हल हो ही गया था"-अविनाश बोला-"लेकिन सबूतों की कमी थी। लॉकर में गिरिराज वर्मा की डायरी से कई महत्त्वपूर्ण खुलासे हुए।''

वैभव भी अविनाश की बात से सहमत था। उसके हिसाब से भी वो डायरी एक तरह से इस मर्डर केस को सुलझाने में तिलिस्म तोडऩे में 'तिलिस्मी किताब' की भूमिका में थी।

''आरती से याद आया''-फिर वैभव अचानक बोला-''आप इस आरती को सरकारी गवाह बनाने की बात कर रहे थे?''

''जी हां, इंस्पेक्टर साहब। और मेरी आपसे खास दरख्वास्त है कि आप ऐसा जरूर करवाईये क्योंकि वो बेचारी जबर्दस्ती अरविंद के प्लान में फंस गई थी। शुरूआत में अरविंद ने आरती के साथ ज्यादा जानकारी शेयर नहीं की थी। उसने केवल आरती को अश्लील किताबों, वीडियो क्लिप्स से भरे पेन ड्राइव वगैरह के साथ आधी रात को गिरिराज वर्मा के घर के पिछले हिस्से में बुलाया था। उसे ये नहीं बताया था कि वो वहां किसी का

कत्ल करने जा रहा है। उसने तो आरती को ये तक नहीं बताया था कि उसे उस मकान में सेफ से लाखों की चोरी करनी थी। गिरिराज वर्मा का भरोसा जीतकर उनसे सेफ का पासवर्ड वो पहले ही जान चुका था। अरविंद के प्लान के अनुसार आरती को सेफ से चोरी करनी थी, जिससे लोग उसे सनाया की करतूत समझते। सेफ से चोरी करने वाली लडक़ी को सनाया समझते क्योंकि सनाया को किसी ने देखा नहीं था। उसका प्लान सनाया को हर तरह से बदनाम करने का, उसे इतनी बुरी, इतनी अपराधिक प्रवृत्ति का दिखाने का था कि कोई सोच भी नहीं सकता था कि उस घर में हुआ कत्ल सनाया के अलावा कोई और भी कर सकता था। उसने सेफ में चोरी करने का हुकुम आरती को एकदम से सुनाया और उसे वैसा करने के लिए तैयार भी कर लिया। लेकिन सेफ से पैसे निकालते वक्त भी आरती को ये नहीं पता था कि उस घर में एक कत्ल भी हुआ था। कत्ल के बारे में अरविंद ने उसे बाद में बताया, जब वो लोग पैसे लेकर वहां से काफी दूर जा चुके थे। बाद में भी शायद इसीलिए बताया क्योंकि अगर आरती को अन्य सोर्स से, अखबार वगैरह से, उस घर में हुए मर्डर का पता चलता तो शायद वो इतना भडक़ जाती-आखिर लूट की बात को लेकर ही उतनी भडक़ रही थी-कि सीधे पुलिस स्टेशन जाकर अपना गुनाह कबूल कर लेती और अरविंद का भी पर्दाफाश कर लेती। इसी डर से अरविंद ने उसे गिरिराज वर्मा का कत्ल करने की बात बताई। उस पर आरती बहुत भडक़ी। उसने अरविंद को जमकर खरी-खोटी सुनाई। लेकिन फिर अरविंद ने उसे अपनी बातों के जाल में फंसाकर अपना साथ देने के लिए मना ही लिया। वैसे भी उसके पास उत्प्रेरक के रूप में वो 45 लाख रूपए का चोरी का माल था, जो उसने सेफ से हासिल किया था। अरविंद ने उसे उन पैसों और गहनों के साथ सीधे चण्डीगढ़ भेज दिया, जहां उसने आरती के लिए पहले से ही फ्लैट की व्यवस्था कर रखी थी। घटना के कुछ ही दिनों बाद अरविंद दिल्ली जाने का बहाना करके चण्डीगढ़ गया और आरती के पास रखे लूट के पैसों से दस लाख रूपये ले आया और अपना कर्ज पटाकर लोन शॉर्क से अपना गला छुड़ाया।''

''सनाया का क्या हुआ? उस रात सनाया भी तो घर पर थी।''

''अरविंद का प्लान सनाया का अपहरण कर उसे कुछ दिनों तक कैद में रखने व बाद में उसे मार देने का था। अपहरण करने का इसलिये क्योंकि वो उसे उस घर में ही नहीं मार सकता था। उसे तो अपनी सारी करतूत का ठीकरा उसके सिर पर फोडऩा था। लेकिन उसका प्लान कामयाब नहीं हो सका। क्योंकि सनाया-जो हमेशा उस घर में ही रहती थी-उस रात वहां नहीं थी।''

''तो कहां थी?''

‘‘संयोग से एक दिन पहले ही उसका मामा रक्सौल से वापस आ गया था। दुनिया में गिरिराज वर्मा के अलावा सनाया का कोई अपना था तो वो उसका मामा देवराज ही था। उन पांच हत्यारों के कत्ल के मामले में देवराज को लम्बी सजा हुई थी लेकिन जेल में अच्छे चाल-चलन के कारण उसकी सजा को कम कर दिया गया था। बहरहाल, वो जब यहां आया तो गिरिराज ने सनाया को उसके साथ ले जाने की इजाजत दे दी। अरविंद के रंग-ढंग से गिरिराज को पहले ही संदेह हो गया था। सनाया भी अपने मामा को देख कर खुश थी, जिसके चलते गिरिराज को इस बात से बहुत राहत मिली और वे खुशी-खुशी सनाया को उसके साथ भेजने के लिए तैयार हो गए। एक तरह से सनाया की किस्मत बुलन्द ही थी, जो ठीक उसी दिन देवराज उसे लेने आ पहुंचा। वरना अगर वो भी उस रात उसी घर में होती और अरविंद के हाथों पड़ जाती तो उसकी दुर्गत होने से कोई नहीं बचा सकता था। उस रात अरविंद सबसे पहले गिरिराज वर्मा का खून करने ही गया था क्योंकि सनाया को तो वो ईजी टारगेट समझता था। लेकिन गिरिराज वर्मा का खून करने के बाद जब उसने पूरा घर छान मारा तो सनाया को नहीं देख कर उसके होश उड़ गए। उसे पूरा प्लान डगमगाता हुआ दिखा। लेकिन अब वो उसमें कुछ नहीं कर सकता था। ये खुद उसके लिए एक बड़ी पहेली थी कि हमेशा उसी घर में रहने वाली सनाया, जो घर से बाहर तक नहीं निकलती थी, एकदम से, उसी रात कहां चली गई, जब उसे अपनी हैवानियत दिखानी थी। बहरहाल, सनाया की किस्मत के सितारे बुलन्द थे लेकिन फिर भी अरविन्द ने अपने प्लान पर जमे रहते हुए घर में आरती द्वारा लाई गई अश्लील सामग्री प्लांट कर दी, जिससे ये साबित होता कि...अब तो मुझे कहते हुए भी अच्छा नहीं लग रहा है।’’

‘‘सनाया के मामा...देवराज ने उसे छिपाकर क्यों रखा? इतना बड़ा काण्ड हो जाने पर वो सनाया को लेकर सामने क्यों नहीं आया?’’

‘‘देवराज का मामला अलग है। वो काफी अलग किस्म का आदमी है। या यूं कहूं कि लट्ठमार किस्म का आदमी है तो ज्यादा सही होगा। सनाया को अपने साथ ले जाने के अगले दिन ही उसे गिरिराज वर्मा के मर्डर के बारे में पता चल गया था। लेकिन वो सनाया को लेकर वापस उस घर में नहीं गया क्योंकि उसे किसी बड़ी साजिश, किसी बड़े खतरे का अहसास हो रहा था। इतने सालों बाद वो जेल से छूटकर आया था, सनाया को लेकर अपने साथ गया, और उसी रात अपने पक्के दोस्त-जो इतने सालों तक सनाया का संरक्षक बना रहा-का इस तरह कत्ल होने की बात से ही उसे बहुत बड़ी गड़बड़ का अहसास हो रहा था। वो सनाया को लेकर पहले ही काफी प्रोटेक्टिव था। उस पर उसके अलावा दुनिया का वो इकलौता शख्स, जो सनाया की परवाह करता था, उसका भी इस ढंग से कत्ल हो जाने पर देवराज अपनी भांजी के प्रति और भी ज्यादा प्रोटेक्टिव हो गया। अब उसका सबसे पहला उद्देश्य सनाया को कहीं दूर सुरक्षित जगह पर पहुंचाना था। उसने सनाया को देहरादून में

एक घर में ठहराया और उसकी देख-रेख सुनिश्चित करने के बाद ही हकीकत जानने वापस लौटा। लेकिन यहां भी उसे कुछ पता नहीं चल पा रहा था। उसके पास गिरिराज वर्मा का एक मैसेज भी था, जिसे देने के लिए उसे सही बंदे का इंतजार था।''

''सही बंदा?''

''मोहित। जिस दिन देवराज और गिरिराज की मुलाकात हुई, उस दिन गिरिराज ने ही अपने दोस्त को एक लिफाफा सौंपा था, जिसे कुछ गड़बड़ होने की स्थिति में उनके बेटे मोहित को देने या सब कुछ ठीक-ठाक रहने पर उन्हें ही वापस कर देने के लिए कहा था। देवराज को वो लिफाफा मोहित तक पहुंचाना था, जिसके लिए वो पिछले तीन महीने से मोहित का इंतजार कर रहा था।''

''क्या था उस लिफाफे में?''

''उस बैंक का नाम और उस उस लॉकर की चाभी और पासवर्ड, जिसमें उन्होंने अपनी दूसरी वसीयत, अरविंद की करतूत का खुलासा करने वाली डायरी, सनाया के बारे में जानकारी और दस लाख रूपये नकद रख छोड़े थे।''

''ओह।''

''अरविंद की करतूत का खुलासा करने वाली डायरी कैसे?''-महानंद बोला-''अरविंद ने तो उस समय तक कुछ किया ही नहीं था।''

''उसकी हरकतों से गिरिराज वर्मा को शक तो हो गया था। तभी तो उन्होंने वो डायरी छोड़ी थी। उसमें उन्होंने विस्तारपूर्वक सनाया के बारे में बताया था, अपने उस घर के खरीदने की वजह बताई थी, जो सनाया के 'होम आइसोलशन' के लिए जरूरी थी और ये भी बताया था कि अरविंद शुरू से ही सब जानता था जबकि पुलिस जांच के दौरान अरविंद हर बात से अनजान बनता रहा।''

''वो डायरी , वो लॉकर मोहित के लिए ही क्यों?''-मानसी बोली-''मुझे क्यों नहीं?''

''अब इस बारे में मैं क्या कह सकता हूं?''-अविनाश बोला-''आप अरविंद के साथ ही रह रहीं थीं। हो सकता है कि आपके पिता को शक हो कि अगर वो लिफाफा आप तक पहुंचता है तो अरविंद की नजरों से बचा नहीं रहेगा। वो एक पल में पूरे मामले को समझ जाएगा। वो उस लॉकर की चीजों को हासिल करने के लिए फिर कुछ भी कर सकता था। यहां तक कि आपको नुकसान भी पहुंचा सकता था।''

कमरे में कुछ देर बोझिल-सा सन्नाटा छाया रहा।

‘‘मुझे मालूम है सनाया कहां है।’’-फिर मोहित धीरे से बोला-‘‘देवराज मामा ने मुझे बताया है कि वो देहरादून में ही उनके साथ रह रही है। कल मैं उससे मिलने जाऊंगा।’’

‘‘मैं भी चलूंगी।’’-मानसी आंखों से आंसू पोंछते हुए बोली।

‘‘आप लोग सनाया से मिलने जाएंगें?’’-अविनाश बोला-‘‘अब तक तो उसके सिर पर अघोषित रूप से आपके पिता के कातिल होने का ठप्पा लगा हुआ था। अब एकाएक उससे मिलने में आप लोगों को इतनी दिलचस्पी कैसे हो गई...?’’

‘‘वो हमारी छोटी बहन है।’’-मोहित और मानसी दोनों एक साथ बोले।

अरविंद बदहवास-सा लॉकअप में बैठा था।

उसे साफ दिख रहा था कि इस मुसीबत से अब उसे कोई नहीं बचा सकता था। उसने खुद अपने लिए गड्ढा खोदा था। जिस दिन उसने गिरिराज वर्मा की हत्या की थी, उसी दिन उसे इस बात का अहसास हो गया था। पहली गड़बड़ सनाया के घर से गायब होने के रूप में हुई थी। सनाया को भी मार देना उसके प्लान में शामिल था। लेकिन सनाया वहां थी ही नहीं। हमेशा, दिन-रात 24 घंटे उसी घर में रहने वाली उस हरामजादी को उसी समय गायब होना था। उसके बाद आरती के बिहेवियर ने भी उसे अंदर तक हिला डाला था। उसके लिए बड़ी-बड़ी बातें करने वाली उस हर्राफा औरत ने उसे कितनी खरी-खोटी सुनाई थी, ये अरविंद आज तक नहीं भूला था। उस औरत के लिए उसने क्या नहीं किया था। बेशुमार दौलत लुटाई, बीवी को धोखा दिया (हालांकि वो कोई बड़ी बात नहीं थी मानसी को तो वो शुरू से धोखा देता आ रहा था), लोन शार्क के चक्कर में फंस गया लेकिन बदले में उस कमीनी ने क्या किया? छोटा-सा काम करने में भी उसने अरविंद को ऐसे भाव खाके दिखाये, जैसे उसके लिए जान दिए दे रही हो। अरविंद ने उसे गिरिराज वर्मा और सनाया की हत्या की योजना के बारे में शुरू में नहीं बताया थ। उसने केवल उसे रात के समय वो सामान लेकर गिरिराज वर्मा के घर के पिछले हिस्से में बुलाया था, जिस सामान की सहायता से उसे सनाया और गिरिराज वर्मा को बदनाम करना था, ऐसा शो करना था कि सनाया ने गिरिराज वर्मा को अपने जाल में फंसा रखा था। वो अश£□ल किताबें, पेन ड्राइव्स आदि में अश्लील वीडियो क्लिप्स आदि आरती उसके कहने पर ही लेकर रात की उस घड़ी गिरिराज वर्मा के घर पहुंची थी। उन चीजों की व्यवस्था अरविंद ने पहले ही करके उन्हें आरती के पास रख छोड़ा था और आरती को रात के उस वक्त गिरिराज वर्मा के बंगले पर बुलाया था। उस समय तक वो गिरिराज वर्मा का कत्ल करके निबट चुका था और पूरे घर में सनाया को ढूंढता फिर रहा था लेकिन सनाया उसे कहीं नहीं मिली थी। थक-हारकर वो जब आरती को लेने घर के पिछले हिस्से में पहुंचा, जहां उसने आरती को बुलाया तो ये देख कर उसका दिमाग घूम गया कि आरती कार में बैठकर वहां से जाने की तैयारी कर रही थी। उसने आरती को झाड़ लगाने की कोशिश की तो वो उल्टे उसे ही चमकाने लगी कि उसने काफी देर वहां इंतजार किया और ये सोचकर जा रही थी कि अब अरविंद आने वाला नहीं था। अरविंद ने उससे सारा अश्लील सामान लेकर उसे घर में प्लांट किया, फिर आरती को सेफ का पासवर्ड बताते हुए उसमें से रूपये और गहने निकालने के लिए कहा। उस पर आरती भडक़ गई और दुनिया भर के प्रपंच करके दिखाने लगी। वो कह रही थी कि वो सीसीटीवी कैमरे में आ जाएगी, उसे ऐसी चोरी-चकारी का काम नहीं करना वगैरह-वगैरह। उस समय उसके बर्ताव से अरविंद का खून इतना खौला था कि उसका मन वहीं उसका गला घोंट देने का कर रहा था लेकिन वो वैसा नहीं कर सकता था। वैसा न कर पाने के पीछे

कई वजहें थीं। पहली तो यही कि वो आरती पर बुरी तरह लट्टू था। दूसरे वो प्लान से बाहर होता। पहले ही उसके प्लान की ऐसी तैसी हुई पड़ी थी क्योंकि सनाया घर से गायब थी। तीसरे उसे आरती की जरूरत थी। सीसीटीवी पर सेफ लूटते हुए कोई लडक़ी दिखनी चाहिए थी, जिससे वो इल्जाम भी सनाया के ऊपर मढ़ा जा सकता, जैसे गिरिराज वर्मा के कत्ल का इल्जाम सनाया के सिर डालना था। अरविंद के बहुत कहने पर बहुत भाव खाते हुए आरती सेफ से चोरी करने के लिए तैयार हुई। उसके बाद वे दोनों वहां से कार में ही फरार हो गए। अरविंद का इरादा उसे पैसों के साथ चण्डीगढ़ भेज देने का था, जहां उसने पहले ही उसके लिए फ्लैट वगैरह की व्यवस्था कर रखी थी और इस सबके बारे में सब कुछ शांतिपूर्वक बाद में बताने की सोचा था लेकिन इसी दौरान सनाया बार-बार 'उस घर में क्या हुआ', 'उस घर में क्या हुआ' की रट लगाती रही। आखिरकार तंग आकर अरविंद ने गिरिराज वर्मा की हत्या करने की बात कबूल कर ली। उसने ये तक उसे बता दिया कि उसका इरादा सनाया को भी अपहरण करके ले जाने और बाद में मौत के घाट उतार देने का था, जिससे पूरी सच्चाई सनाया के साथ ही इस दुनिया से चली जाती और पूरी दुनिया सनाया को ही गिरिराज वर्मा की कातिल समझती रहती। उस गुनाह की स्वीकरोक्ति करने के बाद आरती ने उसे वो रौद्र रूप दिखाया कि अरविंद पनाह मांगता दिखा। उसने अरविंद को मन भर कर गालियां दीं, खूनी, कातिल, हत्यारा कह-कह के उसकी सारी इज्जत उतार दी। वहां पर अरविंद का फिर उसका खून करने का मन करने लगा था लेकिन अब उसमें उतनी ताकत नहीं थी। वो खुद को मानसिक रूप से बेहद टूटा हुआ अनुभव कर रहा था। सनाया के घर पर नहीं मिलने से उसे अपना पूरा प्लान फेल होता दिख रहा था। उसे लग रहा था कि सनाया पुलिस तक पहुंच गई तो उसके बयान से सारा राज फाश हो सकता था। कि सनाया के साथ गिरिराज वर्मा के एकांतवास में रहने के दौरान उनसे सबसे ज्यादा मिलने वाला शख्स कोई और नहीं, अरविंद ही था। अरविंद ने आरती से सारी गालियां सुनने के बाद भी उसे मनाया, लोन शार्क से अपनी जान के खतरे का हवाला देते हुए उसे अपनी तरफ किया, तब कहीं जाकर आरती आगे भी उसका साथ देने के लिए तैयार हुई। उस समय अरविंद को लग रहा था कि आरती को गिरिराज वर्मा और सनाया की हत्या की योजना पहले से ही न बताकर उसने अच्छा ही किया था। अगर वो उसे पहले ही सब कुछ बता देता तो शायद वो कभी उसका साथ नहीं देती। उसे रोकने की कोशिश करती। क्या पता पुलिस में ही चली जाती।

''तुझसे कोई मिलने आया है।''-तभी हवलदार के फटकारते हुए से स्वर से अरविंद की तन्द्रा भंग हुई। उसने सिर उठाकर देखा। लॉकअप के सींखचों के बाहर हलवदार खड़ा तिरस्कृत निगाहों से उसकी ओर देख रहा था और थोड़ी दूर गलियारे के अंत में...

मानसी खड़ी थी।

अरविंद अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। मानसी बुरी तरह बदहवास लग रही थी, उसकी आंखें डबडबाईं हुईं थीं, बाल बिखरे हुए थे, चेहरे भी उड़ा-उड़ा सा लग रहा था। वो तेजी से अरविंद के लॉकअप के पास पहुंची और सींखचों को पकडक़र अरविंद की ओर देखने लगी।

''मानसी...।''-अरविंद के होंठ कांपे-''मानसी मुझे माफ कर दो...।''

''अरविंद।''-मानसी व्याकुल स्वर में बोली-''तुम...तुम चिंता मत करो। मैं तुम्हें छुड़ा लूंगीं। मैं तुम्हारा केस लड़ूंगीं। मैं कोर्ट में साबित करूंगी कि...कि तुमने पापा को नहीं मारा।''

''मानसी।''-अरविंद को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था-''मुझे माफ कर दो...मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई...प्लीज...प्लीज मुझे माफ कर दो...।''

''उस बात को भूल जाओ।''-मानसी बोली-''जो कुछ हुआ, सब भूल जाओ...तुम्हारे जेल से बाहर आने के बाद हम दोनों एक नई जिंदगी की शुरूआत करेगें...सब ठीक हो जाएगा।''

''थैंक्स मानसी...।''-अरविंद बोला।

''मोहित मेरी बात मानने के लिए तैयार नहीं है...वो कहता है कि तुम्हें सजा दिलवाकर ही दम लेगा...।''

अरविंद के चेहरे पर चिंता की झलक दिखाई दी।

''...लेकिन...लेकिन तुम चिंता मत करो। मैं तुम्हें बचा लूंगी। मोहित लॉयर नहीं है...तुम लॉयर हो। हम दोनों मिलकर कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगें।''

''इतने सारे सबूत हैं...।''-अरविंद बुदबुदाया।

''मैंने पापा की डायरी गायब कर दी है।''

''क्या?''

''हां। मोहित ने मुझे वो डायरी दिखाई थी। वो जो बैंक के लॉकर से डायरी लेकर आया था, उसे मैंने गायब कर दिया है।''

''थैंक यू।''-अरविंद को मानसी साक्षात फरिश्ता नजर आ रही थी-''थैंक यू मानसी...थैंक यू वैरी मच।''

''बस...आरती किसी तरह तुम्हारे खिलाफ गवाही न दे तो...।''

‘‘तुम उसकी चिंता मत करो।’’-अरविंद बोला-‘‘तुम बस आरती तक मेरा एक मैसेज पहुंचा देना...उसके बाद वो गायब हो जाएगी। उसे कोई ढूंढ नहीं पाएगा।’’

‘‘बस...अरविंद...अब तुम चिंता मत करो...अब मैं तुम्हें किसी न किसी तरह बाहर निकाल ही लूंगीं।’’

‘‘थैंक्स मानसी।’’-अरविंद भावुक हो उठा-‘‘मैंने तुम्हारे साथ इतना बुरा किया, फिर भी तुम...मुझे बचाने आईं...मेरी मदद कर रही हो...।’’-अरविंद ने सींखचे को पकड़े मानसी की उंगलियों पर सिर टिका दिया और भावुकता के आवेश में आंखें बंद कर लीं।

अचानक मानसी का बर्फ जैसा ठण्डा स्वर सुनाई दिया-

‘‘अब तुझे पता चलेगा किसी के विश्वास का खून होता है तो कैसा लगता है हरामजादे।’’

अरविंद ने चौंक कर मानसी की ओर देखा।

उसके चेहरे पर दुनिया-जहान की नफरत सिमटी हुई दिख रही थी।

वो हक्का-बक्का सा मानसी को देखता रह गया।

‘‘ऐसे ही तूने धोखा दिया था न मेरे पापा को?’’-मानसी नफरत भरे स्वर में बोली-‘‘इसी तरह तू उनसे झूठ बोलता आया होगा न कि तू उनका भला चाहता है? ऐसे ही...ऐसे ही वो तुझ पर विश्वास कर लेते होंगें न, जैसे अभी तूने मुझ पर किया था। वैसे पापा की तुलना तुझसे करते हुए मुझे घिन आ रही है। कहां वो महान इंसान, जिसने पराई लडक़ी को भी अपनी बेटी बना लिया और कहां तू गटर की पैदाइश, जो अपनों की भी नहीं हो सका...।’’

‘‘ये...ये तुम क्या कह रहीं हों, मानसी।’’-अचानक पैदा हुई वो उम्मीद की किरण अंधेरे में बदलती देखकर अरविंद के होश उड़ गए-‘‘मैं तुम्हारा पति हूं। तुम...तुम क्या मेरा मजाक उड़ाने आईं थीं?’’

मानसी हंसी-‘‘नहीं। मैं तो तुझे जेल में सड़ता देखने आई थी, जिससे मेरे कलेजे को थोड़ी ठण्डक पहुंच सके। तू चिंता मत कर...तुझे अब जेल में ही एडियां रगड़-रगडक़र मरना होगा। बहुत ऐश उड़ाई है न तूने उस आरती के साथ...उसका सारा हिसाब अब जेल में मुस्टण्डे कैदी तुझसे वसूल करेंगें।’’

अरविंद पथराई आंखों से उसे देखता रहा।

तभी लॉकअप के गलियारे के सिरे के अंत में मोहित प्रगट हुआ। वो लॉकअप के समीप पहुंचा।

‘‘चलो, दीदी।’’-अरविंद को खूनी नजरों से देखते हुए मोहित मानसी से बोला।

मानसी ने एक बार फिर अरविंद को नफरत भरी नजर से देखा, फिर मोहित से बोली-‘‘आज मुझे अफसोस हो रहा है कि मैंने वो रिवॉल्वर तुमसे तालाब में क्यों फिंकवा दी।’’

मोहित और मानसी ने एक आखिरी बार अरविंद की ओर घृणा से देखा, फिर वे दोनों लॉकअप के गलियारे से बाहर जाने वाले दरवाजे की ओर बढ़ गए।

पीछे अरविंद का चेहरा झुक गया। उसने लॉकअप के लोहे के सींखचों पर सिर टिका दिया।

पुलिस स्टेशन में इंस्पैक्टर वैभव के साथ शालिनी और अविनाश उपस्थित थे। अविनाश के साथ एक और युवक था, जो काफी उखड़ा-उखड़ा लग रहा था। वैभव और शालिनी उसे नहीं पहचानते थे।

रात के करीब 9 बजने वाले थे। शालिनी उस पूरे घटनाक्रम की न्यूज तैयार करने को लेकर बेहद एक्साइटेड थी। रात के इस वक्त अन्य अखबारों तक इस पूरे मामले की खबर नहीं पहुंचने वाली थी, जिसके चलते कल के एडीशन में 'लेक सिटी ट्रिब्यून' के कल के एडीशन में ही ये सब एक्सक्लूसिव न्यूज के रूप में छपने वाला था, वो भी बाजरिया शालिनी। पहले ही तेजतर्रार खोजी पत्रकार के रूप में शालिनी नैनीताल में प्रसिद्ध थी, उस पर इस धमाकेदार न्यूज के बाद तो उसे छा जाना था।

''बधाई इंस्पैक्टर साहब।''-अविनाश ने कहा-''गिरिराज वर्मा के कातिल को गिरफ्तार कर लिया आपने।''

''इस बधाई के असली हकदार तो आप ही हैं।''-वैभव बोला-''आपकी सहायता से ही इस केस का पर्दाफाश हो सका। और बेचारी सनाया गौतम की सच्चाई सबके सामने आ सकी। वरना हमने तो उसे शुरू से ही गलत समझा।''

''इसमें आपकी गलती नहीं है। आप लोगों ने इसलिए गलत समझा क्योंकि आपको वैसा समझाया गया। वो एक साजिश थी और साजिशकर्ता इतना शातिर था कि मुझे इसमें कोई हैरानी नहीं कि सब लोग आसानी से सनाया को ही दोषी मानते रहे। शुरूआत में मैं खुद भी तो ऐसा ही समझ रहा था। लेकिन आखिर में साबित हो ही गया कि गिरिराज वर्मा पर किसी चुड़ैल का, किसी आत्मा का काला साया नहीं था बल्कि एक विश्वासघाती, आस्तीन के सांप का काला साया था।''

''सचमुच, अरविंद है तो कुत्ते की मौत मार दिए जाने लायक आदमी।''

''मरने वाला था भी वो कुत्ते की मौत।''-अविनाश बोला-''मोहित को दिल्ली में जब लॉकर में अपने पिता की डायरी से हकीकत का पता चला तो वो बिफरा हुआ वही करने नैनीताल आ रहा था। वो तो सही समय पर देवराज जी के माध्यम से मुझे पता चल गया और जैसे-तैसे करके मैंने मोहित को अरविंद को उस वक्त बख्श देने के लिए मना लिया वरना मोहित उसे कब का मार चुका होता। बड़ी मुश्किल से मोहित को समझा पाया था।''

''अगर देवराज की हकीकत पहले पता होती''-अविनाश के बगल में बैठा युवक कराहता सा बोला-''तो कम से कम मेरी इतनी दुर्गत तो नहीं होती।''

वैभव ने प्रश्नसूचक भाव से उसकी ओर देखा।

‘‘अरे मैं आपसे इनका परिचय कराना भूल गया।’’-अविनाश बोला-‘‘ये हैं मेरे राइटहैण्ड संजय कुमार।’’

‘‘क्या हुआ है इन्हें?’’

‘‘मंैने देवराज सिंह के पीछे लगाया था। उस ने थोड़ी रगड़ाई कर दी है।’’-अविनाश बोला।

‘‘थोड़ी रगड़ाई?’’-संजय कराहते हुए बोला-‘‘मुझे खुद याद नहीं बॉस मैं कितने घंटे बंधा ठण्डे फर्श पर पड़ा रहा।’’

‘‘लेकिन बाद में तो आकर उसी ने तुझे खोला न? और तेरी खातिरदारी भी की।’’

‘‘बाद में जो किया, वो किया। पहले जो किया वो क्यों किया?’’

‘‘तो तुम भी तो चोरों की तरह उसके घर में घुसे थे।’’

‘‘आपके कहने पर बॉस।’’-संजय कलपता हुआ सा बोला-‘‘आपके कहने पर।’’

‘‘मैं कहूंगा कुएं में कूद जा तो कुएं में कूद जाएगा?’’

संजय ने आहत भाव से अविनाश की ओर देखा।

‘‘मजाक कर रहा था, यार।’’-अविनाश ने उसका कंधा थपथपाया-‘‘अरे यार, जिस पेशे में हम लोग हैं, उसमें तो इससे भी बहुत बहुत ज्यादा झेलना पड़ता है। तुम तो इतने में ही रोने लगे।’’

‘‘ये तो आपने सही कहा, बॉस। मुझे भी *बहुत* का ही डर लग रहा था। वो...वो कम्बख्त देवराज ऐसे धमका कर गया था। कह रहा था सीरियल किलर हूं। मेरी तो हालत ही खराब हो गई थी। हर वक्त लग रहा था किसी भी समय आएगा और निपटा देगा।’’

‘‘वो तुम्हें ऐसे ही डरा रहा था। अच्छा आदमी है बेचारा।’’

‘‘हां। पांच-पांच खून करने वाला अच्छा आदमी।’’

‘‘तेरा दिमाग ठिकाने पर नहीं है, भाई। तू गाड़ी में जाकर आराम कर। मैं इंस्पैक्टर साहब के पास से फारिग होकर थोड़ी देर में आता हूं।’’

संजय उठा और बाहर जाने के लिए घूमा लेकिन अचानक ठिठक गया।

‘‘बॉस।’’-उसने अविनाश से पूछा-‘‘आपने मुझे गिरिराज वर्मा के घर की निगरानी करने कहा था। वहां पर देवराज मुझे चकमा देकर भाग गया था। लेकिन आपको फिर भी उसका एड्रैस पता कैसे चल गया?’’

‘‘मैंने गिरिराज वर्मा के घर में एक पैकेट छोड़ा था, जिस पर सनाया गौतम लिखा था। उसमें एक छोटा बॉक्स था, जो पासवर्ड से ही खुलता है। उस बॉक्स में मैंने एक ट्रैकर रखा था...।’’

‘‘क्या रखा था?’’-वैभव बोला।

‘‘ट्रैकर। वही जिससे किसी को ट्रेस कर सकते हैं। जैसे ट्रांसमीटर। देवराज गिरिराज वर्मा के घर गया तो उसने वो बॉक्स रख लिया था। उससे वो खुल नहीं पाया तो उसे वो सनाया के पास ले जाने वाला था। या फिर सनाया से पासवर्ड पूछकर उसे खोलने की कोशिश करता। उसी बॉक्स में रखे ट्रैकर की सहायता से मैंने उसे ट्रैक किया।’’

‘‘वाह बॉस। लगता है जेम्स बॉन्ड की फिल्में ज्यादा देखते हो आप।’’

‘‘बेटा, तेरा बॉस खुद जेम्स बॉन्ड से कम नहीं है।’’

संजय भुनभुनाता हुआ, निढाल-निढाल सा चलता हुआ कमरे से बाहर निकल गया।

‘‘सचमुच बहुत बुरी हालत है बेचारे की।’’-शालिनी अफसोस जताते हुए बोली।

‘‘वो तो देवराज सिंह अच्छा आदमी निकल गया’’-अविनाश शांत स्वर में बोला-‘‘वरना इससे ज्यादा बुरी हालत हो सकती थी।’’

‘‘आपको आरती तनेजा के बारे में कैसे पता चला?’’-वैभव ने पूछा।

‘‘ये बहुत बड़ा काम असल में मेरी सेक्रेट्री रोशनी ने किया।’’

‘‘आपकी सेक्रेट्री ने?’’

‘‘जी हां। दरअसल, मैंने रखा तो उसे रिसेप्शनिस्ट के काम के लिये ही था लेकिन पहले महीने से ही उसे जासूसी के कीड़े ने काट लिया। उसी ने केस से जुड़े ऐसे लोगों को खंगालना शुरू किया, जिन पर कोई शक नहीं कर सकता था। मेरे ख्याल से ये उसका तुक्का ही था, जो निशाने पर लग गया।’’

‘‘कैसा तुक्का?’’

‘‘अरविन्द सक्सेना। उसने अरविन्द सक्सेना के बारे में खोजबीन की। उसे आरती और अरविंद के अफेयर का पता चला। उसे पता चला कि दिल्ली में अरविन्द ने अपने घर के अलावा एक फ्लैट किराए पर लिया था, जिसमें आरती रहती थी। हद से ज्यादा शरीफ बनकर रहने वाले अरविन्द के अफेयर का पता चलते ही उसे भारी गड़बड़ी नजर आने लगी। उसे लगने लगा कि अरविंद के मामले में कहीं न कहीं भारी गड़बड़ थी। आरती का भी कुछ पता नहीं चल रहा था कि वो कहां थी? उसने दिल्ली वाले उस फ्लैट को भी छोड़

दिया था, जो अरविंद ने उसके लिए किराए पर लिया था। फिर रोशनी ने किसी तरह आरती के परिवार वालों का पता लगाया, जिनसे पता चला कि आरती ने उनसे एक-दो बार बात की थी और अपने चण्डीगढ़ में होने के बारे में बताया था। चण्डीगढ़ में आरती विमला कपूर के नाम से रह रही थी, जिससे उसे खोजना बेहद मुश्किल हो जाता लेकिन उसके परिवार वालों से उसके चण्डीगढ़ वाले एड्रेस का पता चल गया। रोशनी से मिली इस जानकारी के आधार पर ही मैं आरती तक पहुंच सका, जिसके बाद सब कुछ शीशे की तरह साफ हो गया।''

''अरविंद सक्सेना ने ही गिरिराज वर्मा का खून किया था, ये सब आरती ने आपको बताया?''-शालिनी बोली।

''नहीं। आरती ने नहीं बताया। उसने तो सिर्फ कबूल किया था। बाजरिया रोशनी मेहरा अरविंद और आरती वाला एंगल सामने आने के बाद मेरा भी कुछ भागदौड़, थोड़ा बहुत दिमाग दौड़ाना तो बनता ही था। चण्डीगढ़ में आरती से पहली मुलाकात करने से पहले ही मैंने अरविंद का नेचर पता लगा लिया था, जो कि सचमुच 'तुम तो मेरा नेचर जानते ही हो' वाला नेचर ही था। मैंने अरविंद और आरती की प्रेम कहानी को थोड़ी और बारीकी से टटोला तो मुझे पता चला कि पिछले दो-तीन साल से अरविंद किस तरह आरती पर पानी की तरह पैसा बहाता आ रहा था। ये पैसा उसके पास कहां से आ रहा था? उसने लोन शार्क्स से भारी कर्ज ले रखा था और घर में अपनी बीवी मानसी से ये बहाना बनाया था कि वो दूसरा बिजनेस कर रहा था। वकीलों की फर्म बनाने वाला था। जिसमें उसका पैसा डूब गया। जबकि ऐसा कुछ नहीं था। उसका पैसा वहीं डूबा था, जहां वो खुद डूबा था। आरती तनेजा के चक्कर में। लेकिन अब वो कर्ज भी अरविन्द के गले का फन्दा बन गया था, जिससे पीछा छुड़ाने के लिए उसे कहीं से जल्द-और बहुत जल्द-बड़ी माली इमदाद की सख्त जरूरत थी। फिर गिरिराज वर्मा के यहां से हुई 45 लाख की चोरी। बाकी तो दो जमा दो जोडऩे जैसा काम था।''

''कैसे दो जमा दो जोडऩे जैसा काम था?''-शालिनी बोली-''गिरिराज वर्मा के घर में सेफ से वो चोरी किसी लडक़ी ने-मतलब आरती ने ही-की थी। किसी आदमी ने नहीं। फिर अरविंद पर आपको शक कैसे हुआ?''

''अरविंद ने कच्ची गोलियां नहीं खेली थीं। आरती वाला कनेक्शन सामने आने के बाद से ही रोशनी की तरह ही मुझे भी इस बात पर पूरा यकीन था कि सारे फसाद की जड़ यही महाशय हैं। अरविंद इतना शातिर आदमी है कि उसने इतने सालों तक अपनी बीवी को अपने अफेयर की भनक तक नहीं लगने दी। वो जो भी करता था, बेहद सोच-समझकर, जाल बुनकर करता था। और गिरिराज वर्मा वाले केस में भी जिस तरह सारे इल्जाम

सनाया गौतम पर ही आयद हो रहे थे, उससे मुझे साफ लगने लगा था कि वो किसी अरविंद जैसे मास्टरमाइण्ड शख्स का ही काम हो सकता था। हालांकि ये बात मुझे बाद में पता चली कि अरविंद ने गिरिराज वर्मा के सनाया गौतम के ट्रीटमेंट के लिए उसे होम आइसोलेशन में रखे जाने का फायदा उठाकर सारी प्लानिंग की थी। इस केस में शुरू से ही जो कुछ दिख रहा था, वो सब धोखे में डालने वाला था। नजरों का धोखा था। छलावा था। फिर सेफ से हुई 45 लाख की चोरी में भी मुझे बड़ा घपला दिखाई देने लगा था। वो चोरी सनाया गौतम ने नहीं की थी। अरविंद खुद कर नहीं सकता था। लेकिन उसके पास एक सहायक मौजूद थी, जो उसकी जगह वो काम कर सकती थी। आरती। और आरती से वो काम कराने का अरविंद को ये फायदा भी था कि सीसीटीवी कैमरे में आरती के कैद होने से पूरा मामला सनाया गौतम पर थोपने की उसकी साजिश और भी मजबूत होती।''

''मैंने खुद उस आदमी को गिरफ्तार किया''-वैभव बोला-''लेकिन मुझे अब भी यकीन नहीं आता कि कोई शख्स इतना गिरा हुआ, इतना कमीना, इतना नीच कैसे हो सकता है कि अपने ही देवता समान ससुर का कत्ल कर दे? उस शख्स का जिसने हमेशा उसे सहारा ही दिया। उस पर भरोसा किया। उसकी मदद करने हमेशा आगे आया।''

''औरत का चक्कर, बाबू भैया, औरत का चक्कर।''

''लेकिन आप तो कह रहे हैं औरत को छोड़ दो। उसे सरकारी गवाह बना दो।''

''इंस्पैक्टर साहब, औरत का चक्कर तो ये था लेकिन चक्कर खुद बेचारी औरत ने नहीं चलाया था। और थोड़ा बहुत चलाया भी था तो भी वो इतनी गिरी हुई नहीं थी, जितना अरविंद था। बल्कि अरविंद की दस प्रतिशत भी गिरी हुई नहीं थी। वो तो चोरी-चकारी भी नहीं करना चाहती थी, खून तो दूर की बात है। लेकिन अरविंद ने उसे अपने जाल में बुरी तरह फांस लिया था। फिर वो उसका साथ देने के लिए मजबूर हो रही थी। लेकिन उसने समझदारी का परिचय दिया, जब उसे पहली बार इस बखेड़े से निकलने का मौका मिला तो बिना कोई हीला-हवाला किए निकलने के लिए तैयार भी हो गई। उसने अपना साइन किया हुआ बयान मुझे दिया है, जिसे मैं आपको''-अरविंद ने अपने बैग से आरती का साइन किया हुआ बयान निकाला, जो उसने चण्डीगढ़ में आरती से लिखवाया था और उसे वैभव की ओर बढ़ाते हुए बोला-''सौंप रहा हूं। इसे पढऩे के बाद आप खुद ही निर्णय कर लीजिए कि आरती को सरकारी गवाह बनाने का फैसला सही है या नहीं?''

वैभव ने अविनाश से वो कागज लिया और एक ही सांस में पूरा पढ़ गया।

''हूं।''-फिर वो कागज को संभालकर एक फाइल में रखते हुए बोला-''इसे सरकारी गवाह बनाने की कोशिश तो पूरी करूंगा।''

‘‘कोशिश नहीं दरोगा साहब, ये काम आपको ही करना है। मेरा काम समझकर करियेगा।’’

‘‘ठीक है, ठीक है।’’

‘‘आरती के साथ बड़ी हमदर्दी है आपको।’’-शालिनी बड़ी अदा के साथ मुस्कुराई।

‘‘हमदर्दी तो मुझे हर उस सताई हुई लडक़ी के साथ है शालिनी जी, जिसके साथ किसी ने कुछ बुरा किया होता है। बेचारी आरती की हालत तो गेंहू के साथ घुन भी पिस जाने वाली है। तो अगर मुझे लगता है कि मैं इस घुन को निकाल सकता हूं, पिसने से बचा सकता हूं तो मेरा फर्ज बनता है कि मैं उसे पिसने न दूं।’’

‘‘बड़े उच्च ख्यालात हैं।’’

‘‘इसमें उच्च ख्यालात वाली कोई बात नहीं है। इंसान एक सामाजिक प्राणी है। परस्पर सहयोग की भावना पर ही दुनिया का चक्का घूम रहा है, मैडम।’’

‘‘लड़कियों के प्रति आपके इतने ही दयानतदारी भरे विचार हैं तो एक काम मेरे लिये भी करिये।’’-शालिनी बोली।

‘‘हुकुम करिये।’’

‘‘मेरे लिये सनाया की कुछ अच्छी तस्वीरों का जुगाड़ कर दीजिये।’’

‘‘क्या?’’-अविनाश चौंका-‘‘अब सनाया की तस्वीरें किसलिये? वो बेचारी तो निर्दोष है।’’

‘‘इसीलिये तो। इस मर्डर केस का खुलासा करने वाला पूरा आर्टिकल कल हमारे अखबार में छपने वाला है। वैसी एक्सक्लूसिव न्यूज और किसी भी अखबार में नहीं होगी। साथ में ‘चैरी ऑन द टॉप’ वाले स्टाइल में एक और आर्टिकल छपेगा, जो सनाया गौतम के बारे में होगा। कि कैसे उस बेचारी को फंसाया गया। उसके साथ कितना कुछ गलत हुआ और अपने पिता समान व्यक्ति की हत्या का झूठा आरोप लगा कर उसे बदनाम किया गया।’’

‘‘आपकी बात से लग रहा है कि आप तो उसे सेलीब्रिटी बना देंगीं।’’

‘‘वो है सेलीब्रिटी। और अगर मैं नहीं बनाऊंगीं तो कोई और बना देगा। इसलिये ये काम मैं ही करूं तो अच्छा रहेगा। और मैं बेहतर ढंग से भी करने की कोशिश करूंगीं। कल जब हमारे अखबार के माध्यम से इस पूरे रहस्य पर से परदा उठेगा तो मीडिया वाले भूखे भेडिय़ों की तरह सनाया की खोज में जुट जाएंगें।’’

‘‘जैसे पहले जुटे हुए थे, जब उसे कातिल समझा जा रहा था? चुड़ैल, काला साया समझा जा रहा था?’’

‘‘उससे भी बुरे तरीके से। लेकिन उन मीडिया वालों में मैं नहीं होऊंगी। क्योंकि मेरी तो आपके, मोहित, मानसी जी के माध्यम से उस तक सीधी पहुंच होगी।’’

‘‘ओके।’’-अविनाश ने मोबाइल निकाला और सनाया की तस्वीरें भेजने के लिए देवराज को मैसेज किया। मैसेज में उसने ये भी बताया कि वो तस्वीरें उसे क्यों चाहिए थीं। उसने मोहित से देवराज का नम्बर ले लिया था।-‘‘मैंने मैसेज कर दिया है।’’-फिर वो शालिनी से बोला-‘‘जैसे ही देवराज जी मुझे तस्वीरें भेजते हैं, मैं वो आपको भेज दूंगा।’’

‘‘देवराज जी? पांच खून करने वाले आदमी को बहुत इज्जत के साथ सम्बोधित कर रहे हैं आप।’’

‘‘उसने कुछ गलत नहीं किया था। उसकी जगह मैं भी होता तो शायद वही करता। न कर पाता तो खुद को नामर्द समझता।’’

कुछ क्षण कमरे में शांति रही।

‘‘ओके, बॉय्ज।’’-फिर शालिनी उठती हुई बोली-‘‘अब मैं चलती हूं। आर्टिकल भी तैयार करना है। समय बहुत कम है। आप’’-उसने अविनाश को सम्बोधित किया-‘‘सनाया की तस्वीरें जल्दी भेजने की कोशिश करियेगा। मुझे दो-तीन घंटे में चाहिए होंगीं, जिससे कल के एडीशन में आर्टिकल के साथ छप सकें।’’

अविनाश ने सिर हिलाया। वहीं ‘ओके बॉय्ज’ के सम्बोधन पर वैभव घूर-घूरकर शालिनी को देखने लगा।

शालिनी ने मुस्कुराते हुए वैभव की ओर हाथ हिलाकर ‘बाय’ कहने के अंदाज में मुंह चलाया और हवा के झोंके की तरह कमरे से बाहर निकल गया।

अविनाश मुस्कुराते हुए वैभव की ओर देख रहा था, जो अब भी घूरकर उस दरवाजे की ओर देख रहा था, जिस से शालिनी बाहर निकल कर गई थी।

‘‘क्या हुआ?’’-फिर वैभव का ध्यान अविनाश पर गया तो उसे इस तरह मुस्कुराते हुए अपनी ओर देखते पाकर वैभव चौंका।

‘‘कुछ नहीं।’’-अविनाश अपनी जगह से उठकर खड़े होते हुए बोला-‘‘तो अब मुझे भी इजाजत दीजिए, दरोगा साहब। किस्मत ने चाहा तो फिर मुलाकात होगी।’’

‘‘जरूर।’’-वैभव ने गर्मजोशी से उससे हाथ मिलाया-‘‘इस केस को हल करने के लिए आपको मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई।’’

फिर अविनाश भी पुलिस स्टेशन से बाहर निकल गया।

शालिनी अपने ऑफिस में बैठी थी।

उसने गिरिराज वर्मा मर्डर केस का पर्दाफाश करती पूरी न्यूज तैयार कर ली थी और उसे एडीटर के पास भी भेज दिया था। उस न्यूज में उसने अपना पूरा कौशल उड़ेल दिया था। आखिर वो उस मामले को लेकर इतने दिनों से भागदौड़ जो करती रही थी।

सनाया की तस्वीरें भी अविनाश ने समय पर भेज दी थीं, जिनमें से एक अच्छी सी फोटो सलेक्ट करके शालिनी ने उस न्यूज के साथ छपने वाले दूसरे आर्टिकल के साथ छपने के

लिए भेज दी थी, जो कि सनाया की निर्दोषिता और उसे साजिश का शिकार बनाए जाने के सन्दर्भ में था।

कल के अखबार में फ्रंट पेज पर शालिनी के नाम के साथ इस केस का पर्दाफाश करती एक्सक्लूसिव न्यूज छपने वाली थी।

सोच कर ही शालिनी का मन बल्लियों उछल रहा था।

नहीं-उसने मन ही मन सोचा-*कंट्रोल शालिनी। कंट्रोल।*

अब बस एडीटर से उस न्यूज को हरी झण्डी मिलने का इंतजार था।

जो कि मिल ही जानी थी। वो तो एक फॉर्मेलिटी ही थी। छोटी-मोटी खबरों को भी एडीटर ऑफिस से आसानी से पास कर दिया जाता था। ये तो बहुत बड़ी न्यूज थी। इस न्यूज को तो अपने अखबार में छापने के लिए शहर का कोई भी अखबार मोटी रकम देने के लिए तुरंत तैयार हो जाता।

लेकिन एडीटर रूम से हरी झण्डी मिलने में देर क्यों हो रही थी?

तभी मालती ने शालिनी के ऑफिस में कदम रखा। मालती एडीटर की सहयोगी के रूप में काम करती थी। वो थोड़ी परेशान सी दिख रही थी।

''क्या हुआ?''-शालिनी ने पूछा। उसे उम्मीद थी कि मालती गिरिराज वर्मा वाली न्यूज प्रिंट होने के लिए भेज दिए जाने के बारे बताने ही आई होगी। अब टाइम भी कम बचा था। वैसे ये खबर थी इस लायक कि स्टॉप प्रैस का आर्डर देकर भी उसे छपवाया जाता।

तुम्हारी न्यूज-मालती ने हाथ में थमा एक प्रिंटेड कागज उसकी ओर बढ़ाया-छपने के लिए भेज दी गई है।

वो तो भेजनी ही थी-शालिनी ने प्रिंट उसके हाथ से लेते हुए कहा, उसका चेहरा जगमगा रहा था-आखिर मैंने इतनी मेहनत जो...-फिर प्रिंट पर नजर पड़ते ही शालिनी के बाकी शब्द उसके मुंह में ही रह गए।

उस पर न्यूज के ऊपर ही 'एडीटर मुकुल राय' का नाम लिखा था।

शालिनी ने हैरानी से मालती की ओर देखा।

''राय ने न्यूज को अपने नाम से छपने के लिए भेजा है।''-मालती बोली, जो कि अच्छी तरह जानती थी कि उस न्यूज पर इतने दिनों से शालिनी मेहनत कर रही थी-''गंजे चीफ ने तुम्हारी मेहनत पर डाका डाल दिया। तुम्हारा नाम केवल सहयोगी के रूप में लिखा है। वो भी एक कोने में...।''

शालिनी अपनी जगह पर उछलकर खड़ी हो गई। उसका चेहरा गुस्से से लाल हो उठा।

फिर वो मालती के बगल से निकली और जमीन रौंदती हुई एडीटर मुकुल राय के ऑफिस की ओर बढ़ गई।

शालिनी ने भड़ाक से एडीटर के कमरे का दरवाजा खोला।

अपनी रिवॉल्विंग चेयर पर बैठे राय ने घूरकर उसकी ओर देखा।

‘‘ये क्या है?’’-शालिनी उसके सामने कल सुबह छपने के लिए तैयार आर्टिकल का प्रिंट फेंकते हुए गुस्से से बोली।

‘‘क्या क्या है?’’-राय ने उसे घूरते हुए पूछा।

‘‘गिरिराज वर्मा मर्डर केस सॉल्व होने की न्यूज मैंने कवर की, पूरी भागदौड़ मैंने की, उसकी एक्सक्लूसिव जानकारी भी मेरे पास थी, फिर ये आर्टिकल में आपका नाम कहां से आ गया?’’

‘‘तुम्हारा नाम भी तो है।’’-राय बोला-‘‘सहयोगी के रूप में...।’’

‘‘भाड़ में गया सहयोगी।’’-शालिनी फट पड़ी-‘‘कौन सा सहयोगी? कैसा सहयोगी? ये पूरी न्यूज मैंने तैयार की है। पूरी मेहनत मेरी थी।’’

‘‘देखो, तुम इस अखबार की एक मामूली एम्प्लॉई हो...।’’

‘‘अच्छा। और तुम क्या हो? अपने एम्प्लॉयर्स की मेहनत पर डाका डालने वाला लालची कमीना एडीटर? थूकती हूं मैं तुम्हारे कमीनेपन पर।’’

‘‘शालिनी।’’-राय चीख उठा-‘‘तुम हद से आगे बढ़ रही हो...।’’

‘‘खामोश।’’-शालिनी उससे दुगुनी जोर से चिल्लाई, राय की इज्जत का जनाजा उठता देखने के लिए उसके ऑफिस के दरवाजे पर कर्मचारियों की भीड़ जुट गई थी-‘‘हद से आगे बढऩे के लिए तूने मुझे मजबूर किया है। कानों में तेल डालकर सुन ले, गंजे। इस आर्टिकल में से सहयोगी के तौर पर भी मेरा नाम हटा दे। मेरी मेहनत को अजगर की तरह निगल जा। चढ़ा दे दूसरे की मेहनत को अपनी हवस की भ_ी पर। मुझे अब तेरे जैसे लुटियाचोट्टे के अण्डर में एक पल भी और काम नहीं करना है। रिजाइन लैटर में तेरे मुंह पर मार दूंगीं। लेकिन याद रख’’-शालिनी चुटकी बजाकर उसकी आंखों के सामने उंगली लहराते हुए दहाड़ उठी-‘‘अगर मैंने तुझसे हिसाब बराबर नहीं किया तो मेरा नाम भी शालिनी अवस्थी नहीं।’’

राय हक्का-बक्का सा शालिनी का मुंह देख रहा था।

शालिनी ऑफिस से बाहर निकलने के लिए पलटी लेकिन दरवाजे की ओर जाते-जाते वो रास्ते में ही ठिठक गई। वो वापस पलटकर राय की टेबल के पास पहुंची, राय भयभीत नजरों से उसकी ओर देख रहा था। फिर अचानक शालिनी ने टेबल पर रखी सारी फाइलों, कागजों को दोनों हाथों से इकट्ठा किया और उन्हें राय के मुंह पर उछाल दिया और जोर से चिल्लाई-‘‘तेरी मां की...।’’

फिर शालिनी घूमी और पैर पटकते हुए ऑफिस से बाहर निकल गई।

ऑफिस में काण्ड करने के बाद जैसे ही शालिनी ने ऑफिस के बाहर कदम रखा, उसने लगभग पूरे स्टाफ को दरवाजे पर ही इकट्ठा पाया। कुछ विस्फारित नेत्रों से उसे देख रहे थे तो कुछ की आंखों में प्रशंसा के भाव थे।

शालिनी दरवाजे पर ही रूककर कुछ क्षणों तक उन्हें गुस्से से घूरती रही।

फिर अचानक उनमें से एक ने ताली बजानी शुरू की। उसकी देखादेखी अन्य लोग भी ताली बजाने लगे। देखते ही देखते पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा।

शालिनी का दिमाग थोड़ा ठण्डा हुआ। वो भीड़ में से निकलकर बाहर की ओर जाने वाले दरवाजे की ओर बढ़ गई। दरवाजे से निकल कर वो नीचे पार्किंग में पहुंची। वो पार्किंग में खड़ी अपनी स्कूटी के पास पहुंची, स्कूटी पर सवार होकर उसे स्टार्ट किया, फिर उसने बड़ी हसरत भरी निगाह से लेक सिटी ट्रिब्यून की बिल्डिंग की ओर देखा।

कितने अरमानों से वो यहां काम करने आई थी।

क्या-क्या नहीं सोचा था उसने? लेकिन किस्मत को शायद कुछ और ही मंजूर था।

उसने स्कूटी स्टार्ट की और पार्किंग से बाहर निकलने वाले रास्ते की ओर बढ़ा दी।

‘‘शालिनी!’’-अचानक पीछे से आवाज सुनकर शालिनी ने स्कूटी में ब्रेक लगाए। उसने पलटकर देखा। पीछे उसके साथ ही काम करने वाला एक पत्रकार अजय दौड़ता-हांफता, उसका नाम पुकारता हुआ आ रहा था।

‘‘शालिनी!’’-वो स्कूटी के पास पहुंचकर अपनी सांसों पर काबू पाते हुए बोला, जो दौडऩे के कारण फूल रहीं थीं-‘‘वापस चलो। मिश्रा जी ने तुम्हें बुलाया है।’’

‘‘मिश्रा जी ने?’’-शालिनी को अपना दिल डूबता-सा महसूस हुआ।

‘‘हां। और अभी।’’

शालिनी परेशान हो उठी। राघव मिश्रा अखबार के चीफ एडीटर थे और वो उनकी बहुत इज्जत करती थी। वो जानती थी कि राय के साथ उसने जो बर्ताव किया था, उसके लिए मिश्रा जी उसे अच्छी डांट लगा सकते थे। राय ने भी उसके साथ कुछ अच्छा नहीं किया था लेकिन इसके बाद भी वो मिश्रा जी के सामने किसी तरह की बखेड़ेबाजी से बचना चाहती थी।

‘‘चलो।’’-अजय बोला-‘‘अब क्या चीफ एडीटर को इंतजार करवाओगी।’’

अनिच्छापूर्वक शालिनी ने स्कूटी फिर पार्किंग में लगाई और अजय के साथ वापस बिल्डिंग में पहुंची।

राघव सर से मिलने उसे पांचवीं मंजिल पर स्थित उनके मेन ऑफिस तक नहीं जाना पड़ा।

वो राय के ऑफिस के सामने वाले हॉल में ही एक कुर्सी पर बैठे थे।

बाकी सब लोग खड़े थे। राय भी। राय जलती निगाहों से शालिनी की ओर देख रहा था।

राघव सर के हाथ में गिरिराज मर्डर केस की न्यूज का वो प्रिंट था, जो शालिनी ने तैयार की थी। वो उसे बड़ी गम्भीरतापूर्वक पढ़ रहे थे।

''सर!''-वहां खड़े लोगों में से कोई मिश्रा जी से बोला-''शालिनी आ गई।''

मिश्रा जी ने नजर उठाकर चश्मे से शालिनी की ओर देखा। फिर वो कुछ कहने ही वाले थे कि राय बीच में ही चीखने लगा-''यही है...यही है सर वो लडक़ी...इसी ने...इसी ने मुझे मेरे ही ऑफिस में बेइज्जत किया। मुझे...मुझे गाली दी...।''

मिश्रा जी ने राय को शांत रहने का इशारा किया, फिर शांत स्वर में शालिनी से बोले-''हां तो शालिनी, एडीटर राय तुम पर जो आरोप लगा रहे हैं, वो सच हैं?''

''जी सर!''-शालिनी को अपना गला रूंधता-सा महसूस हुआ, उसे लगा कि वो रो पड़ेगी लेकिन वो उतने लोगों के सामने, खास तौर पर वहां उन हालात में रोना नहीं चाहती थी-''लेकिन...लेकिन इसने मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया है। इसने मेरी पूरी मेहनत पर डाका डाल दिया...।''

''ये झूठ बोल रही है...।''-राय आवेशपूर्ण स्वर में बोला।

''चुप रहो।''-मिश्रा जी ने हाथ उठाकर उसे शांत रहने का इशारा किया, फिर वो शालिनी से बोले-''तुम्हारी मेहनत पर डाका डाला है का क्या मतलब?''

''गिरिराज वर्मा मर्डर केस के मामले में पूरी भागदौड़ मैंने की, कातिल के पकड़े जाने की एक्सक्लूसिव न्यूज मैं लेकर आई थी, ये न्यूज भी मैंने तैयार की, जो सुबह के एडीशन में छपने के लिए जा चुकी है लेकिन इस...इस राय ने मेरी मेहनत चोरी कर ली। इसने उस न्यूज के साथ अपना नाम छपवा दिया है।''

मिश्रा जी ने राय की ओर देखा।

''ये झूठ बोल रही है, सर।''-राय हड़बड़ाकर बोला-''मैं शुरू से इस न्यूज को कवर कर रहा था। ये बस मेरे कहने पर...मेरे कहने पर एकाध जगह चली जाती थी। चाहे तो...चाहे तो...''-उसने एक अन्य रिपोर्टर की ओर इशारा किया-''दीपक से पूछ लीजिए।''

दीपक तत्काल परे देखने लगा।

मिश्रा जी ने दीपक की ओर सवालिया निगाहों से देखा तो दीपक ने एक नजर राय पर डाली, फिर मिश्रा जी की ओर देख कर अपनी मुण्डी ‘ना’ में दायें-बायें हिलाई।

राय ने उसे घूरकर देखा तो वो फिर परे देखने लगा।

‘‘सर, इस न्यूज में पूरा काम मेरा था।’’-राय बोला-‘‘इसने जो थोड़ी बहुत मेहनत की भी है, उसके लिए भी सहयोगी के तौर पर मैंने इसका नाम दिया है। आप चाहें तो न्यूज में देख सकते हैं।’’

‘‘राय।’’-मिश्रा जी गम्भीर स्वर में बोले-‘‘तो तुम कहना चाह रहे हो कि मेरे हाथों में इस वक्त जो प्रिंटेड न्यूज है, वो तुमने तैयार की है। शालिनी ने नहीं?’’

‘‘जी...जी सर।’’

‘‘इस न्यूज की भाषा देखकर ही पता चल जाता है कि इसे किसी बहुत ही विद्वान शख्स ने लिखा है, जो कि कम से कम तुम नहीं हो सकते...।’’-मिश्रा जी की उस बात पर उपस्थित सभी लोगों में हंसी की लहर दौड़ गई, मिश्रा जी भी बोलते-बोलते मुस्कुरा दिए, वहीं राय का चेहरा ऐसा हो गया था, जैसे किसी ने उसे जोर से तमाचा मार दिया हो-‘‘फिर भी...फिर भी अगर तुम्हारा दावा यही है कि तुम्हीं ने ये न्यूज तैयार की है तो मेरा मानना है कि इस न्यूज को बनाने वाले की याददाश्त इतनी तेज तो होगी ही कि वो बिना देखे इस न्यूज को दोबारा तैयार कर सकेगा। तो अभी तुम्हारे और शालिनी के बीच एक छोटा सा कम्पीटिशन होगा। तुम दोनों को इस न्यूज को फिर से बनाना है लेकिन वो बिल्कुल ऐसी ही होनी चाहिए। शालिनी की लिखी न्यूज अगर इस न्यूज से 80 प्रतिशत भी मेल खाती हुई तो वो सच्ची मानी जाएगी। चूंकि तुम एडीटर हो इसलिए तुम्हें छूट दी जाती है कि तुम्हारी लिखी न्यूज इससे 50 प्रतिशत भी मिल गई तो इस न्यूज के पीछे सारी मेहनत तुम्हारी होने की बात मान ली जाएगी।’’

शालिनी की आंखें चमक उठीं, वहीं राय का मुंह खुला का खुला रह गया।

‘‘लेकिन सर...।’’-राय ने विरोध जताना चाहा लेकिन तब तक वहां खड़े बाकी लोगों में से कुछ ने जल्दी से दो कम्प्यूटर टेबलों को खिसकाकर मिश्रा जी के सामने की ओर कर दिया, जिससे राय और शालिनी उनके सामने ही बैठकर टाइप कर सकें।

शालिनी जल्दी से उनमें से एक टेबल पर बैठ गई और उंगलियां की बोर्ड पर रखकर टाइप करने के लिए तैयार हो गई। राय भी मरी-मरी सी चाल चलते हुए दूसरी टेबल पर बैठ गया।

‘‘मेरे तीन गिनने पर।’’-मिश्रा जी बोले-‘‘एक...दो...तीन।’’

तीन गिनने के साथ ही शालिनी की उंगलियां बिजली की गति से कीबोर्ड पर दौडऩे लगीं। वहीं ठण्ड के बावजूद राय की टांट पर पसीना चमकने लगा था। वो कम्प्यूटर पर दो शब्द टाइप करता था, फिर सामने बैठे मिश्रा जी की ओर ऐसे देखता था, जैसे फांसी चढऩे वाला जल्लाद की ओर देख रहा हो।

शालिनी तेजी से टाइप करती रही। वो दो पैराग्राफ टाइप कर चुकी थी। राय अभी दो लाइन भी ठीक से नहीं लिख पाया था। अचानक वहां आसपास खड़े बाकी लोगों में से 'शालिनी...शालिनी...' की आवाजें उठनें लगीं। देखते ही देखते वे सभी एक स्वर में 'शालिनी...शालिनी...' का नारा सा लगाने लगे।

''बस!''-राय अब और सहन नहीं कर सकता था, वो अपनी जगह से उठते हुए बोला-''मैं हार मानता हूं।''

तालियों से पूरा हॉल गूंज उठा। शालिनी को कई लोगों ने घेर लिया। शालिनी का चेहरा भी खुशी से खिल उठा।

''तालियां रूकनी नहीं चाहिए।''-मिश्रा जी बुलंद स्वर में बोले-''आज से शालिनी 'लेक सिटी ट्रिब्यून' की स्पेशल कॉररेस्पोंडेंट है।''

शालिनी के प्रमोशन की खबर से तालियों का शोर दुगुना हो गया। सभी शालिनी को बधाईयां दे रहे थे।

''ये मैं क्या देख रहा हूं।''-मिश्रा जी बोले-''प्रमोशन के बाद भी हमारी शालू बिटिया खुश नहीं है।''

''वो सर...''-उनमें से एक अन्य रिपोर्टर बोला-''गिरिराज वर्मा वाले केस की न्यूज तैयार होकर छपने के लिए जा चुकी है। सैटिंग वगैरह सब कम्प्लीट हो चुकी है। अब तक तो शायद प्रिंटिंग भी स्टार्ट हो चुकी होगी। अब उस न्यूज में तो शालिनी का नाम सहयोगी के तौर पर ही छपेगा।''

''मैं अभी प्रिंटिंग रूकवाता हूं।''-मिश्रा जी खड़े होते हुए बोले-''न्यूज फिर से सैट कराई जाएगी। भले ही कल अखबार देर से डिस्ट्रीब्यूट हो लेकिन इस न्यूज में सिर्फ और सिर्फ शालिनी का ही नाम रहेगा। ये मेरा शालिनी से-और आप सबसे भी-वादा है।''

हॉल एक बार फिर तालियों की गडग़ड़ाहट से गूंज उठा।

खुशी के मारे शालिनी की आंखों से आंसू छलक उठे।

''थैंक यू, सर!''-वो रूंधे कंठ से मिश्रा जी से बोले।

मिश्रा जी ने एक बार स्नेह से उसका सिर थपथपा दिया, फिर वे लिफ्ट की ओर जाने वाले कॉरीडोर की ओर बढ़ गए।

''सर।''-राय ने हिम्मत करके एक आखिरी कोशिश की-''इसने...इसने मुझे गाली दी थी।''

''तो मत किया करो गाली खाने वाला काम।''-मिश्रा जी एक मोहक मुस्कान के साथ बोले।

हॉल में फिर दबी-दबी हंसी के स्वर गूंज उठे।

मिश्रा जी लिफ्ट की ओर बढ़ गए।

मोहित घर पहुंचा।

वो वैशाली के कमरे में पहुंचा। बैड पर एक बड़ा सा सूटकेस रखा था, जिसमें वैशाली अपना सामान पैक कर रही थी।

‘‘कहां जा रही हो?’’-मोहित ने पूछा।

उसकी आवाज सुनकर सामान पैक कर रही वैशाली के हाथों को एक मिनट के लिए ब्रेक लगे, फिर वो पहले की तरह सामान पैक करती रही।

‘‘मैंने कुछ पूछा है।’’-मोहित ने कड़े स्वर में कहा।

उसने मोहित की ओर देखा, उसकी आंखों में घायल हिरणी जैसे भाव थे। फिर वो धीरे से बोली--‘‘दिल्ली।’’

‘‘किसलिये?’’

‘‘सोच रही हूं अब वहीं रहूंगीं।’’

‘‘क्यों?’’

‘‘यहां मेरा कौन है? मैंने कभी सोचा भी नहीं था मेरा भाई ही ऐसी नीच हरकत करेगा।’’

‘‘जो किया, तुम्हारे भाई ने किया। उससे तुम्हारा कोई वास्ता नहीं है।’’

‘‘नहीं है लेकिन लोग तो नहीं मानेंगें न।’’

मोहित वैशाली के पास आकर बैड पर बैठ गया।

‘‘लेकिन मैं तो मानता हूं न।’’

वैशाली ने मोहित की ओर देखा। उसकी आंखों में आंसू थे।

मोहित ने उसका हाथ पकडक़र उसे अपनी बगल में बैठा लिया और उसका सिर अपने कंधे पर रख लिया।

‘‘अब रोओ जितना रोना है।’’

वैशाली सचमुच उसके कंधे पर सिर रख कर फफक-फफककर रो पड़ी।

मोहित उसके सिर पर हाथ फेरता रहा।

तभी मानसी ने कमरे में कदम रखा।

मानसी को देखकर वैशाली मोहित से अलग हो गई।

‘‘ओह!’’-मानसी उन दोनों को देखकर बोली-‘‘तो तोता-मैना का जोड़ा यहां बैठा है।’’

‘‘ये दिल्ली जाना चाहती है।’’-मोहित बोला-‘‘इसे लगता है, जो कुछ हुआ, उसके लिए लोग इसे भी दोष देंगें।’’

‘‘इसे दिल्ली जाने देती है मेरी जूती।’’

‘‘अब आप ही इसे समझाइये।’’

‘‘सुन वैशाली, सीधी तरह से मेरी भाभी बनकर रहना है तो बता दे वरना मुझे उंगली टेढ़ी करना भी अच्छी तरह आता है।’’

वैशाली रोते-रोते भी हंस पड़ी। उसने अपना चेहरा दोनों हाथों में छिपा लिया।

मानसी आगे बढक़र उसके बगल में जाकर बैठ गई और उसे गले से लगा लिया।

‘‘कोई देखो इसे। कैसे शरमा रही है। कोई यकीन करेगा अमेरिका से वापस आई है।’’

लॉकडाउन!

कोरोना के खतरे को देखते हुए पूरे देश में लॉकडाउन घोषित कर दिया गया था।

सबको अपने-अपने घरों में या जो जहां था, उसे वहीं रहने के निर्देश सरकार द्वारा जारी किए गए थे।

अन्य देशों में कोरोना संक्रमण की भयावह स्थिति को देखते हुए देश में कोरोना संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए सरकार के इस कदम की सराहना की जा रही थी, वहीं लोगों के दिलों में एक अजीब सा डर भी व्याप्त होने लगा था।

लॉकडाउन ने सबको बराबरी में लाकर खड़ा कर दिया था। क्या अमीर, क्या गरीब। सबको घरों में ही रहना था। केवल बेहद आवश्यकता या आपात स्थिति में ही लोग घरों से बाहर निकल सकते थे।

देश के बाकी शहरों की तरह ही नैनीताल की सडक़ें भी सूनी थीं।

देश के सबसे प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक नैनीताल-जिसकी सडक़ें हमेशा पर्यटकों से गुलजार रहती थीं-की सडक़ों पर भी लॉकडाउन के दौरान सन्नाटा पसरा हुआ था।

लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे, जिन्हें लॉकडाउन के बारे में पता भी नहीं था।

सुबह मोबाइल की रिंगटोन बजने पर प्रकाश नारंग की नींद खुली।

कॉल करने वाले के लिए मुंह से वाहियात बातें निकालते हुए उसने कॉल रिसीव की।

‘‘हां, बोल।’’-वो मोबाइल पर भैंसे की तरह डकराया। रात में उसने जमकर शराब पी थी और नशे में जल्दी लुढक़ गया था। इस वक्त भी उसका सिर दर्द से फटा जा रहा था।

‘‘बॉस!’’-उधर से उसके राइड हैण्ड मोहन कापसे का उत्तेजित स्वर सुनाई दिया-‘‘पूरे देश में लॉकडाउन हो गया है। कोई अपने घरों से बाहर नहीं निकल सकता। 21 दिनों के लिए लॉकडाउन हुआ है। कोरोना फैलने से रोकने के लिए सरकार ने...।’’

‘‘क्या बकवास कर रहा है बे? सुबह-सुबह नशा तो नहीं कर लिया?’’-नारंग का स्वर बुरी तरह भन्नाया हुआ था।

‘‘बॉस, मैंने रात में भी कॉल की थी। पता चला आप जल्दी सो गए थे। सोचा आपको खबर नहीं होगी इसलिए...।’’

‘‘तो लॉकडाउन होगा तो हमें क्या? हमें कौन रोकेगा? हम इस शहर के बादशाह हैं।’’

‘‘बादशाह नहीं बॉस। लॉकडाउन में कोई बादशाह नहीं है। सडक़ पर निकलने वालों को पुलिस डण्डे मार रही है...।’’

‘‘हरामजादे, बकवास कर रहा है। प्रकाश नारंग घर से बाहर निकलेगा तो उसे पुलिस डण्डे से मारेगी?’’

‘‘नहीं, बॉस।’’-उधर से हड़बड़ाई हुई सी आवाज सुनाई दी-‘‘मैं...मेरा मतलब था...।’’

‘‘अब मतलब मत समझा। आज सुबह तुझे रस्तोगी ट्रेडर्स से 10 लाख रूपए लेने थे, उन्हें वसूल कर जाकर।’’

भैंस के आगे बीन बजाने का यही परिणाम होता है।-उधर से मोहन कापसे मन ही मन बुरी तरह कलप उठा।

‘‘बॉस।’’-वो हारे हुए से स्वर में बोला-‘‘उतनी देर से मैं यही तो बोल रहा हूं। सब तरफ लॉकडाउन है। कोई घर से बाहर नहीं निकल सकता।’’

‘‘क्योंकि बाहर निकलने पर पुलिस डण्डे मार रही है?’’

‘‘यस बॉस।’’

‘अगर तूने अभी जाकर रस्तोगी से पैसे वसूल नहीं किए तो मैं तुझे गोली मार दूंगा। अब तू डिसाइड कर ले तुझे पुलिस के डण्डे और मेरी गोली में से क्या चुनना है?’’

दूसरी ओर सन्नाटा छा गया।

‘‘आधे घण्टे में मुझे फोन करके बता कि पैसे मिले या नहीं?’’-कहकर नारंग ने फोन काट दिया।

फिर उसने टीवी चालू किया। इत्तेफाक से न्यूज चैनल ही लगा था, जिस पर रात से ही पूरे देश में लॉकडाउन होने की न्यूज आ रही थी।

नारंग हक्का-बक्का सा न्यूज देखता रहा।

यानी कापसे सही बोल रहा था।

नारंग को अफसोस हुआ।

बेकार बरस पड़ा बेचारे पर। अब लॉकडाउन होने में उसकी क्या गलती है? एक तो वो बेचारा इतनी महत्त्वपूर्णें बात बता रहा था, उस मैंने उसे ही खरी-खोटी सुना दी।

साला रात की पी अभी तक नहीं उतरी। हैंगओवर के कारण सिर दर्द हो रहा है वो अलग। इसीलिए इतनी खरी-खोटी सुना दी बेचारे को।

एक बार को नारंग का मन किया कि कापसे को फोन करके उसे रस्तोगी के यहां वसूली करने जाने से मना करे। फिर उसने अपना इरादा बदल दिया। ऐसा करने पर उसकी इमेज मिट्टी में मिल जाती। नारंग किसी के सामने सिर नहीं झुकाता था। लोग उसके सामने सिर झुकाते थे।

जो नहीं झुकाते थे, उनके सिर काट दिए जाते थे।

नारंग उठकर खिडक़ी के पास पहुंचा। उसने खिडक़ी के शीशे से बाहर झांककर देखा।

उसका बैडरूम दूसरी मंजिल पर था। नीचे आंगन में उसकी शानदार स्पोर्टस कार खड़ी थी, जो उसने हाल ही में दो करोड़ रूपए में खरीदी थी।

वो काफी समय से वो कार खरीदना चाहता था और अभी हाल ही में उसने अपनी इच्छा पूरी भी कर ली थी लेकिन बाद से उसे अब तक वो कार चलाने का मौका नहीं मिल पाया था।

आज उसका अपनी एक गर्लफ्रैंड के साथ उसी कार में नैनीताल की सडक़ों पर लांग ड्राइव पर जाने का प्लान था।

जो कि कैंसल हो गया।

लॉकडाउन के कारण!

ये लॉकडाउन भी अभी ही होना था-वो मन ही मन भुनभुनाया-जब मैंने इतनी महंगी, इतनी लग्जरी कार खरीदी थी।

यकायक नारंग को अहसास हुआ कि वो कितनी बड़ी प्रॉब्लम में था।

असल में वो मुम्बई के जिस अण्डरवर्ल्ड गैंग के रिप्रेजेंटेटिव के रूप में नैनीताल में काम करता था, उस गैंग की नैनीताल ब्रांच के हैड का काम संभालता था, वो एक बेहद खतरनाक गैंग था। एक ऐसा गैंग, जो मुम्बई और नैनीताल ही नहीं बल्कि पूरे देश में बड़े सुव्यवस्थित ढंग से अवैध कारोबारों का संचालन करता था। उस गैंग के टॉप बॉस इतने शक्तिशाली थे कि बड़े-बड़े नेताओं से लेकर अधिकारी तक उनके इशारों पर नाचते थे। वे लोग जितने व्यवस्थित ढंग से पूरे देश में अपनी ऑर्गेनाइजेशन चलाते थे, उतने ही क्रूर और बेरहम भी थे।

उनकी ऑर्गेनाइजेशन के कुछ उसूल थे, जिन्हें तोड़ा जाना बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाता था।

चाहे उन्हें तोडऩे वाला ऑर्गेनाइजेशन का ही कोई सदस्य क्यों न हो।

और उनके ऑर्गेनाइजेशन में गलती की एक ही सजा होती थी।

मौत!

बेहद दर्दनाक और भयावह मौत!

असल में नारंग के मुम्बई से नैनीताल भाग आने के पीछे ये भी एक बड़ा कारण था। पैसों के मामले में उसका हाजमा बेहद खराब था। अगर उसके अण्डर में ज्यादा पैसा रहता था तो वो उसमें बड़ा हाथ मारने से खुद को नहीं रोक पाता था। लेकिन ये भी उस ऑर्गेनाइजेशन के उसूलों के सख्त खिलाफ था। दो-तीन बार पैसों में घपला करने के बाद उसे महसूस हो गया था कि इस तरह से ज्यादा दिन चलने वाला नहीं था। हर बार वो ऑर्गेनाइजेशन में पैसों का हिसाब प्रस्तुत होने के समय तक घपला की गई रकम को किसी न किसी तरह पूरी कर देता था लेकिन एक बड़ा खतरा ये भी था कि वहां ऑर्गेनाइजेशन के बड़े बॉस लोगों के नीचे काम करने के कारण उस घपले को छुपाने में बहुत दिक्कत होती थी।

इससे फर्क नहीं पड़ता था कि उसने रकम पूरी कर दी थी या नहीं!

अगर बॉस लोगों तक ये बात पहुंच जाती कि वो इस तरह गड़बड़ कर रहा था तो फिर उसे इसका परिणाम भी भुगतना पड़ता।

इसीलिए कई साल पहले ही उसने बॉस लोगों को खुशामद करके अपना ट्रान्सफर मुम्बई से नैनीताल करवा लिया था।

यहां तो उसके मजे ही मजे थे!

ऐश ही ऐश थी!

एक तो नैनीताल उसका पसंदीदा हिल स्टेशन था।

ऊपर से यहां उसके ऊपर कोई नहीं था।

वो खुद टॉप बॉस था!

उससे कोई हिसाब मांगने वाला नहीं था।

तीन महीने में उसे एक बार रोकड़ का हिसाब मुम्बई देना पड़ता था-जिसके लिए उसे मुम्बई जाना भी पड़ता था-लेकिन तीन महीने लम्बा अरसा होता था। इस दौरान वो ऑर्गेनाइजेशन की रकम में खूब घपला करता था और मुम्बई जाने का समय आने तक उस रकम की पूर्ति भी किसी न किसी तरह से कर ही लेता था।

यहां किसी टॉप बॉस की निगरानी नहीं होने से नारंग के कितने पंख निकल आए थे, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता था कि मुम्बई में उसने जहां दो-चार बार ही कुछ लाख रूपए की रकम का ही घोटाला किया था, वो भी बेहद डरते-डरते, वहीं नैनीताल आने के बाद अब उसका हर तिमाही में लाखों रूपए का घोटाला करने का नियम ही बन गया था।

और वो तो जैसे पूरी कड़ाई से ही उस नियम का पालन भी कर रहा था।

असल में वो बेहद अय्याश आदमी था और शराब, शबाब से लेकर दुनिया भर की अय्याशी पर बेहिसाब दौलत खर्च करता था।

लेकिन इस बार उसने बड़ी गलती कर दी थी।

बहुत बड़ी गलती!

इस बार उसने ऑर्गेनाइजेशन की जिस रकम का घोटाला किया था, वो लाखों से आगे बढ़ चुकी थी।

एक करोड़ रूपया!

उसे ऑर्गेनाइजेशन का एक करोड़ रूपया चुकाना था।

और वो एक करोड़ रूपया उस शानदार स्पोर्ट्स कार को खरीदने में ही खर्च हुआ था, जो इस वक्त उसके बंगले के परिसर की शोभा बढ़ा रही थी।

कार दो करोड़ की थी, जिसमें एक करोड़ का जुगाड़ नारंग पहले कर चुका था और एक करोड़ उसने ऑर्गेनाइजेशन के खाते से मार लिए थे। असल में वो एक करोड़ रूपये और इकट्ठा करने के लिये रूकने वाला था लेकिन हाल ही में विदेश यात्रा के दौरान जब उसने वहां के एक बड़े डॉन के पास वही लग्जरी कार देखी तो उसके धैर्य का बांध टूट गया।

उसने ऑर्गेनाइजेशन की रकम से एक करोड़ रूपये का गबन किया और दो करोड़ की वो शानदार, लग्जरी स्पोर्ट्स कार खरीद ली।

उस चीज को लेकर नारंग टेंशन में था।

इतनी टेंशन में कि आजकल वो लोगों के साथ नर्मी से भी पेश आने लगा था।

जो कि उसके स्वभाव के सर्वथा विपरीत था।

जैसे अभी कुछ ही दिनों पहले उसने उस हीरो माफिक दिखने वाले मोहित वर्मा नामके लडक़े को जिंदा छोड़ दिया था।

जबकि उस लडक़े ने नारंग पर अपने बाप की हत्या करने का आरोप लगाया था।

वो भी खुलेआम!

वैसे था भी उसका बाप टेंटुआ दबा देने लायक।-नारंग ने मन ही मन सोचा।

इस वक्त नारंग के सामने सबसे बड़ी समस्या उन एक करोड़ रूपयों की व्यवस्था करने की थी, जो उसने ऑर्गेनाइजेशन के खाते से सरकाए थे।

सामान्य स्थिति में नारंग सोच रहा था कि किसी न किसी तरह खींचतान कर पैसों का जुगाड़ कर ही लेगा।

लेकिन लॉकडाउन!

नारंग के सिर का दर्द और भी बढ़ गया।

और अगर वो रोकड़ का हिसाब देने की डेट तक एक करोड़ रूपये खाते में जमा नहीं कर पाया तो...।

फिर उसका क्या होगा, इस ख्याल से ही उसके भारी-भरकम गैंडे जैसे बदन में झुरझुरी दौड़ गई।

उसने ऐसे कई उदाहरण सुन रखे थे कि ऑर्गेनाइजेशन में धोखाधड़ी करने वालों का क्या हश्र होता था।

कुछ उदाहरण तो उसने अपनी आंखों से देखे भी थे।

तो क्या उसके साथ भी...।

नहीं-उसने अपने सिर को झटका दिया-किसी भी तरह वो पैसों की व्यवस्था कर ही लेगा।

उसने एक बार फिर खिडक़ी से बाहर खड़ी चमचमाती स्पोर्ट्स कार पर हसरत भरी नजर डाली, जिसके चक्कर में उसने खुद को इतनी बड़ी मुसीबत में फंसा लिया था।

और इतना होने के बाद भी वो उस कार को अब तक एक बार भी चला भी नहीं पाया था।

कार उसने तीन दिन पहले ही शो रूम में देख कर ही पसंद कर ली थी और खरीद ली थी।

कार को उसके घर छोडऩे भी दूसरा आदमी आया था। नारंग को काम की भागदौड़ में अब तक एक बार भी उसे चलाने का मौका नहीं मिल पाया था।

वैसे भी वो उसे पूरे आराम से, पूरी फुर्सत में चलाने के मूड में था।

आज ही!

और आज ही ये लॉकडाउन होना था!

तभी फिर से बज उठे मोबाइल ने नारंग की तंद्रा भंग की।

वो वापस टेबल के पास पहुंचा और मोबाइल उठाया।

कापसे का फोन होगा तो उससे थोड़ा अच्छे से बात करूंगा-उसने मन ही मन सोचा-*अभी बहुत खरी-खोटी सुना दी थी बेचारे को। वैसे भी एक करोड़ का जुगाड़ करने में कापसे से उसे काफी काम लेना था।*

लेकिन फोन कापसे का नहीं था।

मोबाइल स्क्रीन पर कोई अनजान नम्बर दिखाई दे रहा था।

‘‘हैलो।’’-नारंग फोन पर सांड की तरह रंभाया।

"प्रकाश नारंग। ’’-उधर से आवाज सुनाई दी-‘‘खिडक़ी से बाहर झांक कर देख।’’

‘‘कौन है?’’-नारंग भडक़ कर बोला।

उधर से कोई जवाब नहीं आया।

नारंग वापस खिडक़ी पर पहुंचा। उसने फिर खिडक़ी से बाहर झांककर देखा। बाहर उसकी नई-नकोर चमचमाती हुई शानदार स्पोटर्स कार खड़ी दिखाई दे रही थी।

और तो वहां कोई नहीं था।

नारंग ने मोबाइल पर बोलने के लिए मुंह खोला ही था लेकिन उसके शब्द उसके गले में ही घुट कर रह गए।

एक भीषण धमाके के साथ आंगन में खड़ी स्पोर्ट्स कार के परखच्चे उड़ गए।

कार का कोई टुकड़ा उछलकर खिडक़ी से आ टकराया, जिससे खिडक़ी का मोटा कांच भी चटख गया और उसमें मकड़ी का जाला जैसा बन गया।

नारंग हड़बड़ाकर खिडक़ी से थोड़ा पीछे हट गया।

बाहर का दृश्य देखकर उसे अपनी आंखों पर यकीन नहीं आ रहा था। उसकी असाधारण रूप से महंगी कार-जिसे उसने बड़े अरमानों से खरीदा था-अब एक कबाड़ के ढेर से ज्यादा कुछ नहीं थी।

वो हक्का-बक्का सा अपनी नई कार की जलती चिता को देख रहा था।

फिर फोन से आती आवाज से वो ट्रांस से बाहर निकला।

उधर से मोहित की आवाज सुनाई दी-

‘‘नारंग।’’

‘‘ह...हां...कौन?’’

‘‘भाग, तेरा बाप आया।’’

नारंग फोन पर चिल्लाने ही वाला था कि अचानक उसके पीछे से एक हिसकारती सी आवाज सुनाई दी-

‘‘कईसा है?’’

...